Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

C-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Doma

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विशेष रुचि है। लेखन कार्य में तो आप सिद्ध-हस्त हैं। आपके द्वारा लिखित महर्षि-जीवन का आर्य जनता में भारी स्वागत होना ही इसका प्रबल प्रमाण है। सामवेद का भाष्य अत्यन्त संक्षिप्त होते हुए भी कितना सारगर्भित, आध्यात्मिक-रस से परिपूर्ण ेद भ सरल है यह आप स्वयं अनुभव करेंगे।

े अपना पृष्ठ का सजिल्द यह ग्रन्थ केवल १॥=) में
ा ने कितना महान् और
ाया है इसका निर्णय तो आप ही
किसी यत्न तो इतना ही है कि किसी भी
क पाश्चात्य तक भगवान् की स्थापना हो सके
मु त कंठ से स्वीकार करने ले... में वेदों का

सर्वप्रथम पुस्तकालय में सर्वप्रथम
ईसाई मुसलमान आदि मत... न वेद के ... का

वेद-
पीछे
ा जो
नों का
यही
ति का
भाष्य
सम्मुख
ारा वेद

...सागत किया तो हम लगभग १५) में
...तुत कर सकेंगे।

कविराज हरनामदास
प्रकाशनाध्यक्ष

...संकल्प
...भाषा-भाष्य
...त है।
...कार गुरुकुल कांगड़ी
...अनुशीलन में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ ओ३म् ॥

सामवेद का प्रस्तुत संस्करण

"स्तुता मया वरदा वेदमाता"

सर्व ज्ञानमयो हि सः

"वेद सब सत्यविद्याओं का भण्डार है," यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है। चार वेदों तक वेद की इयत्ता होने [illegible] नहीं है। [illegible] दिशा में कुछ कार्य किया है, [illegible]

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

फिर भी, इस युग में महर्षि दयानन्द को वेद-भाष्य रचकर मार्ग-प्रदर्शन करना पड़ा। वेद ईश्वर-वाणी है; उसका हमें अपनी शक्ति के अनुसार ज्ञान ... कीर्तन ... ही चाहिए, भले ही हम उसका सम्पूर्ण ... इसी दृष्टि से ... सकें। मध्ययुग के, वाममार्ग आदि से प्रभावित तथाकथित आचार्यों एवं उनके पीछे चलने वाले पाश्चात्य विचारकों ने वेद का जो अनर्थ किया उसकी पोल खोल कर जिज्ञासुजनों का मार्ग-प्रदर्शन करना आवश्यक था। महर्षि ने यही किया और यास्कादि-सम्मत प्राचीन पद्धति का शाब्दिक ... समर्थन ही नहीं किया अपितु स्वयं भाष्य कर उत्तम एवं ठीक वेदार्थ का आदर्श सम्मुख ... ।

यदि आर्य जनता ने वेद के इस प्रकाशन ... स्वागत किया तो हम लगभग १५) में चारों वेद ... स्तुत कर सकेंगे।

कविराज हरनामदास
प्रकाशनाध्यक्ष

... सफल्य ... -भाष्य ... है। ... गुरुकुल कांग ... अनुशीलन में ...

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ ओ३म् ॥

सामवेद का प्रस्तुत संस्करण

"स्तुता मया वरदा वेदमाता"

सर्व ज्ञानमयो हि सः

"वेद सब सत्यविद्याओं का भण्डार है," यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है। चार वेदों तक वेद की इयत्ता होने पर भी [illegible] नहीं है। [illegible] दिशा में कुछ कार्य किया है, [illegible]

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

फिर भी, इस युग में महर्षि दयानन्द को वेद-
भाष्य रचकर मार्ग-प्रदर्शन करना पड़ा। वेद ईश्वर-
[illegible] है; उसका हमें अपनी शक्ति के अनुसार ज्ञान
[illegible] कीर्तन [illegible] चाहिए, भले ही हम उसका सम्पूर्ण
इसी [illegible] सकें। मध्ययुग के, वाममार्ग आदि से
प्रभावित तथाकथित आचार्यों एवं उनके पीछे
चलने वाले पाश्चात्य विचारकों ने वेद का जो
अनर्थ किया उसकी पोल खोल कर जिज्ञासुजनों का
मार्ग-प्रदर्शन करना आवश्यक था। महर्षि ने यही
किया और यास्कादि-सम्मत प्राचीन पद्धति का
[illegible] समर्थन ही नहीं किया अपितु स्वयं भाष्य
कर उत्तम एवं ठीक वेदार्थ का आदर्श सम्मुख
[illegible]

यदि आर्य जनता ने वेद के इस प्रकाशन [illegible] (१५) में चारों वेद
प्राचीनता से इन्कार नहीं करते।

वेद मानवमात्र के ही नहीं [illegible]
कल्याणकर्ता हैं। सब सत्य वि[illegible]
तभी तो महर्षि दयानन्द ने वेद [illegible]

कविराज हरनामदास
प्रकाशनाध्यक्ष

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ ओ३म् ॥

सामवेद का प्रस्तुत संस्करण

"स्तुता मया वरदा वेदमाता"

सर्व ज्ञानमयो हि सः

"वेद सब सत्यविद्याओं का भण्डार है," यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है। चार वेदों तक वेद की इयत्ता होने [illegible] नहीं है। [illegible] दिशा में कुछ कार्य किया है। [illegible] वेद के ज्ञान की इयत्ता [illegible] अतएव इसके अर्थ का अवधारण नहीं हो सकता। अनेक विद्वानों का मत है कि इसीलिये ब्राह्मणकार-वेदाङ्गोपाङ्गों के ज्ञाता ऋषि-मुनियों तक ने वेदभाष्यों का निर्माण नहीं किया। किसी भी व्यक्ति को सम्पूर्ण विद्याओं का ज्ञान होना सम्भव जो नहीं है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ ओ३म् ॥

सामवेद का प्रस्तुत संस्करण

"स्तुता मया वरदा वेदमाता"

सर्व ज्ञानमयो हि सः

"वेद सब सत्यविद्याओं का भण्डार है," यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है। चार वेदों तक वेद की ... वेद के ज्ञान की इयत्ता है। अतएव इसके अर्थ का अवधारण नहीं हो सकता। अनेक विद्वानों का मत है कि इसीलिये ब्राह्मणकार- वेदाङ्गोपाङ्गों के ज्ञाता ऋषि-मुनियों तक ने वेदभाष्यों का निर्माण नहीं किया। किसी भी व्यक्ति को सम्पूर्ण विद्याओं का ज्ञान होना सम्भव जो नहीं है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

फिर भी, इस युग में महर्षि दयानन्द को वेद-भाष्य रचकर मार्ग-प्रदर्शन करना पड़ा। वेद ईश्वर-वाणी है; उसका हमें अपनी शक्ति के अनुसार ज्ञान [illegible] ही चाहिए, भले ही हम उसका सम्पूर्ण [illegible] सकें। मध्ययुग के, वाममार्ग आदि से प्रभावित तथाकथित आचार्यों एवं उनके पीछे चलने वाले पाश्चात्य विचारकों ने वेद का जो अनर्थ किया उसकी पोल खोल कर जिज्ञासुजनों का मार्ग-प्रदर्शन करना आवश्यक था। महर्षि ने यही किया और यास्कादि [illegible]-सम्मत प्राचीन पद्धति का [illegible] समर्थन ही नहीं किया अपितु स्वयं भाष्य कर उत्तम एवं ठीक वेदार्थ का आदर्श सम्मुख रखा।

शैली

प्रस्तुत संस्करण भी, निश्चय ही, सामवेद का सर्वाङ्ग पूर्ण भाष्य नहीं है। परन्तु इसका एक विशेष लक्ष्य है। आज हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है : संस्कृत

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

का प्रचार होते अभी वर्षों लगेंगे। हिन्दी भाषी जन-साधारण के लिए सरल, संक्षिप्त और हृदय-ग्राही हिन्दी शब्दों में सामवेद का स्पष्टीकरण प्रस्तुत कर मात्र ही इस संस्करण का लक्ष्य है। इस ... बढ़ाने पर, अनुभव के साथ-साथ, इसमें ... परिष्कार का बहुत विस्तृत क्षेत्र है; इसमें भी कोई सन्देह नहीं।

ऋषि दयानन्द का भाष्य नैरुक्त-प्रक्रिया का वेद भाष्य है। यास्कमुनि के पथ पर रहते हुए अर्थात् यौगिक अर्थ करने की शैली ... का अनुसरण करते हुए उन्होंने नये निर्वचन भी किये हैं। वस्तुतः नैरुक्त-प्रक्रिया का आधार स्वयं वेद हैं। निरुक्त में वर्णित निरुक्तियां स्वतन्त्र अथवा स्वच्छन्द मस्तिष्क की उपज नहीं है, खोजने पर स्वयं वेद से ही वे अर्थ प्रकट हो जाते हैं। निरुक्त ने अग्नि का अर्थ '*अग्रणी*' अथवा '*अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते*' किया है: इसका समर्थन '*आ देवानामग्रयावेह यातु*' (ऋ०

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१०।७०।२) और '*गार्हपत्येन सन्त्य ऋतुना यज्ञनीरसि*' (ऋ० १।१५।१२) आदि मन्त्रों से होता है। '...*जीजनत् सविता सुम्न मुक्थ्यम्*' (ऋ० ४।५३।२) कौन ... ने सबको उत्पन्न किया यह बताया इसी दृष्टि से ...

वस्तुत. स्वाध्यायशील विद्वानों का यही अनुभव है कि वेद के अर्थ की कुञ्जी स्वयं वेद में विद्यमान है; उसके कुशल प्रयोजक की आवश्यकता है। इस प्रस्तुत संस्करण में निरुक्त प्रक्रिया को स्पष्ट करने का स्थान न होते हुए भी, विज्ञ पाठक देखेंगे कि इस ... का पूरा ध्यान रखा गया है।

सामवेद : उपासना-काण्ड

विषय-भेद से वेदों के चार भाग माने गये हैं; इनमें से सामवेद उपासनाकाण्ड है। महर्षि दयानन्द ने इस सम्बन्ध में 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' के पृष्ठ ३६४-३६६ पर जो प्रकाश डाला है उसका सारांश यह है कि ज्ञान और कर्मकाण्डों की तथा उपासना

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

की वृद्धि व फल कितना और कहां तक होना चाहिए-इसका विधान सामवेद में लिखा है। वे लिखते हैं:—"सामवेदे ज्ञानक्रिया विद्ययांदीर्घविचारेण फला... पर्यन्तं विचारः।" अर्थात् ज्ञान और क्रि... को (क्रमशः ऋक् और यजु से) ... कर सामवेद से उस प्राप्त ज्ञान के विषय में दीर्घ-विचार द्वारा पूर्ण फल-प्राप्ति तक विचार किया जाता है। स्पष्ट है कि पूर्ण फल ईश्वर-प्राप्ति है और ज्ञान एवं कर्मकाण्ड से [illegible] अनुभव पर दीर्घविचार समाधि को कह सकते हैं—यह[illegible] तो 'उपासना' है। यह भी बताया है कि "ऋग्भिः स्तुव[illegible] य[illegible] यजुर्भिः यजन्ति, सामभिर्गायन्ति" अर्थात ऋचाओं से स्तुति, यजुर्वेद के मन्त्रों से यज्ञ और सामवेद के मन्त्रों से गान करते हैं। ऋषि दयानन्द ने इसका स्पष्टीकरण करते हुए लिखा है—"त्रिधा गानविद्या भवति, गानोच्चारण विद्याया द्रुतमध्यमविलम्बितभेद युक्तत्वात्।" स्तुति और यजन में भी मन्त्रोच्चारण होता है परन्तु वह क्रमशः द्रुत और मध्यम गति

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

से; सामवेद का पाठ विलम्बित स्वर में होता है और यही गान है। विलम्बित स्वर अथवा गान दीर्घविचार में सहायक होता है, यह सार्वजनीन अनुभव है : कीर्तन से ध्यानावस्थिति (समाधि) का होना भी इसी दृष्टि से [illegible] माना जाता है। वस्तुतः सामवेद का विषय यह 'उपासना' ही है। यहाँ सामपद की निरुक्ति ऋषि ने 'षो' अन्तकर्मणि (अन्त करना) और 'सान्त्वप्रयोगे' (साम्य[illegible] भावना का प्रयोग) इन अर्थवाली धातुओं से [illegible] की है। श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने [illegible] इस आधार पर ठीक ही लिखा है कि [illegible] है। जिसके द्वारा मनुष्यों की कर्मग्रह ग्रन्थियां परिसमाप्त हो जाती हैं, वह उपासना, सामवेद का मुख्य विषय है।

वेदार्थ की इयत्ता अपरिमित होने के कारण, प्रस्तुत संस्करण में उपासना के विषय तक ही सामवेद के पदों के अर्थ को सीमित रखा गया है। इस वेद में वर्णित अग्नि, इन्द्र, सोम, अश्वी आदि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

देवताओं (विषयों) का अभिप्राय यह जानकर ही वर्णित किया गया है कि साधक का परमलब्ध अन्तिम फल—प्रभु परमात्मा की अनुभूति को करना है ।

म दीर्घ-

देवता और उनका अभिप्राय

यहां इस विषयक वाद को उपस्थित करना कि देवता से क्या अभिप्राय है, प्रासंगिक होते हुए भी स्थान की कमी से असम्भव है । परन्तु जैसा कि ऋषि दयानन्द ने स्पष्ट किया—देवता मन्त्र का 'विषय' होता है । *'या तेनोच्यते सा देवता'* (सर्वानुक्रमणी २५) । ये देवता सर्वानुक्रमणी तथा बृहद्देवता आदि में प्रतिपादित हैं : परन्तु इससे भिन्न भी हो सकते हैं । ऋ० ५।४२।१४ में एक ही मन्त्र में आचार्यों ने भिन्न-भिन्न देवता माने हैं । प्रस्तुत संस्करण में अजमेर यन्त्रालय के संस्करण में प्रकाशित देवताओं का ही अनुसरण किया गया है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कुछ पदार्थों का आधार

इस संस्करण में 'अग्नि' का अर्थ प्रायः "दिव्य-संकल्प" अथवा "प्रकाशपूर्ण संकल्प" (अरविन्द) किया है। "आकूतिरग्निः" (यजु० ११।६६) में अग्नि का अर्थ आकूति अथवा संकल्प किया गया है। संकल्परूप अग्नि को प्रज्वलित किये बिना किसी कार्य (यज्ञ) में मनुष्य की प्रवृत्ति नहीं होती। अतएव दिव्य-संकल्प ही मानव की लक्ष्यभूत (प्रभु-प्राप्तिरूप) अन्तिमगतिरूप यज्ञका 'होता' है, 'पुरोहित' है। आदि विस्तार को विज्ञ जन जान सकते हैं।

सामवेद (उत्तरार्चिक अध्याय २० खण्ड ३ के मन्त्र सं० २) में इन्द्र का वर्णन करते हुए उसे मते! शब्द से सम्बोधित किया गया है। प्रस्तुत संस्करण में 'इन्द्र' पद का अर्थ 'दिव्य प्रज्ञा' किया गया है। 'मति' का अर्थ स्पष्ट ही 'मनःशक्ति' है : इसको प्रकाशमयी प्रज्ञा भी कह सकते हैं। इसके द्वारा ही साधक को दिव्य-प्रकाश, दिव्य-ज्ञान प्राप्त होता है। 'वायु'

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्राणशक्ति या जीवन-शक्ति का नाम है। 'सोम-रस' आनन्द की मग्नता का वह रस, दिव्य-आनन्द है जो अतिमानस चेतना से मन में प्रवाहित होता है। यही 'इन्द्र' का सोम-पान है; यही 'ऋत' परमसत्य की अनुभूति रूप परमलक्ष्य, परमसुख है। "अग्निदेव की समर्पणों द्वारा वन्दना करते हैं" "इन्द्र का स्तुति-गान करो" आदि वाक्यों में वन्दना या स्तुति करना 'संकल्पशक्ति' अथवा 'प्रज्ञाशक्ति' की साधना करना है। "योगयुक्त वायु और इन्द्र परमानन्द का पान कर हमारे पथ-प्रदर्शक बनते हैं" अर्थात् हम अपनी जीवन और मननशक्ति को समाधि की सिद्धि में लगावें। 'आर्य' वह साधक है जो निरन्तर अपने परमलक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। फिर इस लक्ष्य-प्राप्ति में अनेक आवरणात्मक और हमारी शुभ-भावनाओं के मारक विघ्न, वृत्र और राक्षस, उपस्थित हो जाते हैं। सामवेद के अन्तिम अध्यायमें इस "समित' 'संग्राम, संघर्ष का अति स्पष्ट वर्णन पाया जाता है। अस्तु।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विज्ञ पाठक इस दृष्टि से इस संस्करण का अध्ययन करेंगे तो वे अनेक अव्याख्यात पदों का [illegible] तो होना [illegible] भी भली-भांति समझ सकेंगे। अनेक अर्थ न [illegible] अग्नि, सोम आदि पद वैसे ही रख दिये हैं : वहां उनका अभिप्राय पूर्व व्याख्या के आधार पर ही लेना चाहिए : विस्तार भय से अथवा कई स्थलों पर अनेकार्थता के बोध के लिए भी विस्तृत व्याख्या सर्वत्र नहीं दी जा सकी।

इस संस्करण की तय्यारी में वेदों के स्वाध्यायशील भाई मनोहर जी विद्यालंकार से जो प्रेरणा व सहायता मिली है— उसके लिए मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ; यद्यपि सर्वत्र उनकी सम्मति लेना सम्भव नहीं हुआ। अन्त में समालोचक सज्जनों से निवेदन है कि वे इस प्रयत्न को इस रूप में ही लें कि यह एक सत्प्रयत्न है : वेद के महत्व को जन साधारण की भाषा में प्रकट करने का एक शुभ प्रयत्न है। चलने वाला लड़खड़ाता भी है; भूल भी करता है : सज्जन भूलों को ध्यान में नहीं लाते : प्रयत्न के लक्ष्य को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

देखते हैं। भूलों की ओर ध्यान दिलाने पर उनका परिष्कार करने में भी मुझे कभी संकोच न होगा। श्री कुमारिल ने ठीक ही कहा है :—

आगमप्रवणश्चाहं नापवाद्यः स्खलन्नपि।
न हि सद्वर्त्मना गच्छन् स्खलितेऽप्यपोद्यते॥

कटरा लच्छूसिंह, दिल्ली
श्रावणी २०१२

विद्वज्जन-सेवक
हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

❀ ओ३म् ❀

सामवेद-संहिता ।

पूर्वार्चिकः (छन्द आर्चिकः)

आग्नेयं काण्डम् ।

अथ प्रथमोऽध्यायः ।

[आग्नेय काण्ड अथवा पर्व में एक ही अध्याय है : इसके ११४ मन्त्र हैं । मंत्र सं० ५२ (इन्द्र), ५६ (ब्रह्मणस्पति), ५७ (यूप), ७५ (पूषा), ६१ (विश्वे देवा), ६२ (आंगिरा ', १०१ (पवमान), १०२ (अदिति), १०५ (विश्वे देवा) को छोड़कर शेष मन्त्रों का देवता "अग्नि" है ।]

॥ प्रथम-प्रपाठके प्रथमोऽर्द्धः ॥

॥ दशतिः १ ॥ ऋषिः—१, २, ४, ७, ६ भरद्वाजः । ३ मेधातिथिः । ५ उशनाः । ६ सुदीतिपुरुमीढौ ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

८ वत्सः । १० वामदेवः ।। अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ३–१० गायत्री । २ वर्धमाना गायत्री ॥ षड्जः स्वरः ॥

२ ३ १ २ ३१२ ३ २ ३ १२
अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
१ २र ३१२
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ १ ॥

हे उन्नायक ! अज्ञानमल को हटा कर ज्ञान का प्रकाश करने और कर्म को त्याग-भावना से अपनाने का उपदेश देते हुए, आइये; मेरे अन्तःकरण में विराजमान हो निरन्तर प्रेरक बने रहिये ॥१॥

१ २ ३२३ २३ १ २ ३२
त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः ।
३२ ३१२३ १२
देवेभिर्मानुषे जने ॥ २ ॥

हे पथ-प्रदर्शक ! हम मनुष्य-जनों की ज्ञान और कर्मेन्द्रियां सकल श्रेष्ठ कर्मों के प्रेरक रूप में आपको ही अपना अगुआ बनाती हैं ॥२॥

३ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३१ २ ३ १ २
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ ३ ॥

सर्वज्ञानी, आध्यात्मिक यज्ञ का होता, दिव्य अग्नि ही वह दूत है जो इस आत्मिक यज्ञ को भली-भान्ति सम्पन्न करता है ॥३॥

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया ।
१ २ ३ १ २र
समिद्धः शुक्र आहुतः ॥ ४ ॥

स्तुति से सिद्ध हुआ यह प्रदीप्त दिव्य अग्नि ज्ञान-धन द्वारा हमारी अज्ञान आदि बाधाओं को नष्ट करता है ॥४॥

१ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २ ३२
प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम् ।
२ ३ २३ १ र २र
अग्ने रथं न वेद्यम् ॥ ५ ॥

जो दिव्य अग्नि तुम्हारा दुलारा व अतिथि और मित्र की भान्ति अति प्रिय है उसकी मैं स्तुति करता हूँ । वह रथ की भान्ति सब पदार्थों का वाहक—

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उन का ज्ञान कराने व उन को प्राप्त कराने वाला—है ॥५॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः ।
३ २ ३ १ २र
उत द्विषो मर्त्यस्य ॥ ६ ॥

हे दिव्य ज्ञानाग्ने ! तू अपने महिमाशाली तेज द्वारा कृपणता आदि दुःखों को देनेवाले समस्त शत्रु-भूत भावों और मनुष्यों की आपसी द्वेष भावनाओं से हमें बचाये रख ॥६॥

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः ।
३ १ २ ३ १ २
एभिर्वर्धास इन्दुभिः ॥ ७ ॥

हे आगे ले जाने वाले ! तेरे स्वागत में 'आ' तथा ऐसे ही दूसरे वचनों का उच्चारण करता हूँ; ऐसे आह्लादक वचनों से तू प्रदीप्त हो उठता है ॥७॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
आ ते वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ २
अग्ने त्वां कामये गिरा ॥ ८ ॥

हे अग्ने ! आपका दुलारा पुत्र रूप यह मेरा मन दूरातिदूरस्थ अत्यन्त उत्कृष्ट स्थान में भी स्थित आप से एक ही स्थान पर बन्धा हुआ है; मैं स्तुति से आप को चाह भी तो रहा हूँ ॥८॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ र ३ १ २
त्वामग्ने पुष्कराद्ध्यथर्वा निरमन्थत ।
३ १ र २ र ३ १ २
मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः ॥ ९ ॥

हे ज्योतिस्वरूप ! स्थितप्रज्ञ भक्त-जन विश्वभर को वहन करने वाले सर्वश्रेष्ठ पुष्कर—अन्तःकरण—से आपको मथन करके साक्षात् करते हैं ॥९॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
अग्ने विवस्वदा भरास्मभ्यमूतये महे ।
३ १ २ र ३ २
देवो ह्यसि नो दृशे ॥ १० ॥ (१)

हे कर्मप्रेरक ! सत्य की प्राप्तिरूप इस महती यज्ञयात्रा में हमें ऐसे निभाइये कि हम निश्चय ही से

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सफल हों; पथ-प्रदर्शन करना आपका ही सामर्थ्य है ॥१०॥

इति प्रथमा दशतिः । प्रथमः खण्डः ।

॥द० २॥ ऋषिः—१ आयुङ्क्ष्वाहिः । २ वामदेवः । ३, ८, ६ प्रयोगः । ४ मधुच्छन्दाः । ५, ७ शुनःशेपः । ६ मेधातिथिः । १० वत्सः ॥ अग्निर्देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

१२ ३ १ २ ३ १ र ३ १ २
नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः ।
१ २३ १२
अमैरमित्रमर्दय ॥ १ ॥

हे अग्निदेव ! कर्मशील मनुष्य बल-प्राप्ति के लिये आपके सम्मुख आत्म-समर्पण करते हैं । आप अपने तेज से हमारे अप्रियकारक शत्रुओं को नष्ट कीजिये ॥१॥

३१ २ ३ १ २ ३ २३१२
दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहममर्त्यम् ।
१ २ ३ २
यजिष्ठमृञ्जसे गिरा ॥ २ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सर्वज्ञापक, उत्सर्ग की भावना से भावित कर्मों के प्रापक, अमर, सर्वश्रेष्ठ, यजमान, देवदूत को मैं स्तुति से साधता हूँ ॥२॥

१२ ३२ ३ २ ३ १ २ ३ १२
उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः ।
३ १ २र
वायोरनीके अस्थिरन् ॥ ३ ॥

आपके आस-पास मंडराती रहने वाली निरन्तर आपकी ओर निर्देश करने वाली वाणियां प्राणायाम के योग से आप में ही स्थिर हो जाती हैं; भक्त की स्तुति का एकमात्र लक्ष्य सत्य सत्ता ही है ॥३॥

१२ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ २
उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम् ।
२ ३ १२ ३ १२
नमो भरन्त एमसि ॥ ४ ॥

हे अज्ञानान्धकार विनाशक ! हम प्रतिदिन-प्रतिक्षण आपके सम्मुख अपने अहंभाव को अर्पित करते हुए विचारपूर्वक आपकी उपासना करते हैं ॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १२ ३१२ ३ १ २
जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय ।
१२ ३१२ ३२
स्तोमं रुद्राय दृशीकम् ॥ ५ ॥

हे स्तुति से बोधगम्य ! तू आत्मसमर्पण में निपुण प्रत्येक स्तोता मनुष्य के लिए उसके मनोहर स्तोत्र में व्याप्त हो जा ॥५॥

२ ३ १ २र ३१ २ ३ २ ३ १ २
प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे ।
३१२ ३ १ २
मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ ६ ॥

इस सर्वाङ्ग सुन्दर मानसिक यज्ञ के लिये हम इसलिये आपको पुकारते हैं कि हमारी इन्द्रियों को प्रकाश मिले । हे तेजस्विन् ! विचार-शक्तियों-सहित यहां पधारिये ॥६॥

२३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २र
अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः ।
३ १२ ३ १ २
सम्राजन्तमध्वराणाम् ॥ ७ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अश्व की भान्ति स्फूर्तिमय और शक्तिशाली, विघ्न-निवारण-समर्थ अग्निदेव की हम समर्पणों द्वारा वन्दना करते हैं; वह यज्ञों का सम्राट् जो है! ॥७॥

३ १ २र ३ १ २र
और्वभृगुवच्छुचिमप्नवानवदा हुवे ।
३ १ २३१ २
अग्निं समुद्रवाससम् ॥ ८ ॥

मैं विस्तृत ज्ञानसे युक्त एवं कर्मिष्ठ व्यक्ति की भांति हृदयान्तरिक्ष में विराजमान, प्रकाशमय ज्ञानाग्नि को पुकारता हूँ ॥८॥

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः ।
३ १ २ ३ १ २
अग्निमिन्धे विवस्वभिः ॥ ९ ॥

यज्ञाग्नि को प्रदीप्त करता हुआ मनुष्य मन में यही विचार करे कि "मैं विविधस्थानगत तमापहारक किरणों (विवस्वभिः) द्वारा उस ज्योतिःस्वरूप से चेतना प्राप्त कर रहा हूँ" ॥९॥

२उ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २
आदित्प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिः पश्यन्ति वासरम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ ३ १ २ ३ २
परो यदिध्यते दिवि ॥ १० ॥ (२)

अति प्राचीन, सर्वोत्पादक के तेज को लोग दिन में प्रकाश करने वाली ज्योति के रूप में देखते हैं; और उसी उत्कृष्ट ज्योति को वे अपने अन्तःकरणों में प्रदीप्त करते हैं ॥१०॥

इति द्वितीया दशतिः। द्वितीयः खण्डः।

॥ द० ३ ॥ ऋषिः—१ प्रयोगः। २, ५, भरद्वाजः। ३, १० वामदेवः। ४, ६ वसिष्ठः। ७ विरूपः। ८ शुनःशेपः। ९ गोपवनः। ११ प्रस्कण्वः। १२ मेधातिथिः। १३ सिन्धुद्वीप आम्बरीषः त्रित आप्त्योवा। १४ उशनाः॥ अग्निर्देवता॥ गायत्री छन्दः॥ षड्जः स्वर॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम्।
२ ३ २ ३ १ २
अच्छा नप्त्रे सहस्वते ॥ १ ॥

हे मनुष्यो! बलशाली बन्धुत्व के लिए यज्ञों का

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अधिकतम विस्तार करने वाले अग्नि को प्राप्त होओ ॥१॥

३ २ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ १ २
अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यंसद्विश्वं न्य३त्रिणम्।
३ १ २ ३ २
अग्निर्नो वंसते रयिम् ॥ २ ॥

यह तेजस्वी अपने तीक्ष्ण तेज से हमारे आत्मिक यज्ञ के सब विध्वंसकों—काम, क्रोध आदि—को वश में रखता है और जिस प्रकार भौतिक अग्नि ऐश्वर्य का साधक है उसी प्रकार यह दिव्य अग्नि आनन्द-रूप दिव्य धन का प्रापक है ॥२॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
अग्ने मृड महाँ अस्यय आ देवयुं जनम् ।
३१२ ३ २ ३ १२
इयेथ बर्हिरासदम् ॥ ३ ॥

हे ज्योतिस्वरूप ! कृपा कर; तू बड़ा है; दिव्यता के इच्छुक जन के अन्तःकरण रूप आसन पर विराजमान होने के लिए निश्चय ही आ ॥३॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ ३ ३ २
अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति स्म देव रीषतः ।
१ २ ३ १ २
तपिष्ठैरजरो दह ॥ ४ ॥

हे तेजःपुञ्ज ! पाप और रोग से हमें बचाये रखिये; कभी निर्बल न पड़ने वाले हे अजर ! आप अपने अधिक से अधिक तपाने वाले प्रभावों द्वारा विनाशक शक्तियों (काम, क्रोध आदि) को भस्म कर दीजिये ॥४॥

१ २ ३ १ २र ३ २ १
अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
अरं वहन्त्याशवः ॥ ५ ॥

हे उन्नति-पथ के नेता ! अपनी अश्व-समान शीघ्रगामी, साधन-समर्थ, सर्वगामी शक्ति-किरणों को, जो खूब ले चलने वाली हैं (अपने रथ में)— जोड़ लीजिये ॥५॥

१ २ ३ १ २ ३ २
नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं धीमहे वयम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १२
सुवीरमग्न आहुत ॥ ६ ॥

हे शरण्ययोग्य ! प्रजाओं के पालक, उद्बोधित अग्ने ! तुझ ज्योति स्वरूप सच्चे वीर का हम ध्यान करते हैं ॥६॥

३ २ ३ २ ३२ ३ १ २र ३ २ ३ २
अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ।
३ १ २र
अपां रेतांसि जिन्वति ॥ ७ ॥

सब दिव्य शक्तियों का मूर्धास्थानीय, ज्ञान एवं कर्मशक्ति का स्रोत यह अग्नि द्युलोक का शिखर और पृथ्वीलोक का पालक है। सब कर्मों के बीज रूपों (प्रारम्भिक रूप में) को जीवन (पूर्णता) भी यही प्रदान करता है ॥७॥

३२३ २३ ३ १२ ३ १ २३ १ २र
इममू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम् ।
१ २ ३२३ १ २
अग्ने देवेषु प्र वोचः ॥ ८ ॥

हे उन्नायक अग्ने ! संविभाग का यह प्रशंसनीय

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

गायन हमारी इन्द्रियों को भली भांति सिखा दे ॥८॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र
तं त्वा गोपवनो गिरा जनिष्ठदग्ने अङ्गिरः ।
१ २ ३ १ २
स पावक श्रुधी हवम् ॥ ९ ॥

हे अंग-अंग में व्याप्त अग्ने ! इन्द्रियों (ज्ञान एवं कर्म शक्ति) को पवित्र रखने वाला भक्त ही तिरोहित तुझको स्तुति द्वारा प्रकट करता है । अविद्या आदि मलों को भस्म कर शुद्ध करने वाले तेजस्वरूप ! आप उस पुकार को सुनिये ॥९॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ।
२ ३ १ २ ३ १ २
दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ १० ॥

समृद्धि का अधिपति द्रष्टा अग्नि हमारे सब भोग्य पदार्थों और कर्मों में व्याप्त हो रहा है: देने वालों को वह विविध रत्न देता है ॥१०॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र ३ १ २
दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥ ११ ॥

सब प्रसिद्ध लोक आदि पदार्थों में विद्यमान उस दिव्य शक्ति को ज्ञान रश्मियां सबको दिखाने के लिए उठाये फिरती ही हैं; जैसे कि सूर्य की किरणें सूर्य को ॥११॥

३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २
कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे ।
३ १ २ ३ १ २
देवममीवचातनम् ॥ १२ ॥

हे मनुष्य ! इस जीवन यज्ञ में सत्य लक्ष्य के प्रापक द्रष्टा अग्नि की स्तुति कर । वह दिव्यशक्ति रूप है और दुःख, दर्द, रोग आदि को चाट जाता है ॥१२॥

१ २ ३ २३ १२ ३ १ २ ३ १२
शं नो देवीरभिष्टये शं नो भवन्तु पीतये ।
२उ ३ १ २
शं योरभि स्रवन्तु नः ॥ १३ ॥

दिव्य शक्तियां अभीष्ट आभ्यन्तर सुख समृद्धि के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

लिए हमारा कल्याण करें; वे हमारी पूर्ण तृप्ति के लिये कल्याणकारी हों; कल्याण और अभय को हमारे चारों ओर बहा दें ॥१३॥

१ २ ३१ २र ३ १ २
कस्य नूनं परीणसि धियो जिन्वसि सत्पते ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
गोषाता यस्य ते गिरः ॥ १४ ॥ (३)

हे सत्यरक्षक ! सत्यप्रापक ! जो उपासक आप की स्तुति करके अपनी इन्द्रियों को ज्ञान-प्रकाश से प्रकाशित कर लेता है उसके विविध विचारों और कर्मों को आप (अपने प्रभाव से) परिपूर्ण कर देते हैं ॥१४॥

इति तृतीया दशतिः । तृतीयः खण्डः ।

॥द० ४॥ ऋषिः—१, ३ शंयुः । २, ५, ८, ६ भर्गः । ४ वसिष्ठः । ६ प्रस्कण्वः । ७ तृणपाणिः । १० सौभरिः ॥ अग्निर्देवता ॥ बृहती छन्दः ॥ मध्यमः स्वरः ॥

३ १२ ३ १२ ३ १ २ ३ २ १
यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ २ ३ १ ३१२ ३२ ३१ २र
अग्न वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् ॥१॥

हे मनुष्यो ! तुम्हारा प्रत्येक यज्ञ अग्नि के लिए हो; प्रत्येक वाणी से तुम अग्नि को बढ़ाओ। हम उस अमर, सर्वज्ञ अग्नि को प्रिय मित्र मानते रहें ॥१॥

३१ २ ३ १२ ३१ २ ३१२
पाहि नो अग्न एकया पाह्यू३त द्वितीयया ।
३२ ३२ ३१२ ३१ २३१ २
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो ॥२

बलाधिपति एवं सबको बसाने वाले ज्ञानस्वरूप ! आप एक, दो, तीन; नहीं, नहीं चार दिव्यवाणियों—ऋक्, यजु, साम और अथर्व—द्वारा हमारी रक्षा करें ॥२॥

३१ २ ३ १ २ ३१२ ३ १२
बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा ।
३१ २ ३१२ ३१ २
भरद्वाजे समिधानो यविष्ठ्य रेवत्पावक दीदिहि ॥३॥

आहुति देने वाले भक्त के हृदय में प्रदीप्त; सदा युवा; शम, दम आदि ऐश्वर्य के प्रापक; अज्ञान आदि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मलों के अपहारक अतएव शोधक; ज्ञानाग्ने ! तू ज्ञान प्रकाश की बड़ी-बड़ी ज्वालाओं की शुभ्रकान्ति सहित चमक उठ; मन में सचेत हो जा ॥३॥

त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः ।
यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वं दयन्त गोनाम् ॥४॥

हे सुष्ठुतया सचेत अग्ने ! तेरे प्यारे जन, सब के प्रेरक, नियन्ता, शम-दम आदि आध्यात्मिक ऐश्वर्य के धनी और सर्वसाधारण के लिए बहुत से दिव्य प्रकाश के दाता बनते हैं ॥४॥

अग्ने जरितर्विश्पतिस्तपानो देव रक्षसः ।
अप्रोषिवान् गृहपते महाँ असि दिवस्पायुर्दुरोणयुः ॥

प्रस्तुत दिव्य अग्ने ! तू प्रजापालक एवं दुष्ट विचारों का नाशक है । कभी प्रवास न करने वाले गृहपते ! ज्ञान दीप्तावस्था को स्थायी रखता हुआ अपने घर (सुख लोक) में पहुँचने की इच्छा रखता

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

है; अतएव महान् है ॥५॥

२ ३ १२ ३१२ ३१ २र
अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्य ।
२ ३१२ ३ २३२ ३१ २३१ २
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवाँ उषर्बुधः ॥६

हे अमर, ज्ञानस्वरूप ! ज्ञानोदय के चित्र-विचित्र धन (ज्ञानैश्वर्य) को खोलकर, ज्ञानोदय के साथ आविर्भूत दिव्य-शक्तियों को समर्पण करनेवाले भक्त के लिये पहुँचा ॥६॥

१ २३२ ३१३ ३ १२
त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय ।
३ २ ३२र २र २१२ ३२ ३२ ३१ ४ २र
अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि बिदा गाधं तुचे तु नः॥

हे विलक्षण ! रक्षण शक्ति से बसाने वाले ! आनन्द-साधनों को हमारी ओर भेज । हे शक्ति-सम्पन्न ! इस समृद्धि का तू अधिष्ठाता एवं वाहक है; हमारी सन्तान के लिये भी कुछ आधार प्राप्त करा ॥७॥

२उ ३१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
त्वमित्सप्रथा अस्यग्ने त्रातर्ऋतः कविः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१र २र ३ १ २
त्वां विप्रासः समिधान दीदिव आ विवासन्ति
३ १ २
वेधसः ॥ ८ ॥

हे अग्ने ! तू रक्षक, परम सत्य और क्रान्तदर्शी प्रसिद्ध है; हे प्रकाशमान ! तुझे कर्मकाण्डी मेधावी जन आत्म-समर्पण की क्रिया से प्रत्यक्ष करते हैं ॥८॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आ नो अग्ने वयोवृधं रयिं पावक शंस्यम् ।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ ३
रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहं सुनीती सुयशस्तरम्॥९

हे पावक ! आप हमें जीवनोन्नायक अतएव प्रशंसनीय समृद्धि की स्थिति में पहुँचा दें। हे धारयिता ! शोभन नीति द्वारा हमें बहुजन-वांछित उत्तम कीर्ति को भी प्रदान करें ॥९॥

२उ ३ १२३ २ ३ १ २ ३र २र
यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम् ।
२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्वग्नये ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो दाता सब आवश्यक पदार्थों को पहुँचा कर मनुष्यों का सुखकारी बनता है; मधु के पात्रों की भांति मधुरता से भरी हमारी पहली स्तुतियां उसी नेता को प्राप्त हों ॥१०॥

इति चतुर्थी दशतिः । चतुर्थः खण्डः ।

॥ द० ५ ॥ ऋषिः—१ वामदेवः (वसिष्ठः) । २ भर्गः । ३, ७ सोभरिः । ४ मनुः । ५ सुदीतिपुरुमीढौ । ६ प्रस्कण्वः । ८ मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च । ९ विश्वामित्रः । १० कण्वः ॥ देवता-१-७, ९ १० अग्निः । ८ इन्द्रः ॥ बृहती छन्दः ॥ मध्यमः स्वरः ॥

३ १ २ ३ १ २र ३ १र २र ३ १ १
एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे।
३ १ २र ३ १ २ ३१ २र ३ २३१२
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् ॥१॥

अहंभाव के त्यागरूप इस आत्म-समर्पण के द्वारा मैं शक्ति को स्थायी रखने वाले अग्नि की उपासना करता हूँ। वह अग्नि प्रिय, चेतनाप्रद, शुभ व्यवहारों का प्रवर्तक, विश्व का दूत और अमर है ॥१॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
शेषे वनेषु मातृषु सं त्वा मर्तास इन्धते ।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ ३ १ २
अतन्द्रो हव्यं वहसि हविष्कृत आदिद्देवेषु राजसि ॥२॥

हे ज्योति स्वरूप ! आप मातृ-भूत भक्त-अन्तःकरणों में प्रसुप्त रहते हैं; भक्त जन आपको प्रदीप्त करते हैं । कर्म सम्पादक के लिये कर्म फल देने में आप कभी आलस्य नहीं करते अतएव दिव्यशक्तियों में आपका सर्वोत्कृष्ट स्थान है ॥२॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन्व्रतान्यादधुः ।
२ ३ २ ३ १ २र १ २ ३ १ २ ३ १ २
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनमग्निं नक्षन्तु नो गिरः ॥

उन्नततम स्थिति का मार्ग-प्रदर्शक दीख गया। इसको लक्ष्य में रख कर ही हम अपने संकल्प बनाते हैं। भली भांति प्रदीप्त, उन्नतिपथ के पथिक, (आर्य) को उत्साहित करने वाले अग्नि की ही हम स्तुति करेंगे ॥३॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१२ ३२
अग्निरुक्थे पुरोहितो ग्रावाणो बर्हिरध्वरे ।
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पते देवा अवो वरेण्यम् ॥

अग्नि स्तुति-यज्ञ का पुरोहित है; इस यज्ञ में स्तुतियां ही उत्तम आसन हैं। हे जीवन की दिव्य शक्तियो ! हे दिव्य वाणी के संरक्षक ! मैं स्तुति द्वारा वरणीय शरण में पहुँचूंगा ॥४॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निमीडिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम् ।
३ २ ३ १ २ ३ २३ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
अग्निं राये पुरुमीढ श्रुतं नरोऽग्निः सुदीतये छर्दिः ॥

हे मनुष्य ! शरण के लिये तो उस प्रसुप्त ज्योति-स्वरूप को स्तुतिगान से जगा। हे विविध ऐश्वर्य के इच्छुक ! ऐश्वर्य केलिए प्रसिद्ध अग्नि का आश्रय ले। ज्ञान रूपी प्रकाश के लिए तो उन्नति की ओर ले जाने वाला ज्ञानाग्नि ही शरण है ॥५॥

३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर्देवैरग्ने सयावभिः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २३१ २ ३ २
आ सीदतु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावभिरध्वरे॥

हे सुनने में समर्थ, ज्ञानवन्, मुनिये ! उन्नति-पथ की यात्रा रूप इस यज्ञ में आप प्रतिप्रातः साथ-साथ चलने वाली और कार्य भार में समर्थ दिव्य-शक्तियों को साथ लिये हुए मेरे हृदयासन पर विराजमान रहिये; इस समय आप का रूप विचारों और कर्मों में सामञ्जस्य और सुस्पष्ट विवेचना की दिव्य शक्ति हो ॥६॥

१ २र ३ २ ३२३ ३ २ ३ १ २
प्र दैवोदासो अग्निर्देव इन्द्रो न मज्मना।
१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३
अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य
१ २
शर्मणि ॥ ७ ॥

जैसे अन्तरिक्षस्थ सूर्य बल द्वारा पृथिवी की सेवा करता है वैसे ही प्रकाशदाता का दिव्य ज्ञानाग्नि 'नाक' (आनन्दमय कोश) में रहता हुआ अपने बल से पार्थिव चेतना (अन्नमय कोशस्थ) का भी सेवक है ॥७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
अध ज्मो अध वा दिवो बृहतो रोचनादधि ।
३ १ २ ३क २र ३ २उ ३ १ २
अया वर्धस्व तन्वा गिरा ममा जाता सुक्रतो पृण ॥८॥

हे शोभन कर्म के मूल ! तू पृथिवी का अधीश्वर हो या विराट् प्रकाशमान द्युलोक का हो; इस मेरी दिव्य वाणी को शरीर बनाकर बढ़ और सम्पूर्ण जीव जात को तृप्त कर ॥८॥

१ २ ३ २उ ३ १ २र ३ २
कायमानो वना त्वं यन्मातॄरजगन्नपः ।
१र २र ३ १ २ ३१२३ २ २ २उ ३ १ २
न तत्ते अग्ने प्रमृषे निवर्त्तनं यद् दूरे सन्निहाभुवः ॥६

हे शुभ संकल्पाग्ने ! अपने भोग्यों की कामना करता-करता जो तू अपने मातृभूत जलों में पहुँच जाता है अर्थात् ठंडा पड़ जाता है; तेरे इस लौटने को मैं सहन नहीं कर सकता कि तू यहां रहता हुआ भी दूर हो जाता है ॥६॥

१र २र र १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति
३ १ २
कृष्टयः ॥ १० ॥

इति प्रथमप्रपाठके प्रथमोऽर्धः ।

हे अग्ने ! मनन शील ने तेरा मनन किया है; तू नाना जनोंका ज्योति पथ-प्रदर्शक है । तुझ कर्मिष्ठ को हम आत्म-समर्पण करते हैं और ऋत से प्रकाशित एवं आनन्द से सिञ्चित तू मेधावी के अन्तः-करण में प्रदीप्त होता है ॥१०॥

॥ इति पञ्चमी दशतिः । पञ्चमः खण्डः ।
अर्धः प्रपाठकः समाप्तः ॥

॥द० ६॥ ऋषिः—१, ७ वसिष्ठः । २, ३, ५ कण्वः । ४ सोभरिः । ६ उत्कीलः । ८ विश्वामित्रः । देवता १, ४-८ अग्निः । २ ब्रह्मणस्पतिः । ३ यूपः ॥ बृहती छन्दः ॥ मध्यम स्वरः ॥

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्वासिचम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
उद्धा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्वो देव ओहते ॥१॥

हे मनुष्यो ! तुम्हारा इष्टदेव ऐश्वर्य-प्रदाता है; अतएव वह भरी हुई आहुति अर्थात् पूर्ण आत्म-समर्पण चाहता है। पूरा भर दो अथवा तृप्त कर दोगे तो वह तुम्हारे लिए शीघ्र ही ऐश्वर्य उठा ले आयेगा ॥१॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३क २र ३ १ २
प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता ।
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ १
अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ॥ २ ॥

वेदवाणी का संरक्षक और उसकी दिव्य वाणी हमें प्राप्त हों। दिव्य शक्तियां हमारे जीवन-यज्ञ का नेतृत्व करें जो यज्ञ वीर प्रापक, मानव के लिए हित-कारी और पांच (ज्ञान एवं कर्मेन्द्रिय) से साध्य है ॥२॥

* २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ १र २र ३ २
ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्वि-
१ २
ह्वयामहे ॥ ३ ॥

प्रकाश पुञ्ज, प्रेरक सूर्य की न्याईं हे अग्ने ! तू रक्षा के लिए हम पर विराजमान रह। हमारा अधिष्ठाता बना हुआ तू फलदाता बना रह और हम तुझे चाहती हुई अपनी वाणियों से तेरी स्तुति करते रहें ॥३॥

२उ २ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र यो राये निनीषति मर्तो यस्ते वसो दाशत्।
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनं त्मना सहस्र-
३ १ २
पोषिणम् ॥ ४ ॥

जो मरणशील अमर धन को पहुँचना चाहता है और हे बसाने वाले ! जो तुझे आत्म-समर्पण करता है वह हे अग्ने ! अपने सामर्थ्य से वेदवक्ता एवं हजारों का पोषण करने में समर्थ वीर पुत्र को प्राप्त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कर लेता है ॥४॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र वो यह्वं पुरूणां विशां देवयतीनाम् ।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २र ३ २
अग्निं सूक्तेभिर्वचोभिर्वृणीमहे यं समिदन्य
३ १ २
इन्धते ॥ ५ ॥

जिस तेजस्वी संकल्पाग्नि को अन्य जन हृदय में प्रदीप्त करते हैं उस दिव्यताधायक नाना प्रजाओं के पूज्य अग्नि को सूक्ति वचनों से हम भी स्वीकार करते हैं ॥५॥

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
अयमग्निः सुवीर्यस्येशे हि सौभगस्य ।
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
राय ईशे स्वपत्यस्य गोमत ईशे वृत्रहथानाम् ॥६॥

यह अग्नि उत्तम बल और सौभाग्य (पाप, भ्रांति और पीड़ा की निवारक भावना) का राजा है; यही ऐश्वर्य और सुसन्तान-सुबुद्धि का देने वाला है। उन्नति-पथ के बाधक विघ्नों के विनाशक प्रकाशमय

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

साधनों का प्रापक भी यही अग्नि है ॥६॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं होता नो अध्वरे।
१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२
त्वं पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि यासि च वार्यम् ॥७

हे अग्ने ! तू घर का स्वामी और उन्नति यज्ञ का होता है। हे विघ्न नाशक ! तू ही हमारे कर्मों का पोषक, प्रकृष्ट ज्ञानी है और वरण करने योग्य ऐश्वर्य को देता भी है स्वयं भी प्राप्त करता है ॥७॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २
सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्तास ऊतये।
३ १ २र ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अपां नपातं सुभगं सुदंससं सुप्रतूर्तिमनेहसम् ॥८॥

हे अग्ने ! तेरे साथी हम मर्त्य अपनी रक्षा के लिये तुझ देव को चुनते हैं। तू कर्मों की निरन्तरता को स्थापित रखने वाला, मूर्तिमान् सौभाग्य, उत्तम पुरुषार्थ का प्रवर्तक, फुर्तीला और निष्पाप है ॥८॥

इति षष्ठी दशतिः। षष्ठः खण्डः।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ द० ७ ॥ ऋषिः—१ श्यावाश्वो वामदेवो वा । २ उपस्तुतः । ३ बृहदुक्थः । ४ कुत्सः । ५, ६ भरद्वाजः । ७ वामदेवः । ८, १० वसिष्ठः । ९ त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः ॥ अग्निर्देवता ॥ छन्दः—१, ३, ५, ६ त्रिष्टुप् । २, ४ जगती । १० त्रिपाद्विराड् गायत्री ॥ स्वरः—१, ३, ५-६ धैवतः । २, ४ निषादः । १० षड्जः ॥

१ २ ३ १ २ ३
आ जुहोता हविषा मर्जयध्वं
१ २र ३ १ २
नि होतारं गृहपतिं दधिध्वम् ।
३ २ ३ १ २र ३ १ २
इडस्पदे नमसा रातहव्यं
३ १ २ ३ २ ३क २र
सपर्यता यजतं पस्त्यानाम् ॥ १ ॥

हे मनुष्यो ! आहुति दो और कर्म की आहुति से अपने आपको शुद्ध कर लो । होता गृहपति का निदिध्यासन करो । प्रजाओं के पूजनीय, हव्यदाता अग्नि की तुम आत्म-समर्पण द्वारा अन्तःकरण में पूजा करो ॥१॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३२उ ३ १२ ३२ ३
चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य वक्षथो
२उ ३१ २३ २ ३ १२
न यो मातरावन्वेति धातवे ।
३ १ २र ३१२ ३ २
अनूधा यदजीजनदधा चिदा
३१२ ३ १ २र ३ २१२
ववक्षत् सद्यो महि दूत्यां३चरन् ॥२॥

उस बालक रूपी युवा अग्नि की वहन-शक्ति भी बड़ी अद्भुत है ! पालन-पोषण के लिए वह माता-पिता पर निर्भर नहीं है । स्तनरहित माता ने उसे जो जन्म दिया कि वह तुरन्त महत्वशाली दूत कर्म का भार उठाने लगता है । संकल्परूप अग्नि का सामर्थ्य स्वाभाविक है; दिव्यशक्ति के आधान में वह अत्यंत समर्थ है ॥२॥

३२ ३ १२ ३१ २ ३ १२
इदं त एकं पर ऊ त एकं
३ १२३ १ २ ३ १ २
तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ २ १ २
संवेशनस्तन्वे३ चारुरेधि
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
प्रियो देवानां परमे जनित्रे ॥ ३ ॥

हे परमदेव ! यह तेरी एक ज्योति है जो दृश्यमान स्थूल जगत् को आलोकित कर रही है; दूसरी ज्योति चेतनों में चेतनता झलकाती है; तीसरी आनन्दरूप ज्योति से तू सब में व्यापक है। शरीरधारी के लिए आनन्दरूप में प्रकट होता हुआ तू उस सर्वोत्कृष्ट जन्म में दिव्य शक्तियों का प्रिय बन ॥३॥

३ २उ ३ १ २ ३ १२ ३
इमं स्तोममर्हते जातवेदसे
१ २ ३ १ २ ३ १ २
रथमिव सं महेमा मनीषया।
३ २ उ ३ १ २ ३ १
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संस-
२ र ३ १ २र ३ १ २र
द्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ४ ॥

हम अपनी विवेक बुद्धि के द्वारा पूजनीय, सर्वज्ञ,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्योतिस्वरूप को रथ की भांति रमणीय एवं वहन-समर्थ स्तुतिगान भेंट करते हैं। इस ज्योतिस्वरूप के संगम से हमारी प्रकृष्ट मति कल्याणकारिणी बनी रहे। हे अग्ने ! तेरी मित्रता से हमें कभी दुःखी न हों ॥४॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या
२ ३ २ ३ २ ३ ३ २ ३ २
वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्।
३ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
कविं सम्राजमतिथिं जनाना-
३ २ ३ १ २ ३ २
मासन्नः पात्रं जनयन्त देवाः ॥ ५ ॥

दिव्य शक्तियों में सर्वश्रेष्ठ, पार्थिव प्राणियों के सुखप्रापक, प्राणिमात्र में व्यापक परन्तु ऋत में प्रादुर्भूत, द्रष्टा, अत्यन्त प्रकाशमान, मनुष्यों के पूजनीय रक्षक, (संकल्प रूप) अग्नि का साक्षात्कार हमारी इन्द्रियां करती हैं ॥५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२उ ३ १ २र ३ २
वि त्वदापो न पर्वतस्य पृष्ठा-
३ १ २ ३ २
दुक्थेभिरग्ने जनयन्त देवाः ।
२ ३ १ २ ३१ २
तं त्वा गिरः सुष्टुतयो वाजय
३ १ २र३ १ २ ३१ २
न्त्याजिं न गिर्ववाहो जिग्युरश्वाः ॥ ६ ॥

हे अग्ने ! जैसे मेघ से जल वैसे तुझसे विद्वज्जन स्तुति वचनों द्वारा विविध कर्मों की प्रेरणा प्राप्त करते हैं। इशारे से चलने वाले घोड़े जैसे युद्ध को बल प्रदान करते हैं वैसे ही भली भांति की गई स्तुतियां तुझे बढ़ाती हैं ॥६॥

२ ३ १ २ ३१ २ ३१
आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं
२र ३ २ ३ १ २
होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।
३ २ ३ १ २ ३ २३ २ ३
अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ता-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २
द्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम् ॥ ७ ॥

हे मनुष्यो ! चेतनशक्ति द्वारा झंकृत शरीर के निष्चेष्ट हो जाने से पहले ही आत्मयज्ञ के अधिष्ठाता, अन्यायादि विघ्नापहारक, होता, लोकों में सत्य प्राप्ति के यज्ञ को रचने वाले तेजस्वी अग्नि को अपनी रक्षा के लिए तैयार कर लो ॥७॥

३ २३ ३ २ ३ १ २र ३
इन्धे राजा समर्यो नमोभि-
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
र्यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन।
१ २ ३ १ २ ३ २३
नरो हव्येभिरीडते सबाध
१ २र ३ १ २
आग्निरग्रमुषसामशोचि ॥ ८ ॥

जिसके चिन्ह भूत भौतिक अग्नि को घृत से प्रदीप्त करते हैं, वह कीर्तिमान् ईश्वर अहंकार त्याग रूप समर्पण से प्रत्यक्ष होता है। विघ्न-बाधाओं से घिरे मनुष्य हविरूप कर्मों से ही उसकी स्तुति करते

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हैं और ज्ञान-दीप्तियों का अग्रणी वह अग्नि जागृत हो उठता है ॥८॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
प्र केतुना बृहता यात्यग्नि-
२र ३ १ २
रा रोदसी वृषभो रोरवीति ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २र
दिवश्चिदन्तादुपमामुदान-
३ २३१ २ ३ १ २
डपामुपस्थे महिषो ववर्ध ॥ ९ ॥

वह ज्ञानी ज्ञान की बड़ी ध्वजा को लिये आगे बढ़ रहा है; वह बलशाली ज्ञानवर्षक द्यु लोक के अन्त-दूर के छोर—से मुझे प्राप्त हुआ है और दोनों लोकों को गुंजा रहा है । वह महान् शुभ कर्मों की सुखद गोदी में और भी अधिक बढ़ता है ॥९॥

३२३ ३ १ २ ३२ ३
अग्निं नरो दीधितिभिररण्यो
१ २ ३ २
र्हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २ ३१ २ ३ २
दूरेदृशं गृहपतिमथर्व्युम् ॥ १० ॥ (७)

हे मनुष्यो ! ज्ञान और कर्म की शक्तियों द्वारा मन और बुद्धि की अरणियों में से हाथ में आये (प्रत्यक्ष हुए) अग्नि देव को तुम अपने भीतर प्रकट करो। वह अग्नि दूर-दूर तक दिखाने वाला, हमारी आत्मिक सत्ता का स्वामी और इसका स्थिर निवासी है ॥१०॥

इति सप्तमी दशतिः। सप्तमः खण्डः।

॥द० ८॥ ऋषिः—१ बुधगाविष्ठरौ। २, ५ वत्सप्रीः। ३ भरद्वाजः। ४, ७ विश्वामित्रः। ६ वसिष्ठः। ८ पायुः॥ देवता-१, २, ४-८ अग्निः। ३ पूषा॥ त्रिष्टुप् छन्दः॥ धैवतः स्वरः॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३
अबोध्यग्निः समिधा जनानां

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्।

३ १ २३ २ ३ २३ १ २ ३
यह्वा इव प्र वयामुज्जिहानाः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १२ ३ २३ १ २
प्र भानवः सस्रते नाकमच्छ ॥ १ ॥

आनन्द-दूध देने वाली धेनु रूप उषा के प्रति अर्पित अर्थात् ऐसे दिव्य अरुणोदय के समय दी गई आहुति से यह अग्नि प्रदीप्त होता है। व्यापक सुख नीति (वयाम्) के प्रति जिस प्रकार महान् धार्मिक जन (यह्वाः) उत्सुक होते हैं, उसी प्रकार ज्ञान की किरणें सुखसदन (महान् ज्योति) की ओर उत्क्रमण करती हैं ॥१॥

२ ३ १२ १ ३ १ २ ३ २
प्र भूर्जयन्तं महां विपोधां

३१ २र ३ २ ३ १२
मूरैरमूरं पुरां दर्माणम् ।

१ २ ३ २ ३ १ २र ३
नयन्तं गीर्भिर्वना धियं धा

१ २ ३ १ २र ३ २
हरिश्मश्रुं न वर्मणा धनर्चिम् ॥ २ ॥

उस जयशील, मेधावियों के रक्षक, मूढ़ों द्वारा अधिष्ठित नगरियों को नष्ट करने वाले, अमर अग्नि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पर अपना प्रभुत्व जमा; स्तुतियों द्वारा वांछित के प्रापक को अपनी विचारशक्ति का लक्ष्य बना। वह चमकीली किरणों वाले सूर्य की भांति अपनी रक्षण शक्ति से विभूतिमान् है ॥२॥

३ १   २ ३   १   २ ३ १   २   ३ १
शुक्रं ते अन्यद् यजतं ते अन्यद्

२र ३ १ २ ३ १ २
विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि ।

२ ३ २   १ १   २र
विश्वा हि माया अवसि स्वधावन्

३ १ २   ३ २   ३ १ २
भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु ॥ ३ ॥

हे पोषक ! तेरा ज्ञान की किरणों से चमकता रूप एक है तथा कर्मशक्ति से सम्पन्न रूप दूसरा है । तू दो भिन्न रूपों वाले दिन रात को धारण करने वाले द्युलोक की भांति विद्यमान है। हे अमृतमय ! तू सब रूपों की रक्षा करता है; हे पोषक ! तेरी मंगलमयी दानलीला सदा बनी रहे ॥३॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३१२ ३ १
इडामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः
२र ३१ २र
शश्वत्तमं हवमानाय साध ।
१ २ ३१ २र ३ २उ
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावा-
३ १ २ ३१ २ ३ २
ग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ ४ ॥

हे ज्ञानमय ! आत्मसमर्पक स्तोता को विविध कर्मों की साधिका ज्ञान-किरण वती सत्यवाणी निरन्तर देते रहिये । हे अग्ने ! हम पर तेरी ऐसी सुमति बनी रहे कि इस वाणी की संतति रूपा प्रेरणा आगे-आगे अधिकाधिक विस्तृत और फलवती हो ॥४॥

१ २र ३ २ ३ १२ ३ २
प्र होता जातो महान्नभोवि-
३१ २ ३ १ २३२
न्नृषद्मा सीददपां विवर्ते ।
२३ २ ३ २ ३१ २र
दधद्यो धायी सुते वयांसि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र ३ १ ३२ २
यन्ता वसूनि विधते तनूपाः ॥ ५ ॥

शरीरों का धारक अग्नि इस जीवन-यज्ञ में नये ऐश्वर्य की व्यवस्था करता है : वह यज्ञसम्पादक, प्रत्यक्ष होते ही महान् है; सब अन्तराल में व्यापक भी मनुष्यों के भीतर (अन्तःकरण में) बैठा हुआ कर्मचक्र का अधिष्ठाता है। उड़ने की शक्ति से युक्त पक्षि रूप मनः शक्तियों का धारक एवं नियामक है ॥५॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ २
प्र सम्राजमसुरस्य प्रशस्तं

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पुंसः कृष्टीनामनुमाद्यस्य ।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृतानि

३ १ २ ३ १ २
वन्दद्वारा वन्दमाना विवष्टु ॥ ६ ॥

कर्मठ मनुष्यों को आनन्दित कर स्वयं प्रसन्न होने वाले सप्राण पुरुष के शोभाशाली प्रशंसनीय

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्वरूप की, इन्द्र के अज्ञाननाश आदि वन्दनीय वीरता कार्यों की भान्ति स्तुति पूर्वक अभिलाषा करे ॥६॥

३२ ३ १ २ ३ १ २ ३
अरण्योर्निहितो जातवेदा
१ २ ३ १ २र ३ १ २
गर्भ इवेत्सुभृतो गर्भिणीभिः ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भि-
३ १ २ ३क२र ३ २
र्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः ॥ ७ ॥

जैसे गर्भिणी स्त्रियां सावधान हो गर्भ को सुरक्षित रखती हैं वैसे ही मन और बुद्धि रूप अरणियों में सुरक्षित सर्वगत ज्वाला को जागरूक मनुष्य कर्म की आहुतियों से प्रतिदिन प्रदीप्त करते हैं ॥७॥

३ १२ ३ २ ३ २
सनादग्ने मृणसि यातुधानान्न
३ १ २ ३ १२
त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २ ३ २ ३
अनु दह सहमूरान्कयादो
१ २ ३ १ २ ३ १ २
मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः ॥ ८ ॥

हे दिव्य ज्वलन ! तू मार्ग के कंटकों को कभी से नष्ट करता आया है। संग्रामों में ये अवरोधक कभी तुझे जीत नहीं पाये। दूसरे के मांसाशियों को तू समूल जला डाल; तेरे दिव्य शस्त्र की मार से बच कर वे निकलने न पावें ॥८॥

इति अष्टमी दशतिः। अष्टमः खण्डः।

॥ द० ९ ॥ ऋषिः—१ गय आत्रेयः। २ वामदेवः। ३, ४ भरद्वाज। ५ सूक्तवाहा द्वितः। ६ वसूयव आत्रेयाः। ७, ९ गोपवनः। ८ पुरुरात्रेयः। १० वामदेवः कश्यपो वा मारीचो मनुर्वा वैवस्वत उभौ वा ॥ अग्निर्देवता ॥ अनुष्टुप् छन्दः ॥
गान्धारः स्वरः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अग्न ओजिष्ठमा भर द्युम्नमस्मभ्यमध्रिगो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३१ २र ३ २ ३ १ २३ १ २
प्र नो राये पनीयसे रत्सि वाजाय पन्थाम् ॥१॥

सत्य धन की ओर ले जाने वाले हे अग्ने! हमें तेजस्वी ज्ञानधन पहुँचा; प्रशंसनीय ऐश्वर्य और उन्नति की ओर गति के लिए मार्ग तैयार करना ही तुम्हारा कार्य है ॥१॥

१ २ ३२३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
यदि वीरो अनु ष्यादग्निमिन्धीत मर्त्यः।
३ १ २३ १ २३१ २र ३ १ २
आजुह्वद्धव्यमानुषक् शर्म भक्षीत दैव्यम् ॥ २॥

मनुष्य वीर बन कर हृदय में ज्ञानाग्नि को प्रज्वलित करे; निरन्तर कर्म की हवि देता जाय और दिव्य आनन्द को भोगता जाय ॥२॥

३१ २ ३ १ २ ३ २३ ३ १ २र
त्वेषस्ते धूम ऋण्वति दिवि सं च्छुक्र आततः।
२ ३ २३ ३ २३ ३ १ २ ३ १ २
सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे ॥ ३ ॥

हे ज्योतिर्मय! तेरी चमचमाती धाक अन्तरिक्षमें

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

फैलती जा रही है। जैसे सूर्य अपनी चमक से वैसे तू अपनी सामर्थ्य से शोभायमान है ॥३॥

१ २र ३ १ २र ३ १ २र
त्वं हि क्षैतवद्यशोऽग्ने मित्रो न पत्यसे।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
त्वं विचर्षणे श्रवो वसो पुष्टिं न पुष्यसि ॥ ४॥

हे अग्ने ! ऐश्वर्यवान् होने की ख्याति सूर्य की भांति तुझे भी प्राप्त है। हे सर्वद्रष्टा ! वसो ! तू श्रुतिज्ञानरूपी पोषण देकर पुष्टि करता है ॥४॥

३२३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ १ २
प्रातरग्निः पुरुप्रियो विश स्तवेतातिथिः।
२ ३ २ ३ १२ ३१ २र ३ १ २
विश्वे यस्मिन्नमर्त्ये हव्यं मर्तास इन्धते ॥ ५॥

जिस अमर को सब मनुष्य अपनी कर्माहुति प्रदान करते हैं, हे मनुष्यो ! तुम सब के प्यारे सर्वव्यापक उस अग्नि की सब से पहले स्तुति करो ॥५॥

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
यद्वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च विभावसो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ २उ १ १ २
महिषीव त्वद्रयिस्त्वद्वाजा उदीरते ॥ ६ ॥

सुखपूर्वक पहुँचाने का सर्वोत्तम साधन जो भी कुछ है वह अग्नि को समर्पित है । हे प्रकाशमय ! विराट् में पहुँचा दीजिये । आपके दान तो बहुत बड़े हैं; उन्नति दिशा की गतियां (वाजाः) भी आपसे ही प्रेरणा प्राप्त करती हैं ॥६॥

३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ २
विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् ।
३ २ ३ २ ३ १२ ३ २ ३२ ३ १ २
अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः ॥७॥

हे मनुष्यो ! प्रजा में से प्रत्येक व्यक्ति सर्वप्रिय अतिथिरूप सर्वव्यापक अग्नि की अर्चना करे । मैं उस गृहागत अग्निकी स्तुति परमानन्द की चेतनाओं और वचन से करता हूँ ॥७॥

३ २उ ३ २ ३१ २र ३ २ ३ १ २
बृहद्वयो हि भानवेऽर्चा देवायाग्नये ।
२ ३ १ २र ३ १ २ ३२ ३२
यं मित्रं न प्रशस्तये मर्त्तासो दधिरे पुरः ॥८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उत्तम कीर्ति के लक्ष्य से जिस अग्नि को मित्र की भांति अपना नेता बनाते हैं उस कीर्तियुक्त दिव्य अग्नि को अपनी लम्बी आयु अर्पित करदे ॥८॥

१ २ ३१ २ ३ १२३ १ २र

अगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम् ।

१ २ ३१२ ३ २ ३१२ ३ १२

यः स्म श्रुतर्वन्नार्क्ष्ये बृहदनीक इध्यते ॥ ६ ॥

हमने उस अज्ञान-पाप-निवारक, सर्वश्रेष्ठ, नित नये अग्नि को जान लिया है जो श्रुतिज्ञान के प्रापक, इन्द्रिय सम्बन्धी महान् संघर्ष (अनीक = युद्ध) में प्रत्यक्ष होता है; जो कठिनतम ज्ञान-कर्मेन्द्रिय-संघर्ष का विषय है ॥६॥

३ १ २र३ १ २३ २ ३१ २ ३१२

जातः परेण धर्मणा यत्सवृद्भिः सहाभुवः ।

३ २उ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २र

पिता यत्कश्यपस्याग्निः श्रद्धा माता मनुः

३ २

कविः ॥ १० ॥ (६)

उत्कृष्ट धर्म से प्रकट (प्रत्यक्ष) हुआ तू अपने

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

साथियों के साथ विद्यमान रहता है। तुम्ह द्रष्टा का पितृरूप ज्ञानाग्नि है, धारणावती बुद्धि माता और मननशील क्रान्तदर्शी गुरु हैं ॥१०॥

इति नवमी दशतिः। नवमः खण्डः ॥

॥ द० १० ॥ ऋषिः—१ अग्निस्तापसः। २, ३ वामदेवः। असितो देवलो वा। ४ सोमाहुतिर्भार्गवः। ५ पायुः। ६ प्रस्कण्वः ॥ देवता-१ विश्वेदेवाः। २ अङ्गिराः। ३-६ अग्निः॥ अनुष्टुप् छन्दः॥ गान्धारः स्वरः॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
सोमं राजानं वरुणमग्निमन्वारभामहे।
३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ॥१॥

हम परम प्रभु की सोम, राजा, वरुण, अग्नि, आदित्य, विष्णु, सूर्य, ब्रह्मा और बृहस्पति से अभिधेय नाना दिव्य शक्तियों का आश्रय लेते हैं ॥१॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ र
इत एत उदारुहन्दिवः पृष्ठान्या रुहन्।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
प्र भूर्जयो यथा पथोद्यामङ्गिरसो ययुः ॥ २ ॥

यहां से ये आनन्दमय लोक में पहुँच गये; उसी मार्ग से जिससे कि इस लोक के विजेता भक्त उच्च अवस्था में पहुँचे । ७॥

३ १ २ ३२ ३ १ २३ १ २
राये अग्ने महे त्वा दानाय समिधीमहि ।
१ २ ३ २ ३१ २३ १ २ ३ १२ ३ २
ईडिष्वा हि महे वृषन् द्यावा होत्राय पृथिवी ॥३॥

हे ज्ञानधन ! महान रमणीय दान के लिए हम तुझे हवि देकर प्रदीप्त करते हैं । समग्र ब्रह्मांड (द्यावा पृथिवी) ही तो विशाल यजन के लिये है : हे समर्थ ! उसी की तू उपासना कर ॥३॥

३ २ ३ २ ३२३ २ ३ २३ ३ २३ २
दधन्वे वा यदीमनु वोचद् ब्रह्मेति वेरु तत् ।
२३ १ २३ १ २ ३ २ ३ १ २
परि विश्वानि काव्या नेमिश्चक्रमिवाभुवत् ॥४॥

जिसको तू पहले धारण करता है और पीछे मुंह से उच्चारण करता है, उसे ब्रह्म = वेद-वाणी जान ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जैसे लोहे की हाल चक्र को घेरे रहती है, वैसे ही यह दिव्य वाणी सब काव्यों को घेरे हुए है ॥४॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणाहि विश्वतस्परि ।
३ १ २ ३ २ ३ २ ३क २र ३क २र
यातुधानस्य रक्षसो बलं न्युब्ज वीर्यम् ॥ ५ ॥

हे शक्ति के पुञ्ज ! तू अपने तेज से प्रतिद्वन्द्वी तेजों को चारों ओर से काट डाल; कष्ट देने वाले राक्षस के वीर्य और बल को कुण्ठित करदे ॥५॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३१ २ ३ २ ३२
त्वमग्ने वसूँरिह रुद्राँ आदित्याँ उत ।
१ २ ३२३ ३ १ २ ३१२
यजा स्वध्वरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम् ॥६॥(१०)

हे ज्ञान-कर्म-प्रेरक ! आप यहां इस यज्ञ में, सुकर्मा एवं ज्ञान-रूप घृत का सिंचन करने वाले मननशील मानव को (गुणों के आधान से) वसु, रुद्र और आदित्य संज्ञक बना दें ॥६॥

इति दशमी दशतिः । दशमः खण्डः ।

प्रथमश्च प्रपाठकः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ द्वितीयप्रपाठके प्रथमोऽर्धः ॥

॥ द० १ ॥ ऋषिः–१ दीर्घतमाः २, ४ विश्वामित्रः । ३ गोतमः । ५ त्रितः । ६ इरिम्बिठिः । ७, ८, १० ९ विश्वमना वैयश्वः । ऋजिश्वा भारद्वाजः ॥ देवता-१-४, ७-१० अग्निः । ५ पवमानः । ६ अदितिः ॥ उष्णिक् छन्दः ॥ ऋषभः स्वरः ॥

३१ २ ३ १ २ ३ १ २ १ १२ ३ २
पुरु त्वा दाशिवां वोचेऽरिरग्ने तव स्विदा ।
३१ २ ३२३ ३१ २
तोदस्येव शरण आ महस्य ॥ १ ॥

हे अग्ने ! मैं जो तेरा ही अरि (अन्याय से सब कुछ हड़प करने वाला) था, आज देने वाला बनकर तेरी भर पेट स्तुति करता हूँ मानो किसी बड़े पीड़क के वश हो गया हूँ ।१॥

१ २र ३२३ ३ १२ ३२
प्र होत्रे पूर्व्यं वचोऽग्नये भरता बृहत् ।
३ १ २र ३ १ २३ २ ३१२
विपां ज्योतींषि बिभ्रते न वेधसे ॥ २ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे मनुष्यो ! वाणियों के तेज से तेजस्वी ज्ञानी के सदृश इस होता अग्नि की पहले जैसी की गई हैं वैसी नाना स्तुतियां करो ॥२॥

२ ३ १२ ३ १ २३ १ २
अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो।
३ १ २ ३ २ ३ १ २
अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः ॥ ३ ॥

प्रकाशयुक्त ज्ञानघन के अधिष्ठाता,, बल के पुत्र, सर्वव्यापक अग्ने ! हमें महान् अन्तर्ज्ञान प्रदान कीजिये ॥३॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २
अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवान् देवयते यज।
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
होता मन्द्रो वि राजस्यति स्रिधः ॥ ४ ॥

हे अग्ने ! तू सर्वश्रेष्ठ यज्ञ-सम्पादक है; इस आत्मिकयज्ञ में दिव्यशक्ति के इच्छुक मेरे लिए दिव्य-शक्तियों का मेल करा। तू सुख देनेवाला और हिंसकों को जीत कर शोभायमान होता है ॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३२ ३ १ २३ १ २र ३२
जज्ञानः सप्त मातृभिर्मेधामाशासत श्रिये ।
३ २ १ १ २ ३ १ २ ३ २
अयं ध्रुवो रयीणां चिकेतदा ॥ ५ ॥

वह ज्ञानमय ज्ञान-साधिका (मातृभूत) सात अन्त:प्रेरणाओं से उत्पन्न (प्रत्यक्ष) होकर विभूति के हेतु धारणा-शक्ति पर शासन करता है। यह स्थायी, अध्यात्म-सम्पत्तियों को भली भांति प्रकाशित करता है ॥५॥

३२उ ३ १ २ ३१ २र ३ १ २
उत स्या नो दिवा मतिरदितिरूत्या गमत् ।
१ २र ३ १ २ ३२३ १ २
सा शन्ताता मयस्करदप स्रिधः ॥ ६ ॥

अखण्डनीय सत्ता को प्राप्त करने की वह विचारधारा हमारी रक्षार्थ हमें दिन रात प्राप्त रहे; वह मननशक्ति जहां-तहां शान्ति का विस्तार करे और सत्यज्ञान के अवरोधकों को दूर हटाकर हमारा कल्याण करे ॥६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ईडिष्वा हि प्रतीव्यां३ यजस्व जातवेदसम् ।
चरिष्णुधूममगृभीतशोचिषम् ॥ ७ ॥

हे मनुष्य ! वस्तु-वस्तु में पहुँचे हुए—व्यापक-अग्नि को ही प्रदीप्त कर। उस सर्वगत को हवि दे जिसकी धाक सर्वत्र है और कान्ति सदा अप्रतिहत है ॥७॥

न तस्य मायया च न रिपुरीशीत मर्त्यः ।
यो अग्नये ददाश हव्यदातये ॥ ८ ॥

जिसने निष्काम कर्म के प्रेरक अग्नि के प्रति आत्म-समर्पण कर दिया, उस पर उसका शत्रु छल-कपट से भी अधिकार नहीं कर सकता ॥८॥

अप त्यं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम् ।
दविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम् ॥ ९ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सत्यप्रापक अग्ने ! तू कुटिल, शत्रु स्वभाव, चोर और दुष्ट प्रकृति को दूर फेंक कर (दुष्ट पुरुष के स्वभाव को बदल कर) उसे हमारे लिए सुगम बना दे ॥९॥

३क २र ३ १ २ ३ १ २
श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विश्पते ।
२ ३२ ३ १ २ ३ १ २
नि मायिनस्तपसा रक्षसो दह ॥ १० ॥ (११)

हे प्रजापालक वीर ! मेरी इस अभी की गई (अभिनव) प्रार्थना को सुन और (मेरे) मायावी दुष्ट विचारों को अपने तेज से भस्म कर दे ॥१०॥

इति प्रथमा दशतिः । एकादशः खण्डः ।

॥ द० २ ॥ ऋषिः—१ प्रयोगो भार्गवः । ४ प्रयोगो भार्गवः सोभरिः काण्वो वा । २, ३, ५—७ सोभरिः । ८ विश्वमनाः ॥ अग्निर्देवता ॥ ककुप् छन्दः ॥ ऋषभः स्वरः ॥

१ २र ३ १ २ ३२ ३ १ २
प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ २ १
उपस्तुतासो अग्नये ॥ १ ॥

स्तुति से स्वयं स्तुतिपात्र बने स्तोताओ ! उस परम दानशील, सत्य की ओर ले जाने वाले, महान् विशुद्ध ज्योतिःपुञ्ज, दिव्य अग्नि के गीत गाओ ॥१॥

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाजकर्मभिः ।
२ ३ २ ३ १ २र
यस्य त्वं सख्यमाविथ ॥ २ ॥

हे ज्ञानकर्ममय अग्ने ! जिसका तू साथी बन जाता है, वह तेरे वीरतापूर्ण रक्षासाधनों (ऐश्वर्य-साधक कर्मों) की सहायता से तर जाता है ॥२॥

१ २ ३क २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे ।
३ २ ३ १ २
देवत्रा हव्यमूहिषे ॥ ३ ॥

सुखस्वरूप तक पहुँचा देने वाले उस अग्नि की स्तुति कर, जिस दिव्यशक्ति को हमारी इन्द्रियां यह

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

महान् कार्य सौंपती हैं ।३।।

१ २ ३ १ २ ३ १ २३ १ २ ३ २ ३२
मा नो हृणीथा अतिथिं वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः।
२ ३ १ २ ३२
यः सुहोता स्वध्वरः ।। ४ ।।

इस हमारे सर्वव्यापक अतिथि को रुष्ट मत कर। सबको बसाने वाला यह अग्नि अत्यन्त प्रशंसनीय है। यह हमारा उत्तम होता और श्रेष्ठ कर्मों का सम्पादक है ।।४।।

३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२
भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः।
३ २ ३१ २र
भद्रा उत प्रशस्तयः ।। ५ ।।

भली भांति उपासित अग्नि हमारा कल्याण करे। हमारा दान कल्याणकारी हो। ऐश्वर्यवान् यज्ञ कल्याणकारी हो और संकीर्तन भी सुखप्रद हों ।।५।।

१ २ ३१ २३ १ २र३ १२
यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम्।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३१ २ ३ १ २
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥६ ॥

हे सर्वोत्तम यज्ञसम्पादक ! देवों के देव, अमर अग्ने ! इस जीवन-यज्ञ का उत्तम रीति से निर्वाह करने के लिए हम आपको स्वीकार करते हैं ॥६॥

१२ ३ १ २र३ २ ३ २३ १ २३ १ २ ३ १ २
तदग्ने द्युम्नमा भर यत्सासह सदने कं चिदत्रिणम् ।
३ १ २र ३क२र
मन्युं जनस्य दूढ्यम् ॥ ७ ॥

हे अग्निदेव ! हम में वह तेज भर दे जो घर में (घुस कर बने) किसी भी भक्षक को और मनुष्य के पाप संकल्परूप क्रोध को दबा सके ॥७॥

१ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १२ ३ २
यद्वा उ विश्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशे ।
२उ ३२उ ३ १ २
विश्वेदग्निः प्रति रक्षांसि सेधति ॥ ८ ॥ (१२)

जब कभी यह प्रजापति अग्नि मनुष्य के आत्मा में प्रत्यक्ष हुआ सुस्पष्ट (तीक्ष्ण) हो उठता है, भली

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भान्ति उद्दीप्त हो जाता है तो वह सभी विघ्नों को दूर कर देता है ॥८॥

इति द्वितीया दशतिः । द्वादशः खण्डः ।
इत्याग्नेयं काण्डं पर्व वा ।

इति प्रथमोऽध्यायः । इति प्रथमं पर्व ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ ऐन्द्रं काण्डम् ।

अथ द्वितीयोऽध्यायः ।

[एन्द्र काण्ड (पर्व) में तीन अध्याय हैं :— दूसरा, तीसरा और चौथा । इनमें क्रमशः ११८, ११६, और ११५ मन्त्र हैं । इस प्रकार सामवेद के पूर्वार्चिक की मन्त्र संख्या ४६६ पर इन्द्र काण्ड की समाप्ति होती है ।]

॥ द० ३ ॥ ऋषिः—१ शंयुर्बार्हस्पत्यः । २ सुकक्षः । ३ हयतः प्रागाथः । ४, ५ श्रुतकक्षः । ६ इन्द्रमातरो-देवजामय ऋषिकाः । ७, ८ गोषूक्त्यश्वसूक्तिना । ९ मेधातिथिः काण्वः । १० प्रियमेधः आंगिरसः ॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२उ ३ २ ३ १ २
शं यद् गवे न शाकिने ॥ १ ॥

हे मनुष्यो ! तुम सब मिलकर परमानन्द प्राप्ति के लिए किये गये इस आत्म-यज्ञ में इन्द्रियगण से पूजित शक्तिशाली इन्द्र [प्रकाशमयी प्रज्ञा] का वह स्तुतिगान करो जो गान, ज्ञान [गवे] एवं कर्म-शक्ति [शाकिने] दोनों दृष्टि से कल्याणकारी हो ॥१॥

१ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १२
यस्ते नूनं शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः ।
१२ ३१ २र
तेन नूनं मदे मदेः ॥ २ ॥

हे नाना-क्रिया-कुशल ! तेरा जो अन्तर्ज्ञान से भरापूरा परम आनन्द है उस आनन्द से मुझे भी आनन्दित कर दे ॥२॥

२ ३ १२ ३२ ३ २ ३१ २ ३ १ २
गाव उप वदावटे मही यज्ञस्य रप्सुदा ।
३ १ २र ३ १ २
उभाकर्णा हिरण्यया ॥ ३ ॥

हे दिव्य-प्रज्ञा-शक्ति ! तू निभृत स्थान में इन

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

महत्त्वशालिनी तथा यज्ञ को सुघड़ रूप देने वाली इन्द्रियों को, जिनके दोनों—ज्ञान एवं कर्मरूप—साधन [कर्ण] अत्यन्त प्रशस्त [हिरण्य] हैं, उपदेश दे; प्रेरणा कर ॥३॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अरमश्वाय गायत श्रुतकक्षारं गवे ।
२ ३ १ २ ३ १ २
अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥ ४ ॥

हे अन्तर्ज्ञानी विद्वन् ! तू आशुगति होने से सर्वव्यापक, प्रकाशमय और परमैश्वर्य की आधारभूत दिव्य-प्रज्ञा की भरपेट स्तुति कर ॥४॥

१ २र ३२ ३ २ ३ १ २
तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे ।
१ २र ३ १ २
स वृषा वृषभो भुवत् ॥ ५ ॥

बड़ी-बड़ी, ज्ञान की अवरोधक, तामसी प्रवृत्तियों को नष्ट करने के लिये हम प्रज्ञाशक्ति को बलवान् बनाते हैं। वह दिव्यशक्ति अपनी ज्ञानवर्षा से हम पर सुखों की वर्षा करे ॥५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३२ ३ १२ ३१ २र
त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः ।
१ २र३ १ २र
त्वं सन्वृषन्वृषेदसि ॥ ६ ॥

हे इन्द्र ! तू साहसी, ओजस्वी तथा प्रकाश की अवरोधक-शक्ति को जीत कर प्रकट हुआ है और इस प्रकार स्वयं बलशाली होकर बल बढ़ाने में समर्थ है ॥६॥

३१ २र ३२३ ३ १२
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्यद्भूमिं व्यवर्तयत् ।
३ १ २३२ ३२
चक्राण ओपशं दिवि ॥ ७ ॥

ज्ञान और कर्म की सम्मिलित शक्ति इस कर्म-भूमि देह को मस्तिष्क [विचारशक्ति] से सम्बद्ध रखती हुई जो घुमाती है उससे आत्मा की शक्ति में वृद्धि होती है ॥७॥

१२ ३२३ ३ १ २र३ २ ३ २३ २
यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत् ।
३ २ ३ १२
स्तोता मे गोसखा स्यात् ॥ ८ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे इन्द्र ! यदि इन्द्रियों का साथी यह मेरा मन स्तुति करने वाला हो तो मैं भी तेरे समान अकेला ही विविध वस्तुओं—ज्ञान एवं कर्मशक्तियों—का अधिष्ठाता बन जाऊं ॥८॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पन्यंपन्यमित्सोतार आ धावत मद्याय ।
१२ ३ २३ १ २
सोमं वीराय शूराय ॥ ९ ॥

हे ज्ञानसाधको ! वीरत्व एवं शूरत्व के प्रेरक परमानन्द के लिये अति प्रशंसनीय, आनन्द के स्रोत की ओर दौड़कर जाओ ॥९॥

३ १ २ ३२३ ३ २ ३ १२ ३१२
इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम् ।
१ २ ३ १ २
अनाभयिन् ररिमा ते ॥१०॥

हे बसाने वाले इन्द्र ! तू इस साधित परमानन्द रस को भरपेट पीले । हे भय रहित ! तुझे हम यह भेंट देते हैं ॥१०॥

इति तृतीया दशतिः । प्रथमः खण्डः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ द० ४ ॥ ऋषिः—१, २ सुकक्षश्रुतकक्षौ । ३ भरद्वाजः । ४ श्रुतकक्षः । ५, ६ मधुच्छन्दाः । ७, ६, १० त्रिशोकः । ८ वशिष्ठः ॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

२उ ३ २ २ १२ ३१ २र
उद्घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम् ।
१ २
अस्तारमेषि सूर्य ॥१॥

हे प्रेरक-सूर्य ! तू अन्तर्ज्ञान के धनी, ज्ञानवर्षक, मनुष्यों के हितकारी कार्योंके सम्पादक, काम-क्रोधादि तामस भावों को परे फेंक देने वाले दिव्य मन को ही प्राप्त होता और उसे ऊंचा उठाता है ॥१॥

२३१ २र ३ १ २ ३ १ २
यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य ।
२३ १ २ ३ १ २
सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥२॥

हे तामस-प्रवृत्तियों को नष्ट करने वाली, अभिव्यंजक दिव्य-शक्ति जिस किसी को लक्ष्य करके तेरा उदय होता है वह सब कुछ तेरे वश में है ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २र ३२३ १२ ३२३ १२
य आनयत्परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम् ।
२३ २ ३२३ १२
इन्द्रः स नो युवा सखा ॥३॥

जो इन्द्र (प्रकाशमयी प्रज्ञाशक्ति) उत्तम नीति के द्वारा दूर गये मनुष्य को भी समीप ले आता है [कुपथ-गामी को सुपथ पर डाल देती है] वह सदा युवा हमारा साथी रहे ॥३॥

१ २ ३ २ २३ १२ ३१ २र
मा न इन्द्राभ्या३ दिशः सूरो अक्तुष्वा यमत् ।
२ ३१ २ ३२
त्वा युजा वनेम तत् ॥ ४ ॥

हे दिव्यमन ! तामस अवस्थाओं में चोर की भांति चुपके से छापा मारने वाले कामक्रोधादि शत्रु-भाव हमें किसी भी ओर से दबोच न लें; हम तेरे साथ मिलकर उनको जीतते रहें ॥४॥

१ २ ३२ ३ २ ३ १ २ ३१२
एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम् ।
१२ ३१२
वर्षिष्ठमूतये भर ॥ ५ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे दिव्य प्रज्ञे ! वृद्धि के लिये मुझमें वह ज्ञान-धन बहुत सा भर दे जो स्थान-स्थान पर बटा हुआ हो, काम आदि शत्रुओं का विजेता हो और आक्रमणों को सहन करने की शक्ति प्रदान करे ॥५॥

१ २ ३१ २ ३२उ ३१ २
इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे ।
१२ ३१२ ३ १ २
युजं वृत्रेषु वज्रिणम् ॥ ६ ॥

संघर्ष चाहे बड़ा हो या छोटा, उसमें विघ्नों के प्रति सदा दण्डोद्यत, सहायक दिव्य मन को सहायता के लिये बुलाते हैं ॥६॥

१ २ ३१ २ ३१ २र ३१२
अपिबत् कद्रु वः सुतमिन्द्रः सहस्रबाह्वे ।
१ २ ३ १ २
तत्रादददिष्ट पौंस्यम् ॥ ७ ॥

ज्ञानी के ज्ञान-रस को पीकर हमारी प्रकाशमयी प्रज्ञा विविध कर्मा बन जाती है । तभी उसका पुरुषार्थ चमकता है ॥७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ २ ३ १ ३ र
वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र णोनुमो वृषन् ।
३ २ १ २
विद्धी त्वा३स्य नो वसो ॥ ८ ॥

हे ऐश्वर्यशालिन् ! तुझे भली भांति चाह कर ही हम तुझे आत्म-समर्पण करते हैं। हे बसाने वाले ! आप हमारी इस भावना से भली भान्ति परिचित ही हैं ॥८॥

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् ।
२ ३ २ ३ २ ३ १ २
येषामिन्द्रो युवा सखा ॥ ९ ॥

जिनकी प्रकाशमयी प्रज्ञा सदा तरुण एवं मित्र है, वे विद्वान् अपने दृढ़ संकल्प की अग्नि को प्रदीप्त करते हैं और दिव्य शक्तियों के स्वागत के लिए सदा आसन बिछाये रहते हैं ॥९॥

३ २उ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३१ २र
वसु स्पार्हं तदा भर ॥१०॥

हे इन्द्र ! द्वेष भावनाओं को दूर ही काट डाल और बाधक हिंसकों को नष्ट कर डाल तथा स्पृहणीय दिव्य आनन्द से भरपूर कर दे ॥१०॥

इति चतुर्थी दशतिः । द्वितीयः खण्डः ।

॥ द० ५ ॥ ऋषिः—१ कण्वो घोरः । २ त्रिशोकः । ३ वत्सः काण्वः । ४ कुसीदी काण्वः । ५ मेधातिथिः । ६ श्रुतकक्षः । ७ श्यावाश्वः । ८ प्रगाथः काण्वः । ९ वत्सः । १० इरिम्बिठः ॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

३१२ ३ २ ३ १ २३ १ २र
इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद्वदान् ।
१ २र ३ १२
नि यामं चित्रमृञ्जते ॥ १ ॥

ये विचारशक्तियां जो कहती हैं—प्रेरणा देती हैं, मैं ही उसे सुनता हूँ । इनके हाथों (कार्यसाधनों) में जो प्रेरणा विद्यमान है वह अद्भुत रूप में व्यवस्था स्थापित किये हुए है ॥१॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १२
इम उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः ।
३ १२ ३ १ २ ३ २
पुष्टावन्तो यथा पशुम् ॥ २ ॥

हाथ में पुष्टिकारक पदार्थ लिये हुए लोग अपने पोष्य पशु को जिस स्नेह से देखते हैं वैसे ही परमानन्द साधक आत्मज्ञानी मित्र, हे इन्द्र ! तुझे उसी स्नेह दृष्टि से देखते हैं ॥२॥

१२ ३ २३ २ ३ १ २ ३ १२
समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः ।
३ १ २३ १ २
समुद्रायेव सिन्धवः ॥ ३ ॥

जिस प्रकार नदियां समुद्र को आत्मसमर्पण करती हैं वैसे ही सब कर्मशील प्रजायें इन्द्र के ज्ञान-संकल्प के प्रति आत्म-समर्पण करती हैं ॥३॥

३ २ ३ १ २र ३१ २र ३२
देवानामिदवो महत्तदा वृणीमहे वयम् ।
१ २३ १ २ ३१२
वृष्णामस्मभ्यमूतये ॥ ४ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बढ़ोतरी के लिए सुखवर्धक दिव्य शक्तियों का भारी आश्रय हमें प्राप्त है; हम उसे खूब अच्छी तरह से चाहते हैं ॥४॥

३ २ ३   १ २ ३   ३ १ २
सोमानां स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते ।
३ १२ ३ १ २ ३ २
कक्षीवन्तं य औशिजः ॥ ५ ॥

हे वेदवाणी के अधीश्वर! ऐसी कृपा कर कि ज्ञान-साधना करने वाले कुशल पुरुष को दिव्य आनन्द सरलता से प्राप्त हो ॥५॥

१ २   ३ १ २   ३ १   २ र
बोधन्मना इदस्तु नो वृत्रहा भूर्यासुतिः ।
३ १ २ ३ २ ३ १ २
शृणोतु शक्र आशिषम् ॥ ६ ॥

ज्ञानशील चित्त वाला ही विघ्नों को नष्ट करने वाला और आनन्द का भरपूर साधक होता है और इस प्रकार शक्तिशाली बना हुआ वह उत्तम कामना को पूरा कर पाता है ॥६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अद्या नो देव सवितः प्रजावत्सावीः सौभगम् ।
१ २ ३ १ २
परा दुःष्वप्न्यं सुव ॥ ७ ॥

हे प्रकाशमान प्रेरक ! हमारे नाना सन्तान-वितान युक्त सौभाग्य को उत्पन्न कर और दुष्ट संकल्प की कारणीभूता तन्द्रा को दूर कर ॥७॥

२ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
क्व३स्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः ।
३ १ २र
ब्रह्मा कस्तं सपर्यति ॥ ८ ॥

वह सुखवर्षक,युवा,अनेक साधनों से सम्पन्न,कभी तिरस्कृत न होने वाला इन्द्र कहां है ? कौन ज्ञानी उसको पूजता है ? ॥८॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे च नदीनाम् ।
३ १ २र
धिया विप्रो अजायत ॥ ९ ॥

पर्वतों की अधित्यकाओं और नदियों के संगम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्थान पर कर्म और ज्ञानशक्ति के संगम से मेधावी ज्ञानी तैयार हुआ करते हैं ॥९॥

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २
प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः ।
१२ ३ २ ३ १ २
नरं नृषाहं मंहिष्ठम् ॥ १० ॥

कर्मशील ज्ञानियों के सम्राट्, स्तुति करने योग्य, सबके नेता अपने प्रभाव से प्रभावित करने वाले सर्वाधिक पूजनीय इन्द्र की स्तुति करो ॥१०॥

इति पञ्चमी दशतिः । तृतीयः खण्डः ।
द्वितीय प्रपाठके प्रथमश्चार्धः ।

॥ द० ६ ॥ ऋषिः—१ श्रुतकक्षः । २ मेधातिथिः । ३ गोतमः । ४ भरद्वाजः । ५ विन्दुः पूतदक्षो वा । ६, ७ श्रुतकक्षः सुकक्षो वा । ८ वत्सः काण्वः । ९ शुनःशेपः ॥ १० शुनःशेपो वामदेवो वा ॥ देवता इन्द्रः । ५ मरुतः ॥ गायत्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अपादु शिप्र्यन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३ १ २
इन्द्रोरिन्द्रो यवाशिरः ॥ १ ॥

सुन्दर, ऐश्वर्यशील इन्द्र स्फूर्तिदायक आत्म-समर्पण की भावना से भावित, धर्माधर्म के सार-भूत अंश से सुसंस्कृत, अन्नभूत परमानन्द रस का ही पान करता है ॥१॥

३१ २ ३ १ २र ३ १२
इमा उ त्वा पुरुवसोऽभि प्र नोनुवुर्गिरः ।
१ २ ३ २उ ३१२
गावो वत्सं न धेनवः ॥ २ ॥

जिस प्रकार नव प्रसूता गौएं अपने प्रिय बछड़े को पुकारती हैं वैसे ही हमारी वाणियां नाना रूप से बस रहे तुझ इन्द्र के ही सन्मुख झुकती हैं ॥२॥

२उ ३ १२ ३ २३ १ २ ३क २र
अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम् ।
३ २ ३ १२ ३२
इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥ ३ ॥

चन्द्रमा के मण्डल में सूर्य की किरण का कुछ भाग अन्तर्हित है ऐसा सब मानते हैं। इसी प्रकार

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आल्हादक अलौकिक आनन्द के भीतर उस रच-यिता का ही प्रकाश विद्यमान रहता है ॥३॥

२उ ३ १२३ १ २ ३ २३ १ २र
यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः ।
१२ ३ १२३ १ २
तत्र पूषाभवत् सचा ॥ ४ ॥

जब रोम-रोम में अलौकिक आनन्द की भली भांति वर्षा करने वाला इन्द्र बड़े-बड़े उन्नतिशील कर्मों का नेतृत्व करता है तो इस साहचर्य से वह पोषक बन जाता है ॥४॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
गौर्धयति मरुतां श्रवस्युर्माता मघोनाम् ।
३ २उ ३ १२
युक्ता वह्नी रथानाम् ॥ ५ ॥

ज्ञानैश्वर्य से सम्पन्न विचार-शक्तियों की सम्पा-दिका, अन्तर्ज्ञान की ओर जाने की इच्छुका, चिति शक्ति विचार-शक्तियों को पुष्ट करती है और स्वयं जुती हुई उन रथरूप विचार-शक्तियों को वहन करती है ॥५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ १२ ३२ ३ १ २
उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते ।
१२ ३ १२ ३२
उप नो हरिभिः सुतम् ॥ ६ ॥

दिव्य आनन्दों के स्वामिन् ! आत्मन् ! इन्द्रियों से उत्पादित ज्ञान का उपभोग कर ॥६॥

३१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३२
इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं वृधन्तो अध्वरे ।
१ २ ३ १ २र
अच्छावभृथमोजसा ॥ ७ ॥

जीवन यज्ञ में यज्ञ करने वाले होता [इन्द्रियां] प्रकाशमान प्रज्ञाशक्ति को बढ़ाते हुए उस यज्ञ को समाप्ति पर्यन्त पूर्ण करते हैं ॥७॥

३२उ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३२१
अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह ।
३१ २र
अहं सूर्य इवाजनि ॥ ८ ॥

मैं पालक के सत्यज्ञान को धारण करने योग्य बुद्धि को ग्रहण कर ही लूं और फिर सूर्य की भांति प्रकाश और प्रेरणा का पुंज बन जाऊं ॥८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः ।
३ २ ३ २ ३ १ २
क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥ ९ ॥

इन्द्र के साथ-साथ हमारी इन्द्रियां भी प्रसन्न और प्रचुर बलवती बनें; फिर उनसे सम्पन्न हुए हम आनन्दित हो उठें ॥९॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
सोमः पूषा च चेततुर्विश्वासां सुक्षितीनाम् ।
३ २ २क २र ३ २
देवत्रा रथ्योर्हिता ॥ १० ॥ ४ ॥

इन्द्रिय-इन्द्रिय में विद्यमान जीव और मन का हितैषी, आनन्द (भोग) और पोषण का अधिष्ठाता प्रभु ही समस्त प्रजाओं को जिताने वाला है ॥१०॥

इति षष्ठी दशतिः । चतुर्थः खण्डः ।

॥ द० ७ ॥ ऋषिः—१, ४ श्रुतकक्षः सुकक्षो वा । २ वसिष्ठः । ३ मेधातिथिप्रियमेधौ । ५ इरिम्बिठः । ६, १० मधुच्छन्दाः । ७ त्रिशोकः । ८ कुसीदः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

६ शुनःशेपः ॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥
षड्जः स्वरः ॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्र गायत ।
३ १२ ३१२ ३ १ २ ३ २
विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम् ॥ १ ॥

हे मनुष्यो ! तुम जीवनाधायक दिव्यानन्द भोग के भोक्ता इन्द्र का गान गाओ । वह सबको परास्त करता है; सैंकड़ों कर्मों का सम्पादक और कर्मशील प्रजाओं का अतिशय पूजनीय है ॥१॥

२३ १ २३ १ २ ३ १२
प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत ।
१ २ ३ १ २
सखायः सोमपाव्ने ॥ २ ॥

हे साथियो ! सोम (दिव्यानन्द रस)—पायी, इन्द्रिय साधनों से सम्पन्न, अन्तरात्मा के प्रीतिकर गान की तान छेड़ो ॥२॥

३१२ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३१ २
कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥ ३ ॥

हे प्रकाशमयी प्रज्ञाशक्ति ! तुझे प्राप्त करने की इच्छा से हम और इसी प्रयोजन से तेरे सखा, ज्ञानी स्तोत्रों से तेरा वर्णन करते हैं ॥३॥

१ २३ १२ ३१ २र ३ १२
इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः ।
३१ २ ३१२
अर्कमर्चन्तु कारवः ॥ ४ ॥

आनन्द में विभोर इन्द्र के सन्मुख हम वाणियों से उस आनन्द भोग का वर्णन करें। कर्म में दक्ष परम लक्ष्य के कुशल साधक ही इस सोम— सारभूत तत्व—को प्राप्त करते हैं ॥४॥

३१ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि ।
१२३ २उ ३ १२
एहीमस्य द्रवा पिब ॥ ५ ॥

हे इन्द्र ! अन्तःकरण में तेरा ही शुद्ध किया यह दिव्य आनन्द (भोग के लिए) रखा है; आ; दौड़

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कर आ; इसको पीले ।।५।।

३ २ ३१ २ ३१ २ ३१२
सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे ।
३ २ ३ १ २
जुहूमसि द्यविद्यवि ।। ६ ।।

दोहने वाले को सरलता से दूध देने वाली गौ के समान सुगमता से शोभन फल (रूप) देने वाले इन्द्र के प्रति हम आत्म समर्पण करते हैं ।।६।।

३ १ २ ३२ ३१ २ ३१२
अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये ।
३ १ २ ३ १२
तृम्पा व्यश्नुही मदम् ।। ७ ।।

हे सुखवर्षक ! दिव्य आनन्द के सिद्ध हो जाने पर इसे तेरे लिए ही सम्पन्न करता हूँ; तृप्त हो और मस्त हो जा ।।७।।

१ २ ३१ २र३ १२ ३२
य इन्द्र चमसेष्वा सोमश्चमूषु ते सुतः ।
१ २र ३ १२
पिबेदस्य त्वमीशिषे । ८ ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे इन्द्र ! यह जो आनन्द (सोम) अन्न, प्राण, मन और ज्ञानमय शरीरों रूप पात्रों में तय्यार रखा है, इसका पान तू ही कर; तेरा ही यह सामर्थ्य है ॥८॥

१ २ ३१ २३ १ २
योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे ।
१ २३ १ २ ३ १ २
सखाय इन्द्रमूतये ॥ ९ ॥

हम साथी मित्र आगे बढ़ने केलिए,ज्ञान एवं बल कर्म के प्रत्येक अवसर पर बली एवं वेगवान् इन्द्र का आह्वान करते हैं ॥९॥

२उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत ।
१ २ ३ १ २
सखायः स्तोमवाहसः ॥ १० ॥ ५ ॥

हे स्तुतिकर्ता साथियो ! आओ तो ! बैठो और इन्द्र की स्तुति करो ॥१०॥

इति सप्तमी दशतिः । पञ्चमः खण्डः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ द० ८ ॥ ऋषिः—१ विश्वामित्रः । २ मधुच्छन्दाः । ३ कुसीदी काण्वः । ४ प्रियमेधः । ५, ८ वामदेवः । ६, ६ श्रुतकक्षः सुकक्षो वा । ७ मेधातिथिः । १० विन्दुः पूतदक्षो वा ॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

३१ २र ३१ २
इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते ।
२ ३ २ १ २
पिबा त्वा३स्य गिर्वणः ॥ १ ॥

हे सिद्धियों के स्वामिन् ! यह दिव्य रस बड़े परिश्रम से सिद्ध हुआ है;हे स्तुति के योग्य ! तू इसका पान कर ॥१॥

३ १ २र ३१२ ३ १२ ३१२
महाँ इन्द्रः पुरश्च नो महित्वमस्तु वज्रिणे ।
१ २र ३ १ २र
द्यौर्न प्रथिना शवः ॥ २ ॥

इन्द्र महान् है । उस भयनिवारक का बड़प्पन सदा हमारे सम्मुख बना रहे । उसका बल द्युलोक की भांति विस्तृत एवं प्रसिद्ध है ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २र ३ १ २ ३२ २१ २र
आ तू न इन्द्र द्युमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय।
३ १ २र
महाहस्ती दक्षिणेन ॥ ३ ॥

हे ऐश्वर्यशाली इन्द्र ! तू अपने, हमारे अनुकूल क्रियाकुशल लम्बे-लम्बे हाथों से अद्भुत सम्पन्न (ज्ञानैश्वर्य से सम्पन्न) पकड़ को सम्भाल ॥३॥

३१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे।
३ २ ३ २ ३ १ २
सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥ ४ ॥

हे मनुष्य ! यथार्थ ज्ञान के लिए प्रकाश के पालक प्रकाशमयी प्रज्ञा अथवा आत्मा (इन्द्र) को उद्-बोधन दे; वह सत्य का अभिव्यञ्जक और उसका पालक है ॥४॥

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा।
२ ३ १ २ ३ २
कया शचिष्ठया वृता ॥ ५ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

किस रक्षण शक्ति, ज्ञान और व्यवहार (वृत्=कर्म) से यह सदा बढ़ने-बढ़ाने वाला हमारा मित्र बने ॥५॥

१२ ३ २३ १ २ ३ १ २
त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम् ।
१ २ ३१२
आ च्यावयस्यूतये ॥ ६ ॥

सब दुष्ट भावनाओं के विजेता, सब स्तुतियों के लक्ष्यभूत इस इन्द्र को अपनी बढ़ोतरी के लिये साक्षात् प्राप्त कर ॥६॥

१ २३ २ ३ १२ ३१ २र ३ १ २
सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
३ २ ३ १२
सनिं मेधामयासिषम् ॥ ७ ॥

ब्रह्माण्ड के पालक, अद्भुत, प्रिय, आत्मा की कामना के लक्ष्यभूत धारणावती बुद्धि के दाता परम-प्रभु को प्राप्त करने की इच्छा बनी रहे ॥७॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ २३ ३क २र ३१२
ये ते पन्था अधो दिवो येभिर्व्यश्वमैरयः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २ ३ १२
उत श्रोषन्तु नो भुवः ॥ ८ ॥

हे प्रकाशमय ! मानसिक चेतना के मार्गों पर तो तू इन्द्रियों को प्रेरित करता ही है, भौतिक चेतना के मार्ग पर भी वे तुझसे प्रेरणा प्राप्त करें ॥८॥

३१ २ ३ २ ३२३१ २
भद्रंभद्रं न आ भरेषमूर्जं शतक्रतो ।
१२ ३ १ २
यदिन्द्र मृडयासि नः ॥ ९ ॥

हे विविधकर्मा इन्द्र ! जब आप हमें सुखी करते हैं तो, कल्याणकारी ज्ञान और बल देते हैं ॥९॥

२ ३ १ २ ३२ ३१ २र ३१२
अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः ।
३२ ३ १ २ ३१ २
उत स्वराजो अश्विना ॥ १० ।' ६ ॥

यह दिव्यानन्द सिद्ध किया रखा है; विचार-शक्तियां और प्रकाशमय ज्ञान एवं संकल्प इसका पान करते हैं ॥१०॥

इति अष्टमी दशतिः । षष्ठः खण्डः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ ८० ६ ॥ ऋषिः—१ इन्द्रमातरो देवजामयः । २ गोधा । ३ दध्यङ्ङाथर्वणः । ४ प्रस्कण्वः । ५ गोतमः । ६ मधुच्छन्दाः । ७ वामदेवः । ८ वत्सः । ९ शुनःशेपः । १० वातायन उलवः ॥ इन्द्रो देवता ॥

गायत्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ र

ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते ।

३ २ र ३ १ २

वन्वानासः सुवीर्यम् ॥ १ ॥

जब इन्द्र अपने रूप में प्रकट होता है तो ज्ञानशील और कर्म करना चाहती हुई इन्द्रियां उस बलशाली की कामना करती हैं ॥१॥

१ २ ३ १ २ र

न कि देवा इनीमसि न क्या योपयामसि ।

३ १ २

मन्त्रश्रुत्यं चरामसि ॥ २ ॥

हे इन्द्र ! हम इन्द्रियां न किसी की हिंसा करें (किसी को डरावें) न लुभावें, संकल्प के द्वारा जो प्रेरणा प्राप्त करें उससे ही काम करें ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र ३१ २ ३ १ २
दोषो आगाद् बृहद्गाय द्युमद्गामन्नाथर्वण ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
स्तुहि देवं सवितारम् ॥ ३ ॥

हे प्रकाशस्वरूप की ओर चल रहे स्थिरवृत्ति वाले आत्मन् ! अन्धेरा आन पहुँचा, खूब गान कर, प्रेरक, दिव्य प्रकाशमय की स्तुति कर ॥३॥

३२ ३ १ २र ३क २र ३ २ ३ २
एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः ।
३१ २ ३२
स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥ ४ ॥

यह देखो, वह अपूर्व प्रकाशमयी प्रज्ञा प्रकाश-लोक से उदित हो रही है मैं तुम दोनों गतिशीलों (ज्ञान एवं संकल्प शक्तियों) की बहुत स्तुति करता हूँ ।४।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः ।
३ १२ ३ १ २र
जघान नवतीर्नव ॥ ५ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

साधक आत्मा ने किसी से पराजित न हुए समाधि, सिद्ध की—फैंक क ‍घात करने वाली शक्तियों द्वारा सब विघ्नों के ‍ट कर दिया ॥५॥

२३ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः ।
३ १ २ ३ १ २र
महाँ अभिष्टिरोजसा ॥ ६ ।

हे इन्द्र ! तू आ; समग्र आह्लाद से भरे अंगों से परम भोग का आनन्द ले और बल से अदम्य शक्तिशाली बना रह ॥६॥

१ २र ३ २३ २३ १ २
आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमा गहि ।
३ २ ३१ २ ३ १ २
महान्महीभिरूतिभिः ॥ ७ ॥

हे विघ्नहन्ता इन्द्र ! तू बड़ी-बड़ी शक्तियों से सम्पन्न अतएव बड़ा है; तू हमारे समीप पहुँच ॥७॥

२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत् ।
२ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रश्चर्मेव रोदसी ॥ ८ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यह उसका ही ओज है जो तप रहा है और द्यु लोक-पृथिवी लोक दोनों को ऐसे घुमा रहा है जैसे कोई वीर पुरुष ढाल को घुमाता है ।।८।।

३ १२ ३ १२ ३ १२ ३ २
अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम् ।
२३ १ २
वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥ ९ ॥

यह साधक तेरा ही है; जैसे कपोत कपोती के समीप उसकी देखभाल के लिए रहता है वैसे ही हमारी प्रार्थना को आप प्रेम से सुनिये ।।९।।

२३ १ २ ३२ ३ १ २ ३१ २ ३२
वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे ।
२ ३ १२
प्र न आयूँषि तारिषत् ॥ १० ॥ ७ ॥

सर्वगत आत्मा हमारे लिए ऐसे उपाय रचे कि व्याधियों एवं आधियां का शमन होकर प्रसन्नता प्राप्त हो तथा हम सुख से जीवन के पार लग जांय ।।१०।।

इति नवमी दशतिः । सप्तमः खण्डः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ द० १० ॥ ऋषिः—१ कण्वः । २, ३, ६ वत्सः २, ६ (ऋ० वशोऽश्व्यः) ४ श्रुतकक्षः । ५ मधुच्छन्दाः । ६ वामदेवः । ७ इरिम्बिठः ॥ ८ वारुणिः सत्यधृतिः ॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

१ २र ३ १२ ३ १ २ ३ १ २३ २
यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
२ ३ १ २ ३ १ २
न किः स दभ्यते जनः ॥ १ ॥

प्रकृष्ट चेतना, पवित्रता, प्रेम न्याय आदि दिव्य गुण जिस व्यक्ति की रक्षा करते हैं वह कभी दुःख नहीं उठाता ॥१॥

३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र३ २
गव्यो षु णो यथा पुराश्वयोत रथया ।
३ २ ३ १ २
वरिवस्या महोनाम् ॥ २ ॥

ज्ञानैश्वर्य की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि इन्द्रिय, मन और शरीर को पहले साधा जाय ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
इमास्त इन्द्र पृश्नयो घृतं दुहत आशिरम् ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
एनामृतस्य पिप्युषीः ॥ ३ ॥

हे प्रकाशमयी प्रज्ञे ! तेरी किरणें (पृश्नयः) ऋत का पान करने की इच्छा से सर्वप्रेरक (सत्य) के सूर्य (आशिरम्) से तेज प्राप्त करती हैं ॥३॥

३ २ ३ १ २ ३ १ २र
अया धिया च गव्यया पुरुणामन्पुरुष्टुत ।
१ २र ३ १ २
यत् सोमेसोम आभुवः ॥ ४ ॥

हे विविध नाम वाले तथा बहुतों से स्तुत इन्द्र ! प्रकाश की इच्छा की इस बुद्धि के कारण ही तू सोम प्राप्त्यर्थ किये गये यज्ञों में प्रकट होता है ॥४॥

३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ।
३१ २ ३ १ २
यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥ ५ ॥

प्रकाशमयी समृद्धियों से भरपूर हमारी अन्तः-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रेरणा विचार सम्पत्ति से समृद्ध है; वह इस अध्यात्म-यज्ञ को व्याप्त करे ॥५॥

२ ३१ २र ३ २उ ३ १ २
क इमं नाहुषीष्वा इन्द्रं सोमस्य तर्पयात्।
२ ३ २ ३ १ २
स नो वसून्या भरात् ॥ ६ ॥

कर्म-बन्धन में बन्धी मनुष्य प्रजाओं में से कौन है जो इन्द्र को सोम से अघाता है ? सोम से तृप्त इन्द्र ही हमें ज्ञानधन प्रदान करता है ॥६॥

१ २ ३२उ ३ २ ३ २३ १२ ३२
आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्।
२उ ३ १ २ ३ १ २
एदं बर्हिः सदो मम ॥ ७ ॥

हे इन्द्र ! आ; तेरे लिए दिव्य आनन्द का सम्पादन कर रहे हैं, इसको पी। मेरे इस हृदयासन पर विराजमान हो ॥७॥

१ २ ३ १ २र ३२ ३ १ २३ २
महि त्रीणामवरस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः।
१ २३ १२
दुराधर्षं वरुणस्य ॥ ८ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मित्र, अर्यमा और वरुण—इन तीन का अजेय तेज मेरे लिए महान् आवरण हो ।।८।।

१ २ ३ १ २
त्वावतः पुरुवसो वयमिन्द्र प्रणेतः ।
१ २
स्मसि स्थातर्हरीणाम् ।। ६ ।। ८ ।।

हे विविधों को बसाने वाले नेता ! इन्द्रियों में कूटस्थ इन्द्र ! हम तेरी ही ओर आ रहे हैं ।।६।।

इति दशमी दशतिः । अष्टमः खण्डः ।

।। द्वितीयश्च प्रपाठकः ।।

अथ तृतीयः प्रपाठकः ।

।। द० १ ।। ऋषिः—१ प्रगाथः । २ विश्वमित्रः । ३, १० वामदेवः । ४, ६ श्रुतकक्षः । ५ मधुच्छन्दाः । ७ गृत्समदः । ८, ६ भरद्वाजः ।। इन्द्रो देवता ।। गायत्री छन्दः ।। षड्जः स्वरः ।।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र
उत्त्वा मदन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३१ २
अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ १ ॥

हे अभेद्य शक्तिमन् ! परमानन्द तुझे हर्षित करे; हमें ऐश्वर्य प्राप्त हो । परमानन्द की विनाशक भावनाओं को नष्ट कर ॥१॥

१ २ ३ १ २ ३२उ ३ १ २
गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे ।
२ ३ १ २ ३ १ २र
इन्द्र त्वादातमिद्यशः ॥ २ ॥

हे वाणी से स्तुत ! हमारे सम्पादन किये हुये भोग का पान करो; परमानन्द के प्रवाह में सर्वथा स्नान करते रहो । हे इन्द्र ! यह समस्त तुम्हारा ही सामर्थ्य है ॥२॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २र३ २
सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा उपो नु स सपर्यन् ।
२ ३ २ ३२उ ३ १ २
न देवो वृतः शूर इन्द्रः ॥ ३ ॥

ऐश्वर्यशील इन्द्र समीप, आता हुआ (अपनी ओर) आकर्षित करता है । वह दिव्य, बलवान् इन्द्र

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

क्यों अपनाया नहीं गया ॥३॥

१ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २
आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः ।
२क ३ १ २
न त्वामिन्द्राति रिच्यते ॥ ४ ॥

जिस प्रकार नदियां समुद्र में प्रविष्ट हो समुद्रमय हो जाती हैं, वैसे ही आनन्द की धारायें इन्द्र में समा जाती हैं; हे इन्द्र तेरे से बाहर (बढ़कर) कोई नहीं है ॥४॥

२ ३ २ ३१ २ ३१ २र३ १ २३१ २
इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः ।
२ ३ १ २
इन्द्रं वाणीरनूषत ॥ ५ ॥

सामगायक, बृहत् साम द्वारा ऋचाओं वाले स्तुति पाठों से, और वाणी भी इन्द्र का ही गान गाते हैं ॥५॥

१ २ ३१ २ ३१ २ ३ २ ३२
इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम् ।
३ १ २ ३ १ २
वाजी ददातु वाजिनम् ॥ ६ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रकाशमयी प्रज्ञा प्रेरणा (ज्ञान) के लिए महान्, तेजस्वी ऐश्वर्य को और बलशाली इन्द्र बलिष्ठ कर्मबल को हमें प्रदान करे ।।६।।

१ २ ३२ ३२ ३२३ १ २र
इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत् ।
२उ ३ १ २र
स हि स्थिरो विचर्षणिः ।। ७ ।।

हे शिष्य ! प्रकाशमयी प्रज्ञा से बड़े-बड़े भय दूर ही नहीं होते नष्ट भी हो जाते हैं; कारण कि वह स्थिर दर्शन-शक्ति है; दूरद्रष्टा है ।।७।।

३ १ २ ३१२ ३ १२ ३ १२
इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः ।
१ २ ३ २उ ३१२
गावो वत्सं न धेनवः ।। ८ ।।

हे स्तुत्य इन्द्र ! जैसे दुधारु गौएं अपने प्रिय बछड़े को खोज लेती हैं वैसे ही हमारी वाणियां सिद्ध परमानन्द को पहुँचाने के लिए तुझ प्रिय को ढूंढ ही लेती हैं ।।८।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३१ २ ३२ ३ १२ ३ १२
इन्द्रा नु पूषणा वयं सख्याय स्वस्तये।
३२३ १ २
हुवेम वाजसातये ॥ ९ ॥

ज्ञानादि भोग बंटाने के लिए, मित्रता के लिए तथा अपने कल्याण के लिए हम ऐश्वर्य एवं शक्ति के प्रतीक इन्द्र और पूषा की स्तुति करते हैं ॥९॥

१ २ ३ १ २र३ १ २र
न कि इन्द्र त्वदुत्तरं न ज्यायो अस्ति वृत्रहन्।
२ ३२३ ३ २
न क्येवं यथा त्वम् ॥ १० ॥ ९ ॥

हे विघ्नविनाशक इन्द्र! तुझसे न तो कोई अधिक उत्कृष्ट है, न ज्येष्ठ और न तुम्हारे समान ही कोई है ॥१०॥

इति प्रथमा दशतिः। नवमः खण्डः।

॥ द० २ ॥ ऋषिः—१, ४ त्रिशोकः। २ मधुच्छन्दाः। ३ वत्सः। ५ सुकक्षः। ६, ९ वामदेवः। ७ विश्वामित्रः। ८ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ। १० श्रुतकक्षः।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सुकक्षो वा ॥ इन्द्रो देवता । गायत्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

३१ २ ३ १ २ ३१ २र ३ १ २
तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः ।
३ २३ १ २
समानमु प्र शंसिषम् ॥ १ ॥

मनुष्यों के तारक एवं प्रकाशमय ऐश्वर्य के दाता, रक्षक को मैं तुम्हारे लिए प्रस्तुत करता हूँ ॥१॥

१ २ ३ २३ २३ १ २र
असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत ।
३ १ २ ३१ २र
सजोषा वृषभं पतिम् ॥ २ ॥

जिस प्रकार कामना से प्रेरिता (पत्नि)समर्थ पति के पास पहुँचती है वैसे ही सृष्ट स्तुतियां इन्द्र को लक्ष्य कर उठी जा रही हैं ॥२॥

३ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा ।
३ २उ ३१ २
मित्रास्पान्त्यद्रुहः ॥ ३ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह मनुष्य निश्चय ही मार्ग-भ्रष्ट नहीं होता जिस पर मरुत, अर्यमा और मित्र शक्तियों की निर्बाध छत्रछाया है ।।३।।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
यद्वीडाविन्द्र यत् स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम् ।
३ २ २ १ २र
वसु स्पार्हं तदा भर ।। ४ ।।

हे इन्द्र, हे अदम्य ! दृढ़ और विचारशील (जन) में जो स्पृहणीय ऐश्वर्य रहा करता है उसे प्राप्त करो ।।४।।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ र ३ २
श्रुतं वो वृत्रहन्तमं प्र शर्धं चर्षणीनाम् ।
३ २ ३ १ २ ३ २
आशिषे राधसे महे ।। ५ ।।

आप लोग प्रजाओं की कामनापूर्तिरूप महान् ऐश्वर्य के लिए विघ्नविनाशक, बलशाली सत्यज्ञान की कामना करें ।।५।।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अरं त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावतः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २
अरं शक्र परेमणि ॥ ६ ॥

हे शत्रुनाशक इन्द्र ! तेरे प्रेमी हम अन्तर्ज्ञान के लिए तुझे भली भांति समझें । हे सर्वशक्तिमन् ! हम तुझ सर्वोत्कृष्ट में भली भांति लीन रहें ॥६॥

३ १२ ३ १२ ३१२ ३ १२
धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम् ।
१ २ ३ १२
इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः ॥ ७ ॥

हे इन्द्र ! प्रातःकाल भुने हुए जौ आदि खीलों, दही-सत्तू और पुरोडाश (पूए) का सेवन करने वाले स्तोता को तुम प्रेम पूर्वक प्राप्त होते हो ॥७॥

३ १ २र३ १२३ १ २ ३ १२
अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः ।
२ ३ १ २र३ १ २
विश्वा यदजय स्पृधः ॥ ८ ॥

हे इन्द्र ! स्पर्धालु सब वृत्तियों को तुमने जीत ही लिया है। अतएव कर्मवृद्धि से मृत्यु का सिर भी काट डालो ॥८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
इमे त इन्द्र सोमाः सुतासो ये च सोत्वाः ।
१ २
तेषां मत्स्व प्रभूवसो ॥ ९ ॥

हे इन्द्र ! जिन दिव्य आनन्दों को तुम्हारे लिए सिद्ध कर लिया गया है या भविष्य में सिद्ध किये जायेंगे, हे सामर्थ्य सम्पन्न, आश्रयदातः ! उनमें रमण कीजिये ॥९॥

१ २ ३ २३ १ २ ३ २ ३ १ २
तुभ्यं सुतासः सोमाः स्तीर्णं बर्हिर्विभावसो ।
३१ २
स्तोतृभ्य इन्द्र मृडय ॥ १० ॥

हे कान्तिसम्पन्न ! ये आनन्द तुम्हारे लिये ही निष्पन्न किये गये हैं और हृदयासन तुम्हारे लिये ही बिछाया गया है; हे इन्द्र ! स्तोताओं को सुखी कीजिये ॥१०॥

इति द्वितीया दशतिः । दशमः खण्डः ।

॥ द० ३ ॥ ऋषिः—१ शुनःशेपः । २ श्रुतकक्षः । ३

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

त्रिशोकः । ४, ६ मेधातिथिः । ५ गोतमः । ६ ब्रह्मातिथिः । ७ विश्वामित्रो जमदग्निर्वा । ८ प्रस्कण्वः ॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आ व इन्द्रं क्रिविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम् ।
१ २ ३ १ २
मंहिष्ठं सिञ्च इन्दुभिः ॥ १ ॥

जिस प्रकार अन्न की कामना से विविध कार्य-साधक कूप आदि को चाहते हैं वैसे ही विविधकर्मा इन्द्र को दिव्यानन्द की धाराओं से सींचकर बढ़ाना चाहिये ॥१॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २
अतश्चिदिन्द्र न उपा याहि शतवाजया ।
३ २ ३ १ २
इषा सहस्रवाजया ॥ २ ॥

हे इन्द्र ! इसी कारण सैंकड़ों-सहस्रों बलोंवाली प्रेरणा के साथ हमारे समीप आ ! ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३१ २३१ २ ३१ २ ३ २ ३१२
आ बुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छाद्वि मातरम् ।
२ ३ १ २र
क उग्राः के ह शृण्विरे ॥ ३ ॥

पापवृत्तियों के हन्ता इन्द्र के पास दूरदृष्टि है; वह प्रकट होकर विमर्श करता है—कौन विक्षेपक हैं और कौन हिंसक ? विमर्श के पश्चात् दूरदृष्टि से उन्नति-पथ की रुकावटें नष्ट की जा सकती हैं ॥३॥

३१२ ३१२ ३१२
बृहदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये ।
१ २ ३ २ ३१२
साधः कृण्वन्तमवसे ॥ ४ ॥

उन्नति के लिये हम अतिविस्तृत, प्रभावशाली (कर्मशक्ति रूप) तथा रक्षा के लिये साधना के साधक बृहद् उक्थ (साम) का आश्रय लें ॥४॥

३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २
ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयति विद्वान् ।
३ २ ३२ ३ १ २
अर्यमा देवैः सजोषाः ॥ ५ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पापवृत्तियों का निवारक, स्नेही, सर्वज्ञ, दिव्य-गुणयुक्त इन्द्रियों का साथी इन्द्र सीधे मार्ग से हमारा नेतृत्व करता है ॥५॥

३२३ २३ २ ३ २ ३२ ३१३
दूरादिहेव यत्सतोऽरुणप्सुरशिश्वितत् ।
२ ३२ ३ १ २
वि भानुं विश्वथातनत् ॥ ६ ॥

जिस प्रकार सूर्य दूर से ही यहां विद्यमान पदार्थों को चमकाता, बढ़ाता और चारों ओर अपनी कान्ति को फैलाता है उसी प्रकार इन्द्र भी ॥६॥

१ २ ३ १ २र
आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।
२ ३ १ २
मध्वा रजांसि सुक्रतू ॥ ७ ॥

हे मित्र और वरुण ! दिव्यानन्द की धाराओं से हमारे प्रकाशपथ को सींचो तथा हे शोभनकर्म-सम्पादको ! मधु (मधुमय व्यवहार) से लोकों को सींचो ॥७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२३ २ ३२ ३ २३ १ २ ३१ २
उदु त्ये सूनवो गिरः काष्ठा यज्ञेष्वत्नत ।
३ १ २ ३ १ २र
वाश्रा अभिज्ञु यातवे ॥ ८ ॥

जैसे अपने प्रिय बछड़े के लिए रम्भाते समय गौएं जाने के लिए घुटनों की ओर झुक जाती हैं, ऐसे ही मेरी स्तुति-वाणियां आपके प्रति झुकी हुई मेरे आध्यात्मिक यज्ञों का लक्ष्य बनें ॥८॥

३२उ ३ १ २ ३ १ २र ३२
इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् ।
१२ ३२
समूढमस्य पांसुले ॥ ६ ॥११॥

सर्वव्यापक शक्ति इस संसार में इस प्रकार व्याप्त है कि वह तीन स्थानों (Stages)–पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौ—में अपना पांव जमाए है । परन्तु अज्ञान-धूलि से धुंधले अन्तःकरण में वह शक्ति अनुभव नहीं होती ॥६॥

इति तृतीया दशतिः । एकादशः खण्डः ।

॥ द० ४ ॥ ऋषिः—१, ७, ८ मेधातिथिः । २ वाम-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

देवः । ३, ५ मेधातिथिप्रियमेधौ । ४ विश्वामित्रः । ६ कौत्सो दुर्मित्रः । ६ विश्वामित्रो गाथिनोऽभीपाद उदलो वा । १० श्रुतकक्षः ॥ इन्द्रो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ र

अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसमुपेरय ।

३ २ ३ २ ३ १ २

अस्य रातौ सुतं पिब ॥ १ ॥

हे इन्द्र ! क्रोधी को तुम लांघ जाते हो और भक्त के समीप पहुँचते हो; भक्त के आत्म-समर्पण से उत्पन्न परमानन्द का उपभोग करो ॥१॥

२ ३ १ २ ३ १ २ र ३ १ २

कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते ।

१ २ र ३ १ २

तदिध्यस्य वर्धनम् ॥ २ ॥

चेतनावान्, महान्, देव की स्तुति में जो कुछ भी वचन कहा जाता है वह इस इन्द्रशक्ति को बढ़ाता है ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ १ २३ १ २ ३१ २र
उक्थं च न शस्यमानं नागो रयिरा चिकेत ।
१ २३२ ३ १ २
न गायत्रं गीयमानम् ॥ ३ ॥

अज्ञानी मूक द्वारा गाये गये स्तुति-गान को तथा गाये गये साम को भी क्या सर्वगत नहीं पहचानता ? पहचानता ही है ॥३।

१ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो वाजानां च वाजपतिः ।
१२ ३ २ ३ १ २
हरिवांत्सुतानां सखा ॥ ४ ॥

इन्द्र सामगान में रमण करता है और ज्ञानधन का एकमात्र स्वामी है। वह इन्द्रियों से सम्पन्न और निष्पादित दिव्यानन्दों का सदा साथी है ॥४॥

२ ३१ २ ३१ २र३ १ २
आ याह्यु प नः सुतं वाजेभिर्मा हृणीयथाः ।
३१ २३ १२
महां इव युवजानिः ॥ ५ ॥

हे इन्द्र ! हमारे इस निष्पन्न दिव्यरस के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

समीप आइये; इन सम्पत्तियों से हमें वंचित न होने दीजिये। पोते के सम्मुख दादा की भांति तुम महान् हो ॥५॥

३ १ २ ३ १ २र३ १ २र ३ १ २३ २
कदा वसो स्तोत्रं हर्यत आ अव श्मशा रुधद्वाः।
३ २ ३२ ३ १ २
दीर्घं सुतं वाताप्याय ॥ ६ ॥

हे बसानेवाले ! जैसे नहरें पानी को चारों ओर से रोककर मर्यादा में रखती हैं वैसे आपकी कामना करने वाले मुझ साधक की स्तुति को आप कब अपने तक सीमित करेंगे ॥६॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूँरनु।
२ ३ २ ३ १ २र
तवेदं सख्यमस्तृतम् ॥ ७ ॥

हे इन्द्र ! साधक विद्वान् के हाथों, ऋत्वनुसार दिव्यानन्द का पान कर; तेरा यह मैत्रीभाव अक्षुण्ण बना रहे ॥७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २ २ १२ ३ १२
वयं घा ते अपि स्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः ।
१ २
त्वं नो जिन्व सोमपाः ॥ ८ ॥

हे स्तुतियोग्य इन्द्र ! हम तेरे ही उपासक तो हैं; हे सोमपायी ! तू हमें तृप्त कर ॥८॥

१ २ ३१ २र ३ २ ३१२
एन्द्र पृक्षु कासु चिन्नृम्णं तनूषु धेहि नः ।
१२ ३ १ २
सत्राजिदुग्र पौंस्यम् ॥ ९ ॥

हे विश्वविजयी, तेजस्वी इन्द्र ! अपने सम्पर्क में आये हमारे किन्हीं शरीरों में तू पौरुषधन को धारण कराता है ॥९॥

३ १ २र ३२३१ २र ३२ ३ २
एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः ।
३ २३ २३ १२
एवा ते राध्यं मनः ॥ १० ॥ १५ ॥

हे इन्द्र ! तू वीरों का प्रेमी, विघ्ननाशक, स्वयंशूर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

और दृढ़ है; तेरी मननशक्ति अनुकरणीय है ॥१०॥

इति चतुर्थी दशतिः। द्वादशः खण्डः।

इति द्वितीयोऽध्यायः॥

अथ तृतीयोऽध्यायः।

॥ द० ५ ॥ ऋषिः—१, ६, ६ वसिष्ठः। २ भरद्वाजः। ३ वालखिल्याः। ४ नोधाः। ५ कलिः प्रगाथः। ७ मेधातिथिः। ८ भर्गः। १० प्रागाथः काण्वः॥ देवता—१-८, १० इन्द्रः। ६ मरुतः। बृहती छन्दः॥ मध्यमः॥ स्वरः॥

अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः।

ईशानमस्य जगतः स्वर्दृश-

मीशानमिन्द्र तस्थुषः॥ १॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जिस प्रकार न दुही दुधार गौएं (अपने बछड़ों के सम्मुख आत्म-समर्पण कर देती हैं) वैसे ही हम हे शूर इन्द्र! तेरे सम्मुख आत्म-समर्पण करते हैं। तू इस जंगम और स्थावर का अधिष्ठाता और सत्य लोक का दिखाने वाला है ॥१॥

१ २र ३ १ २र ३ १ २
त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः।
३ ३१ २ ३ १ २ ३ २३ २३ ३ १२
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः ॥२॥

हे ऐश्वर्यवन्! हम उपासक ज्ञानादिधन की प्राप्ति के लिए तुझे बुलाते हैं; विघ्न-बाधाओं के उपस्थित होने पर तेरे सत्य-रक्षक रूप का ध्यान करते हैं और यथाशक्ति प्रयत्न करने के पश्चात भी सफलता के लिए तुझे ही स्मरण करते हैं ॥२॥

३ १ २र ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १
अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे। यो
२ ३ १ २ ३१ २ ३१२ ३१ २ ३ १ २
जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति ॥३॥

हे मनुष्यो! तुम यथार्थ ज्ञान के लिए उत्तम—

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(ज्ञान रूप) धन-सम्पन्न प्रज्ञाशक्ति को प्राप्त करो। वह (प्रज्ञाशक्ति रूप) इन्द्र स्तोताओं के लिए (ज्ञानरूप) ऐश्वर्य से सम्पन्न, बहुतों को बसाने वाला है और हजारों साधनों से उन्हें शिक्षा देता है ॥३॥

१ २ ३ १२ ३२३ १ २ ३१ २र ३ २
तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः। अभि
३ १ २र ३२ ३ १ २ ३ १२
वत्सं न स्वसरेषु धेनवः इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥४॥

उस दर्शनीय, कामादि शत्रुओं के दमनकारी बसाने वाले, ज्ञानान्न में मस्त इन्द्र को हम स्तुतियों से इस प्रकार बुलाते हैं जिस प्रकार दिन के समय गौएं अपने बछड़ों को ॥४॥

१२ ३ १२३ १ २ ३ १२ ३१२
तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं सबाध ऊतये।
३१ २र ३१२ ३२
बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे
३२उ ३ २ ३१२
हुवे भरं न कारिणम् ॥ ५ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

परमानन्द सिद्धि के अर्थ किये गये यज्ञ में जब तुम्हारे मार्ग में विघ्न उपस्थित हों तो रक्षा के लिए सर्वज्ञानदाता इन्द्र का कीर्तन करो। मैं भी उस पोषणकर्ता और कल्याणकारी की स्तुति करता हूँ ॥५॥

३२ ३१ २ ३ २ ३ १२ ३ २ २ ३
तरणिरित् सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा। आ व
१ २ ३ १ २ ३ २ ३१ २र ३ १ २
इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रुवम् ॥६॥

वह तारक ही धारण की विविध शक्तियों द्वारा ज्ञानधन को बांटना चाहता है। जिस प्रकार बढ़ई गति में सरलता के लिये पहिये पर हाल बिठाता है वैसे ही मैं उस बहुजन-स्तुत इन्द्र को स्तुति से तुम्हारे अनुकूल बनाता हूँ ॥६॥

१ २ ३१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः।
३ १ २ ३ ३१ २ ३२
आपिर्नो बोधि सधमाद्ये वृधे३

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १२
ऽस्मां अवन्तु ते धियः ॥ ७ ॥

हे आत्मन्! इस साधित परमानन्द को पी और प्रकाशपूर्ण को पीकर प्रसन्न हो उठ । इस भक्ति-मण्डप में बन्धु के समान हमें भी बोध करा; तेरी विचारशक्तियां उन्नति की दिशा में हमारी रक्षक हों ॥७॥

२३ ३ १२ ३२३ ३ १२ १२
त्वं ह्ये३हि चेरवे विदा भगं वसुत्तये । उद्वावृषस्व

३ १२ ३ २३ १२
मघवन् गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये ॥ ८ ॥

हे इन्द्र! अपने सेवक के पास आ और परमधन की प्राप्ति के लिए उसे भाग्यशाली बना। हे ऐश्वर्य-वन्! ज्ञान और कर्मशक्ति चाहने वाले भक्त को वैसी सिद्धि के लिये बलवान् बना ॥८॥

१ २र ३२ ३ १ २र ३ १२
न हि वश्चरमं च न वसिष्ठः परिमंसते ।

३ १२३२ ३१२ ३२३ ३
अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २
विश्वे पिबन्तु कामिनः ॥ ६ ॥

वह सर्वोत्तम तुममें से अन्तिम तक की भी उपेक्षा नहीं करता। आओ, इस ज्ञानयज्ञ में रस के सब अभिलाषी एक साथ इसका पान करें ॥६॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २३ १ २
मा चिदन्यद्वि शंसत सखायो मा रिषण्यत।
२ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३१
इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते
२उ३ १ २
मुहुरुक्था च शंसत ॥ १० ॥ १ ॥

हे मित्रो! किसी अन्य की स्तुति करके खिन्न मत होओ। सब मिलकर उस सर्वसमर्थ इन्द्र की ही स्तुति करो और बार-बार उसके ही गीत गाओ ॥१०॥

इति पञ्चमी दशतिः। प्रथमः खण्डः।

इति तृतीय प्रपाठके प्रथमोऽर्धः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥द० ६॥ ऋषिः—१ अङ्गिरसः पुरुहन्मा । २, ३ मेधातिथिमेध्यातिथी । ४ विश्वामित्रः । गोतमः । ६ नृमेधपुरुमेधौ । ७, ८, ९ मेधातिथिर्मेध्यातिथिर्वा । १० देवातिथिः काण्वः ॥ इन्द्रो देवता ॥ बृहती छन्दः ॥ मध्यमः स्वरः ॥

२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २
नकिष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम् । इन्द्रं न
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णुमोजसा ॥१॥

जो मनुष्य अपने आप को यज्ञों द्वारा सब प्रशंसित, ज्ञान-सम्पन्न, अजेय और बल से धीर इन्द्र की भांति सदा उन्नति करने वाला बना लेता है उसको कर्म से भला कौन पहुँच सकता है? ॥१॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
य ऋते चिदभिश्रिषः पुरा जत्रुभ्य आतृदः ।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
सन्धाता सन्धिं मघवा पुरूवसुर्निष्कर्ता विहुतं
१ २
पुनः ॥ २ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो आत्मा जोड़ने वाले द्रव्य के बिना ही; गर्दन से बिखर कर टुकड़े-टुकड़े होने से पहले ही सब जोड़ों को जोड़ देता है—देहों को बसाने वाला वह धनी आत्मा ही कटे हुए को भी पुनः जोड़ देता है। आत्मा के अमर होने से ही यह शरीर पुनः-पुनः जीवन धारण करता है ॥२॥

१ २ ३२ ३ २ ३२ ३ १ २र ३ १२
आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये ।
३ २ ३ १२ ३ २ ३ १२ ३ १२
ब्रह्मयुजो हरये इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये ॥३॥

हे दिव्य मन ! तेरे चमकीले वाहन में जुती सैंकड़ों-हजारों, समाहित और ज्ञान-तन्तुओं से सम्पन्न वृत्तियां तुझे परमानन्द के उपभोग के लिए ले जावें ॥३॥

२ ३ १ २ ३ १ ३ २ ३१२
आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः ।
२ ३ २ ३ १ २३२३ ३ २३
मा त्वा के चिन्नि येमुरिन्न पाशिनो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २३ १ २
ऽति धन्वेव ताँ इहि ॥ ४ ॥

हे दिव्य मन ! हर्षप्रद ज्ञानतन्तुओं से चित्र-विचित्र वर्ण वाली, अपनी वृत्तियां द्वारा वहन किया हुआ आ ! तुझे कोई बन्धन न बान्धे; धनुर्धारी के समान तू उन पर विजय प्राप्त कर ॥४॥

२३१ २र ३ १ २ ३ १ २
त्वमङ्ग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम् ।

२उ ३ १ २ ३ २
न त्वदन्यो मघवन्नास्ति मर्डिते-

३ १ २ ३ १ २
न्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥ ५ ॥

हे बलशाली, देव ! तू मरणधर्मा देह को सचेतन करता है; हे ऐश्वर्यवन् तुझसे भिन्न दूसरा कोई सुखारी नहीं; मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ ॥५॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र३ १ २ २ ३ १ २
त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पतिः । त्वं वृत्राणि

३२उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
हंस्यप्रतीन्येक इत् पुर्वनुत्तश्चर्षणीधृतिः ॥ ६ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे इन्द्र ! यह तेरी कीर्ति है कि तू सरल मार्ग से चलाने वाला और शक्तिमान् है। मार्ग की अदम्य बाधाओं को तू नष्ट करता है और अकेला भी बहुतों से अपराजित तू कर्मठ मनुष्यों का रक्षक है ॥६॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ २ १ २
इन्द्रमिद्देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे । इन्द्रं
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
समीके वनिनो हवामहइन्द्रं धनस्य सातये ॥७॥

इन्द्रियों की शक्ति की वृद्धि के लिए, आत्म-यज्ञ की प्रगति के लिये, आध्यात्मिक संग्राम के लिए और ज्ञानधन की प्राप्ति के लिए—हम इन्द्र का ही सहारा लेते हैं ॥७॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितो ऽभिस्तो-
२र
मैरनूषत ॥ ८ ॥

हे शरीरों को बसाने वाले इन्द्र ! ये मेरी जो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वाणियां तेरा बखान करें उन्हीं स्तुति-वचनों से स्वयं शुद्ध और सब को निर्मल करने वाले विद्वान् भी तेरी स्तुति करें ॥८॥

२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३
उदु त्ये मधुमत्तमा गिर स्तोमास ईरते । सत्रा-
१ २ ३ १ २र ३२ ३ १ २
जितो धनसा अक्षितोतयोवाजयन्तो रथा इव ॥९॥

विघ्न-बाधाओं को पार करा (ज्ञान) धन प्राप्त कराने वाले, बलशाली, वेगवान् वाहन जैसे ये अत्यन्त मधुर स्तुति-वचन हमारे अन्तःकरणों से प्रकट हो रहे हैं ॥९॥

१ २ ३ २ ३ २१ ३२उ ३ १ २उ
यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम् ।
३ १ २ ३ २उ ३ १ १ ३ १ २३ २उ ३
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा
१ २
पिब ॥ १० ॥ २ ॥

जिस प्रकार तृष्णा से सताया गौर मृग पानी से भरे तालाब पर पहुँच जाता है, उसी प्रकार हे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दिव्य मन ! तू हम इन्द्रियों से शीघ्र ही बन्धुत्व स्थापित कर और ज्ञानसरोवर से हम सब के साथ मिल कर पान कर ॥१०॥

इति षष्ठी दशतिः। द्वितीयः खण्डः।

॥ द० ७ ॥ ऋषिः--१ भर्गः। २ रेभः काश्यपः। ३ जमदग्निः। ४, ६ मेधातिथिः। ५, ६ नृमेधपुरुमेधौ। ७ वसिष्ठः। ८ रेभः। १० भरद्वाजः॥ देवता-१, २, ४-१० इन्द्रः। ३ आदित्याः॥ बृहती छन्दः॥ मध्यमः स्वरः॥

३ २ १ २ ३ २ ३ ३ २ ३ १ २ ३ ३
शग्ध्यू३षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः। भगं
१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि ॥१॥

कर्म एवं ज्ञान साधनों के स्वामिन् इन्द्र ! अपनी समग्र रक्षण-समर्थताओं को साथ लेकर तू हमारे इष्ट की पूर्ति कर। मनोविकारनाशक हे शूर ! ज्ञानधन के प्रदाता के रूप में प्रसिद्ध तेरा अनुगमन हम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तुझे ऐश्वर्य की साक्षात् मूर्ति मान कर ही करते हैं ॥१॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३ २
या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वां असुरेभ्यः । स्तोता-
३ १ २ र ३ २ ३ २ २ १ २
रमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः ॥२॥

हे इन्द्र ! परमानन्द के यात्री के रूप में तूने प्राणों के भोग से जितने भोग्य को बचाया है उससे तू स्तोता को बढ़ा और उनको बढ़ा जिन्होंने अपने अन्तःकरण रूप आसनों को (साधना के लिये) बिछा रखा है ॥२॥

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र ३ २
प्र मित्राय प्रार्यम्णे सचथ्यमृतावसो । वरूथ्ये३
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत ॥३॥

ऋत में बसने वाले हे ज्ञानी ! तू सब दिव्य गुणों में से मित्रता, न्याय और समूह के नेतृत्व की प्रतीक दिव्यशक्तियों की सुन्दर छन्दोवद्ध स्तुति कर ॥३॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः।
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
समीचीनास ऋभवः समस्वरन् रुद्रा गृणन्त
३ २
पूर्व्यम् ॥ ४ ॥

हे दिव्य मन ! जीवन का पूर्ण आनन्द उठाने के लिए आयु चाहने वाले मनुष्य तेरी ही स्तुति करते हैं; सम्यक् दृष्टि से सम्पन्न प्राण के वशी तुझे ही साधते हैं और रुद्र भी तुझ पूर्ण की ही स्तुति करते हैं ॥४॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ ३ १ २ ३ १ २
प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत। वृत्रं हनति
३ २ ३ १ २ १ १ २ ३ १ २
वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा ॥ ५ ॥

हे विद्वानो ! तुम उस महान् इन्द्र की ही वेद-वाणी से पूजा करो। विविध ज्ञानकर्म का अध्यक्ष वह इन्द्र अनेक भागों वाली अपनी शक्ति से विघ्नों को नष्ट करता है ॥५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २र ३ १२ ३१ २ २३ २ ३
बृहदि्न्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम्। येन ज्योति-
१२ ३ २ ३२ ३२ ३ १२
रजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि ॥ ६ ॥

हे विद्वानो ! अज्ञाननाशन में श्रेष्ठतम बृहत् साम का इन्द्र के लिये गान करो : इस गान से ही ऋत की ओर बढ़ने वाले दिव्यता का आधान करने के लिये प्रकाशमान ज्योति को प्रकट करते हैं ॥६॥

२ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३२ ३ १ २
इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा
२
ज्योतिरशीमहि ॥७॥

हे इन्द्र ! जैसे पिता पुत्रों का पोषण करता है वैसे आप हमारे लिए ज्ञान ले आवें। हे बहुस्तुत ! इस उन्नति मार्ग में तू हमें ऐसी शिक्षा दे जिससे हम जीवों को प्रकाश प्राप्त हो ॥७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ १ २
मा न इन्द्र परा वृणग् भवा नः सधमाद्ये । त्वं न
३ २ उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
ऊती त्वमिन्न आप्य मा न इन्द्र परावृणक् ॥८॥

हे इन्द्र ! तू हमें कभी मत छोड़; हमारे साथ मिलकर आनन्द का उपभोग कर । तू ही हमारी रक्षा है, तू ही हमारा एकमात्र लक्ष्य है; हे इन्द्र ! हमारा कभी परित्याग मत कर ॥८॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १
वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः । पवि-
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते ॥९॥

हे विघ्नापहारक ! हम जलों की भांति (आनन्द) को सिद्ध करने के लिए अन्तःकरण रूप आसनों को बिछाकर पवित्र आनन्द के स्रोतों पर बैठ स्तुति करते हैं ॥९॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ र ३ १ २ ३ १ २
यदिन्द्र नाहुषीष्वा ओजो नृम्णं च कृष्टिषु ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र३
यद्वा पञ्चक्षितीनां द्युम्नमा भर सत्रा विश्वानि
१ २
पौंस्या ॥ १० ॥ ३ ॥

हे इन्द्र! शरीर-बन्धनों में बन्धे हुओं, कर्मठों और पांचों ज्ञानेन्द्रियों के क्रमशः जो तेज, बल और ज्ञानैश्वर्य हैं वे सब पौरुषसिद्ध बल हमें प्राप्त करा ॥१०॥

इति सप्तमी दशतिः। तृतीयः खण्डः।

॥ द० ८ ॥ ऋषिः—१ मेधातिथिः । २ रेभः । ३ वत्सः। ४ भरद्वाजः। ५ नृमेधः। ६ पुरुहन्मा । ७ नृमेधपुरुमेधौ । ८ वसिष्ठः ९ मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च काण्वौ। १० कलिः प्रागाथः ॥ इन्द्रो देवता ॥ बृहती छन्दः ॥ मध्यमः स्वरः ॥

२ ३ ३ १ २र ३ १२ ३ २ २ ३क २र
सत्यमित्था वृषेदसि वृषजूतिर्नोऽविता। वृषा ह्युग्र
३१ २३ २ ३ १२ ३ १ २ ३२
शृण्विषे परावति वृषो अर्वावति श्रुतः ॥ १ ॥

हे परमेश्वर! तू सचमुच सुखादि का वर्षक है;

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

इच्छुकों से सेवित तू हमारा रक्षक है। हे तेजस्विन्! दूर और समीप—सर्वत्र—ही तू मनोरथों का पूरक प्रसिद्ध है ॥१॥

२ ३१ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २ १ २
यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन् । अतस्त्वा
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
गीर्भिद्य गदिन्द्र केशिभिः सुतावाँ आ विवा-

सति ॥ २ ॥

हे शक्तिमन्! तू दूर और समीप सर्वत्र विघ्नापहारक है। अतएव प्रकाश का पथिक, आनन्दरस का साधक अपनी ज्ञानभरी स्तुतियों से तुझे ही प्रत्यक्ष करना चाहता है ॥२॥

३ १ २ ३१ २र३ १२
अभि वो वीरमन्धसो मदेषु गाय
३ २ ३१ २र
गिरा महाविचेतसम् ।
२ ३ २३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
इन्द्रं नाम श्रुत्यं शाकिनं वचो यथा ॥ ३ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे मनुष्यो ! परमानन्द के अवसर पर तुम अपनी वाणी से इस अतिचेतन, श्रुतिप्रसिद्ध, सर्वशक्तिमान् इन्द्र का ही, अपनी वाणी की शक्ति के अनुसार, गान करो ॥३॥

१ २ ३ १२ ३२ ३१२ ३ १२ ३१२
इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तये । छर्दिर्यच्छ
३१२ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २
मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः ॥४॥

हे इन्द्र ! कल्याण के लिए अन्न, प्राण और मन तीन का बना यह आश्रय स्थान जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति तीन अवस्थाओं में विद्यमान है; साधकों को और मुझे यह आश्रय प्राप्त हो तथा इनमें चौथी दिव्यप्रकाश की अवस्था का भी मिश्रण हो ।

साधक को चाहिये कि अन्नमय, प्राणमय और मनोमय शरीरों से क्रमशः जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति की अवस्थाओं को पार करता हुआ तुरीय दिव्य आनन्द की अवस्था को प्राप्त हो, इसी में उसका कल्याण है ॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २३ १ २र १२
आयन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत। वसूनि
३१ २र ३ १२ ३ १ २ ३१ २र
जातो जनिमान्योजसा प्रति भागं न दीधिम ॥५॥

हम उस प्रेरक का आश्रय लेते हुए ही सब पिछले-अगले ऐश्वर्यों का उपभोग उस इन्द्र की शक्ति से कर पाते हैं और अपने-अपने भाग के अनुसार हमें व भोग प्राप्त होता है ॥५॥

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
न सीमदेव आप तदिषं दीर्घायो मर्त्यः।
१२ ३ ३ १ २र ३ १२३ २ ३ १२
एतग्वा चिद्य एतशो युयोजत इन्द्रो हरी
३ १२
युयोजते ॥ ६ ॥

हे चिरञ्जीव ! दिव्यशक्ति की आराधना से रहित मनुष्य अभीष्ट का कुछ भी भाग प्राप्त नहीं कर सकता। जैसे गन्तव्य स्थान को पहुँचने की इच्छा से कोई अपने घोड़ों को रथ में जोतता है वैसे ही परमलक्ष्य का साधक अपनी इन्द्रियों को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वश में रखता है ॥६॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २ २३
आ नो विश्वासु हव्यमिन्द्रं समत्सु भूषत। उप
१ २ ३ १२ ३ १ २
ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम ॥७॥

हे मनुष्यो ! सर्वोत्तम गति के लिए किये गये सब संघर्षों में हमारा समर्पण इन्द्र को ही भूषित करे। सब बड़े-बड़े यज्ञ भी उस विघ्ननिवारक, सर्वोत्कृष्ट विजेता और स्तुत्यनुसार गुणयुक्त को ही भूषित करें ॥७॥

१ २र ३२उ ३ १ २ ३२ ३ २
तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यसि मध्यमम्। सत्रा
२र ३१ २ ३ १ २ ३ १ २
विश्वस्य परमस्य राजसि न किष्ट्वा गोषु
वृण्वते ॥ ८ ॥

हे इन्द्र ! निम्नतम–जाग्रत-अवस्था में प्राप्त धन का अधिष्ठाता भी तू ही है और मध्यम—स्वप्न—अवस्था के धन का पोषक भी तू ही है। उत्कृष्ट

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

व्यापक सुषुप्ति अवस्था का राजा भी सत्य ही तू है। और फिर प्रकाशमय तुरीय अवस्था में तुझको कौन रोकता है ? ॥८॥

२र ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १२ १२
क्वेयथ क्वेदसि पुरुत्रा चिद्धि ते मनः। अलर्षि
३ १ २ ३ १ २
युध्म खजकृत् पुरन्दर प्र गायत्रा अगासिषुः॥ ९॥

कहां गया ? कहां है ? तेरा मन जहां-तहां भटकता है। हे योद्धा ! (राग द्वेषादि से युद्ध करने हारे), (दुर्भावनाओं के) दमनकर्ता, अन्ततः इस शरीर को भी विदीर्ण करने वाले आत्मन् ! अपने आपे में आ; स्तोता तेरा ही गान करते हैं ॥९॥

३१२ ३ १ २र ३२ ३ १ २ १ २ ३१
वयमेनमिदा ह्योऽपीपेमेह वज्रिणम्। तस्मा उ अद्य
२र ३२ ३ २ ३१ २ ३२
सवने सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते ॥ १० ॥ ४ ॥

कल तक हम ज्ञान-वज्र-धारी इस आत्मा को ही तृप्त करते रहे; आज इस ज्ञानयज्ञ में भी उसके

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

लिए ही आनन्द-रस भरो और उसको ही भूषित करो ॥१०॥

इति अष्टमी दशतिः । चतुर्थः खण्डः ।

॥ द० ६ ॥ ऋषिः—१, ६ पुरुहन्मा । २ भर्गः । ३ इरिम्बिठिः । ४ जमदग्निः । ५, ७ देवातिथिः । ८ वसिष्ठः । ६ भरद्वाजः । १० वालखिल्याः ॥ देवता—१–३, ५–८, १० इन्द्रः । ६ इन्द्राग्नी । ४ सूर्यः ॥ बृहती छन्दः ॥ मध्यमः स्वरः ॥

१ २र ३ २उ ३ १२ ३१२ २
यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः । विश्वासां
३ १ २र ३ २ ३ १ २३२ ३२
तरुता पृतनानां ज्येष्ठं यो वृत्रहा गृणे ॥ १ ॥

जो इन्द्रियों के मध्य स्वतः प्रकाशमान, इन्द्रियों का अधिष्ठाता तथा रथरूप इन्द्रियों द्वारा गमनागमनकर्ता, सब वासनाओं का विनाशक और सबसे बड़ा विघ्नापहारक है, मैं उस इन्द्र की स्तुति करता हूँ ॥१॥

१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ १२
यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि । मघ-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २उ ३ २ ३२३ २उ ३ १ २र
वञ्छग्धि तव तन्न ऊतये वि द्विषो वि मृधो जहि ॥२॥

हे इन्द्र ! हमारे डर के कारण को दूर कर हमें निर्भय कर; हे बलवन् ! तू समर्थ है; अतएव हमारी रक्षा के लिए द्वेष और हिंसा की वृत्तियों का नाश कर ॥२॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २
वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणांसत्रं सोम्यानाम् । द्रप्सः
३ २ ३ १ २र ३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
पुरां भेत्ता शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा ॥ ३ ॥

हे बसने योग्य देहों के रक्षक ! आप परमानन्द में मग्न भक्तों के स्थिर आधार और कवच के समान रक्षक हैं; आप ज्ञानी भक्त के पुरातन देह-बन्धनों के काटने वाले, परमैश्वर्यवान् और मनन-शीलों के परम मित्र हैं ॥३॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३१ २
बण्महाँ असि सूर्य बडादित्य महाँ असि । महस्ते
३ १ २ ३ १ २ २ ३१ २ ३ १ २
सतो महिमा पनिष्टम मह्ना देव महाँ असि ॥ ४ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे प्रेरक ! आप सचमुच महान् हैं; हे अखण्डनीय ! आप सत्य ही महान् हैं । सद्रूप आपकी महती महिमा है; हे सर्वोत्तम स्तुतियोग्य ! आप अपनी महिमा से स्वयं महान् हैं ।।४।।

३ २ ३१ २३२३ ३ १ २ ३ १ २
अश्वी रथी सुरूप इद्गोमां यदिन्द्र ते सखा ।
३ २ ३ १२ ३ १२ ३ १ २
श्वात्रभाजा वयसा सचते सदा चन्द्रैर्याति
३ १ २र
सभामुप ।। ५ ।।

यदि कर्म से बलशाली, (इन्द्रियों का) अधिष्ठाता और सुन्दर होता हुआ भी ज्ञानवान् इन्द्र(दिव्यमन) तेरा मित्र हो जाय तो ऐश्वर्य पूर्ण जीवन मिले और सदा आह्लादक गुणों से युक्त हो सभा-समाज में तेरा प्रवेश हो ।।५।।

१ २र ३२ ३१ २र३२ १ २
यद्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः । न त्वा
३ २३ २ ३ २ ३ २ ३१२३ १२
वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ।।६।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे इन्द्र ! सैंकड़ों द्युलोक, सैंकड़ों भूमियां तथा हजारों सूर्य और यह ब्रह्मांड भी तुझे नहीं पहुँच सकता ॥६॥

१२ ३ २३ ३ २३क २र ३२ ३ १ २ १ २
यदिन्द्र प्रागपागुदङ् न्यग्वा हूयसे नृभिः । सिमा
३ १ २र ३ २३१ २ ३१२
पुरू नृषूतो अस्यानवे ऽसि प्र शर्ध तुर्वशे ॥७॥

हे इन्द्र ! पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण चारों ओर से मनुष्य तुझे पुकारते हैं; हे सर्वश्रेष्ठ ! मनुष्य तुझे बहुत वार प्रत्यक्ष कर चुके हैं; तू झुकनेवाले मनुष्य के दोषों का दूर करने हारा बन ॥७॥

१र २र ३ १ २र ३ १
कस्तमिन्द्र त्वा वसवा मर्त्यो दधर्षति । श्रद्धा हि
२र ३ १२ ३ २ ३ १ २र
ते मघवन् पार्ये दिवि वाजो वाजं सिषासति ॥८॥

हे इन्द्र ! बसाने वाले तेरा निरादर कौन मनुष्य कर सकता है ? पार करने योग्य (अन्तरिक्ष) में, हे इन्द्र ! श्रद्धा तेरा आश्रय है और द्युलोक में ज्ञानी ज्ञान को बांटना चाहता है। जाग्रत् , स्वप्न और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सुषुप्ति अवस्था में क्रमशः अन्नादि धन, श्रद्धा और ज्ञान का प्रकाश इन्द्र के इन्द्रत्व की स्थापना करते हैं ॥८॥

१ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १र
इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात् पद्वतीभ्यः । हित्वा
२उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
शिरो जिह्वया रारपच्चरत् त्रिंशत्पदा न्यक्रमीत् ॥९॥

पादरहिता भी यह चितिशक्ति चलने में पांव वाली शक्तियों से आगे रहती हैं; और इन्द्र एवं अग्नि तक पहुँचती है। चितिशक्ति विचार क्षेत्र से बाहर आकर, वचन क्षेत्र में विचरती हुई कर्मक्षेत्र में अनेकों (तीसों) पैरों वाली होकर चलने लगती है ॥९॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ १
इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः । आ
२ ३ १ २ २ १ २ ३ १ २र ३ १ २
शंतम शंतमाभिरभिष्टिभिरा स्वापे स्वापिभिः ॥१०॥

हे इन्द्र ! धारणावती बुद्धियों वाली रक्षणशक्तियों समेत मेरे समीप ही आ; हे सुखकारक ! कल्याणकारिणी हमारी कामनाओं सहित और हे सुबन्धो !

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अपनी सुखदायक शक्तियों समेत तू मेरे समीप पहुँच ॥१०॥

इति नवमी दशतिः । पञ्चमः खण्डः

॥ द० १० ॥ ऋषिः—१ नृमेधः । २, ३ वसिष्ठः । ४ भरद्वाजः । ५ परुच्छेपः । ६ वामदेवः । ७ मेध्यातिथिः । ८ भर्गः । ९, १० मेधातिथिमेध्यातिथी ॥ देवता —१-२, ७-१० इन्द्रः । ५-६ वरुणः ॥ बृहती छन्दः ॥ मध्यमः स्वरः ॥

३२ ३१ २ ३ १२ ३ २३१२ ३१
इत ऊती वो अजरं प्रहेतारमप्रहितम् । आशुं
२र३ १ २ ३ १ २३१ २ ३१२
जेतारं हेतारं रथीतममतूर्तं तुग्रियावृधम् ॥ १ ॥

आप लोग अपनी रक्षा के लिए अजर, प्रेरक, स्वयंस्वतन्त्र, अतिशीघ्रगामी होने से सर्वव्यापक, आत्म समर्पक, सर्वोत्तम अधिष्ठाता, अमर, और ज्ञान बल के वर्धक इन्द्र की शरण में जाओ ॥१॥

१ २र ३१२३ २र ३ १ २र ३ ३ १
मो षु त्वा वाघतश्च नारे अस्मन्नि रीरमन् । आरा-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
चाद्धा सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि ॥२॥

हे इन्द्र ! तुम से दूर रहनेवाले—ज्ञानी मन के प्रतिकूल आचरण करने वाले—मेधावी हों तो भी हमें नहीं सुहाते। हम चाहते हैं कि गोष्ठियों में भी प्रज्ञाशक्ति हम पर छायी रहे और हमारी बात ध्यान से सुने ॥२॥

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २
सुनोता सोमपाव्ने सोममिन्द्राय वज्रिणे। पचता
३ १ २र ३ २ ३ ३ १ २र ३ १ २र
पक्तीरवसे कृणुध्वमित् पृणन्नित् पृणते मयः ॥३॥

सोमपायी, साधनसम्पन्न इन्द्र के लिये, हे इन्द्रियगण !, परमानन्द रस को सिद्ध करो। फिर उसे विकसित कर रक्षायोग्य बनाओ। इस प्रकार परितृप्त हुआ ही वह इन्द्र सुख एवं तृप्ति प्रदान करता है ॥३॥

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ १ २
यः सत्राहा विचर्षणिरिन्द्रं तं हूमहे वयम्। सहस्र-
३ १ २ ३ १ २ ३ २
मन्यो तुविनृम्ण सत्पते भवा समत्सु नो वृधे ॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो शत्रुओं का नाशक और दूरद्रष्टा है हम उस इन्द्र का आह्वान करते हैं। हे सहस्रों तेजों से युक्त! बहुधन! सत्-पालक! जीवन संघर्षोंमें तू हमें बढ़ाने वाला बना रह ॥४॥

१ २ ३ २ ३ १ २ १
शचीभिर्नः शचीवसू दिवा नक्तं दिशस्यतम्। मा
२ ३ १ २र ३ २ ३ २उ ३ २ ३ २३२
वां रातिरुपदसत् कदा चनास्मद्रातिः कदाचन ॥५॥

अन्तर्ज्ञानरूप-धन से सम्पन्न अश्वियो! अन्तर्ज्ञान की ज्वालाओं से दिन रात हमें प्रेरित करते रहो। तुम्हारी दानशीलता कभी नष्ट न हो और हमारा दान भी कभी व्यर्थ न हो ॥५॥

१ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ १
यदा कदा च मीढुषे स्तोता जरेत मर्त्यः। आदि-
२र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २३ १ २
द्वन्देत वरुणं विपा गिरा धर्त्तारं विव्रतानाम् ॥६॥

स्तोता मनुष्य जब कभी सुखवर्षक की स्तुति करे तो उद्दण्डों का नियन्त्रण करने वाले वरुण की, उसके गुणों की प्रकाशिका वाणी से, बन्दना करे ॥६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र ३ २ ३ १ २ १
पाहि गा अन्धसो मद इन्द्राय मेध्यातिथे । यः
२र ३ २ ३ १ २३ २३ १ २ ३ १ २३ १२
संमिश्लो हर्योर्यो हिरण्यय इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ।।७।।

हे पवित्र अतिथे ! इन्द्र को परमानन्द का लाभ पहुँचाने के लिए तू इन्द्रियों की रक्षा कर। वह इन्द्र, कर्म एवं ज्ञान दोनों प्रकार की इन्द्रियों को जोड़कर अज्ञानों के लिए वज्रोद्यत रहता हुआ ज्योतिर्मय ज्ञान को प्राप्त करता है ।।७।।

३ १२ ३१२ ३ १ २ ३ २ ३१ २र ३ १ २
उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः । सत्राच्या
३२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
मघवान्त्सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत् ।।८।।

इन्द्र हमारे, आभ्यन्तर और इस प्रत्यक्ष, दोनों वचनों को सुनकर सद्बुद्धि द्वारा ऐश्वर्य सम्पन्न एवं बलवान् बनकर परमानन्द रूप रस का पान करने के लिये हमें प्राप्त हो ।।८।।

३२ ३१ २ ३ १२३ १२ २ ३१ २३
महे च न त्वाद्रिवः परा शुल्काय दीयसे । न सहस्राय

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २र ३ २ ३ १२
नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ ॥९॥

हे अदम्य ! वज्रोद्यत ! बड़े से बड़े मूल्य पर भी तुझे बेचा नहीं जा सकता; सौ, हजार और लाख शुल्क के बदले भी मैं तुम्हें नहीं (दे) छोड़ सकता ॥९॥

१ २ ३ १ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
वस्याँ इन्द्रासि मे पितुरुत भ्रातुरभुञ्जतः । माता च

३ १ २ ३ २ ३ १ २
मे छदयथः समा वसो वसुत्वनाय राधसे ॥१०॥

प्राप्त धन का भोग न करने वाले पिता और भाई से भी आप अधिक श्रेष्ठ हैं। हे ऐश्वर्य-सम्पन्न! आप ऐश्वर्य लाभ कराने और कार्यसिद्धि कराने के लिए माता के समान मेरा पालन करते हैं ॥१०॥

इति दशमी दशतिः । षष्ठः खण्डः ।

तृतीय प्रपाठकश्च समाप्तः ॥

अथ चतुर्थ प्रपाठके प्रथमोऽर्धः ॥

॥ द० १ ॥ ऋषिः—१ वसिष्ठः । २,६,७ वामदेवः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ मेधातिथिमेध्यातिथी विश्वामित्र इत्येके । ४ नोधाः । ५ मेधातिथिः । ८ बालखिल्याः । ९ मेध्यातिथिः । १० नृमेधः ॥ देवता—१-६, ८-१० इन्द्रः । ७ बहुः ॥ बृहती छन्दः ॥ मध्यमः स्वरः ॥

३१र २र ३ १ २ ३ १ २ १
इम इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः । ताँ आ
२र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
मदाय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्योक आ ॥१॥

ध्यानयोग से प्राप्त ये ज्ञानरस आत्मा के लिये सम्पादित किये हैं; हे ज्ञानरूप वज्र के धारयिता आत्मन्! परमानन्द की प्राप्ति के अर्थ उनका पान करने के लिये ज्ञान और कर्म दोनों प्रकार की इन्द्रियों समेत इस देह में आ ॥१॥

३१र २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ १ २
इम इन्द्र मदाय ते सोमाश्चिकित्र उक्थिनः । मधोः
३१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
पपान उप नो गिरः शृणु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः ॥२॥

हे आत्मन्! तेरे हर्ष के लिये ही ये ज्ञान-रस

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञात होते हैं । तू इस मधु का पान करता हुआ हमारी स्तुतियों को सुन और हे स्तुत ! स्तोता को अभीष्ट फल दे ॥२॥

१ २ १ २३१ २ ३१ २३१२ १२
आ त्वा३द्य सबदुघां हुवे गायत्रवेपसम् । इन्द्रं
४२ ३२३२ ३१२३१ २ ३ १२
धेनुं सुदुघामन्यामिषमुरुधारामरङ्कृतम् ॥३॥

मैं ज्ञानामृत रूपी दूध देने वाली, स्तोता की ओर गति करने वाली, सुगमता से दुही जाने वाली, बड़ी धार वाली, पर्याप्त देने वाली दूसरी कामधेनु भूत तुझ इन्द्र की स्तुति करता हूँ ॥३॥

१ २३२ ३ १२३१२ ३१२ १
न त्वा बृहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीडवः । यच्छि-
२र ३१ २र३ २३२ ३१ २र
क्षसि स्तुवते मावते वसु न किष्टदा मिनाति ते ॥४॥

हे इन्द्र ! बड़े २ और शक्तिशाली पहाड़ों जैसी बाधाएं भी तेरी गति को नहीं रोक सकतीं । मुझ जैसे साधक को जो कुछ ऐश्वर्य तू देता है उसको कोई नष्ट नहीं कर सकता ॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३२३ ३ १ २ ३ १ २र ३ १
कईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे। अयं यः
२र ३ १ २र ३ २ ३ १२
पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिप्रयन्धसः॥५॥

यह जो इन्द्र अमृत रस की प्राप्ति के लिये किये गये यज्ञ में साथ-साथ पान करता है, इसे कौन जानता है? और कौन जानता है कि इसकी कितनी आयु है? यह ज्ञानान्न के आनन्द में मग्न हुआ, वेगवान अपने तेजसे (अन्नमय आदि) देहों को तोड़ डालता है॥५॥

१ २ ३ १ २ ३२ ३२ ३ १२३ १ २ ३ १
यदि॑न्द्र शासो अव्रतं च्यावया सदसस्परि। अस्मा
२३१ २ ३ १२ ३२ ३ १ २
कमंशुं मघवन् पुरुस्पृहं वसव्ये अधि बर्हय॥६॥

हे इन्द्र! आप नियमों का पालन कराने वाले हैं; अतएव उद्दण्डों को उनके स्थान से च्युत करदें। हे दानी! इस वासयोग्य देह में सब के चाहे, हमारे (नियमपालन करने वालों के) भाग को बढ़ा दे॥६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ १ २र
त्वष्टा नो दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः । पुत्रैर्भ्रातृ-
३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
भिरदितिर्नु पातु नो दुष्टरं त्रामणं वचः ॥७॥

हमारा स्तुतिवचन दुःखों से रक्षक पर दुष्प्राप्य है । हमारे तथा अपने सम्बन्धियों (पुत्रों भाइयों) के इस दिव्य स्तुतिवचन की रक्षा हम निर्माण, पालन-पोषण, ज्ञान-प्रदान और अखण्डनीयता आदि दिव्य गुणों द्वारा करें ॥७॥

३ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १
कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे । उपोपेन्नु
२र३ २३ २१ ३ १२ ३ १ २
मघवन् भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते ॥८॥

हे इन्द्र ! आप वन्ध्या गाय की भान्ति निष्फल कभी नहीं; अपितु साधक दाता को कुछ देते ही हैं । तुझ दानशील प्रभु का दान बराबर प्राप्त होता ही रहता है ॥८॥

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १
युङ्क्ष्वा हि वृत्रहन्तम हरी इन्द्र परावतः । अर्वाचीनो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १२ ३२ ३ २ ३ १ २
मघवन्त्सोमपीतय उग्र ऋष्वेभिरा गहि ॥९॥

सर्वोत्तम रीति से अज्ञानादि विघ्नों के विनाशक इन्द्र ! आप दूर (भटकती) हमारी ज्ञान-कर्मेन्द्रियों को नियुक्त (योगयुक्त) कीजिए। हे तेजस्वी ! ऐश्वर्य-शालिन् ! परमानन्द के पान के लिये इन्द्रियों समेत आकर यहां अधिकार कीजिये ॥९॥

२ ३ १ २र ३ १२ १ २ ३
त्वामिदा ह्यो नरोऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः । स इन्द्र

१ २ ३१ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
स्तोमवाहस इह श्रुध्युप स्वसरमा गहि ॥१०॥७॥

हे शक्तिमन् ! साधकों ने पहले तुझे ही तृप्त किया था: तू वही इन्द्र उन साधकों की सुन और अपने घर का अधिष्ठाता बन ॥१०॥

इति प्रथमा दशतिः । सप्तमः खण्डः ।

॥ द० २ ॥ ऋषिः—१, २, ७, ८ वसिष्ठः । ३ अश्विनौ । ४ प्रस्कण्वः । ५ मेधातिथिमेध्यातिथी । ६ देवातिथिः । ९ नृमेधः । १० नोधाः ॥ देवता—

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

४–८, १० इन्द्रः । १ उषा । २, ३ अश्विनौ ।। बृहती छन्दः ।। मध्यमः स्वरः ।।

१ २ ३ २ १ २ ३ २ ३ २ १ २
प्रत्यु अदर्श्यायत्यू३च्छन्ती दुहिता दिवः । अपो
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
महीवृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।।१।।

साधक कहता है–प्रकाशमय लोक से आई, अज्ञान के अन्धेरे को काटती हुई चितिशक्ति प्रत्यक्ष हो रही है; यह फैलकर ज्ञान-शक्ति के अपवारक अन्धकार को हटाती है और नेत्री बनकर सर्वत्र प्रकाश फैला देती है ।।१।।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना । अयं
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ र
वामह्वेऽवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः ।।२।।

हे अश्वियो ! द्युलोक के प्रकाश को पा लेना चाहने वाली ये चितिशक्तियां तुम्हारा आह्वान करती हैं । अन्तर्ज्ञानरूप धन से सम्पन्न तुम दोनों को मैं भी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रक्षा के लिए स्तुति करता हूँ; तुम तो प्रत्येक देह में आते ही हो ।२।।

२ ३   १   २   ३ १   २ ३   १ २   ३ १
कुष्ठः को वामश्विना तपानो देवा मर्त्यः । घ्नता

२   ३ १   २र   ३   २ ३ २ ३   २ ३ १ २
वामश्नया क्षयमाणोंऽशुनेत्थमु आद्वन्यथा ।।३।।

(प्रश्न)—हे अश्वियो ! पृथिवी पर स्थित कौन मानव तुम को तृप्त करता है ? (उत्तर) निरन्तर भक्ष्य भाग को कम करने से तुम भूख-प्यास से पीड़ित होते हो तथा उचित रूप से खाते रहने से नहीं ।

भोजन में निरन्तर कमी करने से प्राण-अपान (अश्वी) के साथ २ चेतना-शक्ति का भी ह्रास होता है ।।३।।

३ २ ३   १ २   ३ २उ   ३   १ २   १ २
अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोमो दिविष्टिषु । तम-

३ १ २   ३ १   २र   ३ १ २
श्विना पिबतं तिरोअह्न्यं धत्तं रत्नानि दाशुषे ।।४।।

हे अश्वियों ! चेतनाओं में निहित परमानन्द

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तुम्हारे लिये ही निष्पन्न हुआ है: चिरकाल से सम्पादित उस का पान करो और साधक को उत्तम फल प्राप्त कराओ ॥४॥

२ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २
आ त्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन्नहं ज्या ।
१ २ ३ १ २र ३ १ २र३ १ २
भूर्णिं मृगं न सवनेषु चुक्रुधं क ईशानं न याचिषत् ।५।

हे इन्द्र ! परमानन्द प्राप्त्यर्थ किये यज्ञों में धारक लक्ष्य की भांति स्थित आप से मैं उत्कृष्ट स्तुति द्वारा परमानन्द की याचना करता हूँ। इस याचना से मैंने तुम्हें क्रुद्ध भी किया हो; पर समर्थ से कौन नहीं मांगता ॥५॥

१ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ १२
अध्वर्यो द्रावया त्वं सोममिन्द्रः पिपासति । उपो
३१ २ ३ १२ ३ २३ १ २ ३ २
नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा ॥६॥

हे यज्ञकर्तः ! परमानन्द रस को बहा; इन्द्र पीना चाहता है। वह विघ्न निवारक और सुखवर्षण समर्थ

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञान-कर्मेन्द्रिय की शक्तियों समेत आ पहुँचा है ॥६॥

३ २३२३ ३२ ३ २३ १ २ ३ २३ १
अभीषतस्तदा भरेन्द्र ज्यायः कनीयसः । पुरूवसुर्हि
२ ३ १ २३ १२ ३ १ २
मघवन् बभूविथ भरेभरे च हव्यः ॥ ७ ॥

हे इन्द्र ! बड़े हों या छोटे जो चाहते हैं उन्हें वह परमानन्द दे; हे ऐश्वर्यवन् ! तू बहुतोंको बसाने वाला है और भरण पोषण प्रत्येक अवसर पर ही स्तुति योग्य है ॥७॥

१ २ ३ १ २३ २३ १२३१ ३२ ३ २३
यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय । स्तोतार-
१ २ ३ १ २३ १२
मिद्दिधिषे रदावसो न पापत्वाय रंसिषम् ॥ ८॥

हे इन्द्र ! जितने ऐश्वर्य का अधिष्ठाता तू है यदि मैं भी इतने का स्वामी हो जाऊं तो हे दाता ! मैं साधक को ही दे डालूं, पापकर्मा को कभी न दूं ॥८॥

१ २ ३ १२ ३ १ २र ३ १२
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २ ३ १ ३ १ २ ३ २
अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः ॥९॥

हे इन्द्र ! तू आध्यात्मिक संघर्षों में समस्त दुर्वासनाओं को ललकारता है; हे शत्रुनाशक ! हिंसक वृत्तियों का तू विनाशक है; उद्दण्डताओं को ध्वंस कर व्यवस्था की स्थापना करता है ॥९॥

२ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
प्र यो रिरिक्ष ओजसा दिवः सदोभ्यस्परि ।
१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
न त्वा विव्याच रज इन्द्र पार्थिवमति विश्वं
२ ३ १
ववक्षिथ ॥ १० ॥ ८ ॥

हे इन्द्र ! अपने प्रभाव से तू प्रकाशमय लोकों से परे तक पहुँचा हुआ है; अतएव ये पार्थिव धूल (दोष) तुझे व्याप्त नहीं होते; सारे विश्व को लांघकर तू रहता है ॥१०॥

इति द्वितीया दशतिः । अष्टमः खण्डः ।

॥ द० ३ ॥ ऋषिः—१, २, ६ वसिष्ठः । ३ गातः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

४ पृथुः । ५ सप्तगुः । ७ गौरिवीतिः । ८ वेनः । ६ बृहस्पतिर्नकुलो वा । १० सुहोत्रः ॥ इन्द्रो देवता ॥ त्रिष्टुप् छन्दः ॥ धैवतः स्वरः ॥

१ २ ३१ २र ३२ २क १र ३ १ २ ३१
असावि देवं गोऋजीकमन्धो न्यस्मिन्नि द्रो जनु-
२ १ २ ३१ २र ३
षेमुवोच । बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैर्बोधा न
२ ३१ २ ३ १२
स्तोममन्धसो मदेषु ॥ १ ॥

साधकों ने ज्ञानरूप प्रकाश से संस्कृत परमानन्द-रस को सिद्ध किया है; इन्द्र का इससे जन्मसिद्ध सम्बंध है। हे ज्ञानकर्मेन्द्रियों के अधिष्ठाता इन्द्र ! ज्ञानयज्ञों द्वारा हम तेरा उद्बोधन कराते हैं; तू परमानन्द की दशाओं में हमारी स्तुतियों को मत भूल जाना ॥१॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३
योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि तमा नृभिः पुरुहूत
१ २ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ २ ३
प्र याहि । असो यथा नोऽविता वृधश्चिद् ददो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३१२ ३ १२
वस्वानि ममदश्च सोमैः ॥ २ ॥

हे इन्द्र ! निवास करने योग्य घर में तेरा स्थान बना है। हे निरन्तर आहूत ! अपनों (विचारशक्तियों) सहित वहां पहुँच जा। इस प्रकार तू हमारा रक्षक और वर्धक बन आनन्द दे और सोमों का आनन्द ले ॥२॥

३२३ २ ३१ २ ३ २उ ३ १२३ १ २ ३१
अदर्दरुत्समसृजो वि खानि त्वमर्णवान् बद्बधानाँ
२ ३ १ २ ३ १२३ २उ ३२उ
अरम्णाः। महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद् वः सृज-
३ २३ १ २३ २
द्धारा अव यद् दानवान् हन् ॥ ३ ॥

हे इन्द्र ! तूने अन्धकूप (कपाल) को विदीर्ण कर उसमें गढ़े (इन्द्रियस्थान) बनाये; उनमें रसों (जलों) को रोका। इस प्रकार हे इन्द्र तूने इस महान् पर्वत रूप देह में से आनन्द को रोकने वाले दैत्यों का हनन कर आनन्द की धाराओं को बहाया ॥३॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि त्वा सनिष्यन्तश्चित्
३ १२ १ २ ३१ २र
तुविनृम्ण वाजम् । आ नो भर सुवितं यस्य
३ २ ३ १ २ ३ १ २
कोना तना त्मना सह्याम त्वोताः ॥ ४ ॥

हे इन्द्र ! बहुत बलशाली ज्ञानान्न का सेवन करते हुए भी हम तेरे लिए परमानन्द की सिद्धि करने की इच्छा से तेरी स्तुति करते हैं। तू हमें हमारा वह लक्ष्य प्राप्त करा, जिसकी कामना करते हुए, तुझमें पिरोये हुए, हम स्वयं विस्तृत आनन्दों को प्राप्त करें ॥४॥

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३
जगृह्मा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तं वसूयवो वसुपते
१२ ३ २३ ३ १ २ ३ १ २
वसूनाम् । विद्मा हि त्वा गोपतिं शूर गोना-
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ ५ ॥

जीवन के सब तत्त्वों के स्वामिन इन्द्र ! हम इन

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तत्त्वों की कामनासे तेरा दायां हाथ पकड़ते हैं : तुझे अपना मित्र बनाते हैं। हम जानते हैं कि तू दिव्य प्रकाश की किरणों का अधिष्ठाता है। हमें पोषक, चेतन, ऐश्वर्य (ज्ञान) प्रदान कर ॥५॥

२ १ २ ३१ २ ३ १ २र ३१२३
इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते
२ ३ २ २३ १२ ३ १२ ३ २३ १
धियस्ताः। शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आ
२र ३१ २३ १ २
गोमति व्रजे भजा त्वं नः ॥ ६ ॥

जीवन-संघर्ष में लोग इन्द्र को बुलाते हैं और उसकी पार लगाने वाली विचार एवं कर्म शक्तियों का उपयोग करते हैं। वह इन्द्र (वासना रूप) शत्रुओं का नाशक, लोगों को (ज्ञान) बांटने वाला और ज्ञान से दीप्त है।

हे इन्द्र ! तू उस अज्ञान के बाड़े में हमारा सहायक हो जहां कि दिव्य प्रकाश की किरणें रुकी पड़ी हैं ॥६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३१ २र ३१२ ३१२३ १२३
वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो
१२ १२ ३१२३२३१ २र
नाधमानाः । अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मु-
३ २ २३१२ ३२
ग्ध्या३स्मान्निधयेव बद्धान् ॥ ७ ॥

अपनी उत्तम उड़ान से दूर-दूर तक पहुँच रखने वाली दूरदर्शी (इन्द्रियां) इन्द्र से प्रार्थना करती हैं:- (अज्ञान) अंधकार को दूर कर दो, हमारी दृष्टि को (प्रकाश से) भर दो और जाल से बंधे हुए हम को (उससे) छुड़ा दो ॥७॥

१२ ३२उ ३ १२र ३१ २र ३१२
नाके सुपर्णमुप यत्पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत
१२ ३ १२ ३२३२ ३१२
त्वा । हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ
३१ २३ २
शकुनं भुरण्युम् ॥ ८ ॥

हार्दिक मित्र भाव रखते हुए हमने तुझ इन्द्र को एक ऐसे शक्तिशाली पक्षी के रूप में देखा जो दिव्य

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सुखधाम की ओर सुगमता से उड़ा जा रहा है; पांव उसके चमकीले (प्रकाशपूर्ण) हैं, तथा विघ्न निवारक दिव्य शक्ति का सन्देश वाहक वह नियन्ता द्वारा अधिष्ठित स्थान में घूमता-फिरता है ॥८॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचा
३ १ २ २ ३क २र ३ १ २ २ ३ १
वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ९ ॥

उस ज्ञानवान् (इन्द्र) ने सुन्दराकृति परन्तु बंधन में डालने वाले इस समस्त संसार की रचना से पूर्व ही भली भांति ज्ञान करने वाली (वेद) वाणी को प्रकट किया। और उसी ज्ञानवान् ने इसके सदृश अन्यों की स्थापना की : सत एवं असत् के मूल आश्रय को भी उसी ने प्रकट किया ॥९॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महे वीराय तवसे तुराय।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १
विरप्शिने वज्रिणे शन्तमानि वचांस्यस्मै स्थ-
२
विराय तक्षुः ॥ १० ॥ ९ ॥

हम इस महान्, वीर, बलशाली, वेगवान, बड़े विघ्नापहारक, कूटस्थ इन्द्र की बहुत सी, अपूर्व, कल्याणमयी स्तुतियां करते हैं ॥१०॥

इति तृतीया दशतिः । नवमः खण्डः ।

॥ द० ४ ॥ ऋषिः—१, २, ४ द्युतानः । ३ बृहदुक्थः । ५ वामदेवः । ६, ८ वसिष्ठः । ७ विश्वामित्रः । ९ गौरिवीतिः । इन्द्रो देवता ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् । ६ त्रिपदा विराट् । धैवतः स्वरः ॥

१२ ३ १ २ ३ १ २ ३२ ३ २ ३ १ २
अव द्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदीयानः कृष्णो दशभिः
३ १ २ २ ३ २ ३ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
सहस्रैः । आवत्तमिन्द्रः शच्या धमन्तमप स्नीहितिं
३ १ २ ३ २
नृमणा अधद्राः ॥ १ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सहस्रों (वृत्तियों) सहित यात्रा करता हुआ काला परन्तु चमकीला पापभाव चिति शक्ति को आ घेरता है। अपनी धाक जमाने वाले उस पापभाव को इन्द्र अपनी कम-ज्ञान की शक्ति से पकड़ लेता है और सब नरों में मनन शक्ति रूप वह इन्द्र इस विनाशकारिणी वृत्ति को नीचे पटक देता है। प्रबल मनन शक्ति से पापभावों की निवृत्ति सम्भव है ॥१॥

३१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१
वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवा अजहुर्ये
२र ३१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३
सखायः। मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा
३ १ २
विश्वाः पृतना जयासि ॥ २ ॥

पाप-वृत्तियों की फुफकार से डरकर सब मित्र दिव्य गुणों ने तुझे छोड़ दियाहै; अब हे इन्द्र ! तू अपनी विचार-शक्तियोंसे मित्रता करले : सामञ्जस्य स्थापित करले; इसके पश्चात् ही तू सब शत्रुसेना को जीत सकेगा ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३१ २र ३ १ २र३ १ २ ३ १
विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो
२ ३१ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २३
जगार । देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार
१ २र
स ह्यः समान ॥ ३ ॥

(जीवन) संघर्ष में अनेकों को मार-काट डालने वाले नवयुवक भी विघ्नराक्षस को यह पुराण पुरुष इन्द्र निगल गया। इस देव की लीला तो देखो कि इसके सामर्थ्य से यह (विघ्न) जो आज मरा पड़ा है, कल तक जीवित था! ॥३॥

२ ३ २ ३२ ३ १२ ३१ २ ३
त्वं ह त्यत् सप्तभ्योऽजायमानोऽशत्रुभ्यो अभवः
१ २ ३१ २र ३ १ २र ३
शत्रुरिन्द्र । गूढे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभु-
२ ३ १२ ३ १२
मद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः ॥ ४ ॥

हे दुर्भावनाओं के विध्वंसक इन्द्र! तू अपनी मित्रभूत सात (विचार) शक्तियों द्वारा प्रकट होकर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पृथिवी (अन्नमय) से द्यौ (मनोमय) तक के लोकों को प्राप्त कर लेता है; फिर इनसे अधिक ऐश्वयवाले (विज्ञानमय और आनन्दमय) लोकों के लिए संघर्ष करता है ॥४॥

३ १ २र ३ १ २ ३१ २ ३ १२ ३२
मेडिं न त्वा वज्रिणं भृष्टिमन्तं पुरुधस्मानं वृषभं
३ १ २ ३ २र ३ १२ ३ १ २र ३१
स्थिरप्स्नुम् । करोष्यर्यस्तरुषीर्दुवस्युरिन्द्र द्युक्षं
२३१२
वृत्रहणं गृणीषे ॥ ५ ॥

हे इन्द्र ! (आत्मन !) तू साधना की इच्छा से अपनी इन्द्रियों को गतिशील करता है और विघ्ना-पहारक प्रकाश की स्तुति करता है। इस रूप में तू खूंटे की भांति शक्तिशाली, आश्रयदाता, सबका धारक और पोषक एवं अविचल प्रतीत होता है ॥५॥

१ २ ३१ २३ १२ ३ १२ ३ १ २३१
प्र वो महे महे वृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ १ २ ३ १ २र ३ २
कृणुध्वम् । विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः ॥६॥

हे मनुष्यो ! अधिकाधिक बढ़-चढ़ कर उन्नति करने का दायित्व संभालो; और उत्कृष्ट चेतना की ओर मन लगाओ। ज्ञान से परिपूर्ण करने वाला इन्द्र अभिमुख प्रजाओं का ही सेवक होता है ॥६॥

३१ २ ३१ २३ १ २ २उ ३ ३१२ १२
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाज-
१ ३ १ २३२ ३१२ ३ २ ३ १ २ ३१ २
सातौ । शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि
३ २ ३ १ २
सञ्जितं धनानि ॥७॥

इस ज्ञान (ऐश्वर्य) के साधक कर्त्तव्यपालन में हम ज्ञान-सम्पन्न, ऐश्वयंशाली, सर्वोत्तम नेता, हमारी सुनने वाले, तेजस्वी, बचाव के संघर्षों में विघ्नों को दूर कर ऐश्वर्य को जीतने वाले इन्द्र का सहारा तकते हैं ॥७॥

२३ १ २ ३ १ २ ३१ २
उद्गु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २र ३ १२ ३ १२ ३२ ३ १२३
आ यो विश्वानि श्रवसा ततानोपश्रोता म ईवतो
१२
वचांसि ॥८॥

जीवन-तत्त्वों के सर्वोत्तम साधको ! ज्ञानप्राप्ति की इच्छा से वेद-मन्त्रों का उच्च स्वर से उच्चारण करो और उन्नतियज्ञ में इन्द्र की उपासना करो। वह इन्द्र वेदवाणी से सबकी व्याख्या करता है और शरणागत उपासक की प्रार्थना पर कान देता है ॥८॥

३१ २र ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २र
चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तमुतो तदस्मै मध्विच्च-
३ १ २र ३ २र ३ २ ३ १
च्छद्यात्। पृथिव्यामतिषितं यदूधः पयो गोष्व-
२र ३ १२
दधा ओषधीषु ॥९॥ १० ॥

जीव के लिए कर्मों का जो एक चक्र सा बन्ध गया है उसमें एक प्रकार की मधुरता छिपी हुई है। वही माधुर्य पार्थिवस्तर पर अवरुद्ध हो गौ आदि (गाय, भूमि अथवा प्रकाशमय इन्द्रियों) में और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ओषधियों में पोषक एवं पान करने योग्य रस (दुग्ध, अन्न व ज्ञानानन्द) में परिणत हो जाता है ।६।।

कर्मों का चक्र जीव के साथ लगा हुआ है परंतु ज्ञानी को वह किसी भी स्तर पर कटु प्रतीत नहीं होता ।

इति चतुर्थी दशतिः । दशमः खण्डः ।

।। द० ५ ।। ऋषिः—१ अरिष्टनेमिः । २ भरद्वाजः । ३ वसुक्रो विमदो वा । ४–६, ६ वामदेवः । ७ विश्वामित्रः । ८ रेणुः । १० गोतमः ।। देवता— १–८, ६, १० इन्द्रः । ७ पर्वतेन्द्रौ ।। त्रिष्टुप् छन्दः ।। धैवतः स्वरः ।।

२ ३ २ ३१ २ ३१ २ ३ १२ ३ २३ १ २
त्यमू षु वाजिनं देवजूतं सहोवानं तरुतारं रथा-
१ २ ३ १२ ३ २ ३ २३ १ २
नाम् । अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुं स्वस्तये तार्क्ष्य-
३ १ २
मिहा हुवेम ।। १ ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कर्मरूप घोड़ों से खींचे गये, ज्ञान-प्रकाश से प्रकाशित, हिलने-डुलने में मजबूत, सब प्रकार के वाहनों में उत्तम तारक, सर्वथा विश्वसनीय (पहिये आदि जिसके टूटे-फूटे नहीं हैं), संघर्ष में भी आगे ले जाने वाले, उस अत्यन्त वेगवान्, रथरूप पार पहुँचाने वाले इन्द्र का हम अपने अन्तःकरण में आह्वान करते हैं ॥१॥

३ २३१ २ ३ २३ २ ३ १२ ३२३ २ ३ १
त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमि-
२ ३२उ ३१ २ ३१ २र ३ २ ३ २३
न्द्रम् । हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रमिदं हविर्म-
१२ ३ १ २
घवा वेत्विन्द्रः ॥ २ ॥

वह इन्द्र भयों से बचाने वाला, शरण देकर रक्षक, सुगम और वीर है : उसका मैं आह्वान करता हूँ । वह समर्थ और सबसे आहुत है, इसलिये भी मैं उसका आह्वान करता हूँ । मेरी इस स्तुति अथवा आत्म-समर्पण को वह ऐश्वर्यशाली इन्द्र स्वीकार करे ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २
यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं हरीणां रथ्यां३ विव्र-
१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १
तानाम् । प्र श्मश्रुभिर्दोधुवदूर्ध्वधा भुवद् वि
२र ३ १ २ ३ १ २र
सेनाभिर्भयमानो वि राधसा ॥ ३ ॥

हम उस इन्द्र (आत्मा) की उपासना करते हैं जो विघ्न-निवारण में चतुर और उद्दण्ड इन्द्रियों का नियामक है। वह अपनी आन्तरिक शक्तियों से (पापवृत्तियों को) धमकता हुआ, (सद्वृत्तियों) की सेनाओं और विशिष्ट संकल्प के द्वारा उन्हें डराता हुआ उन्नति करता चला जाता है ॥३॥

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रं महामपारं वृषभं
३ १ २ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ ३ १ २
सुवज्रम् । हन्ता यो वृत्रं सनितोत वाजं दाता
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
मघानि मघवा सुराधाः ॥ ४ ॥

जो इन्द्र विघ्नरूप राक्षस का हनन कर कर्म की

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शक्ति और ज्ञानैश्वर्य को लाता व देता है; इसीलिए ऐश्वर्यशाली और सुगमता से उपास्य है, उस शत्रुओं के नाशक व नियामक (भक्तों को) सन्मार्ग में ले जाने वाले, महान् अपार, समर्थ और साधन-सम्पन्न इन्द्र की हम स्तुति करते हैं ॥४॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
यो नो वनुष्यन्नभिदाति मर्त्त उगणा वा मन्यमा-
३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३
नस्तुरो वा । क्षिधी युधा शवसा वा तमिन्द्राभी
२ ३ १ २
ष्याम वृषमणस्त्वोताः ॥ ५ ॥

यदि कोई अपनी मौत बुलाने वाला (दुर्भाव) हमें मारने की इच्छा से अपने बहुत से साथियों के बल पर अथवा अपने आप को अधिक बलशाली जानता हुआ हम पर क्षयकारी शस्त्र अथवा बल से आक्रमण करे तो तुझसे रक्षित एवं बलशाली बने हुए हम उसे विनष्ट कर दें ॥५॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
यं वृत्रेषु क्षितयः स्पर्धमाना यं युक्तेषु तुरयन्तो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ १ २र ३ २३१ २र ३ १ २र
हवन्ते । यं शूरसातौ यमपामुपज्मन् यं विप्रासो
३ १२ ३ १ २र
वाजयन्ते स इन्द्रः ॥ ६ ॥

ज्ञानमार्ग में बाधाएं आखड़ी होने पर जिसको इन्द्रियां एक दूसरे से आगे बढ़ने की इच्छा से बुलाती हैं, साधनापथ में शीघ्रगति चाहने वाले साधक जिसका स्मरण करते हैं; बलशाली आध्यात्मिक शत्रुओं के विध्वंस हेतु किये गये संग्रामों (संघर्षों में) तथा नाना कर्मों की विविध भूमियों पर ज्ञान के अभिलाषी जिसे दृढ़तर बनाते हैं; वह इन्द्र ही है ॥६॥

१ २ ३ १ २र ३ २र ३ १ २
इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीरिष आ वहतं
३ १२ ३२ ३ १ २ ३१२ ३ १२ ३ १
सुवीराः । वीतं हव्यान्यध्वरेषु देवा वर्धेथां गीर्भि-
२र३ १२
रिडया मदन्ता ॥ ७ ॥

हे इन्द्र ! (आत्मन् !) तथा पर्वत ! (आत्मा के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

महान् निवासस्थान) तुम दोनों अपने बड़े-बड़े साधनों द्वारा वीरता-धायक अन्त:प्रेरणाएं प्रदान करो; आत्मिक यज्ञों में हमारे समर्पण स्वीकार करो और सत्यदर्शन से अधिक तेजस्वी बन कर स्तुतियों से और अधिक समृद्ध बनो ॥७॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र३ १ २
इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा अपः प्रैरयत् सग-
३ १ २ १ २र ३ २ ३ १ २ ३
रस्य बुध्नात् । यो अक्षेणेव चक्रियौ शचीभि-
१ २ ३ १ २ ३ २३ २
र्विष्वक् तस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम् ॥८॥

जिस प्रकार दो पहियों व उनके आधारस्थ बोझ को धुरे से थाम्भा जा सकता है वैसे ही वह इन्द्र अपनी विचार-शक्तियों द्वारा भौतिक एवं विशुद्ध मानसिक चेतना के भीतर व्यापक रचना को थाम्भे हुए है। उस इन्द्र को हम अपनी अपने अन्तस्तल से निकली स्तुतियां और निरन्तर प्रवर्तमान कर्म-श्रृङ्खलाएं भेंट करते हैं ॥८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १२ ३ १२ ३ २ ३१ २
आ त्वा सखायः सख्या ववृत्युस्तिरः पुरू चिद-
३ १ २ ३१ २र३१ २ ३२ ३१
र्णवां जगम्याः । पितुर्नपातमा दधीत वेधा अस्मि-
२र ३१ २र
न्क्षये प्रतरां दीद्यानः ॥६॥

हे चेतना के समुद्र इन्द्र ! तुझमें तिरछी, सीधी-नाना प्रकार से—प्रविष्ट विचार की लहरें तुझसे मित्रता से वर्तें । ज्ञान-सम्पन्न तू इस देह में भली भांति चमकता हुआ सबके पालक प्रभु की निरन्तरता को स्थापित रख ॥६॥

२ ३ १ २ ३२३ ३२ ३ १ २
को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो
३ १ २ ३२ ३ १ २ ३१ ३
भामिनो दुर्हृणायून् । आसन्नेषामप्सुवाहो मयो-
१ २र ३ २ ३२ ३ १ २
भून् य एषां भृत्यामृणधत् स जीवात् ॥१०॥११॥

सत्यप्राप्ति के अर्थ की गई यात्रा में अपनी कामुक, आवेश से भरी, दुःशील इन्द्रियों को जो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कोई कर्मोन्मुख अतएव कल्याणकारी बना डालता है और इस प्रकार इनके निर्वाह की पूरी व्यवस्था कर देता है; उसका जीवन, जीवन है ।।१०।।

इति पंचमी दशतिः । एकादशः खण्डः ।

इति चतुर्थ प्रपाठकस्य प्रथमोऽर्घः ।।

।। द० ६ ।। ऋषिः—१ मधुच्छन्दाः । २ जेता । ३, ६ गोतमः । ४ अत्रिः । ५. ८ तिरश्ची: ७ नीपातिथिः । ६ विश्वामित्रः । १० शंयुः ।। इन्द्रो देवता । अनुष्टुप् छन्दः ।। गान्धारः स्वरः ।।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ।
३ १ २ ३ २ ३ १ २
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे ।।१।।

विविध ज्ञान एवं कर्म के प्रेरक इन्द्र की स्तोता स्तुति और भक्त पूजा करते हैं तथा विद्वान् उसी को ध्वज-दण्ड के समान ऊंचा उठाते हैं ।।१।।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २३ १ २
रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥२॥

हृदयान्तरिक्ष में रमे हुए, सर्वश्रेष्ठ नेता, सत्य-रक्षक और पालक इन्द्र को सब वाणियां बढ़ाती हैं ॥२॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम् ।
३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारा ऋतस्य सादने ॥३॥

हे इन्द्र ! इस सर्वोत्कृष्ट, अमरता प्रदान करने वाले दिव्य-आनन्द का उपभोग कर; परमसत्य की प्राप्ति के प्रयत्न में ज्ञान की निर्मल धाराओं ने इसे तेरे लिए बनाया है ॥३॥

१ २ ३ २ ३ ३ १ २
यदिन्द्र चित्र म इह नास्ति त्वादातमद्रिवः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
राधस्तन्नो विदद्वस उभया हस्त्या भर ॥४॥

हे चित्स्वरूप ! अदम्य इन्द्र ! आपसे दिये जाने योग्य जो धन (ज्ञान-धन) मुझे प्राप्त नहीं है वह

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

धन मुझे मुक्तहस्त होकर दे ।।४।।

३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३१ २
श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति ।
३१२ ३ १ २ ३१ २ ३१ २
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि ।।५।।

हे इन्द्र ! जो प्राणी तेरी पूजा करता है उसकी प्रार्थना को सुन; वीर्यसम्पन्न, जितेन्द्रिय पुरुष को भरपूर कर दे; तू महान् है ।।५।।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि ।
१ २ ३२उ ३ २ ३ २ ३ १ २
आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियं रजः सूर्यो न रश्मिभिः ।।

हे बलशाली और वासनाओं को परास्त करने वाले इन्द्र ! तेरे लिए यह ज्ञानानन्द सिद्ध किया गया है; आकर इसका आनन्द ले । जिस प्रकार सूर्य (अन्धकाराच्छन्न) अन्तरिक्ष को अपने प्रकाश से भर देता है वैसे ही यह आनन्द तुझे तृप्त करे ।।

१ २ ३ १ २ ३२३ १ २ ३ २
एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३१ २
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥७॥

हे इन्द्र! साधक की हार्दिक स्तुति को तू अपने प्रापक साधनों—इन्द्रियों—समेत सुन। प्रकाशपूर्ण अवस्था के वासी हे इन्द्र! तू उस प्रकाशावस्था के अधिष्ठाता की दिव्य अवस्था को प्राप्त कर ॥७॥

२ ३ १ २ ३२३ १ २ ३१२
आ त्वा गिरो रथीरिवास्थुः सुतेषु गिर्वणः।
३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २३ ३ १ २
अभि त्वा समनूषत गावो वत्सं न धेनवः ॥८॥

प्रार्थनागम्य हे इन्द्र! अध्यात्म-यज्ञों में हमारी प्रार्थनाओं का लक्ष्य तू ही है; दुधारु गौएं जैसे अपने बछड़े को पुकारती हैं वैसे हम तुझे ही लक्ष्य कर स्तुति करते हैं ॥८॥

२३ २ ३ १ २ ३२ ३ २ ३ १ २
एतोन्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना।
३ २३ १ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्धैराशीर्वान् ममत्तु ॥९॥

आओ तो! उस प्रकाशपूर्ण इन्द्र को, जो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विशुद्ध स्तोत्रों से अधिक समृद्ध होता है, निर्मल आनन्द की भेंट दें। निर्मल आनन्द से वह आनन्दित हो उठता है ॥६॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
यो रयिं वो रयिन्तमो यो द्युम्नैद्युम्नवत्तमः।
१ २ ३ १ २र ३ १ ३ १ २
सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः ॥१०॥

हे स्वधापते इन्द्र! सब धनों में सर्वोत्तम धन, कान्ति से सर्वाधिक कान्ति-सम्पन्न, साधित परमानन्द रस ही तेरा सर्वोत्तम हर्ष-साधन है ॥१०॥

इति पंचमी दशतिः। द्वादशः खण्डः।

॥ इति तृतीयोऽध्यायः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ चतुर्थोऽध्यायः ।

॥ द० ७ ॥ ऋषिः—१ भरद्वाजः । २ वामदेवः शाकपूतो वा । ३ प्रियमेधः । ४ प्रगाथः । ५ श्यावाश्वः । ६ शंयुः । ७ वामदेवः । ८ जेता ॥ देवता—१–४, ६, ८ इन्द्रः । ५ मरुतः । ७ दधिक्रावा ॥ अनुष्टुप् छन्दः । गान्धारः स्वरः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर ।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अरङ्गमाय जग्मये ऽपश्चादध्वने नरः ॥१॥

हे इन्द्र ! आनन्द के पिपासु, जीवन यात्रा में पीछे न रहने वाले तथा दूसरों का नेतृत्व करने वाले ज्ञानी को सब आनन्द प्राप्त करा ॥१॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
आ नो वयोवयः शयं महान्तं गह्वरेष्ठां महान्तं
३ २ ३ २ ३ ३ १ २
पूर्विणेष्ठाम् । उग्रं वचो अपावधीः ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हम लोग हृदयों, में संसार की व्यवस्था करने वाले महान् प्रभु का आवास जानकर कठोर वाणी का प्रयोग कभी न करें ॥२॥

२ ३ २३ २ ३ १२ ३ १ २
आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि ।
३ १ २ ३२३ १ २ ३ १ २
तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्रं शविष्ठ सत्पतिम् ॥३॥

हे बलवन् ! हम लोग जीवन में प्रगति के हेतु ज्ञानरूप धन के साधनभूत, विविधकर्मा, वासनाओं के विजेता, सत्यरक्षक तुझ 'इन्द्र' से व्यवहार रखें ॥३॥

२ ३ २ ३ १ २ ३१ २र
स पूर्व्यो महोनां वेनः क्रतुभिरानजे ।
२ ३ २ ३ १२३ ३ २ ३२३ १२ ३२
यस्य द्वारा मनुः पिता देवेषु धिय आनजे ॥४॥

पूजनीयों में अग्रणी वह ज्ञानस्वरूप अपने ज्ञान एवं कर्म से सब कुछ व्यक्त करता है । उसके द्वारा ही मननशील पालक परमात्मा विद्वानों की बुद्धियों को प्रेरित करता है ॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२३ १२ ३ २ ३ १२ ३ २३ २
यदी वहन्त्याशवो भ्राजमाना रथेष्वा ।
१ २ ३२३ ३ २३ १ २
पिबन्तो मदिरं मधु तत्र श्रवांसि कृण्वते ॥५॥

मग्न करने वाले आनन्द का उपभोग कराती हुईं, शीघ्रगामी, प्रकाशपूर्ण विचारशक्तियां इन्द्रियों के द्वारा जहां कहीं पहुँचा देती हैं ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य वही है ॥५॥

१२ ३ १२ ३ १ २र३ १ २
त्यमु वो अप्रहणं गृणीषे शवसस्पतिम् ।
१ २ ३ २ ३ २३ १ २ ३ १ २
इन्द्रं विश्वासाहं नरं शचिष्ठं विश्ववेदसम् ॥६॥

तुम लोगों को मैं उस इन्द्र का उपदेश देता हूँ जो अभेद्य, बलवान्, प्रत्येक शत्रु का विनाशक, नेता, ज्ञानियों में सर्वोत्तम और सर्वज्ञ है ॥६॥

३ १ २ ३ १ २र ३ १२
दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
सुरभि नो मुखा करत् प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हम उस विजयी, व्यापक ईश्वर की स्तुति करें जो हमें सन्मार्गगामी बनाता है और हमारे आयुष्य की वृद्धि करता है ॥७॥

३२ ३ १ २र ३ १ २र
पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत ।
२ ३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३२
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्त्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥८॥

वह इन्द्र जो अन्नमय आदि जीव कोषों को तोड़ने वाला है, सदा युवा, क्रान्तदर्शी अपरिमित तेजस्वी. सब कर्मों का कर्ता, रक्षा के साधनों से सम्पन्न और इसीलिए बहुस्तुत है ॥८॥

इति सप्तमी दशतिः । प्रथमः खण्डः ।

॥ द० ८ ॥ ऋषिः—१, ३, ५ प्रियमेधाः । २, १० वामदेवः । ४ मधुच्छन्दाः । ६ भरद्वाजः । ७ अत्रिः । ८ प्रस्कण्वः । ९ त्रितः ॥ देवता—१-७ इन्द्रः । ८ उषाः । ९ विश्वेदेवाः । १० ऋक्सामौ ॥ अनुष्टुप् छन्दः ॥ गान्धारः स्वरः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ २३१२ ३१ २३१ २
प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं वन्दद्वीरायेन्दवे ।
३ १ २ ३१२ ३ २३ १ २
धिया वो मेधसातये पुरन्ध्या विवासति ॥१॥

मैं आत्मवीरों से सेवित परमानन्द के अर्थ तुम को जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति (के अनुभव करने की) की प्रेरणा देता हूँ। उस पवित्र धन की प्राप्ति के लिए विविध रूप में धारणावती बुद्धि का आधान करो ॥१॥

३ १२ ३२ ३ २ ३ २ ३२ ३१२
कश्यपस्य स्वर्विदो यावाहुः सयुजाविति ।
२ ३ २ ३१२ ३२ ३१ २र ३१ २
ययोर्विश्वमपि व्रतं यज्ञं धीरा निचाय्य ॥२॥

धीर पुरुषों ने प्राण व अपान के सब कर्मों को एक महान् यज्ञ के रूप में निश्चय ही परमसुख का लाभ करने वाले द्रष्टा साधक का सहयोगी बताया है ॥२॥

१ २३ १ २ ३ १ २ ३ १३
अर्चत प्रार्चता नरः प्रियमेधासो अर्चत ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अर्चन्तु पुत्रका उत पुरमिद्‌ धृष्णवर्चत ॥३॥

सब बुद्धिमान एवं साधारण मनुष्यों को चाहिए कि वे देहों को छुड़ा देने वाले इन्द्र की ही पूजा करें और उसे भली भांति पूजें ॥३॥

उक्थमिन्द्राय शंस्यं वर्द्धनं पुरुनिःषिधे ।
शक्रो यथा सुतेषु णो रारणत् सख्येषु च ॥४॥

देहों को छुड़ा देने वाले इन्द्र को बढ़ावा देना चाहिये; इस प्रकार समर्थ होकर वह हमारे ज्ञान-यज्ञों तथा सहयोग के कार्यों में सजीव रहता है ॥४॥

विश्वानरस्य वस्पतिमनानतस्य शवसः ।
एवैश्च चर्षणीनामूती हुवे रथानाम् ॥५॥

रथरूप वाहन-साधनभूत ज्ञान-कर्मेन्द्रियों की उन्नति-गति के लिए मैं सर्वगत, अजेय, बल के स्वामी इन्द्र का आह्वान करता हूँ ॥५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १र २र ३ १२
स घा यस्ते दिवो नरो धिया मर्त्तस्य शमतः ।
३ १र २र३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
ऊता स बृहतो दिवो द्विषो अंहो न तरति ॥६॥

जो मरणधर्मा मनुष्य इन्द्र के ज्ञान-दान का उपयोग बुद्धिपूर्वक करता है वह उस महान् दान से अधिगत रक्षण द्वारा अपनी पापरूप सब द्वेष-भावनाओं से बच जाता है ॥६॥

३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
विभ्रोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो ।
१ २ ३ १ २
अथा नो विश्वचर्षणे द्युम्नं सुदत्र मंहय ॥७॥

हे विविध ज्ञान-कर्मा इन्द्र ! तेरे व्यापक धन का दानगुण भी व्यापक है । हे सर्वद्रष्टा ! सुदानी ! तू उस अपने ज्ञान-धन से हमें भी बढ़ा ॥७॥

१२ ३ १ २ ३१ २र
वयश्चित् ते पतत्रिणो द्विपाच्चतुष्पादर्जुनि ।
२३ १२ ३१ २र ३ १ २र ३ १२
उषः प्रारन्नृतूँरनु दिवो अन्तेभ्यस्परि ॥८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे विविध-कान्तिसम्पन्न उषे ! (चितिशक्ति) तेरी ये विविध-शक्तियों (पाद्) वाली ज्ञान-धारायें प्रकाशलोक के अन्तिम छोर से हमें नियमित रूप से प्राप्त होती रहें ॥८॥

३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
अमी ये देवा स्थन मध्य आ रोचने दिवः ।
१ १ ३ २ ३ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
कद्व ऋतं कदमृतं का प्रत्ना व आहुतिः ॥९॥

इस प्रकाशलोक के मध्य जो देव विद्यमान हैं उनमें से परमसत्य कौनसा है ? अमर कौन है ? और तर्पण करने योग्य प्राचीन कौनसा है ? ॥९॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
ऋचं साम यजामहे याभ्यां कर्माणि कृण्वते ।
१ २र ३ २ ३ १ २
वि ते सदसि राजतो यज्ञं देवेषु वक्षतः ॥१०॥

ऋग्वेद और सामवेद की सहायता से सब कर्म किये जाते हैं, उनका ही हम स्वाध्याय करते हैं; वे ही सभाओं में विराजते हैं और विद्वानों के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यज्ञादि का साधन बनते हैं ॥१०॥

इत्यष्टमी दशतिः । द्वितीय खण्डः ।

॥ द० ६ ॥ ऋषिः—१ रेभः । २ सुवेदः । ३ वामदेवः । ४, ७, ८ सव्यः । ५ विश्वामित्रः । ६ कृष्णः । ९ भरद्वाजः । १० मेधातिथिः । ११ कुत्सः ॥ देवता —१–८, १०, ११ इन्द्रः । ९ द्यावापृथिव्यौ ॥ छन्दः १–९, ११ जगती । १० महापङ्क्तिः ॥ स्वरः—१–९, ११ निषादः । १० पञ्चमः ॥

२ ३ १२ ३ १२३ १२ ३१ २ ३१ २
विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरः सजूस्ततक्षुरिन्द्रं
३ १ २ ३१२ २ ३ १२ ३२ ३१२३१
जजनुश्च राजसे । क्रत्वे वरे स्थेमन्यामुरीमुतो-
२१ ३१२ ३ १२
ग्रमोजिष्ठं तरसं तरस्विनम् ॥१॥

उत्तम शोभा और स्थायी श्रेष्ठ क्रियाशीलता के लिए सब लोग मिलकर सब हिंसक सेनाओं को परास्त करने वाले, उनके संहारक, तेजस्वी, वेगवान्, निरालस इन्द्र का निर्माण व उद्भव करो ॥१॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १२ ३२र ३ २र ३
श्रत्ते दधामि प्रथमाय मन्यवे ऽहन् यद् दस्युं
१ २ ३२३२ ३२३ ३ १२३ १२ ३२३
नर्यं विवेरपः। उभे यत्वा रोदसी धावतामनु
१ २३ ३ २ ३ १ २
भ्यसाते शुष्मात् पृथिवी चिदद्रिवः ॥२॥

हे अदम्य ! तुझ सर्वश्रेष्ठ ओजस्वी पर मेरा भरोसा है; तूने हिंसक मनोवृत्तियों को नष्ट कर नर-हितकारी कर्मशक्तियों को प्रकट किया है। दोनों द्यु और पृथिवी लोक तेरे पीछे ही गति कर रहे हैं; तेरे बल पर ही पृथिवी की गति है ॥२॥

३२३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २र ३ १
समेत विश्वा ओजसा पतिं दिवो य एक इद्
२र३ १ २ २ ३ १ २र ३ १२२ १
भूरतिथिर्जनानाम्। स पूर्व्यो नूतनमाजिगीषं तं
२३ १ २र ३ २ ३ २
वर्तनीरनु वावृत एक इत् ॥३॥

प्रकाशलोक का जो अधिपति अकेला ही सबके भीतर व्यापक है उसकी शरण में पहुँचो। वह

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अनादि नित नई मनोवृत्तियों का जिगीषु है और उस अकेले के पीछे ही सब मार्ग पहुँचते हैं ॥३॥

३ १ २ ३ २ ३१ २ ३ २ ३२ ३ १ २
इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि
२३ ३ १ २ ३ २३ १२
प्रभूवसो । न हि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्
३ १ २३ २ ३ १२ ३ १२
क्षोणीरिव प्रति तद्धर्य नो वचः ॥४॥

हे बहुस्तुत ! समर्थ (ज्ञान) धन-सम्पन्न ! हम तेरे ही हैं; तेरी ओर ही हमारा प्रयाण है । हम साधकों की स्तुतियां तुझसे भिन्न किसी दूसरे को नहीं पहुँचती : तू ही उनका लक्ष्य है; अकेला-सा ही तू हमारी प्रार्थना को सुन ॥४॥

३ १२ ३१ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ २
चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्या३मिन्द्रं गिरो बृहती-
३क २र ३ १ २ ३१ २३ २ १२ ३
रभ्यनूषत । वावृधानं पुरुहूतं सुवृक्तिभिरमर्त्यं
१२ ३ १ २
जरमाणं दिवेदिवे ॥५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उस प्रजापालक, ऐश्वर्यसम्पन्न, स्तुति करने योग्य, निरन्तर बढ़ रहे, पावक वचनों द्वारा अनेकों से आहुत, अमर्त्य, नित्य स्तुत इन्द्र को हमारे बड़े-बड़े स्तुति वचन पहुँचें ॥५॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अच्छा व इन्द्रं मतयः स्वयुवः सध्रीचीर्विश्वा
३ २ ५ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३
उशतीरनूषत । परि ष्वजन्त जनयो यथा पतिं
२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये ॥६॥

हे इन्द्र ! जैसे स्त्रियां अपने रक्षण के लिये पावक, ऐश्वर्य-सम्पन्न व बली पति का आलिङ्गन करती हैं वैसे ही ये विचारशक्तियां, जो परमानन्द की ओर चली जा रही हैं, सब एक साथ तेरी कामना करती हुई तुझे प्राप्त हों ॥६॥

३ २३ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
अभि त्यं मेषं पुरुहूतमृग्मियमिन्द्रं गीर्भिर्मदता
१ २ ३ २ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
वस्वो अर्णवम् । यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २र ३ १ २र
सुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत ॥७॥

उस सुखवर्षक, बहुस्तुत, ऋचाओं से गम्य, (ज्ञान)-धनों के समुद्रभूत इन्द्र को अपने प्रार्थना-वचनों से मुग्ध कर दो। मानवीय प्रयत्न उस इन्द्र के दिव्य प्रयत्नों तक नहीं पहुँचते; अतएव अपने भाग के लिये उस महिमाशाली की पूजा करो ॥७॥

२उ ३१ २ ३ १२ ३१ २र ३१२
त्यं सु मेषं महया स्वर्विदं शतं यस्य सुभुवः
३१ २र २ ३ १ २र ३ २३ २३ १ २
साकमीरते। अत्यं न वाजं हवनस्यदं रथमिन्द्रं
३१२ ३१ २
ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः ॥८॥

उस सुखवर्षक, परमानन्द प्रापक इन्द्र का खूब आदर कर; उसकी स्वतः प्रादुर्भूत सैंकड़ों (विचार-शक्तियां) एक साथ उसको पहुँचती हैं। मैं भी शीघ्र यात्रा के लिए, बाधाओं को लांघ जाने वाले, बली, कहने पर शीघ्रगति से चलने वाले सुवाहक

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(रथ) अश्व की भांति वर्तमान इन्द्र को स्तुतिपूर्वक वर्तता हूँ ॥८॥

३१२३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २३१२
घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे
३१२ १२ ३१ २र ३ १ २ ३ १ २
सुपेशसा । द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्क-
३२३ १२
भिते अजरे भूरिरेतसा ॥९॥

दीप्ति और जल से युक्त, प्राणियों के आश्रय-भूत, बहुत बड़े-बड़े, विस्तृत, आनन्दप्रद, नित्य और अनेक बीजों से संयुक्त द्युलोक और पृथिवी लोक परमेश्वर के सामर्थ्य से ही टिके हुए हैं ॥९॥

३ २र ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषा इव । महान्तं
३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २र
त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम् । देवी जनित्र्य-
३ १ २र
जीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥१०॥

जिस प्रकार उषा का प्रकाश सर्वत्र फैल जाता

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

है, वैसे ही हे इन्द्र ! तेरा प्रकाश पृथिवी से द्युलोक-पर्यन्त विस्तृत है। बड़ों में बड़े और दूरद्रष्टाओं में सम्राट्भूत तुझको दिव्य माता ने बनाया : उसी कल्याणकारिणी जगत्माता ने ही तेरे स्वरूप को प्रकट किया है ॥१०॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
प्र मन्दिने पितुमदर्चता वचो यः कृष्णगर्भा
३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
निरहन्नृजिश्वना अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं
३ १ २ ३ १ २
मरुत्वन्तं सख्याय हुवेमहि ॥ ११ ॥ ३ ॥

जिसने सरल ज्ञान से पापगर्भा दुष्प्रवृत्तियों को नष्ट कर दिया उस आनन्दी इन्द्र का पालक की-सी वाणियों से आदर करो। रक्षण चाहते हुए हम भी उस समर्थ, साधन-सम्पन्न, विचारशक्तियों सहित वर्तमान इन्द्र को अपना मित्र बनाते हैं ॥११॥

इति नवमी दशतिः। तृतीयः खण्डः।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ द० १० ॥ ऋषिः—नारदः । २, ३ गोषूक्त्यश्व-सूक्तिनौ । ४ पर्वतः । ५—१० विश्वमना वैयश्वः । ८ नृमेधः । ६ गोतमः ॥ इन्द्रो देवता ॥ उष्णिक् छन्दः ॥ ऋषभः स्वरः ॥

१ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र
इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीष उक्थ्यम् ।
३ २ ३२ ३ १ २ ३ २
विदे वृधस्य दक्षस्य महां हि षः ॥१॥

हे इन्द्र ! तू अत्यन्त समृद्धि के लिए सिद्ध किए आनन्द-रसों में से प्रशंसनीय संज्ञान को छान कर शुद्ध कर लेता है; वह निःसंदेह महान् है ॥१॥

१२ ३ १ २र ३१ २ ३२
तमु अभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम् ।
१ २ ३ १ २ ३१ २र
इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत ॥२॥

बहुतों से स्मृत व स्तुत उस इन्द्र का ही गान करो, और उसी शीघ्रगामी बलशाली को साक्षात करो ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १२ ३ १२ ३१ २ ३ २
तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृत्सु सासहिम् ।
३ १२ ३ १ २
उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम् ॥३॥

हे अदम्य ! हम तेरे उस परमानन्द का ही बखान करें जो पोषक, संघर्षों में ठहराने वाला, लोक-विजयी और ज्ञानियों के आश्रय के योग्य है ॥३॥

१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
यत्सोममिन्द्र विष्णवि यद्वा घ त्रित आप्त्ये ।
१ २ ३२ ३ १ २३ १ २र
यद् वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः ॥४॥

हे इन्द्र ! आनन्द की धाराओं से संयुक्त जिस रस को तू अपने में लीन अथवा तीनों अवस्थाओं के पारंगत विद्वान् भक्त में चखता है उसको मुझ में भी चख ॥४॥

२३ १ २ ३ १ २ ३ १ ३ ३ १ २
एदु मधोर्मदिन्तरं सिञ्चाध्वर्यो अन्धसः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २उ ३ १ २र ३ १२
एवा हि वीरस्तवते सदावृधः ॥५॥

हे साधक ! हर्षदायक भक्तिरूप-रस को सींच; सदा उन्नतिशील वीर ही यह स्तुति करता है ॥५॥

२ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २र
एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु ।
१ २र ३ २
प्र राधांसि चोदयते महित्वना ॥६॥

अपनी महिमा से ऐश्वर्य पहुँचाने वाले इन्द्र को इसी प्रकार रस से सींचो; और हे इन्द्र ! तू शान्ति-दायक रस का पान कर ॥६॥

२३ २ ३ १ २३ १ २ ३ २ ३ १२
एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखायः स्तोम्यं नरम् ।
३१ २र ३ २उ ३ २
कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत् ॥७॥

वह अकेला ही समस्त कर्मिष्ठ प्रजाओं का शासक बना हुआ है। हे मित्रो ! आओ, उस स्तुति योग्य नेता इन्द्र की स्तुति करें ॥७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २३ १२ ३ १ २ ३२ ३२
इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत् ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १२
ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥८॥

हे स्तोताओ ! तुम उस विविध रूप में हमें संतुष्ट करने वाले, वेदोपदेष्टा, ज्ञान-कर्मशाली, स्तुति-योग्य इन्द्र का विस्तृत कीर्तन करो ।८॥

२३ ३ २ ३ १२३ २३ १२ ३१२
य एक इद् विदयते वसु मर्ताय दाशुषे ।
१ २३ १२ ३ १ २ ३२
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥९॥

हे शिष्य ! वह इन्द्र अकेला ही अजेय एवं सब का अधिष्ठाता बना हुआ समर्पण करने वाले दानी मनुष्य को नाना धनैश्वर्य प्रदान करता है ॥९॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
सखाय आ शिषामहे ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे ।
३२ ३ २ ३ १२ ३ १२
स्तुष ऊ षु वो नृतमाय धृष्णवे ॥१०॥

हे मित्रो ! उस साधन-सम्पन्न इन्द्र की वेदवाणी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

से हम स्तुति करते हैं। उन पुरुषोत्तम, अजेय इन्द्र का मैं तुम्हारे लिए वर्णन करता हूँ ॥१०॥

इति दशमी दशतिः। चतुर्थः खण्डः।
॥ चतुर्थः प्रपाठकश्च समाप्तः ॥

अथ पञ्चमः प्रपाठकः।

॥ द० १ ॥ ऋषिः—१ प्रगाथः। २ भरद्वाजः। ३ नृमेधः। ४ पर्वतः। ५, ७ इरिमिठः। ६ विश्वमनाः। ८ वसिष्ठः ॥ देवता-१-४, ८ इन्द्रः। ५, ७ आदित्याः। ६ अग्निः ॥ छन्दः—१-७ उष्णिक्। ८ विराडुष्णिक् ॥ ऋषभः स्वरः ॥

३ १ २र ३ १२ ३ २ ३१२
गृणे तदिन्द्र ते शव उपमां देवतातये।
१ २र ३१ २र
यद्धंसि वृत्रमोजसा शचीपते ॥१॥

हे ज्ञान-रश्मियों से संयुक्त इन्द्र ! तू जो अपने

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वीर्य से विघ्नराक्षस का वध करता है उस तेरे बल की उचित चर्चा दिव्यता की प्राप्ति के लिए करता हूँ ॥१॥

२ ३ १ २र३ २ ३ १ २ ३ १२
यस्य त्यच्छम्बरं मदे दिवोदासाय रन्धयन् ।
३ १ २र ३१ २र
अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ॥२॥

हे इन्द्र ! जिस परमानन्द के प्रभाव से तूने दिव्यता के उपासक के लिए उस मदारी—विघ्न-राक्षस का विनाश किया, वही आनन्द तेरे लिए सिद्ध किया रखा है; तू इसे पी जा । २॥

१ २ ३ १ २
एन्द्र नो गधि प्रिय सत्राजिदगोह्य ।
३ २उ ३ १ २ ३१ २र ३२
गिरिर्न विश्वतः पृथुः पतिर्दिवः ॥३॥

हे प्रिय. सर्वविजयी, कभी न छिपने हारे इन्द्र ! तू हमारे समीप आ । तू पहाड़ की भांति सब ओर से विशाल और प्रकाशलोक का पालक है ॥३॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २ १ २ ३ १२
य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति ।
२ ३ २ ३ २र २ ३ १ २
येना हंसि न्या३त्रिणं तमीमहे ॥४॥

परमानन्द से अति प्रसन्न और बलवान हुआ तू जब चेतता है तो दूसरे का भाग निगल जाने वाले अन्यायी को मार डालता है; तेरे इस परमानन्द को हम पहचानें ॥४॥

३१ २र३ २उ३ ३ १ २ ३ १२ ३१ २
तुचे तुनाय तत्सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे ।
१ २ ३ १२
आदित्यासः समहसः कृणोतन ॥५॥

हे तेजस्वी आदित्यो ! तुम वंशवृद्धि के लिए हमारी सन्तान को दीर्घ आयु प्रदान करो ॥५॥

२ ३ १ २र ३ १ २ ३१२
वेत्था हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम् ।
१२ ३ १ २ ३१ २
अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव ॥६॥

जिस प्रकार शोध लगाने वाला चारों ओर जाने

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वालों के पदों को पहचानता है वैसे ही हे वज्रहस्त ! तू दुर्भावनाओं के ठौर को जानता है ॥६॥

१ २२ ३२३ २ ३१२ ३ २
अपामीवामप स्रिधमप सेधत दुर्मतिम् ।
१ २ ३ १ २ ३ १२
आदित्यासो युयोतना नो अंहसः ॥७॥

हे आदित्यो ! हमारे रोग को दूर करो (आधिभौतिक गुण) और दुर्भावनाओं को नष्ट करो (आध्यात्मिक गुण) : इस प्रकार हमें पाप से दूर हटा दो ॥७॥

२ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १२ ३
पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्य-
१ २ ३ २३ २ ३ १२३ १ २
श्वाद्रिः । सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा ॥८॥५॥

हे इन्द्र ! इस परमानन्द को पी जा; यह तुझे आनन्दित करे; हरणशील इन्द्रियों से युक्त हे इन्द्र ! मेघ सदृश वर्षण करने वाले धर्ममेध (समाधि) ने तेरे लिये इसे सिद्ध किया है : साधक की बाहुओं से

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सुनियन्त्रित यह सधे हुए घोड़े के समान तुझे सुख-दायक हो ॥८॥

इति प्रथमा दशतिः । पञ्चमः खण्डः ।

॥ द० २ ॥ ऋषिः—१-६, ६, १० सौभरिः । ७, ८ नृमेधः ॥ देवता—१, २, ४, ५, ७-१० इन्द्रः । ३, ६ मरुतः ॥ ककुप् छन्दः ॥ ऋषभः स्वरः ॥

३ २ ३ १ २र ३१ २ ३ १२
अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि ।
३१ २ ३ १ २
युधेदापित्वमिच्छसे ॥ १ ॥

हे इन्द्र ! तू अपने प्रकट होने के समय से ही, स्वभावतः ही, अजातशत्रु, नेतारहित (स्वतन्त्र), बन्धु-बान्धवरहित—अकेला—है । अब संघर्ष में सहयोग देकर बन्धुत्व स्थापित करना चाहता है ॥१॥

१ २ ३१२ ३ १ २र ३ २ ३ १२
यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु व
१ २ ३ १ २ ३१२
स्तुषे । सखाय इन्द्रमूतये ॥ २ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे मित्रो ! जिसने हमें पहले यह बसाने योग्य भोग्य प्राप्त कराया, आगे बढ़ने के लिए उसी इन्द्र का तुम्हें उपदेश देता हूँ ॥२॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
आ गन्ता मा रिषण्यत प्रस्थावानो माप स्थात

३ १ २
समन्यवः । दृढा चिद्यमयिष्णवः ॥३॥

दृढ़ होकर नियन्त्रण कर लेने वाले विचार-शक्ति-रूप साथियो ! आओ, दुःखी मत होओ, आगे प्रस्थान करने वालो ! क्रोध में मत भरे रहो ॥३॥

१ २३२३ २ ३ १ २३ १२
आ याह्ययमिन्दवे ऽश्वपते गोपत उर्वरापते ।

१ २
सोमं सोमपते पिब ॥ ४ ॥

हे कर्मेन्द्रियों के पालक ! ज्ञानेन्द्रियों के पालक ! सफलसाधक ! सोम-रस के अधिष्ठाता, आइये; परमसुख की प्राप्ति के लिये इस रस का पान कीजिये ॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३१ २र ३१ २
त्वया ह स्विद् युजा वयं प्रति श्वसन्तं वृषभ
२उ ३ १ २
ब्रुवीमहि । संस्थे जनस्य गोमतः ॥ ५ ॥

हे ज्ञानवर्षक ! इन्द्र ! तुझे साथी बना कर हम ज्ञानी पुरुषों के संघ में बैठ कर देहधारियों के लिये तेरा बखान करेंगे ॥५॥

१ २ ३क २र ३२३ १२
गावश्चिद् घा समन्यवः सजात्येन मरुतः सब-
३१२ ३१ २ ३२
न्धवः । रिहते ककुभो मिथः ॥६॥

हे विचारशक्तियो ! जन्म से सजातीय होने के कारण इन्द्रियां तुम्हारी सबन्धु हैं : वे और तुम परस्पर विस्तृत दिशाओं में मिलते हो ॥६॥

१ २ ३ १ २३ १ २ ३ १ २
त्व न इन्द्रा भर ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे।
२ ३१ २ ३१२
आ वीरं पृतनासहम् ॥ ७ ॥

सैंकड़ों प्रज्ञावाले ! सब लोकों के द्रष्टा इन्द्र ! हमें

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वीरताधायक तथा शत्रुविजेता बल एवं वीर्य से भरपूर कर दे ।।७।।

२ ३क २र ३ १२ ३ १ २ ३१२ ३
अध्वा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे ससृ-
१२ ३२३ १ २ ३२ १
ग्महे । उदेव ग्मन्त उदभिः ।। ८ ।।

हे स्तुत्य इन्द्र ! जिस प्रकार जल जलों में मिल जाते हैं उसी प्रकार हम अपने कमनीय लक्ष्य तेरे समीप आवें और तुझ में लीन हो जावें । ८।।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२ ३१
सीदन्तस्ते वयो यथा गोश्रीते मधौ मदिरे विव-
२ ३ १ २र
क्षणे । अभि त्वामिन्द्र नोनुमः ।।९।।

हे इन्द्र ! पक्षियों की भान्ति लक्ष्य के लिए ऊर्ध्व-गति करते हुए तथा तेरे ज्ञान-प्रकाशयुक्त, मधुर, लक्ष्यभूत परमानन्द की आशा में वर्तमान हम साधक तुझे नमस्कार करते हैं ।।९।।

३ २ ३ १ २ ३२३ ३ १ २ ३ १२
वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद् भरन्तोऽवस्यवः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३१ २
वज्रिं चित्रं हवामहे ॥१०॥६॥

हे अपूर्व ! हे शक्तिशाली ! हम लोग रक्षा की इच्छा से तुझे परिपुष्ट करते हुए तेरी स्तुति करते हैं: वैसे ही जैसे कोई बैल को परिपुष्ट करता है ॥१०॥

इति द्वितीया दशतिः । षष्ठः खण्डः ॥

॥ द० ३ ॥ ऋषिः—१-८ गौतमः (सम्मदोवा) । ६ त्रितः । १० अवस्युः ॥ देवताः—१-८ इन्द्रः । ६ विश्वेदेवाः । १० अश्विनौ ॥ पंक्तिश्छन्दः ॥ पञ्चमः स्वरः ॥

३ २ ३ १ २३१ ३ १ २ ३क२र
स्वादोरित्था विषूवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यः ।
१ १र ३ १२ ३२ ३ १२ ३ २ ३
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभथा
२ ३१२ ३१ २
वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ १ ॥

इन्द्रियां तृप्तिकारक, सिद्ध किये गये परमानन्द का पान करती हैं और इस प्रकार बली इन्द्र के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

साथ-साथ बलवती बनी हुई प्रसन्न होती हैं; पश्चात् ऐश्वर्यसम्पन्न वे स्वराज्य से—अपने स्वाभाविक तेज से युक्त शोभायमान होती हैं ॥१॥

३ २उ ३ २उ ३ १२ ३ २३ १२
इत्था हि सोम इन्मदो ब्रह्म चकार वर्धनम् ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहि-
२ ३ १ २ ३ १ २
मर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ २ ॥

हे बली, वज्रधारिन ! जब कि सोम में उन्नतिकारक ज्ञान के परमानन्द को तूने उत्पन्न किया तो इस प्रकार इस पृथिवी लोक के विघ्न को अपने वीर्य से विनष्ट किया और इस प्रकार तूने अपना जन्मजात तेज प्राप्त किया ॥२॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २र
इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः ।
२र ३२ ३ २३ १ २र ३ २र३ १
तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२
नोऽविषत् ॥ ३ ॥

विघ्न-विध्वंसक इन्द्र अपने साथियों समेत परमानन्द रूप बल की प्राप्ति के लिए उन्नति करता है : वह ज्ञान-यज्ञों में हमारी रक्षा करता है। उसी इन्द्र को हम अपने छोटे-बड़े सब संघर्षों में रक्षार्थ स्मरण करते हैं ॥३॥

२ ३ २ ३ १ ३ १ २ ३क २र
इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवोऽनुत्तं वज्रिन् वीर्यम्।
२र३ २ ३ १ २ ३२उ ३ २ ३१ २र३२३ १२
यद्ध त्यं मायिनं मृगं तव त्यन्माययावधीरर्चन्ननु
३ १ २
स्वराज्यम् ॥ ४ ॥

हे अदम्य, और साधन-सम्पन्न इन्द्र ! तेरा वीर्य सदा अक्षुण्ण है : तूने ही उस ऐन्द्रजालिक भ्रामक को अपनी युक्ति से नष्ट किया है और अपने स्वाभाविक तेज को प्राप्त किया है ॥४॥

२ ३ १ २ ३२उ ३ २ ३ १ २
प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३१ २र ३ २
इन्द्र नृम्णं हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपो
३ १२ ३ १ २
ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ ५ ॥

स्वराज्य की साधना की इच्छा से हे इन्द्र ! आगे बढ़, संघर्ष में आगे आ; बाधाओं को दबा; तेरे वज्र को कोई नहीं रोक सकता। हे इन्द्र ! तेरा बल ऐश्वर्य साधक है; विघ्न को मार और कर्म-विजयी हो ॥५॥

२३१ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १२
यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम् ।
३ १ २३ २ ३ २३ २उ ३ १ २र ३
युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधो
१ २ ३ १ २
ऽस्माँ इन्द्र वसौ दधः ॥ ६ ॥

जीवन-संघर्ष में सब बाधाओं का पराभव करने वाले को ही ऐश्वर्य प्राप्त होता है। हे इन्द्र ! जब तेरी ज्ञान-कर्मेन्द्रियां आनन्द में विभोर हुई तेरी सहायक एवं तेरे वश में होती हैं तो तू सब विघ्नों

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

को नष्ट कर हमें ऐश्वर्य-सम्पन्न करता है ॥६॥

२ ३१ २ ३ १२ ३ १ २
अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत ।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २र ३क
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा
२र ३ १ २
न्विन्द्र ते हरी ॥ ७ ॥

हे इन्द्र ! जब तेरी ज्ञान-कर्मशक्तियां प्रशंसनीयतम ज्ञान एवं संकल्प से युक्त होती हैं तो इस प्रकार मेधावी बने जन सर्वथा आनन्द में मग्न रहते हैं, अप्रिय भावनाओं को परे फैंक देते हैं और इस प्रकार अपने आप में स्वयं प्रकाशित हुए (स्वराज्य प्राप्त कर) सर्वथा सन्तुष्ट रहते हैं ॥७॥

२ ३ १ २ ३२उ ३ १२३ १२
उपो षु शृणुही गिरो मघवन्माऽतथा इव ।
३ १ २ ३१ २ ३ २३ २३ १ ३ १ २३क
कदा नः सूनृतावतः कर इदर्थयास इद् योजा
२र ३ १२
न्विन्द्र ते हरी ॥ ८ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे ऐश्वर्यशालिन् इन्द्र ! तू हमारी प्रार्थनाओं को ध्यान से भली भांति सुन; उसकी ओर ध्यान न देने वाले की भांति नहीं। हमारी मांग यह है कि हमें कब ऋतुगामी बनाओगे ? तभी जब कि अपनी ज्ञान-कर्मेन्द्रियों को अपने नियन्त्रण में कर लोगे ॥८॥

३ १ २ ३ २ १ २र३ १ २ ३ २
चन्द्रमा अप्स्वां३न्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।
१ २ ३ १ २
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो
३ १ २ ३ १ २
वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ९ ॥

यह आह्लादक मन कर्मों के व्यापक सन्तान-वितान (अन्तरिक्ष) में से उस को लांघ कर प्रकाशमय लोक की ओर सुख से उड़ा चला जा रहा है; परन्तु सत्य-प्राप्ति की प्रकाशवती चेतनाओं को नहीं पकड़ पाता; ज्ञान और कर्म की सम्मिलित शक्तियां ही वह पद मुझे प्राप्त कराती हैं ॥९॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रतिप्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३२३ १२ ३ २३
स्तोता वामश्विनावृषि स्तोमेभिर्भूषति प्रति ।
२ ३ १२ ३ १२
माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥१०॥७॥

गति से व्यापक ज्ञान और कर्म की शक्तियो ! ऐश्वर्यसाधक और सुखवर्षक अतएव अतिप्रिय साधकों के देह-देह में क्रान्तदर्शी तुम दोनों की स्तुति करता है । हे मधुदाताओ ! मेरी स्तुति को सुनो ॥१८॥

इति तृतीया दशतिः । सप्तमः खण्डः ।

॥ द० ४ ॥ ऋषिः—१, ७ वसुश्रुतः । २, विमदः । ३ सत्यश्रवाः । ५, ६ गोतमः । ४ अंहोमुग् ॥ देवता—१, २, ७ अग्निः । ३ उषाः । ८ सोमः । ५, ६ इन्द्रः । ८ विश्वेदेवाः ॥ छन्दः १—७ पंक्तिः । ८ उपरिष्टाद् बृहती ॥ स्वरः— १—७ पञ्चमः । ८ मध्यमः ॥

१ २ ३ १ २ ३१२ २३
आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् । यद्ध

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३२ ३ १ २ ३ १२र ३ २ ३
स्या ते पनीयसी समिद्दीदयति द्यवीषं स्तोतृभ्य
१ २
आ भर ॥ १ ॥

हे प्रकाशस्वरूप ! तुझ प्रकाशमान एवं अविनाशी को हम प्रदीप्त करते हैं : प्रकाश लोक में तेरी प्रशंसनीय दीप्ति ही तो चमक रही है । स्तोताओं को अन्तःप्रेरणा प्रदान कर ॥१॥

१ २र ३ १ २ ३ १
अग्निं न स्ववृक्तिभिर्होतारं त्वा वृणीमहे शीरं
२३१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३
पावकशोचिषं विबो मदे यज्ञेषु स्तीर्णबर्हिषं
१२
विवक्षसे ॥ २ ॥

पापभावनाओं को छुड़ाने वाले तुझ अग्नि (संकल्प) को हम स्वीकार कर रहे हैं; वह अग्नि शान्तिदायक और पावक-ज्योति से युक्त है तथा परमानन्द-प्राप्ति के लिए किये गये यज्ञों में मानो आसन बिछा कर (हृदय खोल कर) बैठा है :

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे अग्नि तू महान् है ॥

पापभावनाओं को छोड़ने का संकल्प साधक को शांति एवं परमानन्द प्रदान करता है; उसका खुले दिल से स्वागत करे ॥२॥

३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २ १ २
महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती । यथा
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३
चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते
१ २
अश्वसूनृते ॥ ३ ॥

जिस प्रकार वरण करने योग्य, शोभन जन्म वाली, सत्य स्वरूप वाणी ने सत्य ज्ञान के लिये प्रेरित किया था उसी प्रकार प्रकाशमयी ज्ञान की उषा उस महान् ऐश्वर्य (परमानन्द) के लाभार्थ हमें जगाये : हम आलस्य छोड़ सन्नद्ध हो परमानन्द प्राप्ति के लिए यत्नवान् हों ॥३॥

३२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३२ २र २ ३ २३ १ ३ २ ३
अथा ते सख्ये अन्धसो वि वो मदे रणा गावो
१ २र३ १२
न यवसे विवक्षसे ॥ ४ ॥

हे सोम! (परमानन्द!) हमारे चतुर मन (विचारशक्ति और कर्म को कल्याण की ओर प्रेरित कर: परमानन्द के प्राप्त्यर्थ हम कल्याणकारी विचारों और कर्मों को स्थान दें। जिस प्रकार गौएं चारे के लिए प्रसन्न होती हैं वैसे ही हम तुझ अन्न-भूत (परमानन्द) के साथ मित्रता की भावना में आनन्द लें। हे सोम! तू महान् है ॥४॥

१ २ ३ १ २ ३२ ३१ २र ३ १२
ऋत्वा महाँ अनुष्वधं भीम आ वावृते शवः।
३ २ ३ १ २ ३२ ३ २ ३ १ २र ३
श्रिय ऋष्व उपाकयोर्नि शिप्री हरिवां दधे
१ २ ३१ २ ३२
हस्तयोर्वज्रमायसम् ॥ ५ ॥

कर्म से महान् और भय से कंपाने वाला इन्द्र स्वभाव से ही बल का आचरण करता है: वह

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्वभाव से बली है। वह शक्तिशाली और वाहक-शक्तियों वाला इन्द्र अपनी शत्रुहिंसकता की प्रसिद्धि के लिए (ज्ञान व कर्म की शक्तिरूप) दोनों हाथों में दृढ़ साधन धारण किये हुए है ॥५॥

२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
स घा तं वृषणं रथमधि तिष्ठाति गोविदम् ।
१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ क
यः पात्रं हारियोजनं पूर्णमिन्द्र चिकेतति योजा
२र ३ १ २
न्विन्द्र ते हरी ॥ ६ ॥

हे इन्द्र ! जो साधक ज्ञान-कर्मेन्द्रियों के योग की युक्ति को पूरी तरह जानता है वह इस सुखवर्षा-समर्थ प्रकाशपूर्ण रथरूप देह का अधिष्ठाता होता है। हे इन्द्र ! अपनी इन्द्रियों को वश में कर ॥६॥

३ १ २र ३ २उ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः ।
२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अस्तमर्वन्त आशवोऽस्तं नित्यासो वाजिन इषं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ १ २
स्तोतृभ्य आ भर ॥ ७ ॥

अग्नि मैं उसको मानता हूँ जो बसाने वाला है और जिसका आश्रय ज्ञानी वैसे ही लेते हैं जैसे गौएं और द्रुतगामी घोड़े अपने थान व अस्तबल का। हे अग्ने! साधकों को अपने ऐश्वर्य व प्रेरणा से भरपूर कर दे ॥७॥

२उ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
न तमंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम् ।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३
सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयति वरुणो अति
१ २
द्विषः ॥ ८ ॥ ८ ॥

जिस मनुष्य को न्याय, मित्रभाव और विघ्नापहरण की दिव्य-शक्तियां बड़े उत्साह से विघ्न-बाधाओं के पार पहुँचा देती हैं उस मनुष्य को पाप और दुष्ट चरित्र नहीं व्यापते ॥८॥

इति चतुर्थी दशतिः। अष्टमः खण्डः।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ द० ५ ॥ ऋषिः—१-६ त्र्यरुण त्रसदस्यू । ७ वसिष्ठः । ८ वामदेवः । ९ वाजिनां स्तुतिः । १० धिष्ण्या अग्नयः ॥ देवता:—१-६, १० पवमानः । ७ मरुतः । ८ अग्निः । ९ वाजिनः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ५, ७, १० द्विपदा पंक्तिः । ८ पदपंक्तिः । ९ पुरउष्णिक् । २, ६ त्रिपदा अनुष्टुप्पिपीलिकामध्या ॥ स्वरः—१, ३-८, १० पञ्चमः । २, ६ गान्धारः । ९ ऋषभः ॥

२३ २ ३ १ २
परि प्र धन्वेन्द्राय सोम
३ २ ३ १ २ ३ १ २र
स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय ॥ १ ॥

हे परमानन्ददायक सोम ! मित्रता, पोषकता और आनन्दोपभोग के गुणों वाले इन्द्र के लिए तू बह; उसको प्राप्त हो ॥१॥

२३ १ २र ३ १२ ३ १२ ३ १ २ ३१ २
पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः ।
३ २ ३१ २ ३ १ २
द्विषस्तरध्या ऋणया न ईरसे ॥ २ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

परमैश्वर्य प्रदान करने के लिये हे सोम ! तू बह; इस कार्य में आने वाले विघ्नों का विनाश कर। शत्रुविनाशिका गति से हमें प्रेरित कर ॥२॥

१ २ ३ १ २ ३ २
पवस्व सोम महान्त्समुद्रः

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
पिता देवानां विश्वाभि धाम ॥३॥

हे सोम ! तू समस्त आनन्दों का भण्डार है; दिव्यगुणों का जनयिता है; सब के हृदयों के प्रति द्रवित हो ॥३॥

१ २ ३ २उ ३ २ ३
पवस्व सोम महे दक्षायाश्वो

२ ३ २ ३ १ २र
न निक्तो वाजी धनाय ॥४॥

जिस प्रकार परिपुष्ट एवं बलिष्ठ अश्व धन-प्राप्ति का साधन बनता है वैसे ही हे सोम ! तू महती-शक्ति केलिए बह : सोम अतिशय शक्तिदाता है ॥४॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३
इन्दुः पविष्ट चारुर्मदाया-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३१ २ ३१ २र
पामुपस्थे कविर्भगाय ॥ ५ ॥

हर्ष उत्पन्न करने में श्रेष्ठ और क्रान्तदर्शी यह आह्लादक रस आनन्दोपभोग के निमित्त कर्म एवं ज्ञान की गोदी में प्रकट होता है।

सम्यक् कर्म और ज्ञान से ही आत्मा को परमानन्द की प्राप्ति होती है ॥५॥

२ ३ १ २ ३१ २ ३ १२ ३१ २ ३
अनु हि त्वा सुतं सोम मदामसि महे समर्य-
१ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
राज्ये । वाजाँ अभि पवमान प्र गाहसे ॥ ६ ॥

हे सोम ! तेरे निष्पन्न हो जाने पर हमें महत्वशालिनी जितेन्द्रियता का जो राज्य प्राप्त हो जाता है, उसका हम आनन्द लूटते हैं, और निष्पन्न होता हुआ तू हमारी इन्द्रियों में रमण करता है ॥६॥

२ ३क २र ३ २ ३ १ २
क ईं व्यक्ता नरः सनीडा
३२ ३ २ ३ २ ३ १ ३
रुद्रस्य मर्या अथा स्वश्वाः ॥७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वे प्रकट हुए पथ-प्रदर्शक जो हमारी उन्नति-यात्रा में शस्त्रसज्जित ऊर्जस्वी एवं कल्याणकारी शक्ति के साथ एक ही स्थान पर रहते हैं कौन हैं? क्या वे मरणशील हैं अथवा सुखलोक के वासी ॥७॥

२ ३ २३ २ ३ २उ ३ १३ २ ३१ १३
अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदि-
१ २ ३ १ २ ३ १ २
स्पृशम् । ऋध्यामा त ओहैः ॥ ८ ॥

हे अग्ने! अश्व के समान वाहक (लक्ष्य पर सुगमता एवं शीघ्रता से पहुँचाने वाले) और हार्दिक कल्याण की भांति पथप्रदर्शक तुझको हम आह्वान करने योग्य सूक्तियों द्वारा बुलाते हैं ॥८॥

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३१ २ ३२
आविर्मर्या आ वाजं वाजिनो अग्मं देवस्य सवितुः
३२ ३ १ २
सवम् । स्वर्गां अर्वन्तो जयत ॥ ९ ॥

ज्ञानी मनुष्य प्रकाशस्वरूप रचयिता के ज्ञान-सम्पन्न आदेश को प्रकट रूप से प्राप्त करते हैं; वे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञानी उसके प्रति शीघ्रता से बढ़ते हुए सुख एवं परमानन्द को जीत लेते हैं ॥९॥

१२ ३ १ २ ३२
पवस्य सोम द्युम्नी सुधारो

२र ३१ २ ३ २
महाँ अवीनामनुपूर्व्यः ॥१०॥९॥

हे सोम ! (परमानन्द रस !) तू ज्ञान-कान्ति से सम्पन्न, श्रेष्ठ धारक, महिमाशाली और चिति-शक्तियों का पूर्व परिचित है : (हमारे हृदय कलश में) प्रकट हो ॥१०॥

इति पञ्चमी दशतिः । नवमः खण्डः ।
इति पञ्चम प्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथ पञ्चम प्रपाठके द्वितीयोऽर्धः

॥ द० ६ ॥ ऋषिः—त्रसदस्युः । ७ सम्पातः ॐ ॥

ॐ संवर्त्तः आंगिरसः इति केचित् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

देवता—१-५, ८-१० इन्द्रः । ६ विश्वेदेवाः । ७ उषाः ॥ द्विपदा विराट् पंक्तिश्छन्दः ॥ पञ्चमः स्वरः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २३
विश्वतोदावन् विश्वतो न आ भर
२ ३ १ २ ३ १ २
यं त्वा शविष्ठमामहे ॥ १ ॥

चारों ओर से दान की वर्षा करने हारे इन्द्र! तू हमको भरापूरा कर; तुझ सर्वोत्तम बलशाली को हम अपने पथ प्रदर्शन के लिए बुला रहे हैं ॥१॥

३२ ३२उ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३२
एष ब्रह्मा य ऋत्विय इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे ॥२॥

नियमपालन द्वारा प्रकट होने वाली यह महती शक्ति ही इन्द्र नाम से प्रसिद्ध है; इसकी मैं स्तुति करता हूँ ॥२॥

३ २३ १ २ ३१२ ३१
ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्कै-
२र ३१२३ २ ३ १ २
रवर्धयन्नहये हन्तवा उ ॥ ३ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ब्रह्मज्ञानी जनों ने अपनी समृद्धि की इच्छा से तथा ज्ञानावरक विघ्नों के संहार के लिये स्तुतियों द्वारा अपनी इन्द्रशक्ति को बढ़ाया ॥३॥

१ २ ३ २३१ २ ३ २३
अनवस्ते रथमश्वाय तक्षुस्त्वष्टा
१२ ३१ २
वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम् ॥ ४ ॥

साधकों ने लक्ष्य की ओर शीघ्र गमन करने के लिए साधन को सुखसाधन बनाया; और फिर दीप्तिमान् विघ्नापहारक शस्त्र की रचना की ॥४॥

२ ३२ ३१ २ ३ २ ३ १ २र
श पदं मघ रयीषिणे न काम-
३ १ २ ३ १ २ ३ २
मव्रतो हिनोति न स्पृशद्रयिम् ॥ ५ ॥

जो मनुष्य देने की इच्छा से प्राप्तव्य धन की कामना करता है उसको वह परिणाम में कल्याणप्रद अमोघ धन (परमानन्द रूप) प्राप्त होता है; जो कर्महीन है वह यथेष्ट फल नहीं पाता, कारण कि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उसने तो दान करने योग्य धन को छूआ ही नहीं ॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
सदा गावः शुचयो विश्वधायसः
१ २ ३ १ २ ३ १ २
सदा देवा अरेपसः ॥ ६ ॥

सब की धाय (पालन करने वाली) गौएं सदा पवित्र होती हैं और सबको देनेवाली दिव्य-शक्तियां सदा पापरहित होती हैं ॥६॥

१ २ ३ १ २ ३ १
आ याहि वनसा सह गावः
३ १ २ र
सचन्त वर्तनिं यदूधभिः ॥ ७ ॥

हे ज्ञानोदय काल ! तू अपने सब तेजों सहित आ; अब जबकि अपने समग्र पोषण-शक्तियों समेत इन्द्रियां अपने मार्ग पर विद्यमान हैं ॥७॥

१ २ ३ १ २ र ३ २ ३
उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः
१ २ ३ २ ३ १ २
पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र ॥ ८ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे इन्द्र ! परमानन्द से पूर्ण वास में निवास करते हुए हम दान योग्य ऐश्वर्य से पुष्ट हों और तेरा ध्यान करते रहें ॥८॥

१२ ३२ ३१२ ३१
अर्चन्त्यर्कं मरुतः स्वर्का

२र ३२उ ३ १ २ र
आ स्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः ॥ ९ ॥

स्तुति में प्रवीण मरुद्गण उस पूजनीय की स्तुति करते हैं और वह प्रसिद्ध बलिष्ठ इन्द्र उनकी रक्षा करता है ॥९॥

२ ३ १ २ ३१२ ३
प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय

१ २ ३१ २र ३ २ ३ १२
विप्राय गाथं गायत यं जुजोषते ॥ १० ॥

उस सर्वश्रेष्ठ विघ्नापहारक, ज्ञानप्रदीप्त इन्द्र का ऐसा स्तुतिगान करो कि सुन कर वह प्रसन्न हो उठे ॥१०॥

इति षष्ठी दशतिः । दशमः खण्डः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ द० ७ ॥ ऋषिः—सम्पातः । २ बन्धुः । ३, ४ बंधुः सुबंधुर्विप्रबंधुः । ५ संवर्तः । ६ भुवनः । ७ कवषः । ८ भरद्वाजः । ९ आत्रेयः । १० वसिष्ठः ॥ देवता—१, २ अग्निः । ३, ४, ८, १० इन्द्र । ५ उषाः । ६, ७, ९ विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—१, २, ५, ७ द्विपदा पंक्तिः । ३, ४ पञ्चदशाक्षरा गायत्री । १० एकपदा अष्टाक्षरा गायत्री । ६, ८, ९ द्विपदा त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ५, ७ पञ्चमः । ३, ४, १० षड्जः । ६, ८, ९ धैवतः ॥

१ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २
अचेत्यग्निश्चिकितिर्हव्यवाड् न सुमद्रथः ॥१॥

चेताने वाला, हव्यवाहक भौतिक अग्नि की भांति ज्ञानवाहक अग्नि (दृढ़ संकल्प रूप) जाग्रत हो चुका है ॥१॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ २
अग्ने त्वं नो अन्तम उत

३ २ ३ १ २ ३क २र
त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः ॥ २ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे अग्ने ! तू हमारे समीपतम तो है ही; इसीलिए रक्षक, कल्याणकारी तथा वरण करने योग्य बनता है ।।२।।

२ ३ २ ३ २ ३ २३ २ ३ १ २ ३ १ २
भगो न चित्रो अग्निर्महोनां दधाति रत्नम् ।।३।।

बड़ी बड़ी दिव्य-शक्तियों में सूर्य के समान अद्भुत उपभोग शक्ति-सम्पन्न अग्नि रमणीय ऐश्वर्य को प्राप्त कराता है ।।३।।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३२ ३२
विश्वस्य प्र स्तोभ पुरो वा सन् यदि वेह नूनम् ।।

सब विघ्नों के संहारक इन्द्र ! तू पहले भी था और अब भी मेरे साथ है ही ।।४।।

३ २३ ३ २ ३ २ ३ १
उषा अप स्वसुष्टमः सं

२ ३ १ २ ३ १ २
वर्तयति वर्तनिं सुजातता ।। ५ ।।

ज्ञानोदय काल की उषा अज्ञानान्धकार को दूर कर, अपने उत्तम प्रादुर्भाव द्वारा साधक को मार्ग (उन्नति के मार्ग) पर डाल देती है ।। ५ ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २उ ३ १२ ३
इमा नु कं भुवना सीषधे-
१ २ ३ १ २ ३ २
मेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ॥ ६ ॥

इन्द्रशक्ति और सब दिव्य शक्तियों के साथी हम सब भुवनों को प्राप्त करें ॥६॥

२ ३ २ ३ १ २ ३२उ ३ १ २ ३ १२
वि स्रुतयो यथा पथा इन्द्र त्वद् यन्तु रातयः ॥

जिस प्रकार मार्ग पाकर जलधाराएं निकल भागती हैं वैसे ही हे इन्द्र ! तुझ में से दानशीलता बहती चले ॥७॥

३ १ २र ३१२ ३
अया वाजं देवहितं सनेम
१ २ ३ १ २ ३ १ २
मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥ ८ ॥

हम इस प्रकार दिव्यगुणाधायक ऐश्वर्य को प्राप्त करें और वीरों से युक्त हो सैंकड़ों वर्षों तक आनन्द-मग्न रहें ॥८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ १ २र ३२ ३
ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वतेडाः

१ २ ३ १२ ३१ २
पीवरीमिषं कृणुही न इन्द्रः ॥ ९ ॥

हमारे विचारों और कर्मों में सामञ्जस्य तथा सुस्पष्ट विवेचना और प्रयत्न की शक्तियां हमें अपने ओज द्वारा प्रातिभ ज्ञान से संतृप्त करें; हे इन्द्र! तू हमें बहुतसा अन्तर्ज्ञान प्रदान कर ॥९॥

२ ३ १ २
इन्द्रो विश्वस्य राजति ॥१०॥११॥

वह इन्द्र ही संसार का अधिष्ठाता है ॥१०॥

इति सप्तमी दशतिः। एकादशः खण्डः

॥ द० ८ ॥ ऋषिः—१, १० गृत्समदः। २ गौराङ्गिरसः। ३, ५, ९ परुच्छेपः। ४ रेभः। ६ एवयामरुत्। ७ अनानतः। ८ नकुलः। देवता—१, ३, ४, १० इन्द्रः। २ सूर्यः। ५ विश्वेदेवाः। ६ मरुतः। ७ पवमानः। ८ सविता। ९ अग्निः॥ छन्दः—१ अष्टिः। ३, ५, ७, ९ अत्यष्टिः। २, ४, ६ अति-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जगती । ८, १० अतिशक्वरी । स्वरः—१ मध्यमः । ३, ५, ७, ६ गान्धारः । २, ४, ६ निषादः । ८, १० पञ्चमः ॥

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १
त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृम्पत्सोमम्
२र ३ १ ३ १ २ ३ २ १ २
मपिबद्विष्णुना सुतं यथ वशम् । स ईं
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २
ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरुं सैनं सश्चद्देवो
३ २ ३ १ २र ३ १ २र
देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥ १ ॥

वह महान् बलशाली, तीनों लोकों (अवस्थाओं—जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति) में यज्ञसाधित परमानन्द का जी भर कर पान करता और तृप्त हो उठता है। इस प्रकार मग्न हुआ वह सचमुच आह्लादक बना हुआ महत्वशालिनी विशाल शक्ति वाले, सत्यस्वरूप इन्द्र को प्राप्त कर बड़े-बड़े काम निष्पन्न करता है ॥१॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ ३ १
अयं सहस्रमानवो दृशः कवीनां मतिर्ज्योतिर्वि-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३
धर्म । ब्रध्नः समीचीरुषसः समैरयदरेपसः
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
सचेतसः स्वसरे मन्युमन्तश्चिता गोः ॥ २ ॥

यह प्रेरक सूर्य. जो दूर दृष्टि को नाना प्रकार से हम तक पहुँचाता है तथा जो क्रान्तदर्शन का साधक और परम ज्योति को धारण कराने वाला है वह इस जीवन-रूप दिन में भली भांति हमारे हृदयों में प्रविष्ट. शुद्ध, चेतन, और तेजस्वी इन्द्रियों की बोधक प्रजाओं को हमारी ओर प्रेरित करता है ॥२॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
एन्द्र याह्युप नः परावतो नायमच्छा विदथा-
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३
नीव सत्पतिरस्ता राजेव सत्पतिः । हवामहे त्वा
१ २ ३उ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३
प्रयस्वन्तः सुतेष्वा पुत्रासो न पितरं वाजसातये
१ २ ३ १ २
मंहिष्ठं वाजसातये ॥ ३ ॥

हे इन्द्र ! तू दूर से हमारे समीप आ; तेरी दिव्य

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शक्तियां हमें प्रत्यक्ष हों। परमानन्द की साधनाओं के लिये प्रयत्न करते हुए हम उत्कृष्ट ज्ञान-धन की प्राप्ति के लिए तुझ पूजनीय का आह्वान ऐसे ही करते हैं जैसे कि धन प्राप्ति के लिये पुत्र पिता को बुलाते हैं॥

१ २र ३१ २ ३२ ३१ २र३१
तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रं सत्रा दधानम-
२ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २र
प्रतिष्कुतं श्रवांसि भूरि। मंहिष्ठो गीर्भिरा च
३ १ २ ३२ ३ १ २ ३१ २
यज्ञियो ववर्त राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु
३२
वज्री॥ ४॥

मैं उस इन्द्र को स्मरण करता हूँ जो ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, सज्जनों का रक्षक और अजेय है तथा ऐसी भूरि-भूरि प्रसिद्धियों से युक्त है। वाणियों से पूजनीय-तम वह यज्ञ में पुनः पुनः स्मरण किया जाता है। दानशील ऐश्वर्य को प्रदान करने के प्रयोजन से, वह रक्षक, हमारे मार्गों को सरल एवं सुपथ बनावे॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २३ १
अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं धिया दध आ नु त्य-
२र ३ १ २ ३१ २ १२
च्छर्धो दिव्यं वृणीमह इन्द्रवायू वृणीमहे । यद्ध
३ २ ३१२३ १२ ३ २३ १ २ २३
क्राणा विवस्वते नाभा सन्दाय नव्यसे । अध
२ ३१ २र ३१ २ ३२३ ३ २ ३१२
प्र नूनमुप यन्ति धीतयो देवां अच्छ न धीतयः ॥

हमारी यह प्रार्थना है : ध्यान बल से हम अग्नि (दृढ़ संकल्प रूप) को धारण करते हैं; और उसके प्रसिद्ध दिव्य बल को स्वीकार करते हुए प्रज्ञा एवं कर्म शक्तियों का वरण करते हैं; इन शक्तियों की इस प्रकार रचना करते हुए इनसे सम्बन्ध हो सदा नवीन प्रकाश स्वरूप से सम्बध जोड़ते हैं : इस प्रकार हमारे कर्म प्रकाशस्वरूप (ज्ञान-बल) को प्राप्त हों; हमारे कर्म दिव्य ज्ञान गुणों को प्राप्त करें ॥५॥

१ २ ३२ ३१ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १
प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
एवयामरुत् । प्र शर्धाय प्र यज्यवे सुखादये
३ १ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे ॥ ६ ॥

हमारी स्तुति सम्पन्न एवं प्राणशक्ति की प्रेरिका विचार शक्तियां व्याप्ति एवं चेतनता के दिव्य गुणों का भण्डार बनें; वे शोधक हों, उनके कारण सुख, वेग, यज्ञ के प्रति श्रद्धा और विघ्नापहारक बल सरीखे दिव्य गुणों का आधान हो ॥६॥

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २
अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति
३१ २ ३ २ ३ २ ३१ २ १ २ ३१ २
सयुग्वभिः सूरो न सयुग्वभिः । धारा पृष्ठस्य
३ १ २ ३ १ २ २ ३ २३ १
रोचते पुनानो अरुषो हरिः । विश्वा यद्रूपा
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
परियास्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः ॥७॥

जिस प्रकार अपने सहयोगियों की सहायता से कोई शूरवीर अपने सब शत्रुओं को जीत लेता है,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अपनी अज्ञाननाशिका दीप्ति से निर्मल करता हुआ इन्द्र, उसी प्रकार सब द्वेष भावनाओं पर विजय प्राप्त करता है। सर्वतः दीप्तिमान, आकर्षक वह दिव्यानन्द बहता हुआ अपने प्रवाह से जीवन पथ के विविध-स्तरों को चमकाता है जब कि वह शिरोगत सातों (ज्ञानेन्द्रियों के सात गोलकों) से सब को घेर कर बैठता है ॥७॥

३ २उ ३ १ २ ३ १२ ३क २र ३ १ १ २
अभि त्यं देवं सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि
३ १२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३२उ ३
सत्यसवं रत्नधामभि प्रियं मतिम् । ऊर्ध्वा यस्या-
२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १२
मतिर्भा अदिद्युतत् सवीमनि हिरण्यपाणिरमि-
३१२ ३ १ २
मीत सुक्रतुः कृपा स्वः ॥८॥

उस दिव्य, द्यौ और पृथिवी तक सब के प्रेरक, दर्शन एवं कर्म शक्ति से सम्पन्न, सत्यसाधक तथा इस रूप में सब रत्नों की खान बने हुए प्रिय ज्ञान-स्वरूप की मैं पूजा करता हूँ। उसकी अचिन्त्य, उन्नति-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पथ की ओर ले जाने वाली ज्ञानकान्ति सर्वत्र प्रकाशमान है और तेजोमय किरणों (ज्ञान किरणों) के द्वारा वह कुशल अपने सामर्थ्य से परमसुख का निर्माण करता है ।।८।।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३१ २र
अग्नि होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः सूनुं सहसो
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २
जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम् । य ऊर्ध्वया
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३२ ३ १ २ ३
स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा । घृतस्य विभ्राष्टि-
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
मनु शुक्रशोचिष आजुह्वानस्य सर्पिषः ।।९।।

मैं होता अग्नि को धन का दाता, बल का पुत्र (अति बलशाली), और ज्ञानी व कर्मकाण्डीविद्वान् की भांति प्रत्येक उत्पन्न पदार्थ में पहुँचा हुआ मानता हूँ। वह दिव्य और दिव्यताधायक, उन्नति की ओर ले जाने की सामर्थ्य के कारण उत्तम पथ-प्रदर्शक है। वह अत्यन्त दीप्तिमान्, समर्पित किये जा रहे, सर्पण-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शील विचारधारा के प्रदीप्त होने पर प्रज्वलित होता है ॥९॥

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २
तव त्यन्नर्यं नृतोऽप इन्द्र प्रथमं पूर्व्यं दिवि
३ १ २ ३ २ ३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रवाच्यं कृतम् । यो देवस्य शवसा प्रारिणा असु
३ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र
रिणन्नपः । भुवो विश्वमभ्यदेवमोजसा विदेदूर्जं
३ १ २ ३ १ २र
शतक्रतुर्विदेदिषम् ॥१०॥१२॥

हे प्रवर्त्तक इन्द्र ! तू जो दिव्य बल के द्वारा प्राण को गति देता हुआ कर्म की प्रेरणा करता है, तेरा यह प्रसिद्ध मनुष्य हितकारी कर्म मुख्य एवं द्युलोक में भी प्रथम वर्णनीय हो गया। तू अपने सामर्थ्य से सब अदिव्य भावनाओं का तिरस्कार करता है। विविधकर्मा तू हमें भी बल दे और हमारा भोग्य (ज्ञान-धन) प्राप्त करा ॥१०॥

इत्यष्टमी दशतिः । द्वादशः खण्डः । इति चतुर्थोऽध्यायः
इत्यैन्द्रं काण्डं पर्व वा समाप्तम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ पावमानं काण्डम् ।

अथ पञ्चमोऽध्यायः ।

॥ द० ६ ॥ ऋषिः—१, ४ अमहीयुः । २ मधुच्छन्दाः । ३ भृगुः । ५ त्रितः । ६ कश्यपः । ७ जमदग्निः । ८ दृढच्युतः । ९, १० असितः ॥ पवमानः सोमो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

३ १ २ ३१ २र ३ १ २र
उच्चा ते जातमन्धसो दिविसद्भूम्या ददे ।
३ २उ ३ २ ३ १२
उग्रं शर्म महि श्रवः ॥१॥

हे सोम ! मैं अन्न रूप तुझ से उत्पन्न, ऊंचे प्रकाश लोक में विद्यमान, उत्कट, कल्याणकारी और महान् ज्ञान-गान को इस भौतिक शरीर के द्वारा उपलब्ध कर रहा हूँ ॥१॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया।
इन्द्राय पातवे सुतः ॥२॥

हे सोम ! तू अत्यन्त रसीली एवं परमानन्द-कारक धारा के रूप में बह; इन्द्र के पान केलिए तुझे सिद्ध किया गया है ॥२॥

वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः। विश्वा
दधान ओजसा ॥३॥

चिति शक्ति के धनी के लिए हर्ष का सरोवर तू हे सोम ! अपने बलवीर्य से सब का पोषण करता हुआ बह ॥३॥

यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा।
देवावीरघशंसहा ॥४॥

हे सोम ! तेरा जो ग्रहण करने योग्य परमानन्द

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

है अन्न रूप उस परमानन्द के समेत प्रवाहित हो; तू दिव्य भावनाओं का रक्षक एवं पाप भावनाओं का विनाशक है ॥४॥

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३१२
तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः ।
१ २ ३ १ २
हरिरेति कनिक्रदत् ॥५॥

(अ, उ, म्) ये तीन ध्वनियां ऐसे उठ रही हैं जैसे कि दुधार गायें (बछड़ों को) बुला रही हों; उस समय इस सामगान के द्वारा सिद्ध होने पर वह आकर्षक सोम गड़गड़ाता हुआ हमें प्राप्त होता है ॥५॥

१ २ ३१ २३ १२ ३ १२
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः ।
३२ ३ १ २ ३ १२
ऋतस्य योनिमासदम् ॥६॥

हे आह्लादक ! चितिशक्ति सम्पन्न इन्द्र के लिए अत्यन्त मधुर होकर तू परमपूजनीय (ऋत) के अपने स्थान की प्राप्ति कराने के लिए प्रवाहित हो ॥६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः ।
श्येनो न योनिमासदत् ॥७॥

वाणी में स्थित, कर्मशक्ति का प्रदाता प्रकाशपूर्ण सोम के एक चमकीले भाग को मैंने सिद्ध कर लिया है;वह अंशु शीघ्र एवं प्रशंसनीय गति से अपने जन्म स्थान (मेरे हृदय) में विराजमान हो गया है ॥७॥

पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे ।
मरुद्भ्यो वायवे मदः ॥८॥

कर्म-प्रवीणता के साधनभूत मनोहारी सोम ! तू दिव्य प्राणशक्तियों और गतिशील इन्द्र को परमानन्द का प्रापक है; उनके पान के लिए प्रवाहित हो ॥८॥

परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ १ २
मद्रेषु सर्वधा असि ॥६॥

वाणी से बंधा हुआ परमानन्द सिद्ध किया जाने पर पवित्र मन में बहने लगता है। हे सोम! तू अपने परमानन्द में सब को मस्त रखने की क्षमता रखता है ॥६॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३क २र ३२
परि प्रिया दिवः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः।
३ १ २ ३ १२
स्वानैर्याति कविक्रतुः ॥१०॥

द्यु लोक और पृथिवी लोक से बंधा हुआ यह प्रकाश लोक का क्रान्तदर्शी सोम अपनी दर्शन एवं कर्म शक्ति से सम्पन्न हुआ खूब शब्द पूर्वक-घोषणा पूर्वक—अपनी प्रिय गतियां करता है ॥१०॥

इति नवमी दशतिः। प्रथमः खण्डः।

॥ द० १० ॥ ऋषिः—१ कविर्मेधावी। २ श्यावाश्वः। ३ त्रितः। ४, ८ अमहीयुः। ५ भृगुः। ६ काश्यपः।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

७ निध्रुविः । ९, १० असितः ।। पवमानो देवता ।। गायत्री छन्दः ।। षड्जः स्वरः ।।

१२ २२ ३ २३ १२ ३ १ २
प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम् ।
३ २ ३ १२
सुता विदथे अक्रमुः ।।१।।

ज्ञान-यज्ञ में सिद्ध किये गये, आनन्द बहाते परमानन्द रस हम ऐश्वर्यशालियों को ज्ञान-धन पहुँचाने के लिये समर्थ हों ।।१।।

१ २२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र सोमासो विपश्चितोऽपो नयन्त ऊर्मयः ।
१ २ ३ १ २
वनानि महिषा इव ।। २ ।।

जैसे महान् शक्तिशाली वाहन भोग्य पदार्थों को इधर उधर ले जाते हैं वैसे ही ज्ञानसम्पन्न परमानन्द लहरों की भांति वेगवान् हो कर्मों को पहुँचाते हैं ।।२।।

१२ ३ १ २ ३२ ३ १ २ ३ २ ३ १२
पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २३ १ २
विश्वा अप द्विषो जहि ॥ ३ ॥

हे आह्लादक! बह; मनोरथों का पूरक तू निष्पन्न होकर हम को जनों में यशस्वी बना : सब द्वेषभावनाओं को नष्ट कर दे ॥३॥

२ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २
वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे ।
१२ ३ १ २
पवमान स्वर्दृशम् ॥ ४ ॥

हे पावक सोम! तू मनोरथ पूर्ण करने में समर्थ है; ज्ञान-कान्ति से प्रदीप्त तेरा हम आह्वान करते हैं कि तू हमें सुखलोक को दिखाता है ॥४॥

१ २ ३ १२ ३१ ०३ २ ३ ०
इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मतिः ।
३१ २र ३ १ २
सृजदश्वं रथीरिव ॥ ५ ॥

चेतन, प्रिय, क्रान्तदर्शियों का बुद्धि स्वरूप आह्लादक रस (हमारी उन्नति पथ की यात्रा के लिए) प्रवाहित हो रहा है; मानो रथवान् ने (यात्रा के लिये)

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

घोड़े को तय्यार कर लिया हो ॥५॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया ।
३ १ २ ३ १ २र
शुक्रासो वीरयाशवः ॥ ६ ॥

बलशाली शुद्ध (चमकीले) एवं तीव्र परमानन्द वीर रस ज्ञान की ज्योति, शक्ति की तीव्रता और विजयशील शक्तियों को प्राप्त कराने वाले बनाए गये हैं ॥६॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः ।
३ १ २र ३ १ २
वायुमा रोह धर्मणा ॥ ७ ॥

हे दिव्यरस ! तू निरन्तर प्रवाहित हो; तेरा आह्लाद इन्द्र को प्राप्त हो; तू अपनी धारक शक्ति से जीवनशक्ति—प्राणशक्ति—का अधिष्ठाता बन ॥७॥

१ २ ३ २ ३ १ २र ३ २
पवमानो अजीजनद् दिवश्चित्रं न तन्यतुम् ।
१ २ ३ २ ३ २
ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् ॥ ८ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दिव्य लोक से प्रवाहित हुआ यह परमानन्द बिजली की भांति विचित्र, महान् और सार्वजनीन ज्योति को जन्म देता है ॥८॥

१२ ३२३ १२३ १२ ३१ २ ३२
परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा ।
१२ ३ १२
मधो अर्षन्ति धारया ॥ ९ ॥

आह्लादक रस महती वेदवाणी द्वारा उत्पाद्यमान होते हुए मधु की धारा के साथ, हर्ष के कारण बनते हैं ।९॥

२३ १२ ३१ २र३ १ २र ३२
परि प्रासिष्यदत् कविः सिन्धोरूर्मावधिश्रितः ।
३१ २र ३ १२
कारुं बिभ्रत् पुरुस्पृहम् ॥ १० ॥ २ ॥

क्रान्तदर्शक सोमरस साधक के हृदय समुद्र की लहरों पर सवार होकर अतिस्पृहणीय शिल्पी के गुणों को धारण करता हुआ, चारों ओर बह निकलता है ।

इति दशमी दशतिः । द्वितीयः खण्डः ॥

इति द्वितीयोऽर्धः । पञ्चमः प्रपाठकश्च ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ षष्ठः प्रपाठकः । (प्रथमोऽर्धः)

॥ द० १ ॥ ऋषिः—१, ८, ६ अमहीयुः । २ बृहन्मतिः । ३ असितः । ४ प्रभूवसुः । ५ मेध्यातिथिः । ६, ७ निध्रुविः । १० उचथ्यः ॥ पवमानो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ ३ ३ १ २ र
उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम् ।
१ २ ३ १ २
इन्दुं देवा अयासिषुः ॥ १ ॥

सुष्ठुतया उत्पन्न, कर्म प्रेरक, स्तुतियों से क्रमशः साधित आनन्दरस को दिव्य इन्द्रियों ने प्राप्त किया ॥

३ १ २ ३ २ ३ ३ २ ३ १ २
पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः ॥ २ ॥

विविध रूप से दूरदर्शक सोम प्रवाहित होकर सब विघ्नबाधाओं को पार कर जाता है; इस प्रकार मेधासम्पन्न जन का (सब लोग) स्तुतियों से अभि-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नन्दन करते हैं ॥२॥

३ २ ३ १२ ३२३ ३ १२ ३ १ २र
आविशन् कलशं सुतो विश्वा अर्षन्नभि श्रियः ।
२ ३ १ २
इन्दुरिन्द्राय धीयते ॥ ३ ॥

हृदय रूप घर में प्रविष्ट हुआ, सम्पादित आनन्द-रस सब विभूतियों को चारों ओर से समेट कर लाता है और इन्द्र को भेंट कर दिया जाता है ॥३॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २ ३क २र ३२
असर्जि रथ्यो यथा पवित्रे चम्वोः सुतः ।
१ २ ३ १ २
कार्ष्मन् वाजी न्यक्रमीत् ॥ ४ ॥

जैसे रथ-योग्य बलवान् घोड़ा दो सेनाओं के मध्य प्रेरित होने पर संग्राम में पराक्रम दिखाता है वैसे ही जीवन यात्रा में समर्थ वाहक यह सोम प्राणा-पान से हृदय की चलनी में आया हुआ जीवन संघर्ष में पराक्रम दिखाता है ॥४॥

२उ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
प्र यद् गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २३ ३ १ २
घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम् ॥ ५ ॥

प्रकाशपूर्ण सतत भ्रमणशील किरणों की भांति इन प्रकाश के पुञ्ज एवं गति-शील सोमों ने अन्धकारमयी काली खाल को उतार फैंकने का अद्भुत पराक्रम दिखलाया है ॥५॥

३ १ २ ३ १ २ २ १ २ ३ २
अपघ्नन् पवसे मृधः क्रतुवित् सोम मत्सरः ।
३ १ २र ३ १ २
नुदस्वादेवयुं जनम् ॥ ६ ॥

मेरी प्रत्येक क्रिया में पहुँचने वाले सोम ! तू हर्ष का सरोवर है; तू पापभावनाओं का विनाश कर पवित्रता के प्रवाह को लाता है । पापभावनाओं की ओर प्रवृत्त जन को वहां से हटा दे ॥६॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः ।
३ १ २र ३ २
हिन्वानो मानुषीरपः ॥ ७ ॥

हे सोम ! जिस धारा से तूने सूर्य को प्रकाशित

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

किया उसी से मानव कर्मों को प्रेरित करता हुआ तू पवित्रता के प्रवाह को चला ॥७॥

१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २३ १ २
स पवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय हन्तवे ।
१ १२ ३ २३२
वव्रिवांसं महीरपः ॥ ८ ॥

जिस तू ने हे सोम ! महती कर्म-शक्ति के भण्डार इन्द्र को विघ्ननिवारण में सहायता दी थी, वह तू प्रवाहित हो ॥८॥

३ २ ३१र २र ३ १ २ ३ २३ २
अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा ।
३ १ २ ३ १ २र
अवाहन् नवतीर्नव ॥ ९ ॥

हे आह्लादक ! तेरे आनन्द रसों में से जिसने ९९ वर्ष पार कराये हैं, उसी आनन्द की लहर से उमड़ता चला जा ॥९॥

१२ ३१ २र ३२उ ३ १२ ३ १ २
परि द्युक्षं सनद् रयिं भरद्वाजं नो अन्धसा ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ २३ २
स्वानो अर्ष पवित्र आ ॥ १० ॥ ३ ॥

हे सोम ! हमें जीवन शक्ति के द्वारा प्रकाशमय, दानपूर्ण, बलप्रदाता ऐश्वर्य प्रदान करता हुआ तू घोषणा पूर्वक हमारे शुद्ध हृदय में विराजमान हो॥

इति प्रथमा दशतिः । तृतीयः खण्डः ।

॥ द० २ ॥ ऋषिः—१ मेधातिथिः । २, ७ भृगः । ३ उचथ्यः । ४ अवत्सारः ५, ६ निध्रुविः । ८, ६ काश्यपः । १० असितः। ११ कविः । १२ जमदग्निः । १३ अयास्यः । १४ अमहीयुः ॥ पवमानो देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥ षड्जः स्वरः ॥

१ २ ३ २ ३ १२३ २१र ३ १ २र३ २
अचिक्रदद् वृषा हरिर्महान् मित्रो न दर्शतः ।
१ २र
सं सूर्येण दिद्युते ॥ १ ॥

मित्र के समान दर्शनीय वह महान आकर्षक सोम सुखवर्षण सामर्थ्य से युक्त हुआ जब गर्ज उठा तो अपनी प्रेरक शक्ति से चमकने लगा ॥१॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १२ ३ २३ १ २ ३ १ २
आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे ।
२ ३ १ २३ १२
पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥ २ ॥

हम तेरे कल्याणजनक एवं सुखवाहक अतएव सब के अभीष्ट पावक ओज को मांग रहे हैं ॥२॥

१ २ ३ १ ३ ३१ २ ३२ ३ १ २
अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ नय ।
३ १ २३ १ २
पुनाहीन्द्राय पातवे ॥ ३ ॥

हे यज्ञकर्ता ! तू ज्ञान-कर्मेन्द्रियों से बह कर आये इस परमानन्द को हृदय की चलनी में घेर और इन्द्र के पीने के लिये इसे स्वच्छ कर ।

२३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २र
तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः ।
२३ २ ३ १ २
तरत् स मन्दी धावति ॥ ४ ॥

उत्पादित प्राण-प्रद सोमरस की धारासे आनन्द-मय हुआ वह तैर जाता है और दौड़ता है । भव-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सागर से पार-जाने वाला वह आनन्दमय इनाम की ओर दौड़ सी लगाता है ॥४॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आ पवस्व सहस्रिणं रयिं सोम सुवीर्यम् ।
३१ २र
अस्मे श्रवांसि धारय ॥ ५ ॥

हे परमानन्द के स्रोत ! तू अपने साथ हजारों की सामर्थ्य वाले ओजस्वी ऐश्वर्य को बहा ला । हम में दिव्य ज्ञान का आधान कर ॥५॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २र
अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः ।
३१ २ ३ १२
रुचे जनन्त सूर्यम् ॥ ६ ॥

जीवन में नये प्रवेश करने वाले जन, अपने पथ-प्रदर्शन के लिए प्रेरक सोम को सिद्ध कर प्राचीनों की भांति अपना नया स्थान बना लेते हैं ॥६॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १२
अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ २ ३ २
सीदन् यानौ वनेष्वा ॥ ७ ॥

हे अत्यन्त प्रकाशमय सोम ! तू गर्जता हुआ हमारी इन्द्रियों में व्याप्त होजा : और इस प्रकार अपनी भक्त इन्द्रियों में अपना स्थान बना ॥७॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः ।
१ ३ १ २
वृषा धर्माणि दध्रिषे ॥ ८ ॥

हे परमानन्द रस ! सुख वर्षा की सामर्थ्य वाला तू दीप्ति से युक्त है : तू ही हे दिव्य मेघ ! नियम से सुख की वर्षा करनेहारा है और वर्षण समर्थ ! तू ही सब धर्म-कर्मों का धारण करने वाला है ॥८॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः ।
१ २ ३ १ २र
इन्दो रुचाभि गा इहि ॥ ९ ॥

मनन करनेवाले प्राज्ञों से शोधित हे आह्लादक ! धारारूप में प्रवाहित हो और अपनी दीप्ति से

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

इन्द्रियों को चमका दे ॥९॥

३ १ २ ३ १२ ३ १२ ३२
मन्द्रया सोम धारया वृषा पवस्व देवयुः ।
२ ३ १२ ३२
अव्या वारेभिरस्मयुः ॥ १० ॥

हे आनन्द रस ! तू धर्ममेघ बना हुआ, दिव्य गुणधायक हमारी ओर आता हुआ चितिशक्ति के आवरणों में से आह्लादक धारा के रूप में प्रवाहित हो।१०॥

३ १ ३ ३ १ २ ३२३ ३क २र
अया सोम सुकृत्यया महान्त्सन्नभ्यवर्धथाः ।
३ १ २र
मन्दान इद् वृषायसे ॥ ११ ॥

हे सोम ! इस सुकर्म से ही तू बड़ा होकर आगे बढ़ा है—उन्नति कर पाया है; स्वयं प्रसन्न रहता हुआ ही ज्ञान-वर्षण की इच्छा रखता है ॥११॥

३ १ २र ३१ २र ३ १ ३
अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः स चेतति ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र ३२
हिन्वान आप्यं बृहत् ॥ १२ ॥

यह दूरदर्शक और मित्र पावक सोम महान् बन्धुत्व की प्रेरणा देता हुआ प्रतीत होता है ॥१२॥

१ २ ३१ २र ३१ २र
प्र न इन्दो महे तु न ऊर्मिं न बिभ्रदर्षसि ।
३ २ ३ २ ३ १ २
अभि देवाँ अयास्यः ॥ १३ ॥

हे आह्लादक रस ! महान् ऐश्वर्य के लिये ज्ञान की एक लहर-सी को उठाये हुए तू हमारी ओर आ रहा है : तुझे दिव्यगुणों को जो प्राप्त कराना है ॥१३॥

३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १२
अपघ्नन् पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः ।
२ ३ १ र ३ २
गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ १४ ॥ ४ ॥

इन्द्र के सुसंस्कृत घर में जाता हुआ सोम हिंसक और दान भावना रहित सब वृत्तियों को नष्ट करता हुआ बहता है ॥१४॥

इति द्वितीया दशतिः । चतुर्थः खण्डः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ द० ३ ॥ ऋषिः—१-१२ भरद्वाजः कश्यपो गोतमोऽत्रिर्विश्वामित्रो जमदग्निर्वसिष्टः (सप्तर्षयः) ॥ पवमानो देवता ॥ बृहती छन्द. ॥ मध्यमः स्वरः ॥

पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि । आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः ॥१

हे सोम ! धारा रूप में बहता हुआ तू मेरे कर्म-कर्म में व्याप्त होता हुआ आता है। सब रत्नों की खान तू ऋत के मूल जन्म-स्थान में तेरा निवास है और चमकीला दिव्य (सुख का) स्रोत है तू ॥१॥

परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः । दधन्वाँ यो नर्यो अप्स्वाऽ३न्तरा सुषाव सोममद्रिभिः ॥ २ ॥

जो सोम सर्वोत्तम समर्पित करने योग्य हवि है; जो नरहितकारी सब कर्मों का धारक है; और जिस

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

को साधक ने इन्द्रियों में से चुवाया है उस प्रवाहित आनन्द रस को यहां चारों ओर सींच दो ॥ ॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
आ सोम स्वानो अद्रिभिस्तिरो वाराण्यव्यया।
३ २ ३२ ३क २र ३ २ ३ २ ३ १२
जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दध्रिषे॥ ३ ॥

हे परमानन्द रस ! तू इन्द्रियों से उत्पन्न चिति-शक्तियों के आवरणों को पार करता हुआ, जिस प्रकार कोई वीर पुरुष नगर में प्रवेश करता है, वैसे ही हमारी पार्थिव और प्रकाशमयी चेतना को आविष्ट करता है। इस प्रकार आकर्षक बना हुआ तू भक्ति-पात्रों में अपना स्थान बनाता है ॥३॥

१ २ ३१२ ३ २ ३१ २ ३ १२ ३ १
प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा। अंशोः
२र ३ १ २र३२ ३ १ २ ३ १२
पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम् ॥४॥

हे सोम ! दिव्यता के आधान के लिये, जल से

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जैसे समुद्र बढ़ता है उसी प्रकार तू हमें बढ़ाता है: हर्ष से मस्त हुए की भांति सोम की चमक का पान करने से सदा जागरूक बना हुआ साधक मधुरता बहाने वाले आनन्दमय कोश को प्राप्त हो ॥४॥

सोम उ ष्वाणः सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम् । अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया ॥ ५ ॥

हे सोम ! तू साधकों से चितियों के मार्गों द्वारा सवन किया जाकर, व्यापक की भान्ति अत्यन्त गतिशील और अति आह्लादक धारा रूप में प्रकट होता है ॥५॥

तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे । पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधींरति ताँ इहि ॥६॥

हे आह्लादक ! मैं इन्द्र तेरी मित्रता में प्रतिदिन

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रमण करूं—प्रसन्न रहूँ। हे भरणकर्ता! मेरे शरीर मुझे नीचे ले जाने की वृत्ति रखते हैं, इन देहरूप सीमाओं को, जो मुझे चारों ओर से घेरे हुए हैं तू पार करा ॥६॥

३ १ २ ३१ २र ३ २
मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि। रयिं
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र
पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि ॥७॥

चतुर के हाथ से शुद्ध किया हुआ तू हृदयसमुद्र में प्रेरणा की आवाज उठाता है। हे पवमान! तू इस प्रकार बहुत सी, लोकप्रिय और सुन्दर सम्पत्ति को प्राप्त कराता है ॥७॥

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १
अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम्। समुद्र-
२र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
स्याधि विष्टपे मनीषिणो मत्सरासो मदच्युतः॥८॥

मनस्वी, स्वयं आनन्द के स्रोत और आनन्द टपका रहे ये सौम्यजन आनन्दसागर के उच्च स्थान से हर्षकारी आनन्द को बहा रहे हैं ॥८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २३ १ २ ३२ ३ २३ १२ ३ २
पुनानः सोम जागृविरव्या वारैः परि प्रियः ।
१ २र ३ १ २ ३१ २
त्वं विप्रो अभवोऽङ्गिरस्तम मध्वा यज्ञं मिमिक्ष णः ॥ ९ ॥

चिति की भावनाओं से छन कर आता हुआ परमानन्द रस तू सदा चैतन्य रखता है; इसीलिए प्रिय है। इस प्रकार विज्ञानशील हुआ तू हमारे अङ्ग-अङ्ग में रम जा; हमारे अध्यात्म-यज्ञ को मधुरता से मिश्रित कर दे ॥९॥

१ २ ३ २३ १ २ ३१ २ ३२ ३१२
इन्द्राय पवते मदः सोमो मरुत्वते सुतः । सहस्र-
३ १ २र ३ १ २ ३१२
धारो अत्यव्यमर्षति तमी मृजन्त्यायवः ॥१०॥

प्राण-शक्ति-सम्पन्न के लिए उत्पन्न सोम इन्द्र के लिए प्रसन्नता ला कर लाता है; यह हजारों धाराओं का प्रवाह चितियों को पार कर प्रकट हो रहा है और इसे साधक परिष्कृत करते हैं ॥१०॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ १२३ १ २र ३ १ २ १
पवस्व वाजसातमोऽभि विश्वानि वार्या । त्वं
२ ३१ २३१ २र ३१ २ ३२
समुद्रः प्रथमे विधर्मं देवेभ्यः सोम मत्सरः ॥११॥

हे सोम ! सब बाधाओं को हटा कर ज्ञान एवं बल से सम्पन्न हुआ तू प्रवाहित हो; तू (आनन्द का) प्रमुख समुद्र है; हे धारयिता ! दिव्यगुणों के आधान के लिए आनन्द का स्रोत है ॥११॥

१२ ३ २ ३२ १२ ३१ २
पवमाना असृक्षत पवित्रमति धारया । मरुत्वन्तो
३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २र
मत्सरा इन्द्रिया हया मेधामभि प्रयांसि च ॥१२॥

प्राणशक्ति से युक्त, हर्ष के सरोवर इन्द्रियरूप घोड़ों ने स्वयं पवित्र होकर धारारूप में पवित्र सोम को मुक्त कर दिया, आनन्द का प्रवाह चला दिया। इस प्रकार उन्होंने मेधा को साक्षात् प्राप्त कर लिया ॥१२।

इति तृतीया दशतिः । पञ्चमः खण्डः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ द० ४ ॥ ऋषिः—१, ६ उशनाः । २ वृषगणः । ३, ७ पराशरः । ४, ६ वसिष्ठः । ५, १० प्रतर्दनः । ८ प्रस्कण्वः ॥ पवमानो देवता ॥ त्रिष्टुप् छन्दः ॥ धैवतः स्वरः ॥

१ २र३ २३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ ३ १
प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो अभि
२र २ ३ १ २ ३ १२ ३२ ३ १ २
वाजमर्ष । अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तोऽच्छा
३१ २ ३ १ २
बर्ही रशनाभिर्नयन्ति ॥ १ ॥

हे परमानन्द रस ! आगे तो बढ़ ही और कोश-स्थान (हृदय) में विराजमान हो; साधक जनों से परिशोधित किया हुआ तू बलशाली हो उठ । जैसे बलवान्, वेगवान् घोड़े को बागों से पकड़ कर (नियन्त्रण में रखते हुए) उससे कार्य लेते हैं वैसे ही शीघ्रगामी और ज्ञान-बल से संयुक्त तुझ सोम को शोधित करते हुए और नियन्त्रण-शक्तियों से नियन्त्रित रखते हुए (हृदयस्थली की ओर) ले जाते हैं ॥१॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १
विवक्ति । महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा
२ ३ १ ३क २र ३ १ २
वराहो अभ्येति रेभन् ॥ २ ॥

यह परमानन्दरूप सोम क्रान्त-द्रष्टा की भान्ति प्रातिभ-ज्ञान बताता और स्वयं दिव्य होता हुआ दिव्यगुणों के प्रादुर्भाव को स्पष्ट कर देता है । कर्म एवं प्रज्ञा की विशालता देने वाला, अपने तेज द्वारा सबका प्रिय, और पावक वह धर्म-मेघ-रूप सुखवर्षक सोम वेग से शब्द करता हुआ आता है ॥२॥

३ १ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो
३ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
मनीषाम् । गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं
३ १ २ ३ २
यन्ति मतयो वावशानाः ॥ ३ ॥

वाहक सोम तीन वाणियों (इडा, सरस्वती

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मही—सत्यदर्शन, सत्यश्रवण और सत्य की प्रकाशमयी व्यापकता) को प्रेरित करता है; वह ऋत) परमसत्य को धारण करने वाली ब्रह्म बुद्धि को भी प्रेरित करता है । जिस प्रकार गौएं गोपति को खोजती हुईं दौड़ी आती हैं वैसे ही बुद्धियां—विविध मनः शक्तियां—कान्तियुक्त, (परिष्कृत) होने की इच्छा से परमानन्द रस को खोजती हैं ॥३॥

३ २ ३ २ ३१ २ ३१ २ ३ २ ३२ ३ १२
अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः सम-
३ १२ ३ २ ३ २३ १२ ३ १२ ३२३
पृक्त रसम् । सुतः पवित्रं पर्येति रेभन् मितेव
१२ ३ २ ३ १ २
सद्म पशुमन्ति होता ॥ ४ ॥

उस प्रसिद्ध प्रकाशमयी प्रेरणा से द्रवित हुए दिव्य सोम ने इन्द्रियों से रस का सम्पर्क कराया; इस प्रकार परिष्कृत वह परमानन्द रस गर्जता हुआ हृदय को आविष्ट करता है : उसी प्रकार जिस प्रकार कि यज्ञसाधक का लक्ष्य एक परिमित स्थान,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पशुवृत्तियों से भरे, हृदय को शुद्ध करना होता है ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १
सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता
२ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
पृथिव्याः जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य
३ १ २र
जनितोत विष्णोः ॥५॥

यह सोम द्रवित हो रहा है : यह धारणा-शक्तियों का उत्पादक है; द्यौ और पार्थिव लोकों को रचता है; अग्नि, सूर्य, इन्द्र और विष्णु शब्दों से व्यवहृत शक्तियों को धारण कराता है ॥५॥

३ १ २ ३ १ २र ३ १र २ ३ १ २ ३
अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामङ्गोषिणमवावशन्त
१ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २३ ३ १ २ ३ १
वाणीः । वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि रत्नधा
२ ३ १ २
दयते वार्याणि ॥६॥

उस तीनों लोकों को छूने वाले, वर्षणसमर्थ, प्राणधारक, अङ्ग-अङ्ग में रमने वाले सोम को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वाणियां चाहती हैं। साधक भक्तों में बस रहा वह सोम, बाधाओं को हटाने वाले वरुण की भान्ति हृदय-समुद्र को नाना रत्नों की खान बनाता है और वारण करने योग्य विघ्नों को नष्ट करता है ॥६॥

१ २ ३१ २३१ २र ३१२ ३१ २र
अक्रांत्समुद्रः प्रथमे विधर्मं जनयन् प्रजा भुवनस्य
३ २ १२ ३ २३ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २र
गोपाः। वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो
३ १ २र
वावृधे स्वानो अद्रिः ॥७॥

जब वह रस का अथाह भण्डार सोम उमड़ा तो पहले ही आक्रमण में उसने प्रजाओं को सब के रक्षक रूप में परिवर्तित कर दिया। वह सुखवर्षक उच्च स्थान से चेतना की चलनी में आया हुआ विशाल सोम बढ़ कर शब्दयुक्त (गर्जते हुए) वर्षक बादल के रूप में परिवर्तित हो जाता है ॥८॥

१ २ ३ २३ २ ३ १ २ ३ २३ १२ ३१२
कनिक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः सीदन् वनस्य जठरे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३२ १ २३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३१
पुनानः । नृभिर्यतः कृणुते निर्णिजं गामतो मतिं
२ ३ १ २
जनयत स्वधाभिः ॥८॥

सब ओर से प्रकट किया जाने में शब्दायमान (प्रत्यक्षतः प्रकट होता हुआ) वह आकर्षक सोम साधक में विद्यमान एवं निष्पादित हुआ संयत किया जाकर इन्द्रियमात्र को परिमार्जित कर देता है; अतएव हे साधको ! तुम अपनी धारणा-शक्तियों से चितिशक्ति को सिद्ध करो ॥८॥

३ २उ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १२
एष स्य ते मधुमाँ इन्द्र सोमो वृषा वृष्णः परि
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवित्रे अक्षाः । सहस्रदाः शतदा भूरिदावा
३ २ ३ २उ ३क २र
शश्वत्तमं बर्हिरा वाज्यस्थात् ॥९॥

हे इन्द्र ! यह प्रसिद्ध, मधुर, आनन्द-वर्षक परमानन्दरस तेरे लिए परमानन्द के स्रोत से हृदय की चलनी में स्रवित हुआ है; हजारों-सैंकड़ों नहीं-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नहीं, बहुत से दान देने वाला बलशाली सोम हृदय में निरन्तर स्थिर रहे ॥६॥

१२ ३ १२ ३ २ ३ १ १२ ३ २ ३
पवस्व सोम मधुमाँ ऋतावापो वसानो अधि
२ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
सानो अव्ये। अव द्रोणानि घृतवन्ति रोह
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
मदिन्तमो मत्सर इन्द्रपानः ॥१०॥६॥

हे मधुर, ज्ञान-कर्म की विविध वृत्तियों से युक्त और इसीलिए परमसत्य (ऋत) के प्रापक, सोम! तू अपनी उच्च स्थिति से इस चिति-प्रदेश में आकर बह और ज्ञान से दीप्त इन्द्रियों में उतर; इस प्रकार परमानन्द का अत्यन्त हर्षदायक स्रोत बना हुआ तू इन्द्र का पेय बन ॥१०॥

इति चतुर्थी दशतिः। षष्ठः खण्डः।

॥ द० ५ ॥ ऋषिः—१ प्रतर्दनः। २, १० पराशरः। ३ इन्द्रप्रमातिः। ४ वसिष्ठः। ५ मृडीकः। ६ नोधाः। ७ कण्वः। ८ मन्युः। ९ कुत्सः। ११ कश्यपः। १२

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रस्कण्वः ॥ पवमानो देवता ॥ त्रिष्टुप् छन्दः ॥ धैवतः स्वरः ॥

१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
प्र सेनानीः शूरो अग्ने रथानां गव्यन्नेति हर्षते
३ १ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २र ३
अस्य सेना । भद्रान् कृण्वन्निन्द्रहवांत्सखिभ्य
२उ ३ १ २ ३ १ २
आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते ॥१॥

जिस प्रकार शूर सेनापति पृथिवी-विजय की कामना से (सेनास्थित) सब रथों से आगे-आगे चलता है तो इसकी सेना भी प्रसन्न होती है इसी प्रकार इन्द्र के मित्रों—विचार-शक्तियों—के लिए कल्याणकारी आह्वानों को निष्पन्न करने वाला यह सोम ज्ञान-प्रकाश को फैलाने के उद्देश्य से प्रबल आच्छादक आवरणों को हटा देता है ॥१॥

२ ३ २ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
प्र ते धारा मधुमतीरसृग्रन् वारं यत्पूतो अत्येष्यव्यम्
१२ ३ १२३ १ २ १ २ ३२३ १२
पवमान पवसे धाम गोनां जनयंत्सूर्यमपिन्वो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अर्षः ॥ २ ॥

हे सोम ! जब तू शुद्ध निष्पन्न किया हुआ चिति के आवरणों को पार कर लेता है तो तेरी मधुर रसपूर्ण धारायें खूब बढ़-चढ़ कर बह निकलती हैं: तू बहता हुआ ज्ञान-कर्मशक्तियों के स्रोत इन्द्र को शुद्ध करता है और उसे अपनी दीप्तियों से आविष्ट कर प्रेरक बना देता है ॥२॥

प्र गायताभ्यर्चाम देवां त्सोमं हिनोत महते
धनाय । स्वादुः पवतामति वारमव्यमा सीदतु
कलशं देव इन्दुः ॥३॥

हे साधको ! गाओ; आओ, दिव्यगुणों के लक्ष्य से पूजा में प्रवृत्त हों; महिमाशाली ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए सोम-रस का आह्वान करो । वह स्वादु चेतना के आवरणों को लांघ कर प्रवाहित हो; वह

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दिव्य आह्लादक हमारे हृदयकलश में विराजमान हो ॥३॥

१ २ ३१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २र ३
प्र हिन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न वाजं सनि-
१२ २ ३ २ ३ १२ ३१ २ ३ २३
षन्नयासीत्। इन्द्रं गच्छन्नायुधा संशिशानो विश्वा
२३ १ २ ३१ २
वसु हस्तयोरादधानः ॥४॥

अपनी प्रेरणा से पृथिवी व द्युलोक को नया जन्म देने वाला ऐश्वर्य बांटने वाले वाहक की भांति यह सोम चला जा रहा है और हथियार से सुशोभित, दोनों हाथों में सम्पूर्ण ऐश्वर्य को लिये हुये वीर की न्याईं यह सोम इन्द्र की ओर बढ़ा जा रहा है ॥४॥

२३ २ ३ १२ ३ १२ ३ १ २र ३ १२
तक्षद् यदी मनसो वेनतो वाग् ज्येष्ठस्य धर्म
३ १ २र १ २ ३ २ ३ १ २ ३२३ ३
द्युक्षोरनीके। आदीमायन् वरमा वावशाना जुष्टं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३२ ३ २ ३ १ २
पतिं कलशे गाव इन्दुम् ॥५॥

जब कभी किसी बड़े आक्रान्ता (विघ्नादि) के मोर्चे पर उसके आक्रमण की काट कर्म एवं विचार-शील मन से की जाती है तो इन्द्रियां, प्रियपति को चाहती हुई पत्नी की भांति, इसी वरणीय (सोम) की कामना से हृदय को आविष्ट किये हुए आह्लादक को प्राप्त करती हैं ॥५॥

३ १ २ ३ १ २३ २३ १ २ ३ २ ३
साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो
१ २ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३
धनुत्रीः । हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे
२ ३ २ ३ २
अत्यो न वाजी ॥६॥

आकर्षक परमानन्द ने एक साथ अपने रस से सींचती हुईं, स्वयं सरणशील, परमोत्कृष्ट सूर्य (परमात्मा) से स्वयं उत्पन्न (प्रकट) की गईं, धीर पुरुष की नाना मनोवृत्तियों का चारों ओर से

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

घेर लिया; फिर वह अत्यन्त बली व वेगवान् अश्व की भान्ति वेगपूर्वक हृदय-कलश में रम गया ॥६॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३
अभि यदस्मिन् वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः
२ ३ १ २ र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सूरे न विशः। अपो वृणानः पवते कवीयान्
३ १ २ र ३ १ २ ३ १ २
व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म ॥७॥

प्रजाएं जिस प्रकार शूरवीर राजा की प्राप्ति के के लिए होड़ लगाती हैं; उसी प्रकार शुभसंकल्प वेगवान् व बलशाली सोम की प्राप्ति में होड़ लगाते हैं और ज्ञान-कर्म की प्रेरणा देता हुआ यह क्रान्तदर्शी विचारधारा को इस प्रकार प्रवाहित एवं उसकी रक्षा करता है जैसे कि (पशुओं का स्वामी) पशु-वृद्धि के लिए उनके बाड़े की रक्षा करता है ॥७॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३
इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सहः
२ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ र ३ १ २
इन्वन् मदाय। हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं वरि-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३१२ ३ १ २
वस्कृण्वन् वृजनस्य राजा ॥८॥

आह्लादक बलशाली सोम इन्द्र को बली बनाकर हर्षोत्पादन के लिये ज्ञान-प्रकाश का प्रवाह बहाता हुआ बहता है। इस रूप में वह शक्ति का राजा वर-प्रदान करता हुआ-सा राक्षसों का विनाश करता और कृपणों को दबाता है ॥८॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३
अया पवा पवस्वैना वसूनि माँश्चत्व इन्दो सरसि
१ २ ३ १ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १
प्र धन्व । ब्रध्नश्चिद्यस्य वातो न जूतिं पुरुमे-
२ ३ १ २ ३ १ २
धाश्चित्तकवे नरं धात् ॥९॥

हे आह्लादक ! अपनी प्रसिद्ध पवित्रता के द्वारा जीवन के साधनों को पवित्र करता हुआ तू मेरे मनोहर हृदय-सरोवर को वेग से भरपूर कर दे। तेरे इस वायु-वेग को कोई आत्म-संयमी और मेधावी स्थिरसाधक ही प्राप्त करता है ॥९॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
महत् तत् सोमो महिषश्चकारापां यद् गर्भोऽवृ-
३ २ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
णीत देवान् । अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽजन-
३ २ ३ २ ३ १ २
यत् सूर्ये ज्योतिरिन्दुः ॥१०॥

सोम ने वर्षक बादल बन कर एक महान् कार्य कर डाला कि दिव्य-इन्द्रियों को सब ज्ञान-कर्मों के उत्पादयिता गर्भ के रूप में अपने में छिपा लिया; फिर बह कर इन्द्र को बलशाली किया और उस प्रेरक इन्द्र के भीतर ही आह्लादक इन्द्र-ज्योति को प्रकट किया ॥१०॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १
असर्जि वक्वा रथ्ये यथाजौ धिया मनोता प्रथमा
२ ३ २ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३
मनीषा । दश स्वसारो अधि सानो अव्ये मृजन्ति
२ ३ १ २ ३ १ २
वह्निं सदनेष्वच्छ ॥११॥

जिस प्रकार रथों से लड़े जाने वाले संग्राम में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

एक सेनापति नियुक्त होता है वैसे ही इस देह-वाहन से लड़े जाने वाले जीवन-संघर्ष में, विचार-शक्ति द्वारा सब मनन-शक्तियों का केन्द्रभूत मुख्य मनस्वी प्रवक्ता बनाया जाता है; फिर स्वय सरण-शील विविध विचार-शक्तियां हृदयान्तरों में उस वाहक-शक्ति का भली-भान्ति परिष्कार करती हैं ॥

३ २ ३२३२ ३ १ ३ १ २ ३ १ २ ३ २३
अपामिवेदूर्मयस्ततुराणाः प्र मनीषा ईरते सोम-
१ २ ३ २ ३१२ ३ २ ३ १ २र
मच्छ । नमस्यन्तीरुप च यन्ति सं चाच विश-
३ २ ३ १ २
न्त्युशतीरुशन्तम् ॥१२॥७॥

जलों की लहरों के समान ये ज्ञान-कर्म की धारायें अति वेगवती होकर ध्यानवृत्ति द्वारा सोम को भली-भांति प्रेरित करती हैं; फिर पियोंके सम्मुख प्रियाओं की भांति ये धारायें (इन्द्र के सम्मुख) झुकती हुई, पास पहुँचती और उनमें आविष्ट हो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जाती हैं ॥१२॥

इति पञ्चमी दशतिः । सप्तमः खण्डः ।

इति प्रथमोऽर्धः प्रपाठकः ।

अथ द्वितीयोऽर्धः

॥ द० ६ ॥ ऋषिः—१ अन्धीगुः । २ नहुषः । ३ ययातिः । ४ मनुः । ५, ८ अम्बरीषर्जिश्वानौ । ६, ७ रेभसूनू । ९ प्रजापतिः ॥ पवमानो देवता ॥ छन्दः—१–६, ८, ९ अनुष्टुप् । ७ बृहती ॥ स्वरः—१–६, ८, ९ गान्धारः । ७ मध्यमः ॥

३१ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १२
पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे ।
२३ १२ ३ १ २ ३क २र
अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्व्यम् ॥१॥

हे मित्रभूत विचार-शक्तियां ! तुम्हारे लिए अन्नभूत जीवनतत्त्व को जीतने वाले, निष्पन्न एवं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हर्षदायक सोम को सुरक्षित रखने के लिए लम्बी जीभ वाले कुत्ते के समान लालच को विध्वंस कर दो ॥ ॥

३ २ ३ २ ३२उ ३ १ २ ३ १ २
अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति ।
१३ १ २ ३ १२३क २र ३ १२ ३२
पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद् रोदसी उभे ॥२॥

यह पुष्टिकारक, दानयोग्य, भोग्य सोम प्रवाहित हुआ चला आ रहा है; सब प्रकार ऐश्वर्य के पर्याप्तता से युक्त इस सोम ने पृथिवी और द्युलोक, दोनों लोकों को नया जन्म प्रदान किया है ॥२॥

३ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः ।
३ १२ ३ १ २ ३ १ २
पवित्रवन्तो अक्षरन् देवान् गच्छन्तु वो मदाः ॥३॥

आनन्दी इन्द्र के लिए प्रस्तावित, मधुर सोमरस पवित्रता फैलाते हुए चतुर्दिक् में फैल रहे हैं : वे आनन्दकारक रस हमारी इन्द्रियों को दिव्य बनावें ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।
३ २ ३ १ २ ३१२ ३क २र ३ १२
मित्राः स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥४॥

मार्ग के सर्वोत्तम दर्शक, आह्लादकारी सोम हमारे लिए प्रवाहित हो रहे हैं- ये सोम मित्र-स्वभाव, शोभनशब्द (गान) युक्त, निर्मल, ध्यान योग के साधक और स्वःलोक को पहुँचाते हैं ॥४॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
अभी नो वाजसातमं रयिमर्ष शतस्पृहम् ।
१ २ ३१२ ३ १ २ ३१२
इन्दो सहस्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभासहम् ॥५॥

हे आह्लादक सोम ! तू हमें वह ऐश्वर्य पहुँचा जो प्राणशक्ति से भरपूर, सैंकड़ों का अभीष्ट, सहस्रों का पालक, अति तेजस्वी और अपने विरोधी तेजों को मात करने वाला है ॥५॥

३ १ २ ३१ २ ३१ २र ३ १ २
अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
वत्सं न पूर्व आयुनि जातं रिहन्ति मातरः ॥६॥

इन्द्र के अभीष्ट सोम के आगे द्वेषभावना-रहित इन्द्रियां इस प्रकार स्नेह से झुकती हैं जैसे कि माताएं पूर्व आयु में उत्पन्न बच्चे को चाहती हैं ॥३॥

१ २३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
आ हर्यताय धृष्णवे धनुष्टन्वन्ति पौंस्यम् ।
३२३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १२
शुक्रा वियन्त्यसुराय निर्णिजे विपामग्रे महीयुवः ॥७॥

ज्ञानी एवं कर्मनिष्ठों में अपना महत्वशाली स्थान पा लेने के इच्छुक वीर्यवान साधक, प्राण-दायक एवं शोधक और कमनीय एवं दुष्टभावों के विनाशक सोम को अपने पुरुषार्थ का लक्ष्य बनाते हैं ॥७॥

२ ३ १ २३ १ २र ३१ २ ३ १ २
परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण ।
२ ३२३ ३ २३ ३ १२ ३१ २र
यो देवान् विश्वा इत् परि मदेन सह गच्छति ॥८॥

जो सब इन्द्रियों को परमानन्द से विभोर कर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

देता है उस कमनीय, भरण-पोषणसमर्थ परमानन्द को चिति के उभारों में से प्रवाहित करते हैं ॥८॥

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद्वचः ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः ॥९॥८॥

उस सोम की अनाहतवाणी संजीवन-तत्त्व के निष्पन्न करने वाले के लिये है; साधारण जन उसे नहीं सुन पाता । हे ज्ञानी साधको ! दान विरोधी कुत्ते के समान लोभी, लोभ वृत्ति, को नष्ट करो; त्यागभावना को नहीं ॥९॥

इति षष्ठी दशतिः । अष्टमः खण्डः ।

॥ द० ७ ॥ ऋषिः—१–३, ५ कविः । ४, ६ ऋषिगणाः, (सिकतानिवावरी) । ७ रेणुः । ८ वेनः । ९ वसुः । १० वत्सप्रीः । ११ अत्रिः । १२ पवित्रः ॥ पवमानो देवता ॥ जगती छन्दः ॥ निषादः स्वरः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अभिप्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते। आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विश्वञ्चमरुहद् विचक्षणः ॥१॥

अन्न की संजीवनी शक्ति से युक्त, महान् सोम जिनका आश्रय लेकर बढ़ता है उन्हीं प्रिय रूपों में प्रकट होता है; वह क्रान्तदर्शक महान् सूर्य के महान् विश्वतोगामी रथ पर सवार होता है : सूर्यके समान क्रान्तदर्शक और प्रेरक है ॥१॥

अचोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः प्र स्वानासो बृहद देवेषु हरयः। वि चिदश्नाना इषयो अरातयोऽर्यो नः सन्तु सनिषन्तु नो धियः ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आकर्षक एवं इन्द्रियों में प्रत्यक्षतः बहकर आते हुए स्वयं प्रेरित परमानन्दरस हमें प्राप्त हों। हमारी शत्रुभूत इच्छाएं भोगरहित—असफल—रहें और चितिशक्तियां—शुभसंकल्प सफल हों ॥२॥

३२उ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३
एष प्र कोशे मधुमाँ अचिक्रददिन्द्रस्य वज्रो
१२३ १२ ३ २ १ २ ३१ २ ३ १२
वपुषो वपुष्टमः। अभ्यृ३तस्य सुदुघा घृतश्चुतो
३ १ २ ३ १२ ३१२
वाश्रा अर्षन्ति पयसा च धेनवः ॥३॥

यह सोम इन्द्र के लिए वज्रस्वरूप हुआ उसका रक्षक, शरीर का अधिकतम सौन्दर्य-वर्धक, और मधुररसपूर्ण हुआ हृदयकोश में अनाहत नाद करता रहता है; तथा जैसे सुगमता से खूब दूध देने वाली, घृत चुआ रही दुधार गायें रम्भाती हुई दूध समेत अपने प्रिय बछड़ों के पास पहुँचती हैं वैसे ही परम सत्य (ऋत) का दूध भरपेट देने वाले, ज्ञानदीप्तियों को फैला रहे, अनाहत नाद से प्रिय साधक को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पुकार रहे परमानन्द रस हृदय को आविष्ट कर रहे हैं ॥३॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ २ ३१
प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न
२र ३ १२ १२ ३ २ ३ १२ ३
प्र मिनाति सङ्गिरम् । मर्य इव युवतिभिः समर्षति
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
सोमः कलशे शतयामना पथा ॥४॥

आह्लादक सोम इन्द्र के घर में आता ही है; मित्र अपने मित्र के साथ की हुई प्रतिज्ञा को कभी भङ्ग नहीं करता। जैसे पौरुषयुक्त जन युवा स्त्रियों के साथ चलता है वैसे ही यह सोम अपनी युवा ज्ञान-वृत्तियों सहित सैंकड़ों मार्गों से हृदय-घर में प्रविष्ट होता है ॥४॥

३२ ३१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनु-
२ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ ३ १ २र ३
माद्यो नृभिः । हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभि-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ २
वृथा पाजांसि कृणुषे नदीष्वा ॥५॥

प्रकाशलोक का धारक दिव्यगुणों द्वारा बलरूप में सम्पादन करने योग्य, और मनुष्य जिससे आनन्दित हो उठते हैं वह आनन्दरस प्रवाहित होता है; जिस समय यह आकर्षक-रस सम्पन्न हो उठता है तो अपने सात्विक बलों से नाड़ियों में प्रवाहमान बलों को व्यर्थ कर देता है ॥५॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३
वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नां प्रतरी-
१ २ र ३ १ ३ १ २ र ३ १ २ ३
तोषसां दिवः । प्राणा सिन्धूनां कलशाँ अचिक्रद-
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
दिन्द्रस्य हार्द्याविशन्मनीषिभिः ॥६॥

यह सद्बुद्धियों का वर्धक, क्रान्तदर्शक सोम जो प्रकाशलोक से ज्ञान की उषाओं और दिनों को लाता है और देह की नाड़ियों में जीवन-संचार करता है, अपनी चितिशक्तियों समेत इन्द्र के हृदय को कलशों

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

की भांति आविष्ट कर वह अन्तर्नाद करता है ॥६॥

१ २ ३२ ३१ २ ३ २ ३१ २ ३१
त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रिरे सत्यामाशिरं परमे
२ ३ २३ १ २र ३ २ ३ १२
व्योमनि। चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि
३ २३१ २र
चक्रे यदृतैरवर्धत ॥७॥

परमानन्द के साधक को उसकी सर्वोत्कृष्ट उच्च-स्थान की ओर प्रस्थान-यात्रा में सात दुधार गौएं (मस्तिष्क के सात छिद्रों में वर्तमान ज्ञानेन्द्रियां) तीन बार (जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्ति में) सत्य-स्वरूप दूध देती है। ज्यों ज्यों सत्य ज्ञानों से वह बढ़ता है त्यों-त्यों इस सत्य-स्वरूप दूध की शुद्धि के लिए चार दूसरे (अन्नमय के अतिरिक्त प्राणमय, मनोमय, ज्ञानमय और आनन्दमय कोशों) सुन्दर भुवनों का (क्रमशः) निर्माण कर लेता है ॥७॥

१ २ ३ १२३ १ २ ३ १ २र ३
इन्द्राय सोम सुषुतः परि स्रवापामीवा भवतु

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३२ २ ३ १२ ३ २ ३
रक्षसा सह । मा ते रसस्य मत्सत द्वयाविनो
१ २ ३१ ३ १ २
द्रविणस्वन्त इह सन्त्विन्दवः ।।८।।

हे सुसम्पादित सोम ! तू इन्द्र के लिए प्रवाहित हो; रोग और बलात्कारी राक्षस (दुर्भावना) को दवा कर दूर कर। रोगी और दुर्भावनाओं से युक्त जन तेरे रस का आनन्द न ले सकें; आह्लादक रसों से युक्त ही ऐश्वर्यशाली बनें ।।८।।

१ २ ३ १ २ ३२३ ३ २ ३ १२ ३ २
असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो
३ १ २र ३ २उ ३१ २ ३ १२
अभि गा अचिक्रदत् । पुनानो वारमत्येष्यव्ययं
३ १ २१ ३१२ ३ १ २
श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदत् ।।६।।

चमकीला, सुखवर्षक, आकर्षक, राजा की भांति दर्शनीय सोम निष्पन्न होकर इन्द्रियों को अपने अनाहत नाद से पुकारता है : फिर चिति की विकाररहित चलनी में से छनकर आता है और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बाज की सी शीघ्रगति से अपने ज्ञान-दीप्तियुक्त घर—हृदयदेश—में विराजमान हो जाता है ॥९॥

२ ३२३ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ २३
प्र देवमच्छा मधुमन्त इन्दवो ऽसिष्यदन्त गाव
२३ ३१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आ न धेनवः । बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः
३ १ २३ १ २ ३ १ २
परिस्रुतमुस्रिया निर्णिजं धिरे ॥१०॥

जैसे दुधार गौएं (वात्सल्य से प्रेरित हुईं) अपने बछड़ों के पास पहुँच जाती हैं वैसे मधुर आह्लादक रस दिव्य इन्द्र को प्राप्त कर लेते हैं; हृदय में आविष्ट, अनाहत शब्द-युक्त ये आनन्द की धारायें अपने स्तनरूप स्रोत से चू कर आये विशुद्ध परमानन्द से युक्त रहते हैं ॥१०॥

३ २३क २र ३ १२ ३ १२ ३ २ ३क
अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मध्वा-
२र १ २ ३ २३१२ ३ १२
भ्यञ्जते । सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्य-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ २३ १ २
पात्राः पशुमप्सु गृभ्णते ॥११॥

ज्ञान से पवित्र हुए साधक अपने हृदय-समुद्र में आयी बाढ़ में गिरते हुए आनन्दवर्षी द्रष्टा सोम का उपयोग ज्ञान एवं कर्म की शक्ति में कर लेते हैं। वे उसका साक्षात्कार करते, व्यक्त करते और अपने में लीन कर उसके कर्म-स्वरूप का रसास्वादन करते तथा उसको मधुर बनाते हैं ॥११॥

३ १ २ ३ १२ ३१ २र ३ १२
पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि
३ १ २ १२ ३२३ ३१ २ ३ २ ३ १
विश्वतः । अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्
२र ३ १ २र
वहन्तः सं तदाशत ॥१२॥६॥

हे आत्मिक चेतना के अधिपति ! तुझे पवित्र करने वाली छाननी तनी हुई है—ज्ञान से प्रकाशित मन परमानन्द को ग्रहण करने के लिए तय्यार है; प्रकट हुआ तू अंग-अंग को चारों ओर से व्याप्त कर लेता है। अपरिपक्व—कच्चा—तपस्या की भट्टी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

में न तपा हुआ तेरे इस आनन्द का स्वाद नहीं ले पाता; केवल वे ही जो (तप से) पक कर तय्यार हो गये हैं उसे धारण करते और उसका उपभोग कर पाते हैं ॥१२॥

इति सप्तमी दशतिः । नवमः खण्डः ।

॥ द० ८ ॥ ऋषिः—१, ७, ११ अग्निः । २ चक्षुः । ३, ४, ६, १० पर्वतनारदौ । ५ त्रितः । ६ मनुः । ८, १२ द्वितः । पवमानो देवता ॥ उष्णिक् छन्दः ॥ ऋषभः स्वरः ॥

१ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः ।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥१॥

कल्याण के लिये प्रादुर्भूत हुआ, परमसुख तक पहुँचाने वाला और मनोहर सोम निष्पन्न होकर सुखवर्षण स्वभाव इन्द्र को ही प्राप्त हो ॥१॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र धन्वा सोम जागृविरिन्द्रायेन्दो परिस्रव ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
द्युमन्तं शुष्ममा भर स्वर्विदम् ॥२॥

सदा तय्यार रहने वाले जागरूक सोम ! इन्द्र को आह्लाद पहुँचा और उसे प्रकाशपूर्ण एवं परमानन्ददायक बल से भरपूर कर दे ॥२॥

१ २३ १ २र ३ २ ३ १ २
सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत।
२ ३ २ ३१ २र ३ २
शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये ॥३॥

हे मित्रो ! आओ, बैठो; प्रद्रवित होते सोम का गान करो। उस सोम को अपने बालक की भांति समझते हुए ऐश्वर्य प्राप्ति के लिये यज्ञिय कर्मों से शोभित करो ॥३॥

१ २ ३ १ २ ३२३ १ २
तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत।
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
शिशुं न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः ॥४॥

हे मित्रो ! आनन्द-प्राप्ति के प्रयोजन से उस प्रवाहित हो रहे बालक-सरीखे सोम की स्तुति,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हविरूप स्तुतियों से प्रसन्न करते हुए. करो ॥४॥

३ १ २र३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
प्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम् ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता ॥५॥

बड़ी-बड़ी शक्तियों में यह प्राणभूत शिशु (सोम) सत्यज्ञान की चमक को प्रेरित करके समस्त प्रिय पदार्थों को दो प्रकार से व्याप्त कर लेता है :

सोम के द्वारा समष्टि व व्यष्टि, स्थूल–सूक्ष्म आदि रूप से पदार्थों के दो रूपों का सत्य ज्ञान होता है ॥५॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा ।
२ ३ २ ३ १ २
आ कलशं मधुमांत्सोम नः सदः ॥६॥

दिव्य इन्द्रियों के भोजन के लिये, हे आह्लादक ! तू अपने पूरे बल के सहित प्रवाहित हो; हे मधुर सोम ! हमारे हृदय-कलश रूप घर में आकर विराजमान हो ॥६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ २३ ३ २ ३ १ २
सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं वारं वि धावति ।
१ २ ३ १ २र ३ १ २
अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥७॥

परमानन्द रस जब परिष्कृत होता है तो लहराता हुआ चिति की चलनी में से निकलता है; वह अनाहत नाद से पहले वाक् शक्ति को पवित्र करता है ॥७॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उच्यते ।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
भृतिं न भरा मतिभिर्जुजोषते ॥८॥

परमानन्द रस को प्रवाहित करने वाले कर्मिष्ठ मेधावी साधक को यह बात कही जा रही है कि चिति-शक्तियों के द्वारा इन्द्रिय आदि में प्रीतिपूर्वक निरन्तर आविष्ट हो रहे परमानन्द की नौकरी-सी कर ॥८॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २
गोमन्न इन्दो अश्ववत् सुतः सुदक्ष धनिव ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ २३ २ ३ १ २
शुचिं च वर्णमधि गोषु धारय ॥९॥

हे आह्लादक सोम ! निष्पन्न हुआ तू कल्याणकारी बल के रूप में हमें ज्ञान एवं कर्मशक्तियों से युक्त कर और हमारी इन्द्रियों को शुभ्र-यशस्विनी बना ॥९॥

३ १ २ ३ १२ ३ १ २र
अस्मभ्यं त्वा वसुविदमभि वाणीरनूषत ।
१ २ ३ १२ ३ १ २
गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि ॥१०॥

तुझ ऐश्वर्यप्रदाता की स्तुति हम साधकों के सम्मुख वेदवाणी ने की : तेरे यश को हम अपनी इन्द्रियों से ओढ़ रहे हैं; तेरी शुभ्र-कीर्ति को अपने आप में धारण करने का यत्न कर रहे हैं ॥१०॥

१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
पवते हर्यतो हरिरति ह्वरांसि रंह्या ।
३क २र ३ १ २ ३२३ १ २
अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद् यशः ॥११॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह कमनीय प्रिय सोम अपने वेग से कुटिलताओं को पार करता हुआ, साधकों को वीरों का-सा यश प्रदान करता हुआ पहुँचे ॥११॥

२३ १ २ ३ २३ १ २ ३ १ २
परि कोशं मधुश्चुतं सोमः पुनानो अर्षति ।
३ २३ ३ १ २ ३ १ २
अभि वाणीर्ऋषीणां सप्ता नूषत ॥१२॥१०॥

प्रवाहित एवं शुद्ध किया गया परमानन्द रस, मधुरता से आप्लावित हृदयकोश में पहुँच रहा है: इन्द्रियों की सातों वाणियां—सातों ज्ञान-प्रवाह—सब ओर से उसी के गीत गा रही हैं ॥१२॥

इति अष्टमी दशतिः । दशमः खण्डः ।

॥ द० ६ ॥ ऋषिः—१ गौरिवीतिः । २ ऊर्ध्वसद्मा । ५ ऋणञ्चयः । ३, ८ ऋजिश्वा । ४ कृतयशा । ६ शक्तिः । ७ उरुः । पवमानो देवता ॥ छन्दः—१-४, ६ ककुप् । ५ यवमध्यागायत्री । ७, ८ प्रगाथः । स्वर—१-४ ऋषभः । ५ षड्जः । ७, ८ मध्यमः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः।
१ २ ३ १२ ३ १२
महि द्युक्षतमो मदः ॥१॥

हे मधुरतम एवं ज्ञान-कर्म की सामर्थ्य का लाभ कराने वालों में सर्वोत्तम परमानन्द तू प्रवाहित हो : तू महान् तेजस्वी एवं समर्थतम आनन्द है ॥१॥

३ २ ३ २ ३२३ ३ १२ ३ १ २
अभि द्युम्नं बृहद् यश इषस्पते दीदिहि देव
३२ १ २र ३ १ २
देवयुम् । वि कोशं मध्यमं युव ॥२॥

हे प्रेरणाओं के स्वामिन् ! दिव्य सोम ! तू दिव्यताधायक उस विशाल यशोरूप तेजस्वी ऐश्वर्य को चहुँ ओर फैला दे : और इस प्रकार मनोमय एवं विज्ञानमय रूप मध्यम आवरण को काट डाल ॥२॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र३ १२ ३
आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुरं रज-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ १२३१ २
स्तुरम् । वनप्रक्षमुदप्रुतम् ॥३॥

जैसे वेगवान्, धूल उड़ा रहे (बली) अश्व को सजाते हैं : उसी प्रकार इस ज्ञान एवं कर्म को लाने वाले और अज्ञान को भगाने वाले, साधना के लक्ष्य-भूत से सम्पर्क कराने वाले, ज्ञान-रस से ओत-प्रोत सोम को निष्पन्न करो और उसको सींचो ॥३॥

३२३ १ २३ १२ ३१२ ३१ ३१२
एतमु त्यं मदच्युतं सहस्रधारं वृषभं दिवोदुहम् ।
२ ३ १२३ १२
विश्वा वसूनि बिभ्रतम् ॥४॥

इस प्रसिद्ध, आनन्द चुआ रहे, हजारों धाराओं के रूप में बरस रहे, ऐश्वर्यमात्र के भण्डार परमानन्द रस को मैंने प्रकाशलोक से दुहा है ॥४॥

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इडा-
२ ३ १ २ ३ २
नाम् । सोमो यः सुक्षितीनाम् ॥५॥

जो सोम पार्थिव धनों, बलशाली दान-भाव-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नाओं से भावित ऐश्वर्यों, और स्वतः ज्ञान के प्रकाश तथा सर्वोत्तम लक्ष्य—परम लक्ष्य—को पिलाने वाला (देने वाला) है उस सोम का मैं सवन (निष्पादन) कर रहा हूँ ॥५॥

२ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
त्वं ह्या३ङ्ग दैव्यं पवमान जनिमानि द्यु मत्तमः।
३ १२ ३ १२
अमृतत्वाय घोषयन् ॥६॥

सर्वाधिक कान्ति (यश) से युक्त तू सोम दिव्यता का प्रवाह बहा कर मेरे जन्म-जन्मान्तरों को अमरपन का सन्देश देता है ॥

३१ २र ३ २ ३ १२ ३
एष स्य धारया सुतोऽव्या वारेभिः पवते मदि-
१ २ १ २ ३ २३ १ २
न्तमः। क्रीडन्नूर्मिरपामिव ॥७॥

यह वह प्रसिद्ध सोम धाराओं में अभिव्यक्त हो चितिशक्ति के आवरणों में से छन रहा है; यह सर्वोत्तम आह्लादक है और लीलामयी जल-लहरों के समान ज्ञान-कर्म की लीलायमान तरंग-सा है ॥७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र ३
य उस्रिया अपि या अन्तरश्मनि निर्गा अकृन्त-
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
दोजसा । अभि व्रजं तत्निषे गव्यमश्व्यं वर्मीव
३ १ २ ३ १ ३ १ २ ३ १ २
धृष्णवा रुज । ओ३म् वर्मीव धृष्णवा रुज ॥८॥

हे सोम ! ज्ञान-कर्ममयी प्रकाशमयी (गो रूप) जो किरणें बलपूर्वक अन्तःकरणरूप बादल को काटकर निकल रही हैं उनको रोकने के लिये या उनकी रक्षा के लिये ज्ञान एवं कर्म के बाड़े को बना; हे दबा देने वाले ! तू योद्धा की भान्ति विघ्नों को नष्ट कर ॥८॥

इति नवमी दशतिः । एकादशः खण्डः ।
इति पञ्चमोऽध्यायः । षष्ठश्च प्रपाठकः समाप्तः ।
इति सौम्यं पावमानं काण्डम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ आरण्यकं काण्डम्*

अथ षष्ठोऽध्यायः

॥ द० १० ॥ ऋषिः—१ भरद्वाजः । २ वसिष्ठः । ३, ६ वामदेवः ४ शुनःशेपः । ५ गृत्समदः । ७, ८ अमहीयुः । ६ आत्मा ॥ देवता—१-३ इन्द्रः । ४ वरुणः । ५, ७, ८ पवमानः । ६ विश्वेदेवाः । ६ अन्नम् ॥ छन्दः—१ बृहती । २, ६ त्रिष्टुप् । ३, ७ ८ गायत्री । ४, ५ चतुष्पदा गायत्री । ६ एकपदा गायत्री ॥ स्वरः—मध्यमः । २, ६ धैवतः । ३-८ षड्जः ॥

२ ३   १ २ ३   १ २३   १ २ ३   १२३   १२
इन्द्र ज्येष्ठं न आ भर ओजिष्ठं पुपुरि श्रवः ।

---

* 'या ऽस्त्रिया' मन्त्र के अन्तिम पद की पुनरावृत्ति के साथ पूर्वार्चिक की समाप्ति प्रतीत होती है; इसीलिए कुछ संहिताओं में यह काण्ड पठित नहीं है । कुछ में पुनरावृत्ति नहीं है और तृतीयार्ध प्रपाठक के रूप में यह अध्याय मिलता है । परन्तु कुछ लोग इसमें विविध देवता परक मंत्र होने से पृथक् आरण्यक काण्ड मानते हैं ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २र ३ १ २ ३ १र २र
यद् दिधृक्षेम वज्रहस्त रोदसी उभे सुशिप्र
पप्राः ॥ १ ॥

हे इन्द्र ! हमें श्रेष्ठ और वीर्यवान् अन्तर्ज्ञान से भरपूर कर दो; हे साधनसम्पन्न ! इन्द्र हम इसे धारण करना चाहते हैं; हे तेजस्वी इससे तू दोनों लोकों को पूर दे ॥१॥

१ २ २ ३ १ २ ३ १ २उ ३ २उ २ १ २ ३
इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधिक्षमा विश्वरूपं
१ २ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३
यदस्य । ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद् राध
१ २ ३ २
उपस्तुतं चिदर्वाक् ॥२॥

इन्द्र जब जंगम भूतजात का, मानवों का और पृथिवी पर जो भी विविध रूप वाले विद्यमान हैं उन सब का राजा बन जाता है तब दानशील जन को जीवनोपयोगी पदार्थ देता है : और इधर (अर्वाक्) प्रार्थित ऐश्वर्य देता है ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३२ ३ २ ३ १२ ३२३ ३ २ ३क २र
यस्येदमा रजोयुजस्तुजे जने वनं स्वः ।
१ २ ३ १ २ ३२
इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत् ॥३॥

जो ज्योतिष्मान, दानशील पुरुष को सेवनीय परमानन्द ऐश्वर्य से युक्त करता है उस इन्द्र का रमणीय ऐश्वर्य कितना विशाल है ! ॥३॥

१२ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २र३१ २र ३१
उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं
२ १ २ ३२ ३१ २र ३ २ ३
श्रथाय । अथादित्य व्रते वयं तवानागसो
१ २
अदितये स्याम ॥४॥

हे सर्वव्यापक अतएव दोषनिवृत्ति द्वारा शोधक (वरुण) तू हमारे उत्तम, अधम व मध्यम—सब प्रकार के पाप बन्धनों को काट डाल; हे तेजस्विन् ! हम तेरी व्यवस्था में रहते हुए दोषरहित होकर उस अखण्ड ज्योति को प्राप्त करने में समर्थ हों ॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २ र ३ १ २ ३ १ र २ र ३
त्वया वयं पवमानेन सोम भरे कृतं वि चिनुयाम
१ २ १ २ ३ १ २ १ २ ३
शश्वत् । तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः
१ २ ३ २ ३ २
सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥५॥

हे सोम ! पवित्र प्रवाह रूप तेरे साहाय्य से ही हम अपने कर्त्तव्य-भार में निरन्तर सफलता प्राप्त करते हैं; और इसी प्रकार मित्र, वरुण, अदिति, सिन्धु, पृथिवी और द्यौ रूप दिव्य-शक्तियां सहायता द्वारा हमारी महिमा को बढ़ावें ॥५॥

३ १ २ र ३ २ ३ ३ २
इमं वृषणं कृणुतैकमिन्माम् ॥६॥

हे समग्र दिव्य-शक्तियो ! अकेले मुझे ही सब सुखों का वर्षक बना डालो ।

परमेश्वर के दिव्य गुणों का आधान करने से मनुष्य उस की भान्ति ही सुखवर्षक बन जाता है ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र
वरिवोवित् परिस्रव ॥७॥

वह परमानन्द रस (सोम) हमारे यजनशील एवं धर्माधर्म के विवेचन मन एवं उसकी चिति-शक्तियों को वरणीय ऐश्वर्य का दाता बन कर द्रवित हो ॥७॥

३ १ २र ३२उ ३ २ ३ १२
एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम् ।
१ २
सिषासन्तो वनामहे ॥८॥

प्रगतिशीलता के प्रतीक हे सोम ! मनुष्यों के इन समस्त चमकीले ऐश्वर्यों को बंटा लेना चाहते हुए हम तेरी उपासना करते हैं ॥८॥

३१२ ३ २ ३ २ ३ १२ ३१ २ ३१२ ३
अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य
१२ २ ३ १ २ ३ २उ ३१ ३२उ ३१२
नाम । यो मा ददाति स इदेवमावदहमन्नमन्न-
३१ २
मदन्तमद्मि ॥९॥॥१॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

परम सत्य एवं अमर रूप में सर्व प्रथम अन्नरूप में प्रकट हुआ हूँ : सब देवों से पहले। जो मुझे देता है वह मेरा संचय करता है : मैं अन्न ब्रह्म हूँ : जो अन्न को अकेला खाता है–दान भावना से रहित है–उसको मैं खा जाता हूँ ॥९॥

इति दशमी दशतिः। प्रथमः खण्डः।

॥ द० ११ ॥ ऋषिः—१ श्रुतकक्षः । २ पवित्रः । ३, ४ मधुच्छन्दाः । ५ प्रथः । ६ गृत्समदः । ७ नृमेधपुरुमेधौ ॥ देवता—१, ३, ४, ७ इन्द्रः । २ पवमानः । ५ विश्वे देवाः । ६ वायुः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६ गायत्री । २ जगती । ५ त्रिष्टुप् । ७ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४, ६ षड्जः ।२ निषादः । ५ धैवतः । ७ गान्धारः ॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च ।
१ २ ३ २ ३ १ २
परुष्णीषु रुशत् पयः ॥१॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे इन्द्र ! इस कान्तिमय तेज को पिङ्गला, इडा और ज्ञान-वाहिनी नाड़ियों में तू ही धारण करता है ॥१॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा मिमेति भुवनेषु
३ २ ३ १ २ ३ १ २
वाजयुः । मायाविनो ममिरे अस्य मायया
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
नृचक्षसः पितरो गर्भमादधुः ॥२॥

उषा की प्रथम श्रेष्ठ किरणरूप यह सोम चमक रहा है; ऐश्वर्य को पहुँचाने वाला यह सेचन-समर्थ अपने ऐश्वर्य को बखेर रहा है : चितिशक्तियां इस की ज्ञानक्रियाओं द्वारा ज्ञानवती होती हैं और पितृरूप क्रान्तदर्शी साधक इसे उत्पन्न करने के विचार से गर्भ रूप में धारण करते हैं ॥२॥

२ ३ २३ ३ २ ३ १ २३ १ २ ३ १ २
इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा ।
१ २ ३ १ २३ १ २
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥३॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यह इन्द्र की शक्ति है कि वह वाक्-समेत ज्ञान एवं कर्म इन्द्रियों को मिला कर रखता है। वह इन्द्र तेजस्वी है, संहारक शक्ति से भी युक्त है ॥३॥

२ ३ १२ ३१२
इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च ।
३२ ३१ २ ३ १ २
उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥४॥

हे तेजस्वी इन्द्र ! हमारे ज्ञान-बल के कार्यों और हजारों प्रकार के संघर्षों में अपनी उग्र-रक्षा-शक्तियों से हमारी रक्षा कर ॥४॥

१२३ १ २ ३१२३ १ २र ३ १२
प्रथश्च यस्य संप्रथश्च नामानुष्टुभस्य हविषो
३ २ ३ १ २र ३२ ३ १ २
हविर्यत् । धातुर्द्युतानात् सवितुश्च विष्णो
३१ २र ३ १ २
रथन्तरमा जभारा वसिष्ठः ॥५॥

जिस वाणी के, विस्तार के कारण, प्रथ और संप्रथ दो रूप हैं, जो सर्वोत्तम हवि है उस रथन्तर गान को चतुर साधक (वसिष्ठ) पालन करने

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वाले, चमकीले, प्रेरक और सर्वव्यापक सोम से ग्रहण करता है ॥५॥

३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
नियुत्वान् वायवा गह्ययं शुक्रो अयामि ते ।
१ २ ३२ ३२
गन्तासि सुन्वतो गृहम् ॥६॥

हे प्राण ! तू नियम से बंधा हुआ हमें प्राप्त हो; हमारे वश में हो। इस प्रकार वीर्य को तुझ से बांधता हूँ। तू साधक के घर (मन) में ही जायगा ॥६॥

१ २र ३ १२ ३१ २ १ २ ३
यज्ञायथा अपूर्व्य मघवन् वृत्रहत्याय । तत् पृथि-
१२ ३ १२ ३ १ २र
वीमप्रथयस्तदस्तभ्ना उतो दिवम् ॥७॥२॥

हे अद्वितीय ! ऐश्वर्यवन् ! क्योंकि तू आवरण-कारी तामस विघ्नों की हत्या के लिए साक्षात किया जाता है अतएव आवरणों को नष्ट करने के पश्चात इस विशाल भूमि को भी प्रकट करता है और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

द्युलोक को भी (मध्य आकाश) थाम्भता है ॥७॥

इति एकादशी दशतिः । द्वितीयः खण्डः ।

॥ द० १२ ॥ ऋषिः—१, ५, ७, १० वामदेवः । २, ३, गोतमः । ४ मधुच्छन्दाः । ६ गृत्समदः । ८ भरद्वाजः । ६ ऋजिश्वा । ११ हिरण्यस्तूपः । १२, १३ विश्वामित्रः (१२ ब्रह्म) ॥ देवता—१ प्रजापतिः । २, ३ पवमानः । ४—६, १३ अग्निः । ७ रात्रिः । ८ वैश्वानरः । ६ विश्वे देवाः । १० लिङ्गोक्ताः । ११ इन्द्रः । १२ सर्वात्मा अग्निः ॥ छन्दः—१, ७ अनुष्टुप् । २, ३, ५, ६, ६, ११–१३ त्रिष्टुप् । ४ गायत्री । ८, ६ जगती । १० महापंक्तिः ॥ स्वरः १, ७ गान्धारः । २, ३, ५, ६, ६, ११–१३ धैवतः । ४ षड्जः । ८, ६ निषादः । १० पञ्चमः ॥

२ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २र
मयि वर्चो अथो यशोऽथो यज्ञस्य यत् पयः ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २र
परमेष्ठी प्रजापतिर्दिवि द्यामिव दृंहतु ॥१॥

उत्कृष्टतम, प्रजापालक ने जिस प्रकार द्युलोक

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

में सूर्य को थाम्भ रखा है वैसे ही वह मुझ में तेज, कीर्ति और यज्ञ की भावना से उत्पन्न आनन्द को स्थापित करे : मैं इनसे वियुक्त न होऊं ॥१॥

२ ३ १२ ३ १२ ३ २ ३ २र
सं ते पयांसि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्य-
३ १२ ३ १ २ ३ १ २
भिमातिषाहः । आप्यायमानो अमृताय सोम
३ १ २र ३ १ २
दिवि श्रवांस्युत्तमानि धिष्व ॥२॥

अभिमानियों को नीचा दिखानेवाले सोम ! तेरे आनन्द, बल तथा अन्य पोषक सब तत्त्व हमें प्राप्त हों; तू बढ़ कर, अमरता के हेतु प्रकाशलोक में हमें दिव्य ज्ञान प्रदान कर ॥२॥

२ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३
त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनय-
२ १ २र ३२ १ २ ३ १ २र ३
स्त्वं गाः । त्वमातनोरुर्वा३न्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा
१ २र
वि तमो ववर्थ ॥३॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सोम ! तूने पहले पृथिवी की गर्मी को धारण करने वाले सब पार्थिव पदार्थों को जनाया; फिर अपोमय और उसके पश्चात् तेजोमय पदार्थों को प्रकट किया। तूने ही विशाल अन्तरिक्ष का अर्थात् अन्तरिक्षस्थ पदार्थों का विस्तार किया और अन्त में अपनी ज्योति से अन्धकार को विनष्ट कर परम-ज्योति को प्रकट किया ॥३॥

३ १२ ३ १ २ ३१ २ ३२ ३ १ २
अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
१ २ ३ १२ ३
होतारं रत्नधातमम् ॥४॥

उस अग्रणी देव की मैं स्तुति करता हूँ जो यज्ञ का प्रारम्भ कराने वाला, समयनिष्ठ यज्ञकर्ता, आत्मार्पण करके भी सब रत्नों की खान है ॥४॥

१ २ ३ २उ ३ २ ३ ३ ३ १ २ ३ २र
ते मन्वत प्रथमं नाम गोनां त्रिः सप्त परमं नाम
१ २ ३ २ ३क २र ३ २ ३ १ २
जानन् । ता जानतीरभ्यनूषत क्षा आविर्भुवन्-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २र ३ १२
रुणीर्यशसा गावः ॥५॥

साधकों ने गायत्री आदि २१ वाणियों को जानने की इच्छा से ही पहले उनका मनन किया; अपना रहस्य जनाती हुईं उनकी मनुष्यों ने स्तुति की और फिर कान्तवर्णवाली वे वाणियां प्रकट हुईं ॥५॥

२३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३२ ३क२र
समन्या यन्त्युपयन्त्यन्याः समानमूर्वं नद्यस्पृ-
२ ३ २ ३ १२ ३ १२३१ २र३
णन्ति । तमू शुचिं शुचयो दीदिवांसमपान्नपात-
१२ ३ १२
मुप यन्त्यापः ॥६॥

एक ही विशाल समुद्र को भरती हुईं कुछ नदियां तो खूब घुल मिल जाती हैं और कुछ उसके समीपतक ही पहुँच पाती हैं । प्रजाओं को स्थिर रखने वाली देदीप्यमान शुभ्र दिव्यशक्ति को हमारी ज्ञानशक्तियां इसी प्रकार प्राप्त करती हैं ॥६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र
आ प्रागाद् भद्रा युवतिरह्नः केतूंत्समीर्त्सति ।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अभूद् भद्रा निवेशनी विश्वस्य जगतो रात्री ॥७॥

सारे जगत् को विश्राम देने वाली रात्रि कल्याणकारिणी थी : अब यह कल्याणकारिणी नवयौवना उषा आ गई है जो दिन के प्रकाशों को प्रेरित करती है ॥७॥

३२ ३ १ २ ३२ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रत्नस्य वृष्णो अरुषस्य नू महः प्र नो वचो विदथा
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
जातवेदसे । वैश्वानराय मतिर्नव्यसे शुचिः सोम
३ १ २ ३ १ २
इव पवते चारुरग्नये ॥८॥

सर्व पदार्थोंके ज्ञान-सम्पादक ज्ञान-यज्ञ में उस सर्व-व्यापक,सुखवर्षक और ज्ञान-प्रकाशकी कांति से युक्त देवके तेजका उपदेश दे : इस नर-नर में व्याप्त,स्तुति करने योग्य अग्नि में, शुभ संकल्प-शक्ति आनन्द-रस की भांति प्रवाहित हो रही है ॥८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २र ३२३१र २र ३ १
विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञमुभे रोदसी अपां
२र ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
नपाच्च मन्म । मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि
३ २उ ३ १ २
वोचं सुम्नेष्विद्वो अन्तमा मदेम ॥९॥

सब देव मेरे मननीय यज्ञ-सम्पादन पर ध्यान दें; द्यौ और पृथिवी लोकस्थ सब प्राणी और प्रजाओं का आश्रयभूत देव भी इस ओर अवहित हों। हे दिव्यशक्तियो! मैं ऐसे वचन न बोलूं जिनसे तुम्हारा प्रत्याख्यान हो अपितु तुम्हारे सामीप्य के सुखों में सदा आनन्द अनुभव करूं ॥९॥

१ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ २
यशो मा द्यावापृथिवी यशो मेन्द्रबृहस्पती ।
२ ३ १२ ३ १ २ ३ १२
यशो भगस्य विन्दतु यशो मा प्रतिमुच्यताम्
३ २ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २
यशसा३स्याः संसदोऽहं प्रवदिता स्याम् ॥१०॥

मुझे द्यौलोक से पृथिवी लोक तक—सर्वत्र—

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यश प्राप्त हो; इन्द्र और बृहस्पति का यश मुझे प्राप्त हो; ऐश्वर्यशाली होने का यश प्राप्त हो, यश मुझे न छोड़े। मैं कीर्तिमान् होकर इस विद्वत्सभा का प्रवक्ता बन जाऊं ॥१०॥

१ २ ३ २ ३क२र ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २
इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्रवोचं यानि चकार प्रथमानि
३ २ २३२ ३ २ ३१ २ ३ १ ३१२ ३
वज्री। अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत्
१२
पर्वतानाम् ॥११॥

मैं इन्द्र की वीरता के उन कामों का बखान करता हूँ जिनको मुख्यतः वह विघ्न-निवारक सामर्थ्य-वाला करता है: उसने अवरोधक को नष्ट करके, उच्च सत्ता से काट कर (मार्ग बना कर) कर्म एवं ज्ञान के जलों के प्रवाहों को प्रवाहित कर दिया ॥११॥

३ १ २ ३ १ २ ३१२ ३२ ३ १ २३१२
अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं
३ २ ३ १ २३ १ २र ३ १ २र३
म आसन्। त्रिधातुरर्को रजसो विमानोऽजस्रं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २३ १ २ ३ १२
ज्योतिर्हविरस्मि सर्वम् ॥१२॥

मैं अग्नि स्वभाव से सर्वगत हूँ; निर्मल ज्ञान-प्रकाश मेरा दर्शक और अमृत ही मेरा जीवन-तत्त्व है। मैं त्रिविध (सत्, चित्, और आनन्द रूप) तत्त्व को धारण किये हुए वह तेजस्वी ज्योति हूँ जो सब लोकों को अधिगत कराता हुआ निरन्तर सर्व-व्यापक हवि बना रहता हूँ ॥१२॥

२ ३ २ ३ १ २र ३१र २र ३१ २र३
पात्यग्निर्विपो अग्रं पदं वेः पाति यह्वश्चरणं
१२ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २र
सूर्यस्य । पाति नाभा सप्तशीर्षाणमग्निः पाति
३ १२ ३ १२३ २
देवानामुपमादमृष्वः ॥१३॥३॥

ज्ञानशील अग्नि ही गतिशील पृथिवी के मार्ग को तथा महान् सूर्य के मार्ग का पालन करता है: इन दोनों के मध्य भाग (अन्तरिक्ष) में भी वही अग्नि सात सिरों वाले विचार-सामर्थ्य को निबाहता है और वही दर्शनीय दिव्य-शक्तियों के हर्षदाता

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दिव्य-ज्ञान की रक्षा करता है।

अग्नि ही वह दिव्यशक्ति है जो हमारी मोक्ष-यात्रा के प्रत्येक पड़ाव पर हमारी प्राप्तियों का अधिष्ठाता एवं पालक है ॥१३॥

इति द्वादशी दशतिः। तृतीयः खण्डः।

॥ द० १३ ॥ ऋषिः—१, २, ८–१२ वामदेवः। ३––७ नारायणः ॥ देवता––१ अग्निः। २ ऋतुः। ३–६ पुरुषः। ७ स्रष्टा। ८ द्यावापृथिवी। ९, ११ इन्द्रः। १० आत्मा। १२ गावः ॥ छन्दः––१, २ पङ्क्तिः। ३––७, ९, १० अनुष्टुप्। ८, ११, १२ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, पञ्चमः। ३—७, ९, १० गान्धारः। ७, ११, १२ धैवतः ॥

आजन्त्यग्ने समिधान दीदिवो जिह्वा चरत्यन्तरासनि। स त्वं नो अग्ने पयसा वसुविद् रयिं वर्चो दृशेऽदाः ॥१॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे अग्ने ! जब तू प्रदीप्त किया हुआ प्रकाशित हो उठता है तो तेरी ज्वालाएं चमक उठती हैं और उनसे तू हमारे अन्तःकरणरूप आश्रय-स्थान में विचरण करने लगता है। हे अग्ने ! तू ही हमें अपने बल से हमारे पथ-प्रदर्शन व नेतृत्व के लिए लौकिक व अलौकिक ऐश्वर्यों एवं ओज को प्रदान करता है॥

३ १ २र ३ १ २र
वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र३ १ २र
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः।

जैसे वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त और शिशिर—छओं ऋतुएं अपने-अपने समय पर आनन्द ग्रहण करने योग्य हैं—इनका अपना-अपना पृथक् आनन्द है, वैसे ही समयानुसार बसाने, तपाने, बरसाने, तोड़ने-फोड़ने, जमाने व बखेरने वाले उस ऋतुरूप परमेश्वर के प्रत्येक कर्म में आनन्द लेना चाहिये ॥२॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१र २र ३१ २ ३ १ २ ३२
स भूमिं सर्वतो वृत्वात्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम् ॥३॥

यह परम पुरुष हजारों सिरों, हजारों आंखों और हजारों पैरों वाला इस ब्रह्माण्ड को सब ओर से घेर कर इस दशों दिशाओं में फैले ब्रह्माण्ड से भी परे तक का अधिपति है ॥३॥

३ २ ३२उ ३ १२३ २ ३१२३ १२
त्रिपादूर्ध्वं उदैत् पुरुषः पादोस्येहाभवत् पुनः।
२ ३ २ ३क २र ३२ ३ २
तथा विष्वङ् व्यक्रामदशनानशने अभि ॥४॥

उस परम पुरुष का एक अंश ही यहां प्रकट है: उसके तीन भाग तो उच्च अवस्थाओं में प्राप्तव्य हैं। इस एक अंश से ही वह सर्वगत समस्त प्राणियों और अप्राणियों में विविध रूप से भासमान है ॥४॥

१२ ३२उ ३ २ ३२उ ३ १ २
पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम्।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १२ ३ २
पादोऽस्य सर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥

यह जो वर्तमान है, भूतकाल में हुआ या भवि-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ष्यत् काल में होगा--सब उसी परम पुरुष का एक अंश है : सब भूत उसके एक अंशमात्र हैं : शेष अमर भाग तो प्रकाश लोकों में प्राप्य है ॥५॥

१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १२
तावानस्य महिमा ततो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
३१ २३ १ २र ३ १ २र ३ १२
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति ॥६॥

इस विराट् ब्रह्मांड का विस्तार तो भूत, वर्तमान और भविष्यत्—अर्थात् काल से परिच्छिन्न है : परन्तु विराट् पुरुष तो आयु में उससे भी बड़ा है-- वह त्रिकालातीत है : वह तो अन्न की शक्ति से बढ़ने वाले की शक्ति से भी अधिक शक्तिशाली, अमरत्व, का अधिपति है ॥६॥

१ २ ३ १२ ३२ ३ २ ३ १२
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
२ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३२
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥

परम पुरुष से ही विराट् प्रकट हुआ : परम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पुरुष ही विराट्का अधिष्ठाता है : प्रकट हुआ विराट् भूमि से पीछे आगे सब ओर बढ़कर रहा ।।७।।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३१
मन्ये वां द्यावापृथिवी सुभोजसौ ये अप्रथेथाम-
२ ३ १ २र १ २ ३ १२ ३१
मितमभि योजनम् । द्यावापृथिवी भवतं स्योने ते
२र ३ १ २
नो मुञ्चतमंहसः ।।८।।

हे द्यौ व पृथिवी लोको ! तुम दोनों भली प्रकार पालन करने वाले हो ऐसा मैं जानता हूँ । तुम दोनों ने ही यह अपरिमित संयोग फैलाया है : तुम दोनों मेरे सुखासन बनो और मुझे सब प्रकार के पाप से मुक्त रखो ।

हम द्युलोक एवं पृथिवीलोक के मध्य विस्तृत ब्रह्मांड में फैले विस्तृत भोग को ग्रहण करते हुए ऐसा यत्न करें कि पाप-कर्म में लिप्त न हों : इस प्रकार हमें यह निवास सदा सुखदायक रहेगा ।।८।।

१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १२
हरी त इन्द्र श्मश्रूण्युतो ते हरिता हरी ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३१२ ३ १ २ ३१२
तं त्वा स्तुवन्ति कवयः पूरुषासो वनर्गवः ॥६॥

हे दिव्यमन ! तेरी ज्ञान-किरणें और तेरी ज्ञान-कर्म-शक्तियां सब गतिमान् हैं। वे मेधावी पुरुष, जिनकी वाणियां स्तुति में ही लगी रहती हैं; अर्थात् मेधावी भक्त तुझे ही प्राप्त करना चाहते हैं : वे अपनी मानसिक शक्ति को दिव्य बनाने की साधना करते हैं ॥६॥

२उ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २३२
यद् वर्चो हिरण्यस्य यद् वा वर्चो गवामुत ।
३ २ ३ १२ ३ २३ १२ ३ १२
सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन मा संसृजामसि ॥१०॥

हे इन्द्र ! ऐश्वर्य का जो प्रभाव है, ज्ञान एव कर्मेन्द्रियों की जो धाक है और सत्य स्वरूप ब्रह्म का जो तेज है : सब प्रकार के तेज से मुझे संयुक्त करदे ॥१०॥

२३ १ २ ३ ३२ २३क २ ३ १२
सहस्तन्न इन्द्र दद्ध्योज ईशे ह्यस्य महतो विर-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ ३ १ २र ३ १२ ३२३
पिशन् । क्रतुं न नृम्णं स्थविरं च वाजं वृत्रेषु
१२ ३१ २
शत्रून्त्सहना कृधी नः ॥११॥

हे महान् इन्द्र ! इस महान् संसार पर तुम्हारा प्रभुत्व जिसके कारण स्थापित है वही सहनशक्ति और वीर्य हमें भी धारण करा; ज्ञान-संयुक्त कर्म की शक्ति रूप ऐश्वर्य और स्थिरताधायक बल हमें दे : हम बाधाओं के प्रति संग्राम करते हुए उन काम-क्रोध आदि शत्रुओं को सहन कर सकें, ऐसा बनादे ॥११॥

३१२ ३१२ ३२३ १ २ ३ २ ३ १२
सहर्षभाः सहवत्सा उदेत विश्वा रूपाणि बिभ्र-
३२ ३२३१ २ ३ २ ३१
तीद्व्यूध्नीः । उरुः पृथुरयं वो अस्तु लोक इमा
२र ३ २ ३१ २
आपः सुप्रपाणा इह स्त ॥१२॥४॥

हे इन्द्रियो ! तुम वर्षणशील परमात्मा तथा अपने प्रिय मन के साथ, ज्ञान एवं कर्म रूप द्विविध स्तन वाली, नाना रूप धारण करती हुईं निरन्तर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हमें प्राप्त होओ; यह विशाल विस्तार तुम्हारा लोक है; प्रज्ञान एवं कर्म ही तुम्हारी प्यास मिटावें; तुम यहीं रहो : इस देह में इन्द्रियां सदा सशक्त रहें॥१२॥

इति चतुर्थी दशतिः। इति चतुर्थः खण्डः॥

॥ द० १४ ॥ ऋषिः—१ शतं वैखानसाः। विभ्राट्। ३ कुत्सः; । ४—६ सार्पराज्ञी। ७—१४ प्रस्कण्वः॥ देवता—१ अग्निः पवमानः। २—१४ सूर्यः। छन्दः-२ जगती। ३ त्रिष्टुप्। १, ४–१४ गायत्री॥ स्वरः-२ निषादः। ३ धैवतः। १, ४–१४ षड्जः॥

२ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २
अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः।
२ ३ २ ३ १ २
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ १ ॥

हे अग्ने! तू हमें आयु देता है; बल तथा अन्न भी दे। दुष्ट वृत्तियों को दूर से ही नष्ट कर दे : उन्हें मुझ तक पहुँचने भी मत दे॥१॥

३ २ ३१ २ ३ २उ ३१ २ ३१
विभ्राड् बृहत् पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद् यज्ञ-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३१२ ३ १ २ ३१२३ १२
पतावविहुतम् । वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना
३ १ ३ १ २र
प्रजाः पिपर्ति बहुधा वि राजति ॥ २ ॥

जीवन यज्ञ के सम्पादक को सरल जीवन धारण कराता हुआ वह महान्, देदीप्यमान सूर्य (परमात्मा) परमानन्द से युक्त जीवन रस का पान करावे; प्राण-शक्ति वालों से सेवित वह स्वतः ही प्रजाओं की रक्षा करता है, उनका विविध प्रकार से पोषण करता है और अधिष्ठाता बना रहता है ॥२॥

३ २ ३ २३१२ ३१२३ १२ ३२ ३ २र
चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुण-
३ २ २ ३ १ २ ३ २ ३ १२३ १२
स्याग्नेः । आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य
३ १ २र ३ १२
आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥ ३ ॥

दिव्य शक्तियों का अद्भुत पुञ्जरूप यह सूर्य उदित हुआ है : यह मित्र एवं वरुण शक्तियों से युक्त अग्नि का भी नेत्ररूप दर्शक है। यह दिव्य सूर्य

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

धरती-आकाश और अन्तरिक्ष को तो अपने तेज से भर ही रहा है, साथ ही इस जंगम और स्थावर—संसारमात्र—का यह प्रेरक आत्मा है ॥३॥

१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः ।
३ १ २ ३ १ २
पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥ ४ ॥

जिस प्रकार गमनशील पृथिवी उस देदीप्यमान ज्योति (सूर्य) की परिक्रमा करती है और इस गतिमें वह उस मातृभूत सूर्य को अपने सन्मुख रखती हुई और उस उत्पादक को पहुंचने का प्रयत्न करती है, उसी प्रकार ज्ञान-कर्म रूप इन्द्रियां उस तेजःपुञ्ज सूर्य के अभिमुख उस सुख-स्वरूप को पहुंचने का यत्न करती हुईं उस ओर गति करती हैं ॥४॥

३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ २
अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती ।
२र ३ १ २र
व्यख्यन्महिषो दिवम् ॥ ५ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

महती दिव्यता का प्रकाश करती हुई दिव्य सूर्य की प्राण एवं अपान रूपी शुभ्रशक्ति इस ब्रह्माण्ड के भीतर गति कर रही है ॥५॥

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्रिंशद् धाम वि राजति वाक् पतङ्गाय धीयते
२ ३ २ ३ २ ३ १ २
प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥ ६ ॥

वह परमात्मा प्रतिदिन तीसों घड़ियों तक अपने दिव्यप्रकाश सहित विराजता है; उस सर्वव्यापक की ही स्तुति की जाती है ॥६॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः ।
१ २ ३ १ २
सूराय विश्वचक्षसे ॥ ७ ॥

जैसे सूर्य को देखकर रात्रिचर नक्षत्र लुप्त हो जाते हैं वैसे ही सब के दर्शक दिव्य सूर्य के ज्ञान-रूप प्रकाश में हृदय के चोर काम-क्रोध आदि दूर भाग जाते हैं ॥७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३२३ २ ३ २ ३ २३ १२
अदृश्रन्नस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ अनु ।
१ २ ३ १ २
भ्राजन्तो अग्नयो यथा ॥ ८ ॥

चमकती हुईं अग्नि-ज्वालाओंकी भांति देदीप्यमान ज्ञानरश्मियां, दिव्य सूर्य की प्रज्ञापक किरणें उसको प्रत्यक्ष कराने में लोगों का पथ-प्रदर्शन करती हैं ॥८॥

३१ २ ३१२ ३ १ २
तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य ।
२ ३ १ २ ३२
विश्वमाभासि रोचनम् ॥ ९ ॥

हे दिव्य सूर्य ! तू तारक, समग्र संसार का दर्शक और ज्योति का मूल कारण है : विश्व के समस्त सौन्दर्य में तेरी ही तो चमक है ॥९॥

३ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २र ३ १ २
प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषान् ।
३ २र ३क २र३ २
प्रत्यङ् विश्वं स्वर्दृशे ॥ १० ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सूर्य ! तू दिव्य और मानुषी प्रजाओं के अभिमुख उदय होता है : यही नहीं, दिव्य सुख का मार्ग दिखाने के लिये इस समस्त विश्व के सम्मुख तेरा उदय है।

साधना से प्रत्यक्ष हुआ परम प्रभु विश्व भर को परमलक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है ॥१०॥

२ ३ १ २ ३ ३ २ ३ २ ३ १२
येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ अनु ।
१ २ ३ १ २
त्वं वरुण पश्यसि ॥ ११ ॥

हे नियामक अतएव शोधक दिव्य सूर्य तू अपनी प्रसिद्ध दर्शन-शक्ति से (कृपादृष्टि से) भरणीय जनों को देखता है ॥११॥

१ २र ३१२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
उद् द्यामेषिरजः पृथ्वहा मिमानो अक्तुभिः ४ ।
२ ३ १ २
पश्यञ्जन्मानि सूर्य ॥ १२ ॥

हे सूर्य समग्र जातमात्र को अपनी कृपादृष्टि से देखता हुआ, और रात्रियों एवं दिनों का निर्माण

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करता हुआ तू इस विस्तृत अन्तरिक्ष में जैसे सूर्य उदय होता है वैसे, साधक के हृदय प्रदेश में उदित होता है ॥१२॥

१२ ३२ ३ २ ३ २ ३ १२ ३क २र
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः ।
१ २ ३ १२
ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः ॥ १३ ॥

सबको प्रेरणा देने वाले (चलाने वाले) दिव्यसूर्य ने इस रथ-रूप देह में सात शोधक इन्द्रियों को बन्धनों से जोड़ा है . उन जुती हुई इन्द्रियों के साथ ही यह इसे चलाता है ॥

३१ २ ३ २ ३ २ ३ १२
सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य ।
३ १
शोचिष्केशं विचक्षण ॥ १४ ॥ ५ ॥

हे क्रान्तदर्शी दिव्य सूर्य ! कान्तियुक्त ज्ञान-प्रकाश से भास्वर तुझ दिव्य सूर्य को ज्ञान की वाहक ये सात इन्द्रियां शरीर रूप रथ में बिठाये लिये चल रही हैं ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मनुष्य अपनी सधी हुई सात (गोलकों की गणना से) ज्ञानेन्द्रियों से उस प्रकाश-स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है ।।१४।।

इति षष्ठोऽध्यायः। इत्यारण्यकं काण्डम्।
इति सामवेद-संहितायां पूर्वार्चिकः समाप्तः ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ महानाम्न्यार्चिकः

प्रजापति ॠषिः । इन्द्रस्त्रैलोक्यात्मा देवता

ऋषिः—प्रजापतिः । देवता—इन्द्रस्त्रैलोक्यात्मा—२, ४—६, ७—१० (१) द्विपदाः । (२) शाक्वराः पादाः (३) उपसर्गौ (४) शाक्वरोपसर्गौ (५) त्रयः शाक्वराः पादाः । (६) उपसर्गः । १०—पञ्च पुरीषपदानि ।

३ १ २ २ ३१२ २२ ३ १ २
(१)विदा मघवन् विदा गातुमनुशंसिषो दिशः ।

१ २ ३ १ २
(२)शिक्षा शचीनां पते । पूर्वीणां पूरूवसो ॥१॥

हे ऐश्वर्यशाली इन्द्र तू सब कुछ जानता है; अतएव गन्तव्य मार्ग का ज्ञान करा और लक्ष्य तक पहुँचने की दिशा को दिखला; हे पूर्ण ज्ञान-शक्तियों

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

के स्वामिन् ! प्रजाओं के भीतर बसने वाले प्रभो ! हमें शिक्षा दो ॥१॥

३ २उ ३ १ २ ३ २ ३
आभिष्ट्वमभिष्टिभिः । (३) स्वाऽ३र्न्नांशुः ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
प्रचेतन प्रचेतये-(४) न्द्र द्युम्नाय न इषे ॥२॥

हे चेतनासम्पन्न ! परमानन्द की चमकती किरण के समान तू हमारी इन अभीप्साओं के द्वारा ज्ञान-धन की प्रेरणा के लिये हमें चेत करा ॥२॥

३ २उ १ २ ३ १ २
एवा हि शक्रो । (५) राये वाजाय वज्रिवः ।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३
शविष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे । मंहिष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे ॥
१ २ ३ २ ३ १ २
(६) आ याहि पिब मत्स्व ॥३॥

हे समर्थ ! साधन सम्पन्न ! बलवान् एवं पूजनीय इन्द्र ! तू ज्ञान-धन के लिये समर्थ है; आ; ज्ञान के परमानन्द को धारण कर प्रसन्न हो उठ ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public D...

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३
(१) विदा राये सुवीर्यं भवो राजानां पतिर्वशां
१ २ १ २ ३ २ ३ १ २ र ३
अनु । मंहिष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे । यः शविष्ठः
१ २
शूराणाम् ॥४॥

हे त्रिलोकी के अधीश्वर ! हमें श्रेष्ठ धन के लिये सुसामर्थ्य प्राप्त करा; तू वशी प्रजाओं के अनुकूल धनों का पति बन; हे पूजनीय, पाप निवारण-समर्थ, सबसे अधिक बलवान तू समर्थ बनाता है ॥४॥

१र २र ३ १ २ ३ २र ३ २
यो मंहिष्ठो मघानाम् । (३) अंशुर्न्नशोचिः ।
१ २ ३ १ २ ३१ २ ३र २र
चिकित्वो अभि नो नय । (४) इन्द्रो विदे तमु
स्तुहि ॥५॥

जो ऐश्वर्य वालों में सर्वाधिक पूजनीय और किरण के समान शुभ्र कान्ति सम्पन्न है वह तू हे सर्वज्ञ ! ज्ञानबल के लिए तू हमारे अनुकूल बन; मनुष्य उसकी ही स्तुति करे ॥५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
ईशे हि शक्रस् । (५) तमूतये हवामहे जेतारम-
२ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३
पराजितम् । स नः स्वर्षदति द्विषः । (६) क्रतु-
१ २ ३ १ ३ २
श्छन्द ऋतं बृहत् ॥६॥

निश्चय ही वह शक्तिमान् ही समर्थ है; उस अपराजित विजयी को हम अपने रक्षण के लिए बुलाते हैं; वह हमारी द्वेषभावनाओं को भलीभांति नष्ट करता है; वह ज्ञान कर्म शक्ति से सम्पन्न, पापों से रक्षक, परम सत्यरूप और सब से बड़ा है ॥६॥

२ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २
(२) इन्द्रं धनस्य सातये हवामहे । जेतारम-
२ १ २ ३ २ ३ १ ३ १ २
पराजितम् । स नः स्वर्षदति द्विषः । स नः
३ २ ३ २ ३
स्वर्षदति द्विषः ॥७॥

उस अपराजित विजयी इन्द्र को ऐश्वर्य के संविभाग के लिए बुलाते हैं, वह हमारी द्वेषभाव-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नाओं का विनाश भलीभांति करता है ॥७॥

१२ ३ १ २ ३ १२ २२ ३ १
पूर्वस्य यत्ते अद्रिवों-(३)-ऽशुर्मदाय । सुम्न आ
२२ ३ १ २
धेहि नो वसो । (४) पूर्तिः शविष्ठ शस्यते ।
३२३ ३ २ ३१ २२ ३ १२
वशी हि शक्रो । (५) नूनं तन्नव्यं संन्यसे ॥८॥

हे अखण्ड ! पूर्व से वर्तमान तेरी जो किरण परमानन्द की प्रापक है, हे सब को बसाने वाले ! हमारे सुख के लिए उसे हम में धारण करा; हे बलवन् ! कार्य की पूर्णता ही प्रशंसनीय है। हे समर्थ ! तू निश्चय ही वशी है;अतएव स्तुतिके योग्य तेरी स्तुति करता हूँ ॥८॥

३१२ २२ ३ १ २ २ ३
प्रभो जनस्य वृत्रहन्त्समर्येषु ब्रवावहै । (६) शूरो
२३ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १२
यो गोषु गच्छति सखा सुशेवो अद्वयुः ॥९॥

हे समर्थ ! विघ्ननाशक ! मनुष्य की उन्नति

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यात्राओं में हम तेरी स्तुति करते हैं: तू शूरवीर हमारी इन्द्रियों का मित्र और अद्वितीय सेवक है।

अथ पञ्चपुरीषपदानि

३२ ३ १ २ ३ १२

एवाह्य ऽ३ऽ३ऽ३व। एवां ह्यग्ने। एवाहीन्द्र।

३ १ २र ३ १ २र

एवा हि पूषन्। एवा हि देवाः ॥१०॥

हे इन्द्र तू ऐसा ही है, हे अग्ने! तू ऐसा ही है, हे इन्द्र! तू ऐसा ही है, हे पोषण करने वाले तू ऐसा ही है; हे दिव्य गुणयुक्त पदार्थो! तुम ऐसे ही हो॥

इति महानाम्न्यार्चिकः समाप्तः॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ ओ३म् ॥

उत्तरार्चिकः

अथ प्रथमोऽध्यायः ।

प्रथमः प्रपाठकः

ऋषिः—१ असितो देवलो वा । २ कश्यपः । ३ शतं वैखानसाः । ४, भरद्वाजः । ५, ७ विश्वामित्रो जमदग्निर्वा । ६ इरिम्बिठिः । ७ विश्वामित्रः । ५, ८—१० अमहीयुः । [६ सप्तर्षयः । भरद्वाजः कश्यपो गोतमो विश्वामित्रो जमदग्निर्वसिष्ठः] । १० उशनाः ११ वसिष्ठः । १२ वामदेवः । १३ नोधाः । १४ कलिः । १५ पुष्कलोऽग्निः । १६ संकृतिः । १७ शफः । १८ (अन्धीगुः) श्यावाश्विः । १९ आन्धीगवः (कविः)

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२० अग्निः (शंयुः)। २१ साकमश्वः। २२ सोभरिः। २३ नृमेधः॥ देवता—१-३, ८-१०, १५-१६ सोमः। ४, २०, २१ अग्निः। ५ मित्रावरुणौ। ६ ११, १३; १४, २२, २३ इन्द्रः। ७ इन्द्राग्नी। १२ सर्वे देवाः॥ छन्दः—१-८, १२, १५, २१ गायत्री। ६, ११, १४, २० बृहती (विषमा, समासतो बृहती=प्रगाथः)। १० त्रिष्टुप्। १६, २२, काकुभः विषमा, समासतो बृहती प्रगाथः। १७ उष्णिक्। १८ अनुष्टुप्। १६ जगती॥ २३ (१) ककुप्, (२) उष्णिक्, (३) पुर उष्णिक्)। स्वर—१-८ १२, १५, २१, षड्जः। ६, ११, १३, १४, २० मध्यमः। १० धैवतः। १६, १७, २२, २३ ऋषभः। १८ गान्धारः। १६ निषादः॥

१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १
उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ
२र
इयक्षते॥

३ २ ३ १२ ३ १ २र ३२
अभि ते मधुना पयोऽथर्वाणो अशिश्रयुः। देवं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १२ ३२
देवाय देवयु ॥

१ २ ३ २उ ३ १ २र३ १ २र १
स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते । शं
२३ ३२
राजन्नोषधीभ्यः ॥ १ ॥

हे मनुष्यो ! इस परिस्तुत परमानन्द रस की प्रशंसा करो जो इन्द्रियों को सचेतन कर रहा है ॥

हे दिव्यगुणाधायक ! अपनी मननशक्ति में दिव्यता का आधान करने के लिये साधक जन तेरे पोषक आनन्द रस को मधुरता से मिश्रित करते हैं ॥

हे देदीप्यमान परमानन्द के स्रोत परमप्रभु ! तू हमारे गो-आदि ऐश्वर्य के दाता पशुधन, हमारे जनसमुदाय, हमारे अश्वादि गति एवं विजय साधनों और प्रताप एवं तेज के आधायक पदार्थों के लिए कल्याण का प्रवाह प्रवाहित कर ॥१॥

१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
दविद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २
सोमाः शुक्रा गवाशिरः ॥

३ २ ३१ २ ३ १ २र ३क २र
हिन्वानो हेतृभिर्हित आ वाजं वाज्यक्रमीत् ।

१ २ ३१ २
सीदन्तो वनुषो यथा ॥

३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २
ऋधक्सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवा कवे ।

१२ ३ १ २ ३२
पवस्व सूर्यो दृशे ॥ २ ॥

ज्ञानप्रकाश से मिश्रित सोम, चमचमाती कान्ति एवं स्तुति वर्णन रूप सामर्थ्य से युक्त हुए, वीर्यवान् बनते हैं ॥

प्रेरित किया हुआ तू सोम, समाधि के लिये आसीन साधकों को प्राप्त होता है जैसे कि हन्टरों से प्रेरित बलवान अश्व संघर्ष-स्थल में पहुँचता है ।

हे क्रान्तदर्शी सोम ! कल्याण सम्पादनार्थ अपने प्रकाश-सामर्थ्य से दूर से दूर भी पहुँचता हुआ तू

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूर्य के समान सब पदार्थों को प्राप्त होकर प्रस्तुत हो ॥२॥

१२ ३ २ ३ १ २

पवमानस्य ते कवे वाजिंत्सर्गा असृक्षत ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २

अर्वन्तो न श्रवस्यवः ॥

२ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

अच्छा कोशं मधुश्चुतमसृग्रं वारे अव्यये ।

१ २ ३ १ २

अवावशन्त धीतयः ॥

१ २ ३ २ ३ ३ २ २ ३ २ ३ १ २

अच्छा समुद्रमिन्दवोऽस्तं गावो न धेनवः ।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २

अग्मन्नृतस्य योनिमा ॥ ३ ॥

हे क्रान्तदर्शी, ज्ञानशील ! परिस्तुत होते हुए तुझ सोम की धारायें परमज्ञान की प्राप्ति के लिए वेगवान अश्व की भान्ति वेगवती बन जाती हैं ॥

जिस प्रकार दुधार गौएं अपने थान पर पहुँचती हैं उसी प्रकार ये परमानन्दरस हृदय को आविष्ट

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कर परमसत्य के निवासभूत का ज्ञान कराते हैं ॥३॥

इति प्रथमः खण्डः ।

२ ३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १
अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
१ २र ३ १ २
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २
तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि ।
३ १ २
बृहच्छोचा यविष्ठ्य ॥
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
स नः पृथु श्रवाय्यमच्छा देव विवाससि ।
३ १ २ ३ १ २
बृहदग्ने सुवीर्यम् ॥ ४ ॥

हे उन्नायक ! अज्ञानमल को हटाकर ज्ञान का प्रकाश करने और कर्मको त्यागभावनासे अपनानेका उपदेश देता हुआ आ; मेरे अन्तःकरण में विराजमान हो; और निरन्तर प्रेरक बना रह ॥

हे अङ्ग-अङ्ग में व्याप्त ! उन्नायक ! तुझे हम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञान वर्धक विचार धाराओं से बढ़ाते हैं; सदा युवा तू खूब जगमगा ॥

हे अग्निदेव ! तू विशाल बड़े और सामर्थ्ययुक्त अन्तः प्रेरणा प्रदायक ज्ञान को प्रकट करता है ॥४॥

१ ३१ २र
आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।
२ ३ १२
मध्वा रजांसि सुक्रतू ॥
३ १ २ ३१ २ ३ १ २र
उरुशंसा नमोवृधा मह्ना दक्षस्य राजथः ।
३ २
द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता ॥
३ २ ३१ १ २३१ २
गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम् ।
३ १ २र
पातं सोममृतावृधा ॥ ५ ॥

हे मित्र और विरुण ! दिव्यानन्द की धाराओं से हमारे प्रकाश पथ को सींचो तथा शोभन कर्म सम्पादको ! मधुमय व्यवहार से लोकों को सींचो ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अति प्रशंसनीय विनय से वर्धनशील मित्र और वरुणशक्तियां अपने व्यापक प्रभाव से बल के अधिपति हैं; वे अपनी दीर्घतम ग्रहण शक्तियों से पवित्र कर्मों के प्रेरक हैं॥

दृढ़ संकल्प की अग्नि को हृदय में प्रदीप्त करने वाले भक्त से स्तुत मित्र और वरुण परमसत्य के निवास स्थान में अवस्थित रहते हैं; परम सत्य की ओर बढ़ाने वाली वे दिव्य शक्तियाँ सोम का पान कराती हैं॥५॥

१ २ ३२३ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३२
आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्।
२३ ३ १ २ ३ १२
एदं बर्हिः सदो मम॥

१ २ ३२ ३ २ ३ १ ३ १ २
आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना।
२ ३ १ २
उप ब्रह्माणि नः शृणु॥

३ १ २ ३ २ ३१ २३ १ २ ३ १ २
ब्रह्माणस्त्वा युजा वयं सोमपामिन्द्र सोमिनः।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १२
सुतावन्तो हवामहे ॥ ६ ॥

हे इन्द्र ! आ; हम तेरे लिए दिव्य-आनन्दरस का सम्पादन कर रहे हैं, इसको पी, मेरे इस हृदयासन पर विराजमान हो ॥

हे इन्द्र ! तप से समाहित दीप्तियुक्त ज्ञान-कर्मेन्द्रियां तुझे वहन करें : तपोनिष्ठ इन्द्रियों का अधिष्ठाता दिव्य मन मनुष्य को उन्नति की ओर ले जाता है; और वही मन वेद ज्ञान पर कान देता है ॥

ज्ञान से वृद्ध इन्द्रियां दिव्य मनःशक्ति के अधिष्ठातृत्व में सोम का संग्रह कर सोमपायी इन्द्र का आह्वान करती हैं ॥६॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
इन्द्राग्नी आ गतं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम् ।
३ १ २ ३ २ ३ २
अस्य पातं धियेषिता ॥
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३२ ३२
अया पातमिमं सुतम् ॥

१ २३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २
इन्द्रमग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे ।

१ २र ३१ २
ता सोमस्येह तृम्पताम् ॥ ७ ॥

हे इन्द्र और अग्निरूप दिव्यशक्तियो ! आओ; स्तुतिवाणियों से परिस्रुत यह एक सूत्र में पिरोने वाला श्रेष्ठ जो परमानन्द रस है उस का पान विचार शक्तियों से प्रेरित तुम दोनों करो ।

हे इन्द्र और अग्निरूप दिव्यशक्तियो ! तुम्हारे सहयोग से यह यज्ञ-भावना जाग्रत हो रही है; इस से उत्पन्न परमानन्द का पान करो ॥

मेधावित्व के रक्षक इन्द्र और अग्नि को मैं यज्ञ-भावनासहित स्वीकार करता हूँ; वे दिव्यशक्तियाँ परमानन्द से भरपूर हों ॥७॥

इति द्वितीयः खण्डः

३ १ २ ३१ २र ३ १ २र
उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३२उ ३ २३ १२
उग्रं शर्म महि श्रवः ॥

२ ३ १ २३ १ २३ १२ ३१ २
स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।
३ १ २र
वरिवोवित् परि स्रव ॥

३ १ २र ३२उ ३ २ ३ १ २
एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम् ।
१ २
सिषासन्तो वनामहे ॥ ८ ॥

हे सोम ! मैं अन्नरूप तुझ से उत्पन्न, ऊंचे प्रकाश लोक में विद्यमान, उत्कट, कल्याणकारी और महान् ज्ञान-गान को इस भौतिक शरीर द्वारा ग्रहण कर रहा हूँ ॥

वह परमानन्द रस (सोम) हमारे यजनशील एवं धर्माधर्म के विवेचक मन एवं उसकी चिति-शक्तियों के लिए वरणीय ऐश्वय का दाता बन कर द्रवित हो ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रगतिशीलता के प्रतीक हे सोम ! मनुष्यों के इन समस्त चमकीले ऐश्वर्यों को बंटा लेना चाहते हुए हम तेरी उपासना करते हैं ॥८॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि ।
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३२
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देवो
२ ३ १ २
हिरण्ययः ॥
३ १ २र ३ १ २र ३२ ३ २ ३२ ३ १ २
दुहान ऊधर्दिव्यं मधु प्रियं प्रत्नं सधस्थमासदत् ।
३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ २ ३ १
आपृच्छ्यं धरुणं वाज्यर्षसि नृभिर्धौतो
२ ३ २
विचक्षणः ॥ ६ ॥

हे सोम ! धारारूप में बहता हुआ तू मेरे कर्म-कर्ममें व्याप्त होता हुआ आता है । तू सब रमणीयताओं की खान है; परमसत्य के मूल में तेरा निवास है; तू स्वयं चमकीला एवं दिव्य (सुख का) स्रोत है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

साधक जनों से सिद्ध किया गया, स्वयं प्रकाशित तथा दर्शक बना हुआ, सोम स्तनरूप दिव्यता के स्रोत (परम सत्य) से दुहा जाकर अपने पुराने प्रिय दिव्य मधु का साहचर्य प्राप्त करता है; और वह शक्तिशाली सोम प्रभावशाली स्थान को प्राप्त करता है ॥६॥

१ २र३ २ ३ २ ३ १ २३ १ २ ३ २
प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो
३ १ २र २ ३ १ २ ३ २ २ ३२ ३ १
अभि वाजमर्ष । अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तो
२ ३१ २३ १ २
ऽच्छा बर्हीं रशनाभिर्नयन्ति ॥

३ १ २ ३१ २र ३ २ ३२ ३ १२
स्वायुधः पवते देव इन्दुरशस्तिहा वृजना रक्षमाणः।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३१ २ ३ २ ३ २
पिता देवानां जनिता सुदक्षो विष्टम्भो दिवो
३१२ ३ २
धरुणः पृथिव्याः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ १ २र ३१ २र ३ २ ३ १ २
ऋषिर्विप्रः पुरएता जनानामृभुर्धीर उशना काव्येन।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २ ३
स चिद्विवेद निहितं यदासामपीच्यां३ गुह्यं
२ ३ १ २
नाम गोनाम् ॥ १० ॥

हे परमानन्द रस ! आगे तो बढ़ ही और कोश स्थान (हृदय) में विराजमान हो; साधकजनों से परिशोधित किया हुआ तू बलशाली हो उठ। जैसे बलवान् और वेगवान् घोड़े को बागों से पकड़ कर (नियन्त्रण में रखते हुए) उससे कार्य लेते हैं वैसे ही शीघ्रगामी एवं ज्ञान-बल से संयुक्त तुझ सोम को शोधित करते व नियन्त्रणशक्ति से नियन्त्रित रखते हुए हृदय स्थली की ओर ले जाते हैं॥

दिव्य गुणों का प्रकाशन व पालन करने वाला, प्रकाश लोक का स्तम्भ तथा पार्थिव लोक का आधार नियन्त्रण न मानने वालों का विनाशक, बलों का रक्षक यह इन्द्रदेव अपने साधनों को पवित्र रखता है।

वह अतीन्द्रिय, ज्ञानों का द्रष्टा धीमान् समस्त-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जनों का नायकभूत, जो मनस्वी, धीर और वशीरूप है वही वेद वाणियों के रहस्य रूप भीतर रखे हुए सार को जानता है ॥१७॥

इति तृतीयः खण्डः ।

३ २ २ ३ २ ३ ३ १ २ १ २ ३
अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः । ईशान-
१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
मस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥
१ २र ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १
न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न
२र ३ १ २ ३ १ २
जनिष्यते । अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो
३ १ २
गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥ ११ ॥

जिस प्रकार न दुही दुधार गौएं [अपने प्रिय (बछड़ों) के सन्मुख आत्मसमर्पण कर देती हैं] वैसे ही हम हे शूर इन्द्र ! तेरे सम्मुख आत्मसमर्पण करते तू इस जंगम और स्थावर का अधिष्ठाता और सत्य लोक का दिखाने वाला है ॥

हे ऐश्वर्य शालिन् ! इन्द्र ! तुझ सरीखा दूसरा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कोई दिव्य अथवा पार्थिव न पैदा हुआ है न होगा; हम ज्ञानसाधक अपनी ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियों को अपने वशमें लाने की इच्छासे तेरा आह्वान करते हैं तुझे : अपने अनुकूल बनाते हैं ।।११।।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ २३२ १ २
कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा ।
२ ३ १ २ ३ २
कया शचिष्ठया वृता ॥
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः ।
१ २ ३२३ ३२
दृढा चिदारुजे वसु ॥
३२उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३१
अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम् । शतं
२ ३१२
भवास्यूतये ॥ १२ ॥

किस रक्षणशक्ति ज्ञान और व्यवहार (वृत्= कर्म) से यह सदा बढ़ने-बढ़ाने वाला अग्नि हमारा मित्र बने !

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आनन्दों में से कौनसा अतिशय महान्, जीवना-धायक, सत्य आनन्द है जो इन्द्र को प्रसन्न करता है और (आनन्द की प्राप्ति के लिये) अभेद्य ऐश्वर्य का भेदन करता है !

हे इन्द्र ! तू मित्रभूत हम स्तोताओं का रक्षक है; हमारी उन्नति-गति के लिए नाना (सैंकड़ों) रूप धारण करता है ॥१२॥

१ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः । अभि
३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ २
वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥१॥
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ ३ २
द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम् ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
क्षुमन्तं वाजं शतिनं सहस्रिणं मक्षू गोमन्त-मीमहे ॥ २ ॥ १३ ॥

उस दर्शनीय, काम-आदि शत्रुओं के दमनकारी, बसाने वाले, ज्ञानान्न में मस्त इन्द्र को हम स्तुतियों

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

द्वारा इस प्रकार (स्नेह से) बुलाते हैं जिस प्रकार दिन के समय गौएं अपने बछड़ों को।

हम उस समृद्धि को चाहते हैं जो दिव्यता में निवास कराने वाली, उत्तमदाता, शक्तियों से भरपूर, पहाड़ की भान्ति विशाल पालन-शक्ति से पूर्ण आधार प्रापक, सैंकड़ों-हजारों लाभों से युक्त और गो-आदि सम्पत्ति से युक्त है ॥१३॥

१२ ३ २३१२ ३१२ ३१२ ३१
तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं सबाध ऊतये। बृहद्-
२र ३२२ ३२ ३२उ ३ २ ३१२
गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम् ॥
२उ ३१ २र३ ३ ३ २उ ३ १२ ३१
न यं दुध्रा वरन्ते न स्थिरा मुरो मदेषु शिप्र-
२र २ २१२ ३१२ ३१
मन्धसः। य आदृत्या शशमानाय सुन्वते।
२र ३२ ३क २र
दाता जरित्र उक्थ्यम् ॥ १४ ॥

परमानन्द की सिद्धि के अर्थ किये जा रहे यज्ञ में जब तुम्हारे मार्ग में विघ्न उपस्थित हों तो रक्षा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

के लिये सर्व-ज्ञानदाता इन्द्र का कीर्तन करो; मैं भी उसी पोषणकर्ता और कल्याणकारी की स्तुति करता हूँ ॥

जीवनदायक ज्ञान-ज्योति के आनन्द से प्रकाशित जिस इन्द्र को काम-क्रोधादि दुर्दमनीय और मारक प्रसुप्त आलस्यादि तामस भावनायें नहीं पहुँच पातीं–उसके पास तक नहीं फटकतीं, वह इन्द्र स्तुति करने वाले साधक को आदर-पूर्वक अन्तःप्रेरित ज्ञान प्रदान करता है ॥१४॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया ।
१ २ ३ १ १ ३ २
इन्द्राय पातवे सुतः ॥

३ २ ३ १ २ २ र उ ३ १ २ १ २
रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते । द्रोणे
३ २ ३ १ २
सधस्थमासदत् ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ २
वरिवोधातमो भुवो मंहिष्ठो वृत्रहन्तमः । पर्षि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ १ २
राधो मघोनाम् ॥ १५॥

हे सोम ! तू अत्यन्त रसीली एवं परमानन्द-दायक धारा के रूप में बह; इन्द्र के पान के लिये तुझे सिद्ध किया गया है ॥

वह विघ्न-विनाशक, दूरदर्शी सोम अपने मूल कारण के अभिमुख गति करता हुआ संचित कर्मों से सुरचित हृदय-कलश में इन्द्र का साथ करता है।

हे इन्द्र ! तू वरण करने योग ज्ञान-धन आदि का सर्वोत्तम आधारभूत और काम-क्रोधादि विघ्न-राक्षसों का सर्वोत्तम विनाशक बना हुआ धन वालों को भी धन-देने वाला है ॥१५॥

१ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
महि द्युक्षतमो मदः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
यस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायतेऽस्य पीत्वा स्वर्विदः।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३२२ ३क रक ३ २उ ३ २३ १२
स सुप्रकेतोअभ्यक्रमीदिषोऽच्छा वाजं नैतशः ॥१६

हे मधुरतम एवं ज्ञान-कर्म की सामर्थ्य का लाभ कराने वालों में सर्वोत्तम परमानन्द तू प्रवाहित हो; तू महान् तेजस्वी एवं समर्थतम आनन्द है।

परमसुख का लाभ कराने वाले जिस तेरा पान करने से समर्थ भी और अधिक समर्थ बन जाता है, वह तू भली भांति सज्ञान होकर अश्व के वेग की भांति वेग से इष्ट-प्राप्ति में सफल होता है ॥१६॥

२ ३१ २ ३ २ ३१ २र ३ १२
इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः ।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२
श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥
३ १ २र ३ १ २र ३२
अयं भराय सानसिरिन्द्राय पवते सुतः ।
३ ३ १२ ३ १ २ ३ २
सोमो जैत्रस्य चेतति यथा विदे ॥
३ २उ ३ २३ २ ३ २ ३ २
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्राभं गृभ्णाति सानसिम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ १२ ३ १२ ३२
वज्रं च वृषणं भरत्समप्सुजित् ॥१७॥

कल्याण के लिये प्रादुर्भूत हुआ, परमसुख तक पहुँचाने वाला और मनोहर सोम निष्पन्न होकर सुखवर्षण स्वभाव इन्द्र को ही प्राप्त हो ॥

भरण-पोषण के लिए सब में विभक्त करने योग्य वह सोम इन्द्र के पान हेतु प्रस्तुत हो रहा है; यथार्थ ज्ञान के लिये वह जयशील लक्ष्यप्रापक साधक को चेताता है : ज्ञान का प्रकाश देता है ॥

इन्द्र परमानन्द-प्राप्ति के मार्गों में इस सोम की पकड़ने योग्य पकड़ को पकड़ता है—सोम इन्द्र का विश्वसनीय आश्रय है। और ज्ञान एवं क्रियाओं का विजयी इन्द्र सुख बरसाने वाली ज्ञानशक्ति को प्राप्त करता है॥१७॥

३ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ १२
पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र
अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्व्यम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २र ३१२ ३ १ २ ३ २
यो धारया पावकया परिप्रस्यन्दते सुतः ।
२ ३ २ ३ १ २र
इन्दुरश्वो न कृत्व्यः ॥
२ ३ २२३२उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
तं दुरोषमभी नरः सोमं विश्वाच्या धिया ।
३ १ २ ३ १ २
यज्ञाय सन्त्वद्रयः ॥१८॥

हे मित्रभूत विचार-शक्तियो ! तुम्हारे लिए अन्न भूत जीवन तत्त्व को जीत लाने वाले, निष्पन्न एवं हर्षदायक सोम को सुरक्षित रखने के लिये यह आवश्यक है कि तुम लम्बी जीभ वाले कुत्ते सरीखे इस लालच (लोभवृत्ति) को विध्वंस कर दो ॥

जो परमानन्द सिद्ध किया जाने पर पवित्र करने वाले प्रवाह-रूप में बहने लगता है वह परमानन्द शीघ्र गति अश्व की भान्ति कृतकृत्य होता है ॥

साधक जन अपनी विश्वव्यापी प्रज्ञाशक्ति के सहारे यज्ञभावना से भावित अतएव पर्वत की भांति

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उदार हृदय बनकर ही उस प्रतापी सोम के अभिमुख हो सकते हैं ॥१८॥

३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १२ ३२र
अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो
३ २३ १२ १ २र ३२ ३२३ २
अधि येषु वर्धते । आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि
२३ १२ ३२
रथं विष्वञ्चमरुहद्विचक्षणः ॥
३ १ २ ३१ २ ३ १२ ३२ ३१ २र ३ २
ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो
३ १ २र १ २ ३क ३ १२ ३ ३
अस्या अदाभ्यः । दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यां३-
१ २ ३ २ २१ १ ३२ ३२
नाम तृतीयमधि रोचनं दिवः ॥
१२ ३२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ
अव द्युतानः कलशाँ अचिक्रदन् नृभिर्येमाणः
३ १ २३ १२ ३ २ ३१ २ ३ १ २
कोश आ हिरण्यये । अभी ऋतस्य दोहना
३ १ २ ३२ ३२ ३ १ २
अनूषताधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजसि ॥१९॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अन्न की संजीवनी शक्ति से युक्त, महान सोम जिनका आश्रय लेकर बढ़ता है उन्हीं प्रिय रूपों में प्रकट होता है; वह क्रान्तदर्शक महान् सूर्य के महान विश्वतोगामी रथ पर सवार होता है : सूर्य के समान क्रान्तदर्शक एवं प्रेरक है।

परमसत्य की वाणी से प्रिय मधु टपकता है; इसको प्रयोग में लाने वाला प्राज्ञपालक किसी भी प्रकार अनुचित दबाव नहीं मानता; प्रज्ञा और प्रज्ञा-पालक की सन्ततिरूप सोम दिव्य प्रकाश लोक से भी बढ़कर कान्तिमय तीसरे अप्रकट स्वरूप को धारण करता है।

वह चमकता सोम संवेदनाओं में अनाहत नाद करता आता है और साधकों से निमन्त्रित हो चम-चमाते कोश-हृदयान्तर-में पहुँचता है। दुहकर परम-सत्य को प्राप्त करने में प्रयत्नशील साधक तृतीया-वस्था में, विशोका प्रज्ञाओं के उदयकाल में, इस की स्तुति करते हैं ॥६६॥

इति पञ्चमः खण्डः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १२ ३ १२ ३ २ २ ३ १ २ १ २
यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे । प्रप्र
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ र
वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् ॥
३ १ २ र ३ २ ३ १ २ र ३ १ २ र ३ १ २
ऊर्जो नपातं स हिनायमस्मयुर्दाशेम हव्यदातये ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ १ ३ २ ३ १
भुवद् वाजेष्वविता भुवद् वृध उत त्राता तनू-
२
नाम् ॥२०॥

हे मनुष्यो ! तुम्हारा प्रत्येक यज्ञ अग्नि के लिये हो; तुम्हारी प्रत्येक स्तुति अग्नि का बल बढ़ाने वाली हो। हम उस अमर सर्वज्ञ अग्नि (परमेश्वर) को प्रियमित्र मानते रहें।

बल को क्षीण न होने देने वाला वह जो सदा हमारा हितकारी अग्नि है, उस हव्य के दाता के प्रति हम आत्म समर्पण करते हैं : वह संघर्षों में हमारा रक्षक एवं वर्धक तथा देहों का पालक होता है ॥२०॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः ।
३ १ २ ३ १ २
एभिर्वर्धास इन्दुभिः ॥
२ ३क २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
यत्र क्व च ते मनो दक्षं दधस उत्तरम् ।
१ ३ १ २
तत्र योनिं कृणवसे ॥
१ २र ३ १ २ ३ १ २र
न हि ते पूर्तमक्षिपद् भुवन्नेमानां पते ।
२ ३ १ २
अथा दुवो वनवसे ॥२१॥

हे आगे ले जाने वाले ! तेरे स्वागत में 'आ' तथा ऐसे ही दूसरे वचनों का उच्चारण करता हूं; ऐसे आह्लादक वचनों से तू प्रदीप्त हो उठता है ।

हे अग्ने ! जहां कहीं मननशक्ति तुझ में उत्कृष्ट बल को धारण कर लेती है : जिस भूमिका पर भी संकल्प शक्ति दृढ़ हो जाती है वहीं तू अपना निवास-स्थान बना लेता है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे इन्द्र ! तू इन अधूरी–अधकचरी इन्द्रिय-शक्तियों का रक्षक है पर इससे तेरी पूर्णता–पूर्णशक्ति-मत्ता-नष्ट नहीं होती; पुनश्च तू साधना करने वाले को अपनाता है : साधना करने वाले जन की मनः-शक्ति पूर्णतया विकसित हो जाती है ॥२१॥

३२३ १२ ३२उ ३ १२ २ १२
वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽवस्यवः ।
१ २ ३ १ २
वज्रिं चित्रं हवामहे ॥

१२ ३ १२ ३२३ २ ३ २ ३२२ ३ २
उप त्वा कर्मन्नूतये स नो युवोग्रश्चक्राम यो
३२ १ २र ३ १२ ३२३ १२
धृषत् । त्वामिध्यवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र
३ २
सानसिम् ॥२२॥

हे अपूर्व ! हे शक्तिशाली इन्द्र ! हम लोग रक्षा की इच्छा से तुझे परिपुष्ट करते हुए तेरी स्तुति करते हैं—वैसे ही जैसे कोई बैल को परिपुष्ट करता है।

जो तू अजर, वीर्यशाली और दुर्भावनाओं को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ध्वस्त करने वाला है अतएव हम अपनी उन्नति गति के लिए तुझ कर्मिष्ठ का सहारा लेते हैं; हे इन्द्र! हम तेरे मित्र तुझे अपना सर्वनिष्ठ रक्षक मानते हैं ॥२२॥

२ ३क २र ३ १२ ३ १ २ ३१२ ३ १२
अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे।
३२३ १ २ ३१ २
उदेव ग्मन्त उदभिः ॥

१ २र ३ २ ३१ २ ३ १ २
वार्ण त्वा यव्याभिर्वर्धन्ति शूर ब्रह्माणि।
३ १ २ ३ १ २
वावृध्वांसं चिदद्रिवो दिवेदिवे ॥
३२ ३ १२ ३२ १ २ ३ १ २र ३१२
युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाथयोरौ रथ उरुयुगे
३ १२ ३ १ २ ३१ २
वचोयुजा इन्द्रवाहा स्वर्विदा ॥२३॥

हे स्तुत्य इन्द्र! जिस प्रकार जल जलों में मिल जाते हैं उसी प्रकार हम अपने कमनीय लक्ष्यभूत तेरे समीप आवें और तुझ में लीन हो जावें ॥

हे अदम्य! प्रतिदिन उन्नति के इच्छुक तुझ

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शूर को ब्रह्मज्ञान की धारायें, तुझ तक पहुँचने वाली स्तुतियों से, नदियों से समुद्र की भांति, बढ़ाती हैं ब्रह्मज्ञान से इन्द्र की शक्ति की वृद्धि होती है।

वाणी से वश्य, परमसुख के प्रापक, इन्द्र के वाहनभूत दो घोड़े (ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियां) इस बहु-मूल्य रथरूप देह के दृढ़ जूए में सर्वप्रेरक की स्तुति से ही जुते रहते हैं: परमात्मा की स्तुति के द्वारा ज्ञान-कर्मेन्द्रियां इस प्रकार वश में रहती हैं कि वे आत्मा को परमसुख तक पहुँचा देती हैं ।।२३।।

इति षष्ठः खण्डः। इति प्रथमोऽध्यायः।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ द्वितीयोऽध्यायः

ऋषिः—१, ४ श्रुतकक्षः सुकक्षो वा २, १४, १५ वसिष्ठः। ३ मेध्यातिथिप्रियमेधौ। ५ हरिम्बिठिः। ६ कुसीदी। ७ त्रिशोकः। ८ मेधातिथिः प्रियमेधश्च। ९ विश्वामित्रः। १० मधुच्छन्दाः। ११ शुनःशेपः। १२ नारदः। १३ वामदेवः। १६ अवत्सारः। १७, (१) शुनशेपो देवरातो वा (२, ३) मेध्यातिथिः। (१,३) आसितः काश्यपो देवलो वा (२) अमहीयुः। १९ त्रितः। २० सप्तर्षयः (भरद्वाजः कश्यपो गोतमोऽत्रिर्विश्वामित्रो जमदग्निर्वसिष्ठश्च)। २१ श्यावाश्वः। २२ (१, २) अग्निः। (३) प्रजापतिः॥ देवता:—१-१२ इन्द्रः। १३ अग्निः। १४ उषाः। १५ अश्विनौ। १६-२२ पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ (२,३),—११, १६—१९,२१ गायत्री। १२, २२ (१,२) उष्णिक्। १३—१५, २०, प्रगाथः (विषमा बृहती, समासतो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बृहती)। १ (१), २२ (३) अनुष्टुप्॥ स्वरः—१ (२,३)—११, १६—१६,२१ षड्जः। १२,२२ (१-२) ऋषभः। १३-१५, २० मध्यमः। १ (१), २२ (३) गान्धारः॥

१ ३ २ ३ १ २ ३ १ २३ १ २र
पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्र गायत।
३ १२ ३१२३ १२ ३ २
विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम्॥
३ १ २ ३१ २ ३ २ १२
पुरुहूतं पुरुष्टुतं गाथान्यां३ सनश्रुतम्।
२ ३ १ २
इन्द्र इति ब्रवीतन॥
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३-१
इन्द्र इन्नो महोनां दाता वाजानां नृतुः।
३१ २ ३ १ २
महाँ अभिज्ञ्वा यमत्॥१॥

हे मनुष्यो! तुम जीवनाधायक दिव्यानन्दभोग के भोक्ता इन्द्र का गान गाओ। वह सब पर शासन करता है; सैंकड़ों कर्मों का सम्पादक और कर्मशील

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रजाओं का अतिशय पूजनीय है ॥

इन्द्रियों द्वारा आहूत एवं स्तुत, गाथाओं (चर्चाओं) से समझ में आने योग्य, सुने चले आते देव को "इन्द्र" नाम से बतलाते हैं ॥

वह इन्द्र ही है जो महत्त्वशाली बलों का प्रदाता और सब को चलाने फिराने वाला है; वही महान्, सर्वज्ञाता और सब को नियंत्रण में रखता है ॥१॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत ।
१ २ ३ १ २
सखायः सोमपान्वे ॥

२उ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
शंसेदुक्थं सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः ।
३ २ ३ १ २
चकृमा सत्यराधसे ॥

१ २ ३ २उ ३ १ २
त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं गव्युः शतक्रतो ।
१ २ ३ १ २
त्वं हिरण्ययुर्वसो ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे साथियो ! सोम-(दिव्यानन्द रस) पायी, इन्द्रिय साधनों से सम्पन्न अन्तरात्मा के प्रीतिकर गान की तान छेड़ो ॥

जैसे मनुष्य श्रेष्ठ दानी की स्तुति करते और उत्तम धन को प्राप्त करते हैं ; उसी प्रकार हम उस सत्यधन के धनी दाता की स्तुति कर वह सत्यधन प्राप्त करें ॥

हे इन्द्र ! तू हमें ज्ञान-धन पहुँचाता है; हे सैंकड़ों कर्मों के सम्पादक ! तू हमें प्रकाश पहुँचाता है और हे बसाने वाले ! तू ही चमकीले परम सुख रूप ऐश्वर्य का प्रदाता है ॥२॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः ।
१ ३ २ १ २
कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥
१ २३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
न घेमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ ।
२उ ३ १ २
तवेदु स्तोमैश्चिकेत ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३२ ३ २ ३ १ २र
इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति ।
१ २ ३२ ३ १ २
यन्ति प्रमादमतन्द्राः ॥३॥

हे प्रकाशमयी प्रज्ञाशक्ति ! तुझे प्राप्त करने की इच्छा से हम मेधावी, इसी प्रयोजन से तेरे मित्र बने हुए, स्तोत्रोंसे तेरा वर्णन करते हैं ।

हे वज्रयत इन्द्र ! कर्मों के प्रारम्भ में मैं दूसरे किसी की स्तुति करता ही नहीं; स्तुतियों द्वारा तेरी ही पहचान (विवेक) कराता हूँ ॥

इन्द्रियां उस प्रज्ञाशक्ति की इच्छा करती हैं जो उनके लिए परमानन्द की साधना में सदा जागरूक है : आलसी के लिये उन को कोई स्पृहा नहीं है; इस प्रकार आलस्यरहित हो वे विक्षिप्तताको रोकती हैं ॥३॥

१ २३ १२ ३१ २र ३ १ २
इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः ।
३ १२ ३ १ २
अर्कमर्चन्तु कारवः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १२ ३२ ३ १२
यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त संसदः।
१ २ ३१ २
इन्द्रं सुते हवामहे ॥

१ २ ३ १२ ३ १ २ ३१ २
त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत ।
१ २र ३ १ २
तमिद् वर्धन्तु नो गिरः ॥४॥

आनन्द में विभोर इन्द्र के सन्मुख हमारी इन्द्रियां परमानन्दभोग का बखान करें : कर्म में दक्ष—परम लक्ष्य के कुशल साधक—ही इस सोम-(सारभूत तत्त्व) को प्राप्त करते हैं॥

सात गोलकों में स्थित (सब इन्द्रियां) जिसमें आश्रय लेकर सुख अनुभव करती हैं उस इन्द्र की स्तुति हम योग यज्ञ में ऋतम्भरा सिद्ध होने पर करते हैं॥

दिव्य इन्द्रियां तीन स्थितियों में ज्ञान-यज्ञ का

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सम्पादन करती हैं; उस यज्ञ को ही हमारी स्तुतियां बढ़ावें ॥४॥

इति प्रथमः खण्डः ।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि ।
१ २३ २३ ३ १ २
एहीमस्य द्रवा पिब ॥

१ २ ३ १ २ ३१ २र ३२
शाचिगो शाचिपूजनायं रणाय ते सुतः ।
१ २ ३ १ २
आखण्डल प्र हूयसे ॥

१ २ ३ १२ ३ १ २
यस्ते शृङ्गवृषो णपात् प्रणपात् कुण्डपाय्यः ।
२र ३ १ २र
न्यस्मिन् दध्र आ मनः ॥५॥

हे इन्द्र अन्तःकरण में तेरे लिये ही परिस्रुत यह दिव्य आनन्द (भोग के लिए) रखा है; आ; दौड़ कर आ; इसको पीले ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विचार शक्तियों से गम्यमान! विचारशक्तियों के कारण पूजार्ह! हे इन्द्र! तेरे हर्ष के लिए यह परमानन्द रस परिस्रुत है; हे अज्ञान नाशक (इसका पान करने के लिये) तुझे निमन्त्रण दिया जा रहा है।

जो सर्वोत्तम वर्षक तुझे न गिरने देने वाला है और सरलता से पान करने योग्य है उसमें अपना मन लगा ॥५॥

१ २र ३१ ३ ३ २ ३ १ २र
आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय।
३ १ २र
महाहस्ती दक्षिणेन ॥
३ १ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं तुविदेष्णं तुवीमघम्।
३ २र
तुविमात्रमवोभिः ॥
१ २र ३ १ २र ३ १ २
न हि त्वा शूर देवा न मर्तासो दित्सन्तम्।
३ २उ ३ १ २
भीमं न गां वारयन्ते ॥६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे ऐश्वर्यशाली इन्द्र ! तू हमारे अनुकूल, क्रिया-कुशल लम्बे-लम्बे हाथों से अद्भुत एवं सम्पन्न (ज्ञानैश्वर्य-सम्पन्न) पकड़ को सम्भाल ।

हे इन्द्र ! तुझ को हम तुझ से प्राप्त कृपाओं के कारण विविध-कार्य-सम्पादक, बहुदानी, उत्तम धनी और बहुत साधन सम्पन्न समझते हैं

जिस प्रकार उखाड़-पछाड़ कर रहे भयानक सांड को हटाने का साहस नहीं करते वैसे ही हे शूरवीर ! इन्द्र तू जब दुर्भावनाओं का विनाश करने लगता है तो इतना भयानक हो उठता है कि साधारण (मर्त) और असाधारण (देव) कोई भी अवरोधक तुझे विरत करने का साहस नहीं कर सकता ॥६॥

३ १ २ ३२ ३१ २ ३ १२
अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये ।
३ ३ २ १ २ १२
तृम्पा व्यश्नुही मदम् ॥
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २३१ २३ १ २
मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २
मा कीं ब्रह्मद्विषं वनः ॥

३२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
इह त्वा गोपरीणसं महे मन्दन्तु राधसे ।
१२ ३ १ २र
सरो गौरो यथा पिब ॥७॥

हे सुखवर्षक ! दिव्य आनन्द के सिद्ध हो जाने पर इसे तेरे पान के लिये ही सम्पन्न करता हूँ; तृप्त हो और मग्न होजा ॥

भोगी मूढ़ और तेरी उपेक्षा करने वाले तेरा विनाश (तेरी शक्ति का दुरुपयोग) कभी न करें; ज्ञान के द्वेषी को अपनी सेवा का अवसर कभी मत दे।

इन्द्रियों से घिरे तुझ इन्द्र को महान् ऐश्वर्य के लिए प्रसन्न एवं आनन्दित करें। गौर मृग जिस प्रकार सरलता से सरोवर से पानी पीता है वैसे ही तू भी आनन्द के स्रोत से यथेच्छ आनन्द का पान कर ॥७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२१ २ ३२उ ३ २ ३ १२ ३१२
इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम् ।
१ २ ३ १ २
अनाभयिन् ररिमा ते ॥

१ २ ३ २ ३२उ ३२ ३ २ ३ १ २
नृभिर्धौतः सुतो अश्नैरव्या वारैः परिपूतः ।
२ ३ २ ३ २ ३ १ २
अश्वो न निक्तो नदीषु ॥

१ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३१२ ३ १ २
तं ते यवं यथा गोभिः स्वादुमकर्म श्रीणन्तः ।
१ २ ३ ११ २ ३ १ २
इन्द्र त्वास्मिंत्सधमादे ॥८॥

हे बसाने वाले इन्द्र ! तू इस साधित परमानन्द-रस को भरपेट पीले। हे भयरहित ! तुझे हम इसे भेंट करते हैं।

वह सोम चेतना की वाहक भावनाओं से धोया गया, भोग शक्तियों से परिस्रुत और चेतना के आवरणों में से छाना गया है। इस प्रकार नदी में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नहलाये गये अश्व की भांति शुद्ध एवं शीघ्र कार्य-क्षम है।

यव के पक्वान्न को गो दुग्ध से मिला तथा पका कर जैसे स्वादु बनाते हैं वैसे उस तेरे सोम को ज्ञानेन्द्रियों के ज्ञानरसों से मिश्रित कर, हे इन्द्र ! तेरे साथ हर्षोपभोग के लिए स्वादु बनाते हैं ।।८।।

इति द्वितीयः खण्डः।

३१ २र ३१ २
इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते ।
२ ३ २ १ २
पिबा त्वा३स्य गिर्वणः ।।
२ ३ १ २ ३ १ २र ३१ २र ३क२र
यस्ते अनु स्वधामसत् सुते नि यच्छ तन्वम् ।
१ २
स त्वा ममत्त सोम्य ।।
१ २ ३ २र ३ १ २ ३ १ २
प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः प्रेन्द्र ब्रह्मणा शिरः ।
२ ३१ २ ३ १ २
प्र बाहू शूर राधसा ।।९।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सिद्धियों के स्वामिन्! यह दिव्य रस बड़े परिश्रम से सिद्ध हुआ है; हे स्तुतियोग्य! तू इस का पान कर ॥

हे इन्द्र! जो तेरा (यज्ञिय) पवित्र भोजन है उस सिद्ध किये गये परमानन्द में अपने आप को विभोर कर दे : हे सोमपान के पात्रभूत इन्द्र! वह तुझे मग्न कर दे ॥

हे इन्द्र! ज्ञानकर्मरूप वह आनन्दरस तेरे पार्श्वों में व्याप्त हो; ब्रह्म ज्ञानरूप सिर और दान-भावना से ओत-प्रोत ऐश्वर्यरूप बाहुओं को व्याप्त करे।

दिव्य आनन्द के उपभोक्ता के ज्ञान-कर्म उसी आनन्द की भावना से भावित रहते हैं ॥६॥

२र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत ।
१ २ ३ १ २
सखाय स्तोमवाहसः ॥
३ १२ ३ १ २र३ १ २
पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३ १ २ ३२
इन्द्रं सोमे सचा सुते ॥
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
स घा नो योग आ भुवत् स राये स पुरन्ध्या ।
२ ३ १ २ ३ १ २र
गमद् वाजेभिरा स नः ॥१०॥

हे स्तुति कर्ता साथियो ! आओ तो ! बैठो और इन्द्र की स्तुति करो ॥

समृद्धों में अतिसमृद्ध और हटाने योग्य दुर्भावनाओं के वशी इन्द्र का सिद्ध किये सोम के साथ संगम हो ॥

वही इन्द्र ज्ञान-प्राप्ति में समर्थ होता है वही दानभावना से भावित धन प्राप्ति में और वही देहधारण में समर्थ होता है; और वह हमें बलों से युक्त करता है ॥१०॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २
योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
सखाय इन्द्रमूतये ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम् ।
२ ३ १२ ३ २ ३२
यं ते पूर्वं पिता हुवे ॥
१ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
आ घा गमद्यदि श्रवत् सहस्रिणीभिरूतिभिः ।
१२ ३ २३ ३ १२
वाजेभिरुप नो हवम् ॥११॥

हम साथी मित्र आगे बढ़ने के लिये, ज्ञान एवं बल के प्रत्येक अवसर पर बली एवं वेगवान् इन्द्र का आह्वान करते हैं ॥

परम्परा से चले आये आश्रय—परमसत्य रूप—को पहुंचाने वाले, बहुतों को तृप्त करने वाले वीर इन्द्र को मैं पुकारता हूँ; उसी को पूर्ववर्ती पालक बुलाते आये हैं ॥

यदि वह इन्द्र हमारी पुकार को सुन ले तो हजारों बलशालिनी रक्षक-शक्तियों और ज्ञानों के सहित हमारे समीप आ जाय ।

मनःशक्ति के बलवान् हो जाने पर साधक सब

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ओर से निर्भय एवं ज्ञानी हो जाता है ॥११॥

१ २ ३१२ २२३ १२ ३क २र
इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीष उक्थ्यम् ।
३ २ ३२ ३ १२ ३ २
विदे वृधस्य दक्षस्य महाँ हि षः ॥
२ २३१ ३ ३१२ ३ १२ ३२
स प्रथमे व्योमनि देवानां सदने वृधः ।
३ २ ३१ ३ १२ ३२
सुपारः सुश्रवस्तमः समप्सुजित् ॥
१२ ३ १२ ३ २ ३ १२ ३१ २
तमु हुवे वाजसातय इन्द्रं भराय शुष्मिणम् ।
१ २ ३ १ २र३ १ २ ३२
भवा नः सुम्ने अन्तमः सखा वृधे ॥१२॥

हे इन्द्र ! तू अत्यन्त समृद्धि के लिये सिद्ध किये गये परमानन्द-रसों में से प्रशंसनीय से ज्ञान को छान कर शुद्ध कर लेता है; वह निस्संदेह महान् है ॥

वह इन्द्र सर्वश्रेष्ठ निवासयोग्य दिव्यशक्तियों के निवास-स्थान में अधिक शक्तिमान् होता है; सब दुःखों से पार कराने वाला, यश और ज्ञान का

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सरलतापूर्वक धारण कराने वालों में सर्वश्रेष्ठ और कर्मों में विजय प्राप्त कराने वाला है ॥

उसी बलशाली इन्द्र को ज्ञानबल की प्राप्ति एवं भरणपोषण के लिए पुकारता हूँ : वह हमारे सुख एवं उन्नति में हमारा अन्तरंग मित्र बने ॥१२॥

इति तृतीयः खण्डः ।

३ १ २ ३ १ २र ३१ २र ३ १ २
एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे ।
३ १ २र ३१ २ ३१ २र ३२३१२
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् ॥
१ २ ३२ ३१२ ३ १ २ ३क २र
स योजते अरुषा विश्वभोजसा स दुद्रवत् स्वाहुतः ।
३१ २ ३२ ३२ २ १२ ३२३ ३ १ २
सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां देवं राधो जनानाम् ॥

अहंभाव के त्यागरूप इस आत्मसमर्पण के द्वारा मैं शक्ति को स्थायी रखने वाले अग्नि की उपासना करता हूँ । वह अग्नि प्रिय, चेतनाप्रद, शुभ व्यवहारों का प्रवर्तक, विश्व का दूत और अमर है ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह अग्नि, सब भोगों को दिलाने वाले प्रताप से संयुक्त करता है; सम्यक् रीति से पुकारा जाने पर शीघ्र ही वह पिघल जाता है : कृपादृष्टि दिखलाता है। वह उत्तम ज्ञानदाता, दानभावना का उद्दीपक— यज्ञ रूप. सुकर्मों का प्रेरक एवं साधक जनों को सब ऐश्वर्यों का दाता अतएव आराध्य देव है ॥१३॥

१ २ ३ २ १ २ ३ २ ३ २
प्रत्यु अदर्श्यायत्यू३च्छन्ती दुहिता दिवः।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ ३
अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति
३ १ २
सूनरी ॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ र ३ २
उदुस्रियाः सृजते सूर्यः सचाउद्यन्नक्षत्रमर्चिवत्
१ २ र ३ २ ३ १ २ ३ १ ३ १ २
तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेन गमेमहि॥१४॥

प्रकाशमय लोक से आई, अज्ञान के अन्धेरे को काटती हुई चितिशक्ति प्रत्यक्ष हो रही है; यह फैलकर ज्ञानराशि के अपवारक अन्धकार को हटाती है और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नेत्री बनकर सर्वत्र प्रकाश फैला देती है।

तेजोमय, नक्षत्ररूप स्थिर प्रेरक सूर्य जब उदय होता है, और प्रेरणा के स्रोत का दिव्य-ज्ञान-प्रकाश फैलता है, तब प्रकाशवती चितिशक्तियां प्रकट हो जाती हैं; चितिशक्ति के इस उदयकाल में हम भी उस प्रेरक की ज्ञान-किरणों से संयुक्त हों ॥१४॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ २
इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः॥

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
युवं चित्रं ददथुर्भोजनं नरा चोदेथां सूनृतावते।
३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
अर्वाग् रथं समनसा नि यच्छतं पिबतं सोम्यं
२र
मधु॥१५॥

हे अश्वियो ! द्युलोक का प्रकाश पा लेना चाहने वाली ये चितिशक्तियां तुम्हारा आह्वान करती हैं; सामर्थ्यप्रदान से बसाने वाले तुम दोनों की मैं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भी रक्षा के लिए स्तुति करता हूँ; तुम तो प्रत्येक देह में आते ही हो ॥

हे वीर नेता अश्वियो ! तुम दोनों नाना भोग्य पदार्थों के धारक हो; जो भलीभाति तुम्हें सिद्ध करता है उसे प्रदान करते हो। सहयोगी होकर तुम इस रथ को अनुकूलता से वश में करो और परमानन्द-से संयुक्त माधुर्य का उपभोग करो ॥१५॥

इति चतुर्थः खण्डः।

३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अस्य प्रत्नामनु द्युतं शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः।
१ २ ३ २ २र
पयः सहस्रसामृषिम् ॥

३ १ २र ३ २ ३ १ २र
अयं सूर्य इवोपदृगयं सरांसि धावति।
३ २ ३ २ ३ १ २र
सप्त प्रवत आ दिवम् ॥

३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २र
सोमो देवो न सूर्यः ॥१६॥

इस सोम की परम्परागत कान्ति का अनुसरण करके, संकोचरहित दृढ़चित्त-साधकों ने सहस्रों फलों को देने वाले, सर्वथा शुद्ध एवं क्रान्तदर्शक ज्ञान-दुग्ध को दुहा ॥

सूर्य की भांति सब कुछ दर्शाने वाला यह सोम हमारे हृदय-सरोवरों में दौड़ कर आ रहा है : यह सातों (ज्ञानेन्द्रियों) को प्रकाशलोक की ओर चलाता है ॥

यह दिव्य सोम परिस्रुत होता हुआ, सूर्य की भांति सब लोकों (अवस्थाओं) का अधिष्ठाता बना रहता है ॥१६॥

३ ३ ३ १ २ ३ २ ३ १ ३ ३ २
एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः ।
१ २ ३ १ २
हरिः पवित्रे अर्षति ॥
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र
कविर्विप्रेण वावृधे ॥
३ २ ३ १ २र ३ २३ १ २
दुहानः प्रत्नमित् पयः पवित्रे परि षिच्यसे ।
१ २ ३ १ २
क्रन्दं देवाँ अजीजनः ॥१७॥

यह दिव्यमनोहर सोम परम्परागत अभिव्यक्ति के रूप में इन्द्रियों के लिए अभिव्यक्त होकर, शोधक हृदय में आ रहा है।

यह दिव्य सोम अपने परम्परागत मननशक्ति रूप तेज से इन्द्रियों पर विराजमान हुआ हुआ, क्रांतदर्शिणी मेधाशक्ति द्वारा अधिकाधिक बढ़ता है ॥

हे सोम! तू परम्परागत ज्ञान-दुग्ध प्रदान करता हुआ अन्तःकरण को सींचता है और इन्द्रियों को मुखर बनाता है ॥१७॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
उप शिक्षापतस्थुषो भियसमा धेहि शत्रवे ।
१ २ ३ २ ३ २
पवमान विदा रयिम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ र

उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम् ।

१ २ ३ १ २

इन्दुं देवा अयासिषुः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे ।

३ २ ३ १ २ र

अभि देवाँ इयक्षते ॥१८॥

हे पवमान सोम ! तू नीचे गिरे हुओं को सीख देकर ऊपर उठाता है; द्वेषभावनाओं को डर दिखा कर भगाता है और सर्वोत्तम ऐश्वर्य को प्राप्त कराता है ।

सुष्ठुतया प्रादुर्भूत, कर्मप्रेरक, स्तुतियों से क्रमशः साधित आनन्दरस को दिव्य इन्द्रियों ने प्राप्त किया ।

हे वीरो ! इस परिस्रुत हो रहे आनन्दरस का बखान करो जो दिव्य इन्द्रियों को त्यागभावना की शिक्षा देता है ॥१८॥

इति पञ्चमः खण्ड. ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र सोमासो विपश्चितोऽपो नयन्त ऊर्मयः ।
१ २ ३ १ २
वनानि महिषा इव ॥
३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा ऋतस्य धारया ।
२ ३ १ २
वाजं गोमन्तमक्षरन् ॥
३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।
१ २ ३ १ २
सोमा अर्षन्तु विष्णवे ॥१६॥

जैसे महान् शक्तिशाली वाहन, भोग्यपदार्थों को इधर-उधर ले जाते हैं, वैसे ही, ज्ञान-सम्पन्न परमानन्द लहरों की भांति वेगवान् हो कर्मों को पहुँचाते हैं।

स्वतः धूमिल भी परमसत्य के प्रवाह से कान्तियुक्त सोम इन्द्रियों में प्रकाशयुक्त ज्ञान बहा रहे हैं ॥

साधित सोम साधक को इन्द्र, वायु, वरुण, मरुत् और विष्णु शब्दों से अभिधेय दिव्यशक्तियां प्रदान करे ॥१६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३१२ ३ २ ३१ २ ३ १२
प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा ।
३ १ २र ३ १ २ २र ३ २ ३ १ २
अंशोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं
३ १२
मधुश्चुतम् ॥
३ २३ १ २र ३ १ २ ३२ ३१
आ हर्यतो अर्जुनो अत्के अव्यत प्रियः सूनुर्न
१ २र २ २ ३ २ ३ २ ३ १२ ३१
मर्ज्यः । तमीं हिन्वन्त्यपसो यथा रथं नदीष्वा
२र
गभस्त्योः ॥२०॥

हे सोम ! दिव्यता के आधान के लिये, जल से जैसे समुद्र तृप्त होता है इसी प्रकार तू हमें तृप्त करता है। हर्ष से मग्न हुए की भांति सोम की चमक का पान करने से सदा जागरूक बना हुआ साधक मधुरता बहाने वाले आनन्दमय कोश को प्राप्त हो ॥

वह कमनीय और पवित्र सोम, जो प्रिय पुत्र की भांति सम्भालने योग्य है निरन्तर गति में ही बढ़ता

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

है। कर्मिष्ठ साधक वाहक रथ की भांति वाहनभूत उस सोम को ज्ञान-प्रकाश की धाराओं में आगे बढ़ाते हैं ॥२०॥

१ २र ३ २३ १२ ३ १ २
प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम्
३ २ ३ १ २
सुता विदथे अक्रमुः ॥
१ ३ ३ १ २र ३ १ २र ३ २
आदीं हंसो यथा गणं विश्वस्यावीवशन्मतिम्।
२ ३ १ २र
अत्यो न गोभिरज्यते ॥
१ २ ३२ ३ १ २ ३ १ ७ ३ १ २
आदीं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः।
२ ३ १ २ ३ १ २
इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥२१॥

ज्ञान-यज्ञ में सिद्ध किये गये, आनन्द बहाते परमानन्द रस, हम ऐश्वर्यशालियों को ज्ञान-धन पहुँचाने के लिये समर्थ बनें ॥

और प्राणवायु की भांति यह सोम भी समस्त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञानसाधनों में प्रविष्ट है : पुनश्च वेगवान् अश्व की भान्ति वह वेगवान ज्ञानेन्द्रियों से व्यक्त होता है ॥

और इन्द्र के पीने के लिये, उस आह्लादक एवं आकर्षक परमानन्दरस को तीनों लोकों में वर्तमान परमसत्य के साधक जन दृढ़ एवं स्थायी साधनों से प्राप्त करते हैं ॥२१॥

अया पवस्व देवयू रेभन् पवित्रं पर्येषि विश्वतः ।
मधोर्धारा असृक्षत ॥

पवते हर्यतो हरिरति ह्वराँसि रंह्या ।
अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद् यशः ॥

प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद् वचः ।
अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः ॥२२॥

हे दिव्य गुणों के आधायक सोम ! तू रसीली-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मीठी धारा के रूप में परिस्तुत हो : और अनाहत नाद करता हुआ हृदय को चारों ओर से आविष्ट कर ले ॥

वह कमनीय प्रिय सोम अपने वेग से कुटिलताओं को पार करता हुआ, साधकों को वीरों का-सा सत्य यश प्रदान करता हुआ आ पहुँचे ॥

उस सोम की अनाहत वाणी संजीवन तत्त्व के निष्पन्न करने वाले के लिये है : साधारण जन उसे नहीं सुन पाता । हे साधको ! दान विरोधी कुत्ते के समान लोभी (लोभवृत्ति) को नष्ट करो; त्यागभावना को नहीं ॥२२॥

इति द्वितीयोऽध्याय: । इति प्रथम: प्रपाठक: ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ तृतीयोऽध्यायः

अथ द्वितीयः प्रपाठकः

ऋषिः—१ जमदग्निः । २, ५, १५ अमहीयुः । ३ कश्यपः । ४, १० भृगुर्जमदग्निर्वा । ६, ७ मेधातिथिः । ८ मधुच्छन्दाः । ६ वसिष्ठः । ११ उपमन्युः । १२ शंयुः । १३ प्रस्कण्वः । १४ नृमेधः १६ । नहुषः । १७ (१, २) सिकता निवावरी (३) पृश्नयोऽजाः । १८ श्रुतकक्षः सुकक्षो वा १६ जेता ॥ देवता १—५, १०, ११, १५—१७ पवमानः सोमः । ६ अग्निः । ७ मित्रावरुणौ ८, १२—४, १८, १६ इन्द्रः । ६ इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—१—१०, १५ १८ गायत्री । ११ त्रिष्टुप् । १२—१४ प्रगाथः (विषमा, बृहती । समा सतो बृहती) । १६, १६ अनुष्टुप् १७ जगती ॥ स्वरः—१—१०, १५, १८ षड्जः । ११ १७ धैवतः । १२—१४ मध्यमः । १६—१६ गांधारः । १७ निषादः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ २ १ ३
पवस्व वाचो अग्रियः सोम चित्राभिरूतिभिः ।
३ १ २र ३ १ २
अभि विश्वानि काव्या ॥
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
त्वं समुद्रिया अपोऽग्रियो वाच ईरयन् ।
१ २
पवस्व विश्वचर्षणे ॥
२ ३ १ २र ३ १ २
तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे ।
१ २ ३ १ २
तुभ्यं धावन्ति धेनवः ॥१॥

हे सोम ! विभिन्न रक्षा शक्तियों सहित तू सर्वोत्तम वाणियों को समस्त क्रान्त रचनाओं की ओर प्रेरित कर ॥

हे सब के दर्शयिता ! सोम ! तू सर्वोत्तम वाणियों को प्रेरित करता हुआ उन्नति की ओर ले जाने वाले कर्मों को प्रेरित कर ॥

हे क्रान्तदर्शयिता सोम तेरी महिमा के लिए ही

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ये सब भुवन स्थित हैं: तेरी महिमा के लिए ही नदियाँ दौड़ रही हैं: अचर और चर सृष्टियां भगवान् की महिमा को ही प्रकट करती हैं ॥१॥

१२ ३ १२ ३२ ३ १ २ ३ २ ३ १२
पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने ।
२ ३ २३ १ २
विश्वा अप द्विषो जहि ॥

१ २ ३ २ ३१ २ ३ १२ ३२
यस्य ते सख्ये वयं सासह्याम पृतन्यतः ।
१२ ३ १ २३२
तवेन्दो द्युम्न उत्तमे ॥

१ २ ३१ २र ३ २ ३ २ ३ १२
या ते भीमान्यायुधा तिग्मानि सन्ति धूर्वणे ।
१ २ ३ २
रक्षा समस्य नो निदः ॥२॥

हे वर्षण समथ तू प्रस्तुत हो; प्रस्तुत हुआ हमें जन-समुदाय में यशस्वी बना; हमारी सब द्वेष-भावनाओं को नष्ट करदे ॥

हे आह्लादक, सोम ! तेरे मित्र बन कर तेरे उत्तम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बल की सहायता से हम आक्रान्ताओं को जीतें।

तेरे भयंकर शस्त्रास्त्र नाश करने में बहुत तीव्र हैं; तू हमारी समाज शत्रुओं से रक्षा करने में समर्थ है ॥२॥

२ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः।
२ ३ १ २
वृषा धर्माणि दध्रिषे ॥
१ २ ३ २ ३ २ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १
वृष्णस्ते वृष्ण्यं शवो वृषा वनं वृषा सुतः।
१ २र ३ १ २र
सं त्वं वृषन् वृषेदसि ॥
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र
अश्वो न चक्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः।
१ २ ३ १ २र
वि नो राये दुरो वृधि ॥३॥

हे परमानन्द रस! सुख वर्षा की सामर्थ्य वाला तू दीप्ति से युक्त है; तू ही हे दिव्य मेघ! नियम से सुख की वर्षा करने वाला है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे वर्षणसमर्थ ! तू ही सब धर्म-कर्मों का धारण करता है ॥

सुखवर्षक तेरा बल(बरसा हुआ) बहुत सारा है; तेरा भजन और तेरा साधन सब सुखवर्षक है : इस प्रकार हे सुखवर्षक तू तो सुखवृष्टि रूप ही है ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ १
वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे ।
१ २ ३ १ २
पवमान स्वर्दृशम् ॥
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २
यदद्भिः परिषिच्यसे मर्मृज्यमान आयुभिः ।
१ २ ३ १ २
द्रोणे सधस्थमश्नुषे ॥
१ २ ३ २ ३ १ २
आ पवस्व सुवीर्यं मन्दमानः स्वायुध ।
३ १ १ ३ १ २
इहो ष्विन्दवा गहि ॥४॥

हे पावक ! सोम तू मनोरथ पूर्ण करने में समर्थ है; ज्ञान-कांति से प्रदीप्त तेरा हम आह्वान करते हैं;

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कारणकि तू हमें सुख लोक को दिखाता है ।

जीवन साधक-जन बार-बार शुद्ध कर जब कर्म-जलों के साथ-साथ तुझे सींचते हैं तब उनके साथ ही अन्तःकरण को आविष्ट करता है ।

हे उत्तम आयुध-सम्पन्न सोम ! प्रसन्न करता हुआ तू शोभन वीर्य को प्रदान कर; हे आह्लादक ! इसी अन्तःकरण पर अधिकार कर ॥४॥

१२ ३२ ३१२ ३२
पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः ।
३ १ २र
सखित्वमा वृणीमहे ॥
१ २ ३ १२ ३१ २ ३१२ ३ १२
ये ते पवित्रमूर्मयोऽभिक्षरन्ति धारया ।
१ २
तेभिर्नः सोम मृडय ॥
१ २ ३१ २र ३२ ३१२ ३ १२
स नः पुनान आ भर रयिं वीरवतीमिषम् ।
१ २ ३१२
ईशानः सोम विश्वतः ॥५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अन्तःकरण की ओर बहकर आते हुए तुझ सोम की मित्रता हम चाहते हैं ॥

हे सोम ! तेरी जो लहरें धारारूप में अन्तःकरण में बहकर आती हैं उनसे हमें सम्पन्न कर।

बह बह कर आता हुआ तू सोम हमें बलवती प्रेरणारूप ऐश्वर्य से भरपूर कर; तू सब का अधिष्ठाता है ॥५॥

३ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।
३ २ ३१ २ ३१ २
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥
३ १२ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २
अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम् ।
३ १ २ ३ २
हव्यवाहं पुरुप्रियम् ॥
१ २ ३२ ३१ २ ३ २ ३ १२
अग्ने देवाँ इहा वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे ।
२ ३ १ २ ३ १ २
असि होता न ईड्यः ॥६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सर्वज्ञानी, आध्यात्मिक यज्ञ का होता, दिव्य अग्नि ही वह दूत (दिव्यशक्तियों को दूर-दूर तक पहुँचाने वाला है) जो इस आत्मिक यज्ञ को भली-भांति सम्पन्न करता है; उस की हम स्तुति करते हैं ॥

उस यज्ञिय भावनाओं के वाहनभूत, सब के प्रिय, अतएव प्रजारक्षक अग्नि को ही बार-बार स्तुति-वचनों से पुकारते हैं ॥

हे अग्ने ! तू पवित्र हृदयासन वाले मुझ साधक के लिए अन्तःकरण में दिव्यगुणों को प्रकट कर; तू ही स्तुति योग्य दिव्यगुणों का आह्वाता है ॥६॥

३ २ ३१ ३ ३ १२३ १२
मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये ।
२ ३१ ३१२
या जाता पूतदक्षसा ॥
३ २३ १२ ३१ २ ३२ ३ १ २३ १२
ऋतेन यावृतावृधावृतस्य ज्योतिषस्पती ।
२ ३ १ २र
ता मित्रावरुणा हुवे ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः ।
१२ ३ १२
करतां नः सुराधसः ॥७॥

हम अपनी समस्वरता और विवेक शक्तियों को ब्रह्मानन्द रस से संयुक्त करते हैं : इस प्रकार इन में पवित्र विवेक बल उत्पन्न होता है ॥

मित्र और वरुण (उपरिलिखित शक्तियां) परम-सत्य के द्वारा परमसत्य की ओर बढ़ाने वाले परम-सत्य के प्रकाश से पालित दिव्य गुण हैं; मैं उनका आह्वान करता हूँ ॥

समस्वरता और विवेक शक्तियां अपनी सब रक्षा सामर्थ्यों से हमारी रक्षक हों और हमें सु समृद्ध बनावें ॥७॥

१ ३ २ ३ १ २ ३१ २र ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रमिद् गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः ।
२ ३ १ २
इन्द्रं वाणीरनूषत ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥
२ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्त्रप्रधनेषु च ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ २र ३ २
इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद् दिवि ।
२ ३ ३ १ २
वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥८॥

साम-गायक, बृहत् साम द्वारा ऋचाओं वाले स्तुति-पाठों से और वाणी से भी इन्द्र का ही गान करते हैं ॥

यह इन्द्र की शक्ति है कि वह वाक्समेत ज्ञान एवं कर्म इन्द्रियों को मिलाकर रखता है। वह इन्द्र तेजस्वी है, संहारक शक्ति से भी युक्त है ॥

हे तेजस्वी इन्द्र ! हमारे ज्ञान-बल के कार्यों और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हजारों प्रकार के संघर्षों में अपनी उग्र रक्षा शक्तियों से हमारी रक्षा कर ॥

इन्द्र दीर्घ दृष्टि प्रदान करने के लिये प्रेरक शक्ति को प्रकाशलोक में पहुँचाता है और ज्ञान किरणों से अज्ञान के आवरक पर्वत को (भेदन कर) उसे प्रेरित करता है ॥८॥

इन्द्रे अग्ना नमो बृहत्सुवृक्तिमेरयामहे ।
धिया धेना अवस्यवः ॥
ता हि शश्वन्त ईडत इत्था विप्रास ऊतये ।
सबाधो वाजसातये ॥
ता वां गीर्भिर्विपन्युवः प्रयस्वन्तो हवामहे ।
मेधसाता सनिष्यवः ॥६॥

निदिध्यासन से ज्ञानरस देने वाली इन्द्रियों को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चाहने वाले हम इन्द्र और अग्नि को अपने बड़े-बड़े नमस्कार भेजते हैं ॥

मेधावी साधक, ऐश्वर्य प्राप्ति में विघ्न उपस्थित होने पर रक्षा के लिए उन्हीं इन्द्र और अग्नि की निरन्तर स्तुति करते हैं।

उन्हीं तुम दोनों को पवित्र ज्ञान की प्राप्ति में अपना भाग चाहते हुए हम स्तोता आगे बढ़ने का यत्न करते हुए पुकारते हैं ॥६॥

इति द्वितीयः खण्डः ।

१२ ३ १ २ ३१ २ ३ २
वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
विश्वा दधान ओजसा ॥
१ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २
तं त्वा धर्तारमोण्यो३ः पवमान स्वर्दृशम् ।
३ १ २ र ३ १ २
हिन्वे वाजेषु वाजिनम् ॥
३ २ ३ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २
अया चित्तो विपानया हरिः पवस्व धारया ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २
युजं वाजेषु चोदय ॥१०॥

चितिशक्ति के धनी के लिये हर्ष का सरोवर भूत हे सोम ! तू अपने बलवीर्य से सब का पोषण करता हुआ धारारूप में वह ॥

धारारूप में बह रहा वह सोम पृथिवी एवं अन्तरिक्ष लोकों में वर्तमान भूत जगत् का धारक और स्वःलोक का दिखाने वाला है और ज्ञान-बल का भंडार है; उस को हम अपने ज्ञानबल की प्राप्ति के लिए किये गये अपने प्रयत्नों में सहायक रूप में चाहते हैं ॥

वह आकर्षक सोम प्रसिद्ध पान करने योग्य धारारूप में हृदय में प्रवाहित हो और योगी साधक को ज्ञानों में प्रेरित कर ॥१०॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
वृषा शोणो अभिकनिक्रदद् गा नदयन्नेषि

३ २ ३ १ १ २ ३ १ २ र ३ १
पृथिवीमुत द्याम् । इन्द्रस्येव वग्नुरा शृण्व आजौ

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ २ ३ २
प्रचोदयन्नर्षसि वाचमेमाम् ॥
३२ ३ १ २ ३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
रसाय्यः पयसा पिन्वमान ईरयन्नेषि मधुमन्त-
३ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २ र
मंशुम् । पवमान सन्तनिमेषि कृण्वन्निन्द्राय सोम
३ १ २
परिषिच्यमानः ॥

३ १ २ ३ १ २ र ३ १ २ ३ १ २
एवा पवस्व मदिरो मदायोदग्राभस्य नमयन्
३ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २
वधस्नुम् । परि वर्णं भरमाणो रुशन्तं गव्युर्नो
३ १ २ ३ २
अर्ष परि सोम सिक्तः ॥११॥

वह बलवान, चमचमाता सोम अनाहत नाद से इन्द्रियों को गुंजाता हुआ पृथिवी एवं अन्तरिक्ष, सब स्थानों पर, पहुँचा रहता है। इन्द्र की पुकारको सुनता और जीवन संघर्ष में हमारी स्तुतियों को प्रेरित करता हुआ गति करता है ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परिस्रुत होरहे सोम ! तू रससे परिपूर्ण अपने रस से तृप्त करता और मधुरता से भरे अपने एक भाग को प्रेरित करता पहुँचता है। हे सोम ! सींचा हुआ तू इन्द्र के लिए आत्मविश्वास उत्पन्न कर उस की सहायता करता है।

हे रसमय सोम ! अत्युद्धत को विनाश की चोटी से नीचे ला, अविनीत को विनीत बना और इस प्रकार हर्ष देने के लिये परिस्रुत हो। सींचा हुआ तू कान्तिमय स्वरूप को धारण कर, इन्द्रियों में प्रकाश करता हमें आविष्ट कर ॥११॥

२ २र ३ १ २र ३ १ २
त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः ।
२ ३१ २ ३ १ २ ३ २३ २उ ३ १ २
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वांकाष्ठास्वर्वतः ॥

१ २र ३ २ ३१ २ ३ १
स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया मह स्तवानो
२ १ २र ३क२र ३ २ ३२उ १
अद्रिवः । गामश्वं रथ्यमिन्द्र सं किर सत्रा वाजं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २
न जिग्युषे ॥१२॥

हे ऐश्वर्यवन् ! हम उपासक ज्ञानादिधन की प्राप्ति के लिए तुझे बुलाते हैं; विघ्न-बाधाओं के उपस्थित होने पर तेरे सत्यरक्षक रूप का ध्यान करते और यथाशक्ति प्रयत्न करने पर भी सफलता के लिए तुझे ही स्मरण करते हैं ॥

हे पूजनीय, साधन सम्पन्न, अदम्य इन्द्र ! स्तुति किया गया तू महान् तेजस्वी भी विघ्नों को धर्षित कर; हम में से विजय चाहते हुए को, हे इन्द्र ! देह रूप वाहन के योग्य ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियां प्रदान करं ॥१२॥

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२ १
अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे । यो
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति ॥
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
दाशुषे । गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २
पुरुभोजसः ॥१३॥

हे मनुष्यो ! तुम यथार्थ ज्ञान के लिए उत्तम (ज्ञानरूप) धन से सम्पन्न प्रज्ञाशक्ति को प्राप्त करो। वह इन्द्र (प्रज्ञाशक्ति) स्तोता के लिये (ज्ञानरूप) ऐश्वर्य से सम्पन्न, और बहुतों को बसाने वाला है और हजारों साधनों से उन्हें शिक्षा देता है ॥

वह इन्द्र अपनी धर्षणाशक्ति से, सैंकड़ों सेनाओं के पति के समान विजय लाभ करता और साधक के मार्ग का विघ्नबाधाओं को नष्ट करता है। बहुत से भोगों की खान पर्वतरूप इस सोम से ही आनन्द-रस, दान से साधकों को तृप्त करते हैं ॥१३॥

२ ३ १ २र ३ १२
त्वामिदा ह्यो नरोऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः ।
१ २ ३ १ २ ३२ ३ २ ३ १२ ३ १ २
स इन्द्र स्तोमवाहस इह श्रुध्युप स्वसरमा गहि ॥
१ २ ३ १ २ ३ १२
मत्स्वा सुशिप्रिन् हरिवस्तमीमहे त्वया भूषन्ति

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १२ ३ १२ ३ १ २ ३१ २
वेधसः । तव श्रवांस्युपमान्युक्थ्य सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ॥१४॥

हे शक्तिमन् ! साधकों ने पहले तुझे ही तृप्त किया था : तू उन साधकों की सुन और अपने घर का अधिष्ठाता बन ॥

हे ज्ञान से दीप्त, इन्द्रियवशी इन्द्र ! तू मग्न हो; इस रूप में ही हम तुझे चाहते हैं; ज्ञान से युक्त इन्द्रियों की इस स्वरूप वाले हो तुझ से शोभा है; हे स्तुत्य इन्द्र ! वाणी के स्तुतिपात्र परमसत्य की प्राप्ति के लिए किये गये यज्ञों में तेरी अन्तः प्रेरणाएं आदर्श हैं ॥१४॥

२ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा ।
३ १२ ३ २
देवावीरघशंसहा ॥
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३१ २ ३१ २
जघ्निर्वृत्रममित्रियं सस्निर्वाजं दिवेदिवे ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २
गोषातिरश्वसा असि ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३२ ३१ २
सम्मिश्लो अरुषो भुवः सूपस्थाभिर्न धेनुभिः ।
१२ ३ २उ ३ २
सीदं च्छ्येनो न योनिमा ॥१५॥

हे सोम ! तेरा जो ग्रहण करने योग्य परमानन्द है, उस जीवन तत्त्व सम्पन्न परमानन्द के समेत तू प्रवाहित हो : तू दिव्य भावनाओं का पोषक एवं पाप-भावनाओं का विनाशक है ॥

हे सोम ! तू द्वेषभावना से पूर्ण विघ्नराक्षस का विनाशक और प्रतिदिन ज्ञानबल को प्रदान करनेवाला है : इस प्रकार तू ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को शक्ति प्रदान करता है ॥

हे सोम ! तू श्येन की भांति अपने मूल स्थान में प्रवेश करता हुआ, उपासनामयी स्तुतियों से संयुक्त हो, भली भांति कान्तिरूप में प्रकट होता है ॥१५॥

३२ ३२ ३२३ ३ १ २ ३ १ २
अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२३ १ २ ३ १२३क २र ३ १२ ३२
पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद् रोदसी उभे ॥
२ ३१ २ ३ २ ३ १२ ३ १२
समु प्रिया अनूषत गावो मदाय घृष्वयः।
१ २ ३१ २र ३ १२
सोमासः कृण्वते पथः पवमानास इन्दवः ॥
१ २र३ १ २र३ १२ ३ १ २
य ओजिष्ठस्तमा भर पवमान श्रवाय्यम्।
१ २र ३ २ ३ २ ३२उ ३ १२
यः पञ्च चर्षणीरभि रयिं येन वनामहे ॥१६॥

यह पुष्टिकारक, दानयोग्य, भोग्य सोम प्रवाहित हुआ चला आ रहा है; सब प्रकार ऐश्वर्य की पर्याप्तता से युक्त इस सोम ने पृथिवी और द्युलोक—दोनों लोकों–को नया जन्म प्रदान किया है ॥

परमानन्द के लिए स्पर्धा करती हुई प्रिय इन्द्रियां जिनकी स्तुति करती हैं वे सोम आह्लादक रस रूप में बहते हुए उनकी दिशा का निर्देश करते हैं ॥

हे पवमान ! जो तेरा अत्यन्त बलयुक्त तत्त्व है उस अन्तर्नाद से प्राप्य परमानन्द से हमें परिपूर्ण

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कर; वह पांचों ज्ञानेन्द्रियों को दर्शाने वाला है; उससे ही हम ज्ञानधन को प्राप्त करते हैं ॥१६॥

१२   ३ १   २   ३२३   ३ १ २   ३
वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नां प्रतरी-
१   २र ३ २   ३ १   २र   ३ १ २   ३
तोषसां दिवः। प्राणा सिन्धूनां कलशां अचिक्रद्-
१ २ ३   १ २ ३१   २ ३ १ २
इन्द्रस्य हार्दिमाविशन् मनीषिभिः ॥

३   १ २   ३ २   ३ १   २र३२३   ३   १ २
मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परि कोशां
  ३ २   ३   १ २   ३२३   २ ३   २ ३
असिष्यदत्। त्रितस्य नाम जनयन् मधु क्षर-
१ २   ३ २   ३   १ २ ३ १ २
न्निन्द्रस्य वायुं सख्याय वर्धयन् ॥

३ १   २ ३२   ३ १ २   ३ १   २र
अयं पुनान उषसो अरोचयद् अयं सिन्धुभ्यो
  ३ २   ३२३   ३ १   २   ३ २   ३ २ ३
अभवदु लोककृत्। अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं
३   २   ३ १   २   ३   १ २   ३ २
सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः ॥१७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यह सद्‌बुद्धियों का वर्षक, क्रान्तदर्शक सोम जो प्रकाशलोक से ज्ञान की उषाओं और दिनों को लाता है, और देह की नाड़ियों में जीवन-संचार करता है, अपनी चितिशक्तियों समेत इन्द्र के हृदय-कलशों को आविष्ट कर अन्तर्नाद करता है ॥

वह सदा से वर्तमान क्रान्तदर्शी सोम चितिशक्तियों समेत परिस्रुत होता और साधकों से नियन्त्रित किया जाकर हृदय-कोशों में पहुँचता है : इस प्रकार वह जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति तीनों अवस्थाओं में विद्यमान मनःशक्ति के स्वरूप को प्रकट करता, उसको परमानन्द देता और प्राणशक्ति से उसकी मित्रता को बढ़ाता है ॥

यह क्षरित होता हुआ सोम ज्ञानोदय काल को और अधिक रोचक बना देता है, ज्ञानवाहक नाड़ियों को अधिक कान्तिमान् बनाता है । यह सोम २१ प्रकार से आनन्द रस को उत्पन्न करता हुआ हृदय में आनन्द को बहाता हुआ उत्तम रूप से क्षरित होता है ॥१७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १र २र ३ २ ३ १ र २ र ३ २ ३ २
एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः।
३ २ ३ २ ३ १ २
एवा ते राध्यं मनः ॥
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
एवा रातिस्तुवीमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः।
१ २ ३ १ २
अधा चिदिन्द्र नः सचा ॥
२ उ ३ १ २ ३ १ र २ र
मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भुवो वाजानां पते।
१ २ ३ २ ३ १ २
मत्स्वा सुतस्य गोमतः ॥१८॥

हे इन्द्र ! तू वीरों का प्रेमी, विघ्ननाशक, स्वयं शूर और दृढ़ है; तेरी मननशक्ति अनुकरणीय है ॥

हे विविध ऐश्वर्य के धनी ! सकल धारणा-शक्तियां तेरे दान को ही धारण करती हैं; फिर तू हमारा साथी है।

हे ज्ञानधन के धनी इन्द्र ! तू विशाल विज्ञान की भांति कभी आलसी नहीं होता : सदा जागरूक

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रहता है। परिस्रुत, ज्ञान-प्रकाशयुक्त परमानन्दरस में मग्न रह ॥१८॥

२ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २
इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः।
३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥
३ १ २ ३ २ ३ १ २
सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते।
२ ३ १र २र ३ १ २३१२
त्वामभि प्र नोनुमो जेतारमपराजितम् ॥
३ १ २र ३२ ३ १ २र ३१२
पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो न वि दस्यन्त्यूतयः।
३ १ २र ३ १२ ३ २ ३ १२ ३२
यदा वाजस्य गोमत स्तोतृभ्यो मंहते मघम् ॥१९॥

हृदयान्तरिक्ष में रमे हुए, सर्वश्रेष्ठ नेता, सत्यरक्षक और पालक इन्द्र को सब वाणियां बढ़ाती हैं॥

हे बली, इन्द्र! ज्ञानबल से बलवान् बने हम तेरे मित्र बनकर निर्भय हो जावें; तुझ अपराजित विजयी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

को हम नमस्कार करते है : तेरा सिक्का मानते हैं ॥

इन्द्र के दान सदा से चले आते हैं; उसकी रक्षाएं कभी नष्ट नहीं होतीं : वह अपने स्तोताओं को ज्ञान-प्रकाशयुक्त धन को प्रदान करता ही रहता है ॥१६॥

इति षष्ठः खण्डः । इति तृतीयोऽध्यायः ।

अथ चतुर्थोऽध्यायः

ऋषिः—१ जमदग्निः । २ भृगुर्जमदग्निर्वा । ३ कविः । ४ कश्यपः । ५ मेधातिथिः । ६, ७ मधुच्छन्दाः । ८ भरद्वाजः । ९ सप्तर्षयः (भरद्वाजः कश्यपो गोतमोऽत्रिविश्वामित्रो जमदग्निर्वसिष्ठः सप्तमः ।) १० पराशरः । ११ पुरुहन्मा । १२ मेध्यातिथिः । १३ वसिष्ठः । १४ त्रितः । १५ ययातिः । १६ पवित्रः । १७ सोभरिः । १८ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ । १९

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तिरश्चीः ॥ देवता—१-४,६,१०,१३-१४ पवमानः सोमः । ५,१७ अग्निः । ६ मित्रावरुणौ । ७ मरुतः । ६ (१-२) इन्द्रश्च । ८ इन्द्राग्नि । ११ –१३, १४—१६ इन्द्रः ॥ छन्दः—१--८, १४ गायत्री । ६ (३) द्विपदा विराट् । (१, २) १, ११, १३ प्रगाथः (विषमा, समा सतो बृहती) । १० त्रिष्टुप् । १२ बृहती । १५-१६ अनुष्टुप् । १६ जगती । १, प्रगाथः (विषमा ककुप् समा सतो बृहती) । ११ उष्णिक् स्वरः– १–८, १४ षड्जः । ६, ११—१३ मध्यमः । १० धैवतः । १५, १६ गांधारः । १६ निषादः । १८ ऋषभः ॥

३१ २ ३ १ २ ३२ ३ १२ ३ १ २
एते असृग्रमिन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः ।
१ २ ३ १र २र
विश्वान्यभि सौभगा ॥
३ १ २ ३ २ ३२ ३ २ ३ १ २ ३ १२
विघ्नन्तो दुरिता पुरु सुगा तोकाय वाजिनः ।
१ २ ३ २ ३ १२
त्मना कृण्वन्तो अर्वतः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ १ २ ३ २३क २र ३ २
कृण्वन्तो वरिवो गवेऽभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
इडामस्मभ्यं संयतम् ॥१॥

ये आह्लादक आनन्दरस, चुपचाप हृदय को आविष्ट करते हुए, सब सौभाग्यों को प्रदान करते प्रवाहित हो रहे हैं !

दुर्भावनाओं को दूर करते, बली, पर अल्पशक्ति वाले के लिए भी सुगमता से प्राप्य (लक्ष्य प्राप्ति के लिए) स्वयमेव शीघ्रगामी, वरणीय ऐश्वर्य को प्राप्त कराते हुए वाणी की स्तुति के भाजन बनते हैं : और हमें सुसंयत अन्तर्दृष्टि प्रदान करते हैं ॥१॥

१ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १र २र
राजा मेधाभिरीयते पवमानो मनावधि ।
३ १ २ ३ १ २
अन्तरिक्षेण यातवे ॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १र २र
आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३१ २
सुष्वाणो देववीतये ॥

१ २ ३ २३ २३ २ ३ १ ६
आ न इन्दो शातग्विनं गवां पोषं स्वश्व्यम् ।
२३ १२ ३ १२
वहा भगत्तिमूतये ॥२॥

वह प्रकाशमान सोम प्रकट होकर प्रज्ञाओं द्वारा मनःशक्ति में व्याप्त होता है और इस प्रकार वह अन्तरिक्ष में से अपना मार्ग बनाता है ॥

हे परिस्रुत किये गये सोम ! तू दिव्यता का भोग कराने तथा कान्ति प्रदान करने के लिये सहार, वेग और कान्तिमान् रूप को प्रदान कर ॥

हे आह्लादक ! तू हमारी उन्नतिगति के लिए हमें वह ऐश्वर्य भोग भुगा जो विविध ज्ञान की किरणों से युक्त, ज्ञानेन्द्रियों का पोषक है और कर्मेन्द्रियों से सुगमतया प्राप्य है ॥२॥

१ २ ३ २ ३ १२ ३१ २ ३ २ ३ २
तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं सधस्थेषु महो दिवः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १२
चारुं सुकृत्ययेमहे ॥

१२ ३क २र ३१ २ ३ १२
संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं महामहिव्रतं मदम् ।

३ १र २र ३ १ २
शतं पुरो रुरुक्षणिम् ॥

१र ३२३क २र३ १ २ ३२
अतस्त्वा रयिरभ्ययद् राजानं सुक्रतो दिवः ।

३ १ २ ३ १ २
सुपर्णो अव्यथी भरत् ॥

१ २ ३१ २ ३१र २र ३ १ २
अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे ।

३ १र २र
अभिष्टिकृद् विचर्षणिः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १२
विश्वस्मा इ स्वर्दृशे साधारणं रजस्तुरम् ।

३ २ ३२ ३ १२
गोपामृतस्य विर्भरत् ॥३॥

हम पुण्यकर्मों द्वारा व्यापक प्रकाशलोक में उस

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञानधनों के धारक सुन्दर सोम के साथ एकासनस्थ होते हैं ।।

वह सोम जो धर्षण करने वाले काम-क्रोधादि को जड़मूल से काट देता है; स्तुतियोग्य है, पूजनीय कर्मों के कारण महान है; मग्नता प्रदान करता है, और सैंकड़ों को ऊंचा उठा ले जाने वाला, उन्नति कराने वाला है ।।

इसीलिये तुझ दीप्तिमान् को, हे सुकर्मन !, प्रकाशलोक का, दानभावना से पूर्ण समग्र ऐश्वर्य प्राप्त होता है; उत्तम ज्ञान एवं शक्ति से सम्पन्न तू बड़ी सरलता से सबका पालन-पोषण करता है ।।

और अभीष्ट फलदायक, द्रष्टा तू इन्द्रियगण को प्रेरित कर भारी महत्त्व से युक्त होता है ।।

गतिशील मनःशक्ति, सबको परम सुख की प्राप्ति के लिये, सबके अज्ञान को भगाने वाले, परम-सत्य के रक्षक उस सोम को धारण करती है ।।३।।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १र २र
इन्दो रुचाभि गा इहि ॥

३ १र २र ३ २३ १२
पुनानो वरिवस्कृध्यूर्जं जनाय गिर्वणः ।

१२ ३२ ३ १२
हरे सृजान आशिरम् ॥

३ २ ३१२ ३ १२ ३ २
पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम् ।

३ २ ३ १ २३२
द्युतानो वाजिभिर्हितः ॥४॥

मनन करने वाली प्रज्ञाओं से शोधित हे आह्लादक ! तू धारा रूप में प्रवाहित हो और अपनी दीप्ति से इन्द्रियों को चमका दे ॥

हे स्तुत्य, मनोहर सोम ! तू प्रवाहित हो सर्व-भक्षक—पापवृत्तियों को भस्म कर देने वाली—दृढ़ संकल्परूप अग्नि को प्रदीप्त कर, और इस प्रकार वरणीय ज्ञानरूप ओज को उत्पन्न कर ॥

हे सोम ! इन्द्रियों द्वारा धारण किया हुआ और चमकता हुआ तू, प्रवाहित होकर, दिव्य गुणों का

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आधान करने के लिये इन्द्र को पूर्णता प्रदान कर ॥४॥

इति प्रथमः खण्डः

३ २ ३ १२ २२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा ।
३ २ ३क २२
हव्यवाड् जुह्वास्यः ॥
१२ २२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतं देव सपर्यति ।
१ २ ३ १ २
तस्य स्म प्राविता भव ॥
२ ३ २ ३१२ ३ १ २ ३ १ २
यो अग्निं देववीतये हविष्माँ आविवासति ।
१ २
तस्मै पावक मृडय ॥५॥

संकल्पाग्नि संकल्पाग्नि से ही प्रज्वलित होता है. प्रज्वलित हुआ यह अग्नि क्रान्तदर्शक, गृहरक्षक और सदा तरुण रहता है : दान-भावनाओंका वाहक और स्वयं दातास्वरूप है।

हे दिव्य ! दान-भावनाओं का धारक जो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(यजमान) दिव्यभावनाओं के संदेशवाहक तुझ अग्नि की पूजा करता है : तेरा सन्मान करता है, उसका तू विशेष रूप से रक्षक है ॥

दानभावनाओं से भरा हुआ जो यजमान दिव्यता के आधान के लिये संकल्प को पुनः पुनः (अपने अन्तःकरण में) बसाता है : उसके संस्कारों को दृढ़ करता है; उसको हे पावक ! तू सुखी कर ॥५॥

३ १ २ ३१२३ १२ ३ १२
मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् ।
३ २ ३२ ३ १ २
धियं घृताचीं साधन्ता ॥
३ १ २
ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा ।
१२ ३१ २
क्रतुं बृहन्तमाशाथे ॥
३ १ २ ३ १र २र ३ १ २३१ २
कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया ।
१ २ ३ १२
दक्षं दधाते अपसम् ॥६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पवित्रीकृत समस्वरता की शक्ति के पुंज मित्र और विवेक से पवित्र कर द्वेषभावनाओं के विनाशक वरुण को मैं पुकारता हूँ : ये दोनों एक अत्यन्त दीप्तियुक्त (ज्ञान से प्रकाशित) शक्ति-साधनरूप कर्म की पूर्णता में लगे हुए हैं ॥

परमसत्य द्वारा परमसत्य की क्रिया को बढ़ाते और परमसत्य तक पहुँचते-पहुँचाते मित्र और वरुण विशाल कार्यसाधक संकल्प शक्ति को उपयोग में लाते हैं ॥

क्रान्तदर्शी, विविध रूपों में अभिव्यक्त और विस्तार—निस्सीमता—के निवासी, मित्र और वरुण क्रियापूर्ण विवेकशक्ति से युक्त रहते हैं ॥६॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २र
इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा ।
३ १ २ ३ १ २
मन्दू समानवर्चसा ॥
१ २र ३ २क ३ १ २ ३ १ २ ३ २
आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २ ३ १ २
दधाना नाम यज्ञियम् ॥

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
वीडु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः ।

१ २ ३ २ ३ १ २
अविन्द उस्रिया अनु ॥७॥

जीवनतत्त्व भयरहित मननशक्ति के साथ संगत होता है : इस प्रकार दोनों समान कान्ति वाले होकर आनन्ददायक होते हैं।

अपने यज्ञिय स्वरूप को धारण करके इन्द्रियां, निश्चय ही अपने स्वभाव के अनुसार पुनः बीजरूप को प्राप्त हो जाती, अलक्षित हो जाती हैं।

गुह्य एवं अति दृढ़ स्थान से भी खोदकर (पीड़ित कर) निकाल ले आने वाली ज्ञाननाड़ियों के द्वारा इन्द्र ज्ञान की किरणों को प्राप्त करता है॥७॥

१ २३ १ २ ३२ ३ १र २र ३२ ३२
ता हुवे ययोरिदं पप्ने विश्वं पुरा कृतम् ।

३ १र २र
इन्द्राग्नी न मर्धतः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २३ २ ३ १ २ ३ १ २
उग्रा विघनिना मृध इन्द्राग्नी हवामहे ।
१ २ ३ १ २
ता नो मृडात ईदृशे ॥
३ २ ३ १ २३ १ २ २र
हथो वृत्राण्यार्या हथो दासानि सत्पती ।
३ २ ३ २३ १ २
हथो विश्वा अप द्विषः ॥८॥

मैं उन इन्द्र और अग्नि को बुलाता हूँ जिन की यह सदा से चला आता विश्व स्तुति करता आया है : वे इन्द्र और अग्नि कभी विनष्ट नहीं होते ॥

तेजस्वी और हिंसक दुर्भावनाओं को नष्ट करने वाले इन्द्र और अग्नि की हम स्तुति करते हैं : इस प्रकार के जीवन-संघर्ष में वे ही हमें सुखी रखते हैं ।

उन्नति के प्रेरक वे दोनों ही विघ्नों को नष्ट करते, सद्वृत्तियों के रक्षक वे दोनों लुटेरी मनोवृत्तियों को दूर करते और इस प्रकार समस्त शत्रु-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भावनाओं को परे हटाते हैं ॥

इति द्वितीय: खण्ड:

३ १र २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अभि सोमास आयव: पवन्ते मद्यं मदम् ।
३ १र २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
समुद्रस्याधि विष्टपे मनीषिणो मत्सरासो मदच्युत: ॥
१ २ ३ १र २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
तरत् समुद्रं पवमान ऊर्मिणा राजा देव ऋतं
३ २ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
बृहत् । अर्षा मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा प्र हिन्वान
३ २ ३ २
ऋतं बृहत् ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १
नृभिर्येमाणो हर्यतो विचक्षणो राजा देव:
२ ३क २र
समुद्र्य: ॥६॥

मनस्वी, स्वयं आनन्द के स्रोत और आनन्द टपका रहे ये सौम्यजन आनन्द सागर के उच्च-स्थान से हर्षकारी आनन्द को बहा रहे हैं ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विशाल परमसत्य रूप आनन्द सागर से लहरों द्वारा उछल कर आता मित्र और वरुण के गुणों द्वारा उस विशाल परमसत्य की ओर प्रेरित करता हुआ सोम हमें प्राप्त हो।

वीर साधकों से सुनियन्त्रित, प्रिय, दर्शक, तेजस्वी, दिव्य सोम आनन्दसागर से लहराता हुआ प्राप्त हुआ है ॥६॥

३ १र २र ३ १र २र ३ १ ३ ३ १र २र
तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो
३ २ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३
मनीषाम् । गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः
१ २ ३१ २ ३ २
सोमं यन्ति मतयो वावशानाः ॥
२ ३ १ २ ३१२ ३ २उ ३ १ २ ३१ २
सोमं गावो धेनवो वावशानाः सोमं विप्रा मतिभिः
३ १ २ १ २ ३१ २ ३१ २ ३ १ २
पृच्छमानाः । सोमं सुत ऋच्यते पूयमानः सोमे
३ २ ३ २३ १ २
अर्कास्त्रिष्टुभः सं नवन्ते ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
एवा नः सोम परिषिच्यमान आ पवस्व पूयमानः
३ २ २ ३ १ २ ३ १ र २ र ३ २ ३ १ २
स्वस्ति । इन्द्रमा विश बृहता मदेन वर्धया वाचं
३ २ ३ १ २
जनया पुरंधिम् ॥१०॥

वाहक सोम तीन वाणियों (इडा, सरस्वती, मही—सत्यदर्शन, सत्यश्रवण और सत्य की प्रकाशमयी व्यापकता) को प्रेरित करता है; वह परमसत्य (ऋत) को धारण करने वाली ब्रह्मबुद्धि को भी प्रेरित करता है। जिस प्रकार गौएं गोपति को खोजती हुईं दौड़ी आती हैं; वैसे ही, बुद्धियां—विविध मनःशक्तियां—कान्तियुक्त (परिष्कृत) होने की इच्छा से परमानन्द रस को खोजती हैं॥

परिष्कृत होने की इच्छा से ज्ञान रूप दुग्ध का पान कराने वाली ज्ञान दीप्तियां सोम को ढूंढ़ती हैं; खोजते हुए मेधावी जन भी अपनी विचारशक्तियों से सोम को खोजते हैं। यह सिद्ध किया

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हुआ सोम पावक होने से स्तुति का पात्र है; स्तोता जन मन, वचन और कर्म तीनों से इस की स्तुति करते हैं ॥

हे सोम ! इस प्रकार रमा जाकर पवित्र करता हुआ तू कल्याण के लिए प्रवाहित हो, विशाल मग्नता के साथ इन्द्र को आविष्ट कर, वाक्शक्ति को बढ़ा और देह रूप पुर को धारण कराने वाली चिति-शक्ति को प्रकट कर ॥१०॥

इति तृतीयः खण्डः

१र २र ३ २ ३ १र २र ३२ १
यद्यवा इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः । न
२ ३२ ३ २३ २ ३ २ ३ १२३ १२
त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्टरोदसी ॥
१ २ ३ १र २र ३ १ २ ३
आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन् विश्वा शविष्ठ
१२ ३ १ २ ३ १२ ३१र २र
शवसा । अस्माँ अव मघवन् गोमति व्रजे वज्रिं
३ १ २ ३ १ २
चित्राभिरूतिभिः ॥११॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे इन्द्र ! सैंकड़ों द्युलोक, सैंकड़ों भूमियां, हजारों सूर्य और यह ब्रह्माण्ड भी तुझ साधन-सम्पन्न को नहीं पहुँच पाते ॥

हे सुखवर्षक ! बलवन् ! तू अपनी सुखवर्षक होने की ख्याति (महिमा) और बल से सब को परिपूर्ण कर रहा है; हे ऐश्वर्यवन् ! हमें ज्ञान-प्रकाश से युक्त सुरक्षित आवास में सुरक्षित रख और हे साधन-सम्पन्न ! विभिन्न रक्षा साधनों से युक्त रख ॥११॥

३१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १२
वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।
३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवित्रस्य प्रस्नवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते ॥
१ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः ।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३
कदा सुतं तृषाण ओक आ गम इन्द्र स्वब्दीव
१ २
वंसगः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३१र २र ३ १ २
कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद् वाजं दर्षि सहस्रिणम् ।
३ १ २ ३१र २र
पिशङ्गरूपं मघवन् विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे ॥१२

हे विघ्नापहारक ! हम आनन्द जलों को चुआने की इच्छा से आनन्द के पवित्र स्रोतों पर अन्तःकरण रूप आसन बिछा कर बैठे स्तुति करते हैं ॥

हे बसाने वाले इन्द्र ! इस आनन्द साधक यज्ञ में कुछ स्तोता वीर साधक तुझे ही पुकारते हैं; प्यासा मनुष्य जैसे जल स्थान पर पहुंचता है वैसे ही तू इन्द्र कब इस यज्ञ में पहुँचेगा । वहां उत्तम जलवर्षी मेघ की भान्ति तेरा शुभागमन हो ।

स्तुतियों से दृढ़ हुआ इन्द्र सब विघ्नों को पराभूत करने की शक्ति से सम्पन्न होकर हजारों प्रकार के ज्ञान-बल को हमें दे । हे क्रांतद्रष्टा, ऐश्वर्यशालिन् इन्द्र ! अत्यन्त मनोहर एवं ज्ञान-प्रकाशयुक्त ऐश्वर्य को हम भी निरन्तर चाहते हैं ॥१२॥

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ २
तरणिरित् सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा । आ

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १र २र ३ १ २
व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रुवम् ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते न स्रेधन्तं रयिर्नशत्।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १र २र
सुशक्तिरिन्मघवं तुभ्यं मावते देष्णं यत् पार्ये
३ २
दिवि ॥१३॥

वह तारक इन्द्र ही धारण की विविध शक्तियों द्वारा ज्ञानधन को बांटना चाहता है । जिस प्रकार बढ़ई गति में सरलता के लिये पहिये पर हाल को बिठाता है वैसे ही मैं उस बहु-जन-स्तुत इन्द्र को स्तुति से तुम्हारे अनुकूल बनाता हूँ ।

ऐश्वर्य के दाता की निंदा उपयुक्त नहीं है; दुःख देने वाले को उत्कृष्ट ऐश्वर्य प्राप्त न हो । हे ऐश्वर्य-वन ! वह शुभशक्ति तुझसें सदा रहे कि पार करने योग्य प्रकाश लोक में जो देने योग्य है वह मुझ सदृश भक्त को प्रदान करा ॥१३॥

इति चतुर्थः खण्डः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः ।
१ २ ३ १ २
हरिरेति कनिक्रदत् ॥
३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अभि ब्रह्मीरनूषत यह्वीर्ऋतस्य मातरः ।
३ १ २ ३ १र २र
मर्जयन्तीर्दिवः शिशुम् ॥
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
रायः समुद्रांश्चतुरोऽस्मभ्यं सोम विश्वतः ।
१ २ ३ १ २
आ पवस्व सहस्रिणः ॥१४॥

इडा, सरस्वती और मही नाम की तीन वाणियां ऐसे प्रेरित कर रही हैं जैसे दुधार गायें (बछड़ों को) बुला रही हों; उस समय इस साम-गान के द्वारा सिद्ध होने पर वह आकर्षक सोम गड़गड़ाता हुआ हमें प्राप्त होता है।

परमसत्य की निर्मात्री, व्यापक ब्रह्मवाणियां प्रकाश लोक के उस शिशु रूप परमसत्य को स्वच्छ

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रूप में प्रकट करने के लिए सोम की स्तुति करती हैं।

हे सोम ! हमारे लिए चहुँ ओर से सहस्रों प्रकार के उत्कृष्ट ऐश्वर्य के अनेक समुद्रों में आ आ कर अन्तःकरण रूप एकत्र हो ॥ १४॥

३ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १२
सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवित्रवन्तो अक्षरं देवान् गच्छन्तु वो मदाः ॥
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन् ।
३ १र २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान ओजसः ॥
३ १ २ ३ १ २ ३ २
सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः ।
२ ३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
सोमस्पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे ॥१५॥

आनन्दी इन्द्र के लिये प्रस्तुत, मधुर सोमरस पवित्रता फैलाते हुए चतुर्दिक् में फैल रहे हैं : वे आनन्दकारक रस हमारी इन्द्रियों को दिव्य बनावें ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दिव्य इन्द्रियों की यह घोषणा है कि आह्लादक रस मनःशक्ति के लिए है । वह सम्पूर्ण बलों का अधिष्ठाता सोम उन्नति गति चाहने वाले का प्रेरक है ॥

सहस्रों धाराओं में प्रवाहित होता, प्रेरणारूप बोली बोलने वाला समस्त रसों का भण्डार, उत्कृष्ट ऐश्वर्यों का रक्षक, सोम प्रतिदिन इन्द्र का मित्र रहे ॥१५॥

३ १२ ३ १२ ३ १र २र ३ १२
पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि
३ १ २ १२ ३२उ ३ १ २ ३ २ ३
विश्वतः । अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास
१र २र ३ १र २र
इद्वहन्तः सं तदाशत ॥

१२ ३ २३ १२ ३२ ३१ २ ३ १ २३क
तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदेऽर्चन्तो अस्य तन्तवो
२र १२ ३ १२ ३ १२ ३२
व्यस्थिरन् । अवन्त्यस्य पवितारमाशवो दिवः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १र २र ३ १२
पृष्ठमधि रोहन्ति तेजसा ॥
१२ ३२३ १ २३२ ३१ २ ३ १२
अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा मिमेति भुवनेषु
३२ ३ १२ ३१२ ३१
वाजयुः । मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृच-
२ ३२३ २३ १ २
क्षसः पितरो गर्भमा दधुः ॥१६॥

हे आत्मिक चेतना के अधिपति ! तुझे पवित्र करने वाली छाननी तनी हुई है—ज्ञान से प्रकाशित मन परमानन्द को ग्रहण करने के लिये तय्यार है; प्रकट हुआ तू अंग-अंग को चारों ओर से व्याप्त कर लेता है। अपरिपक्व—कच्चा—तपस्या की भट्टी में न तपा हुआ तेरे इस आनन्द का स्वाद नहीं ले पाता; केवल वे ही जो (तप से) पक कर तय्यार हो गये हैं तेरे आनन्द को धारण करते और उसका उपयोग कर पाते हैं ॥

तपस्वी साधक की अन्तःकरण रूप छलनी प्रकाश लोक में फैली हुई है : पूजक साधक इसके

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

एक-एक भाग को स्थिर करते हैं। जो इस छलनी की रक्षा करते हैं वे शीघ्रगामी होकर अपने प्रभाव से द्युलोक की—प्रकाश लोक की—अवस्था में ऊंचे हो उठते हैं ॥

उषा की प्रथम श्रेष्ठ किरण के रूप में यह सोम चमक रहा है; ऐश्वर्य को पहुँचाने वाला यह सेचन-समर्थ अपने ऐश्वर्य को लोकों में बखेर रहा है; चितिशक्तियां इसकी ज्ञान क्रियाओं द्वारा ज्ञानवती होती हैं और पितृरूप क्रांतदर्शी साधक इसे उत्पन्न करने के विचार से गर्भ रूप में धारण करते हैं ॥१६॥

इतिः पञ्चमः खण्डः

१र २र ३ १ २ ३ २ ३१ २
प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे।
३ १ २ ३ १ २
उपस्तुतासो अग्नये ॥

१ २ ३ १ २ ३२३ २३ १ २ ३ १
आ वंसते मघवा वीरवद् यशः समिद्धो द्युम्न्या-
२ ३ १ २ ३१र २र३ २ ३ १ २
हुतः। कुविन्नो अस्य सुमतिर्भवीयस्यच्छा वाजे-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १२
भिरागमत् ॥१७॥

स्तुति से स्वयं स्तुति के पात्र बने स्तोताओ! उस परमदानशील, सत्य की ओर ले जाने वाले, महान्, विशुद्ध ज्योतिःपुञ्ज, दिव्य अग्नि के गीत गाओ।

प्रदीप्त, भली प्रकार त्यागभावना से भावित ऐश्वर्यशाली अग्नि वीरताशाली कीर्ति प्रदान करता है। बहुधा इसकी सबसे अधिक शक्तिशाली संकल्प-शक्ति हमें नाना उत्तम धनों सहित प्राप्त होती है ॥१७॥

२ ३ १२ ३ १२ ३१ २ ३२
तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृक्षु सासहिम्।
३ १२ ३ १२
उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम् ॥
३२ १२ ३२३ १२ ३१२
येन ज्योतींष्यायवे मनवे च विवेदिथ।
३ २ ३ २ ३ २३ १ २
मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
तदद्या चित्त उक्थिनोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
वृषपत्नीरपो जया दिवेदिवे ॥१८॥

हे अदम्य इन्द्र ! हम तेरे उस परमानन्द का ही बखान करें जो पोषक, संघर्षों में ठहराने वाला, लोकविजयी और ज्ञानियों के आश्रय के योग्य है ॥

जिस आनन्द से जीवनशक्ति और मननशक्ति के लिए प्रकाश की किरणें प्राप्त करते हो उसी से हर्षित होते हुए हृदयासन पर विराजमान होते हो ॥

तेरे स्तोता पहले के समान आज तक भी तेरी स्तुति करते हैं; वर्षण-सामर्थ्य का पालन करने वाली ज्ञान एवं कर्मशक्तियों पर दिन-प्रतिदिन विजय प्राप्त कर ॥१८॥

३ १र २र ३ २३ ३ १ २ ३ १ २
श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १२ २र
यस्त इन्द्र नवीयसीं गिरं मन्द्रामजीजनत् ।
३ १ २ ३ १२ ३ २ ३१ २ ३ १ २
चिकित्विन्मनसं धियं प्रत्नामृतस्य पिप्युषीम् ॥
१२ ३ २उ ३ १ २३ १ २ ३२
तमु ष्टवाम यं गिर इन्द्रमुक्थ्यानि वावृधुः ।
३१ २ ३ २ ३ १ २
पुरूण्यस्य पौंस्या सिषासन्तो वनामहे ॥१६॥

हे इन्द्र ! जो तेरी पूजा करता है उस तुच्छ की प्रार्थना को भी सुन; वीर्य-सम्पन्न, जितेन्द्रिय पुरुष को भरपूर कर दे; तू महान् है !

हे इन्द्र ! जो तेरे लिए स्तुतिपूर्ण, गम्भीर वाणी और ज्ञानशील मननशक्ति से संयुक्त, परमसत्य के प्रकाश से तृप्त करने वाली सदा से चली आई बुद्धि को प्रकट करता है...उसकी पुकार को सुन ॥

हम उसी इन्द्र की स्तुति करें जिसको स्तुति-वाणियां बढ़ा-चढ़ा बतलाती हैं; इसके नाना प्रकार के पौरुषवाही ऐश्वर्यों का सेवन करते हुए हम उसकी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्तुति करते हैं ॥१६॥

इति षष्ठः खण्डः ।

इति चतुर्थोऽध्यायः, द्वितीयश्च प्रपाठकः ।

अथ पञ्चमाऽध्यायः

ऋषिः—१ आकृष्टा माषाः । २ अमहीयुः । ३ मेध्यातिथिः । ४, १२ बृहन्मतिः । ५ भृगुर्जमदग्निर्वा । ६ सुतंभरः । ७ गृत्समदः । ८, २१ गोतमः ९, १३ वसिष्ठः । १० दृढच्युतः । ११ सप्तर्षयः (भरद्वाज-कश्यप गोतमात्रि-विश्वामित्र-जमदग्नि-वसिष्ठाः) । १४ रेभः । १५ पुरुहन्मा । १६ असितो देवलो वा । १७ (१) शक्तिः । (२) ऊरुः । १८ अग्निः । १९ प्रतर्दनः । २० प्रयोगः । २१ पावाकोऽग्निर्बार्हस्पत्यः अथर्वाग्नी, गृहपतियविष्ठौ सहसः सुतौ, तयोर्वाऽन्यतरः ॥ देवता—१-५, १०-१२, १६-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१६ पवमानः, सोमः । ६, २० अग्निः । ७ मित्रा-वरुणौ । ८, १३-१५, २१, २२ इन्द्रः । ६ इन्द्राग्नी ॥ छन्दः--१, ६ जगती । २--५, ७—१०, ७, १२, २६, १० गायत्री । ११, १५ प्रगाथः (विषमा बृहती, समा सतो बृहती) । १३ विराट् । १४ (१) अति जगती, (२, ३) उपरिष्टाद् बृहती । १७ काकुभः प्रगाथः (विषमा-कुकप् , समा सतो बृहती) । २ उष्णिक् । १६ त्रिष्टुप् । २१ अनुष्टुप् । स्वरः—१, ६, १४ निषादः । २—५, ७--१०, १२, १६, २० षड्जः । ११, १३, १५, १७ मध्यमः । १८ ऋषभः । १६ धैवतः । २१ गान्धारः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
प्र त आश्विनीः पवमान धेनवो दिव्या असृग्रन्
१ २ ३ १ २ १र २र ३ १ २
पयसा धरीमणि । प्रान्तरिक्षात् स्थाविरीस्ते
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
असृक्षत ये त्वा मृजन्त्यृषिषाण वेधसः ॥
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र
उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ १२ ३ २ ३ १ २ ३ २३ २ ३
यन्ति केतवः । यदी पवित्रे अधि मृज्यते हरिः
२ ३ १ २र ३ १ २
सत्ता नि योनौ कलशेषु सीदति ॥
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१
विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः प्रभोष्टे सतः
२र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
परि यन्ति केतवः व्यानशी पवसे सोम धर्मणा
२ ३ १ २ ३ १ २
पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि ॥१॥

हे पवमान ! तेरी सर्वतोगामिनी, दिव्य गुण विशिष्ट, ज्ञानरूप दूध दुहाने वाली किरणें ज्ञानदुग्ध के साथ सन्तोलन-साधिका समावस्था में प्रकट होती हैं; इन्द्रियों द्वारा भजन करने योग्य, हे सोम ! जो ज्ञानी तुझे साधते हैं वे अन्तःकरण से प्राप्त उन ज्ञानकिरणों को स्थिर रूप से सिद्ध करते हैं।

इधर-उधर (सब ओर) से पवमान तुझ अविचल सोम की ज्ञान रश्मियां संज्ञापक रूप में तेरे चारों

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ओर चक्कर काटती हैं; आकर्षक तू हृदय की छलनी में अथवा पवित्र अन्त:करण में अनुभव किया जाता है : तथा अपने मूल स्थान में विद्यमान रहता हुआ भी घट-घट में व्याप्त होता है।

हे सर्वद्रष्टा ! दिव्य एवं समर्थ तुझ सोम की महती ज्ञानरश्मियां संज्ञापकरूप में तेरे चारों ओर चक्कर काटती हैं; सर्वव्यापक तू सब लोकों में परिस्रुत होता है और अपनी धाक से सब भुवनों के अधिपतिरूप में विराजमान है ॥१॥

१२ ३२ ३१ २र ३२
पवमानो अजीजनद् दिवश्चित्रं न तन्यतुम् ।
१ २ ३२ ३२
ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् ॥
१२ ३ २३ २३ १ २ ३ २
पवमान रसस्तव मदो राजन्नदुच्छुनः ।
२उ ३१ २
वि वारमव्यमर्षति ॥
१२ ३ २३ २ ३ १ २ ३ २
पवमानस्य ते रसो दक्षो वि राजति द्युमान् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३क २र३ २
ज्योतिर्विश्वं स्वर्दृशे ॥२॥

प्रकाश-लोक से प्रवाहित हुआ यह परमानन्द, बिजली की भांति आकस्मिक, विचित्र, महान् एवं सार्वजनीन ज्योति को जन्म देता है।

हे दीप्तिमान् सोम ! प्रवहमान एवं निष्काम-भावनाओं के प्रेरक तुझ सोम का आनन्दी रस चिति के आवरणों में पहुँच रहा है।

प्रवहमान तेरा परमानन्द रस, ज्ञान एवं बलरूप में, कान्तिमय होकर विराजमान है : विश्वव्यापी परमसत्य को दर्शाने के लिए वह सर्वथा समर्थ है ॥२॥

२उ ३ १ २र ३२ ३ २ ३ १ २
प्र यद् गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः ।
१ २ ३ २उ ३ १२
घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम् ॥
३ १ २ ३२ ३ १२ ३क २र
सुवितस्य वनामहे ऽति सेतुं दुराय्यम् ।
३ २ ३ १ २ ३२
साह्याम दस्युमव्रतम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः ।
१ २ ३ १ २ ३ २
चरन्ति विद्युतो दिवि ॥
१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत् ।
१ २ ३ १ २
अश्ववत् सोम वीरवत् ॥
१ २ ३ २ ३ १ २र
पवस्व विश्वचर्षण आ मही रोदसी पृण ।
३ २उ ३ २ ३ १ २
उषाः सूर्यो न रश्मिभिः ॥
१ २ ३ २ १ २ ३ १ २
परि णः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
सरा रसेव विष्टपम् ॥३॥

प्रकाशपूर्ण तथा सतत भ्रमणशील किरणों की भांति इन (ज्ञान) प्रकाश के पुञ्ज एवं गतिशील सोमों ने अन्धकारमयी (अज्ञान की) काली खाल को उतार फेंकने का अद्भुत पराक्रम दिखलाया है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उस सिद्ध किये परमानन्द का सेवन करने वाला साधक मर्यादा को लांघने वाले, दुर्दमनीय, हिंसक, कर्महीन पर विजय लाभ करने में समर्थ बन।

पवमान एवं बलवान् सोम के (सुख की) वृष्टि के, शब्द के समान, घोष को मैं सुन रहा हूँ : सोम सुख का वर्षक है; प्रकाशलोक में उसकी दीप्तियां, वेग में बिजली-सी, विद्युत् वेग से फैली हुई हैं।

हे आह्लादक सोम! तू हमें वह महान् ऐश्वर्य प्रदान कर जो प्रकाश (ज्ञान), ज्योति, शक्ति (कर्म) और सतत वृद्धि की विजयशील भावनाओं से युक्त है।

जिस प्रकार उषःकाल में सूर्य अपनी किरणों से अन्तरिक्ष को भर देता है वैसे ही सब को मार्ग दिखलाने वाले सोम! तू प्रवहमान हो और इन विशाल द्युलोक और पृथिवी लोक को भरपूर करदे।

जिस प्रकार ब्रह्माण्ड की मेखला ब्रह्माण्ड को घेरे रहती है वैसे, हे सोम! कल्याणकारिणी आनन्दधारा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

के रूप में तू हमारे चारों ओर घेरा डाले रख ॥३॥

इति प्रथमः खण्डः

३ १ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २
आशुरर्ष बृहन्मते परि प्रियेण धाम्ना ।
१२ ३२उ ३ १ २
यत्र देवा इति ब्रुवन् ॥

३ १ २र ३ १२ ३२३ १ २
परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः ।
३ २ ३१ २र
वृष्टिं दिवः परि स्रव ॥

३२उ ३१ २र ३ १ २ ३ २ ३ २
अयं स यो दिवस्परि रघुयामा पवित्र आ ।
१ २ ३ १ २र
सिन्धोरूर्मा व्यक्षरत् ॥

३१ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा ।
३ १ २ ३ १ २
विचक्षाणो विरोचयन् ॥

१ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २ ३२
आविवासन् परावतो अथो अर्वावतः सुतः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २
इन्द्राय सिच्यते मधु ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
समीचीना अनूषत हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥४॥

इन्द्रियां मानो यह कहती हैं कि मननशक्ति को विशाल कर देने वाले सोम तू अपने प्रिय तेज सहित शीघ्र हमें आविष्ट कर।

परमानद, असंस्कृत (भावनाओं) को संस्कृत करता और साधकजन को ऐश्वर्य पहुँचाता हुआ प्रकाशलोक से अपनी सुखवर्षाओं को बरसाये।

यह वह सोम है जो प्रकाशलोक से शीघ्रगामी-वेगपूर्वक—जल की लहरों की भांति लहराता हुआ हृदय को आविष्ट करता है !

सिद्ध किया गया परमानन्द, वेग के कारण द्युतिमान् बना हुआ, सब कुछ दिखाता और चमकाता हुआ हृदय में पहुँच रहा है ॥

सिद्ध करने पर दूर और समीप के सभी तत्त्वों

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

को प्रकट करता हुआ यह मधुर सोम दिव्य मनः-शक्ति को पहुँचाया जा रहा है।

वशी साधक जब स्तुति करते हैं तो अपनी दृढ़ताओं से उस आकर्षक परमानन्द को अनुभवगम्य बना लेते हैं और दिव्यमन को उस आनन्द का उपभोग कराते हैं ॥४॥

३ २ ३ २३१२३ १२ ३२३ १२
हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो जामयस्पतिम् ।
३१ २र ३१२
महामिन्दुं महीयुवः ॥

१२ ३१२३ १२ ३१ २ ३२
पवमान रुचारुचा देव देवेभ्यः सुतः ।
२३ २३ १ २
विश्वा वसून्या विश ॥

१ २ ३२ ३२ ३२ ३ १२
आ पवमान सुष्टुतिं वृष्टिं देवेभ्यो दुवः ।
३१ २ ३१२
इषे पवस्व संयतम् ॥५॥

स्वयं सरणशील, प्रतिष्ठित देवियां जैसे अपने पालक पति को प्राप्त होती हैं—वैसे ही व्यापनशील

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञान किरणें महत्त्व तभी प्राप्त करती हैं जब कि वे महान् आह्लादक सोम से युक्त हो जाती हैं।

हे पवमान! दिव्य! दिव्यता चाहने वाली इन्द्रियों के लिए सिद्ध किया गया तू अपने वर्चस्व से ही सम्पूर्ण ऐश्वर्यों को प्राप्त करा।

हे पवमान! दिव्यता चाहने वाली इन्द्रियों पर प्रशस्तसुख की वृष्टि कर; ऐश्वर्य की वृद्धि केलिये उन्हें संयम की भावना प्रदान कर ॥५॥

इति द्वितीयः खण्डः

१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविरग्निः सुदक्षः

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सुविताय नव्यसे। घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा

३ १ २र २ ३ १ २
द्युमद् वि भाति भरतेभ्यः शुचिः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १२ ३१ २र
त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहाहितमन्वविन्दञ्छिश्रि-

३ १ २र १ २ ३ १२ ३ १२ ३१
याणं वनेवने। स जायसे मथ्यमानः सहो महत्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२र३ १२ ३१२
त्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः ॥

३१ २ ३१ २३२ ३१ २ ३ १ २र ३ १
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं नरस्त्रिषधस्थे

२र १२ ३२ ३२३ २ ३ २ ३ २ ३ १
समिन्धते । इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन्नि-

२र ३१२ ३१२
होता यजथाय सुक्रतुः ॥६॥

सदा जागरूक अग्नि, साधक मनुष्य की इन्द्रियों का, रक्षक बनता है; कल्याण के लिये उस वृद्धिगत बलवान् अग्नि की स्तुति करते हैं। ज्ञानदीप्तियों से स्पष्ट प्रतीयमान, उच्च प्रकाशमय लोकसे आगत, कांति से युक्त, प्रकाशित हुआ अग्नि, उस को पुष्ट करने वाले साधकों के लिए स्वयं चमक उठता है।

हे अग्ने! हृदय में छिपे तुझ अग्नि को ज्ञानीजन प्रकाश की एक-एक किरण में प्रसुप्त रूप से विद्यमान पाते हैं। उनमें से मथा जा कर, मनन किया जाकर, तू महान् बलरूप में प्रकट होता है; पुनश्च अंग-अंग

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

में व्याप्त तू बलवत्ता का वर्धक कहलाता है।

आगे ले जाने वाले जन यज्ञभावना के ज्ञापक, सर्वाग्रणी उस संकल्परूप अग्नि को—जाग्रत्-स्वप्न और सुषुप्ति—तीनों अवस्थाओं में प्रज्वलित रखते हैं; वह अग्नि दिव्य मन और दिव्यता की इच्छुक इन्द्रियों के साथ एक ही वाहनरूप देह में अन्तःकरण रूप आसन पर उपस्थित रह कर आत्मिक यज्ञ के सम्पादन के लिए सुकर्मों का प्रेरक बनता है ॥६॥

३ १ २ ३ १ २र
अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा ।
२उ ३ १ २ ३ १२
ममेदिह श्रुतं हवम् ॥

१ २ ३ १२ ३ १ २र ३१
राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे ।
३१ २
सहस्रस्थूण आशाते ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र३ १ २
ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस्पती ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३   १ २
सचेते अनवह्वरम् ॥

परमसत्य की ओर बढ़ने से बढ़ाने वाली मित्र और वरुण शक्तियो ! परमानन्द तुम्हारे लिए तैयार है; मेरे इस आह्वान को सुनो ।

हे राजाकी भांति विराजमान, चराचरमें समन्वय से निवास करने वाली मित्र और वरुण शक्तियो ! इस अविचल, उत्कृष्ट, सहस्रों स्तम्भरूप सत्कर्मों के आश्रय से टिके हुए अन्तःकरणरूप भवन में निवास करो ॥

वे तेजस्वी, ज्ञानदीप्तियों के उत्पादक, अखण्डित रहने वाले, दानभावना के संरक्षक मित्र और वरुण निष्कपट रूप से परस्पर चिर साथी बने रहते हैं ॥७॥

१ २   ३ २   ३ १ २ ३ १   २ र
इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः ।
३ १ २   ३ १ २ र
जघान नवतीर्नव ॥
३ १   २ र ३   २ उ   ३ १ २ ३   १ २
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपाश्रितम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २
तद् विदच्छर्यणावति ॥
२उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र
अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम् ।
३ २ ३ १ २ ३ २
इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥८॥

साधक आत्मा ने किसी से पराजित न हुए समाधि-सिद्ध की, फैंक कर आघात करने वाली-सी शक्तियों द्वारा (६६) सब प्रकार के विघ्नों को नष्ट कर दिया ॥

कर्मशील की दुर्गम स्थान (पर्वत) पर स्थित जिस प्रमुख, प्रेरक चिति-शक्ति को दिव्य मन ढूंढ कर पा लेना चाहता है, उस को वह गतिमत्ता में प्राप्त कर लेता है ।

चन्द्रमा के मण्डल में सूर्य की किरण का कुछ भाग अन्तर्हित है ऐसा सब मानते हैं । इसी प्रकार आह्लादक अलौकिक आनन्द के भीतर उस रचयिता का ही प्रकाश विद्यमान रहता है ॥८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २३ १ २र३ १ २ ३ १ २
इयं वामस्य मन्मन इन्द्राग्नी पूर्व्यस्तुतिः ।
३ २ ३ १ २
अभ्राद् वृष्टिरिवाजनि ॥
३ १ २३२क ३ १ २ ३ १२३ १२
शृणुतं जरितुर्हवमिन्द्राग्नी वनतं गिरः ।
३ १ २ ३ १ २
ईशाना पिप्यतं धियः ॥
१ २३ १ २ ३१ २ ३ १ २र
मा पापत्वाय नो नरेन्द्राग्नी माभिशस्तये ।
१ २ ३ २
मा नो रीरधतं निदे ॥६॥

हे इन्द्राग्नि ! तुम दोनों की इस मननशील द्वारा की गई स्तुति, मेघ से वृष्टि के समान सुखदायक रूप में प्रकट होती है।

हे इन्द्रियो ! तुम स्तोता की पुकार को सुनो और उन की स्तुतियों पर ध्यान दो; विचारशक्तियों के अधिष्ठाता होकर साधकों को तृप्त करो ॥

हे उन्नतिपथ के नेता इन्द्राग्नियो ! हमारी पाप

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भावना के लिए, हिंसक प्रवृत्ति के लिए और निन्दा करने की भावना के लिए हमें समृद्ध मत बना ॥६॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे ।
३ १ २ ३ २ ३ १ २
मरुद्भ्यो वायवे मदः ॥

२ ३१ २ ३ १ २ ३२३ ३ १ २ ३२
सं देवैः शोभते वृषा कविर्योनावधि प्रियः ।
१ २ ३ १ २
पवमानो अदाभ्यः ॥

१ २ ३ २ ३२ २उ ३ १ २
पवमान धिया हितो३ऽभि योनिं कनिक्रदत् ।
१ २ ३ २ २र
धर्मणा वायुमारुहः ॥१०॥

कर्म-प्रवीणता के साधनभूत, मनोहारी सोम ! तू दिव्य प्राणशक्तियों और गतिशील इन्द्र को परमानन्द का प्रापक है, उनके पान के लिए प्रवाहित हो ॥

दिव्यता चाहने वाली इन्द्रियों के संग वह सोम शोभायमान है तो जो स्वयं सुखवर्षक, क्रान्तद्रष्टा,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अपने मूलस्थान में स्थित रहता हुआ प्रिय और अबाधित गति से बह रहा है।

हे पवमान सोम ! तू धारणा बुद्धि के द्वारा अपने मूलस्थान में स्थापित किया हुआ, अनाहत नाद करता आता, अपने प्रताप से ही प्राणशक्ति का अधिपति बन जाता है ॥१०॥

२ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २
तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव
३ २उ ३ १ २
परिधींरति ताँ इहि ॥
१३ १ २र३१ २ ३ १ २ ३ १ २३ १२
तवाहं नक्तमुत सोम ते दिवा दुहानो बभ्र ऊधनि ।
३१ २र ३२ ३१२ ३१ २३ १ २
घृणा तपन्तमति सूर्यं परः शकुना इव पप्तिम ॥११॥

हे आह्लादक इन्द्र ! मैं तेरी मित्रता में प्रतिदिन रमण करूं—प्रसन्न रहूँ। हे भरणकर्ता ! मुझे नीचे ले जाने वाली प्रवृत्तियां बहुत सी हैं; तू इन सीमाओं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

को पार करा ॥

हे भरणकर्ता सोम ! मैं तेरे इस कोश से दिन रात आनन्दरस को दुहकर दीप्ति से अपना तेज फैलाते हुए उस प्रेरक परमात्मा को पक्षि-वेग से प्राप्त करूं ॥१२॥

३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः ॥
१ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
आ योनिमरुणो रुहद् गमदिन्द्रो वृषा सुतम् ।
३ १ २र
ध्रुवे सदसि सीदतु ॥
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
नू नो रयिं महामिन्दोऽस्मभ्यं सोम विश्वतः ।
१ २ ३ १ २
आ पवस्व सहस्रिणम् ॥१२॥

विविध रूप से दूरदर्शक सोम, प्रवाहित होकर, सब विघ्नबाधाओं को पार कर जाता है । इस प्रकार

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मेधासम्पन्न जन का (सब लोग स्तुतियों से अभिनन्दन करते हैं ॥

कान्तवर्ण सोम अपने मूल स्थान पर आरूढ होता है तो उस सिद्ध हुए सोम के प्रति समर्थ इन्द्र गति करता है : इस प्रकार सोम से आविष्ट इन्द्र एक अविचल स्थान पर स्थित रहे।

हे आह्लादक सोम ! सहस्रों सुखों से युक्त, महान ऐश्वर्य को चारों ओर से हमारी ओर प्रवाहित होने दे ॥१२॥

इति चतुर्थः खण्डः

२ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३१२ ३
पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्य-
१ २ ३ २३ २ ३ १२ ३ १३
श्वाद्रिः । सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा ॥

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३२ ३ १२ ३ १ २ ३
यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व
१ २ १ २र
हंसि । स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २   २   २ ३ २ ३   ३ १ २ ३
बोधा सु मे मघवन् वाचमेमां यां ते वसिष्ठो
१ २ ३ १ २   ३ १   २ र   ३ १ २
अर्चति प्रशस्तिम्। इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व ॥१३॥

हे इन्द्र ! इस परमानन्द को पी जा; यह तुझे आनन्दित करे; हरणशील इन्द्रियों से युक्त हे इन्द्र ! मेघ सदृश वर्षण करने वाले धर्ममेघ (समाधि) ने तेरे लिये इसे सिद्ध किया है; साधक की बाहुओं से सुनियन्त्रित यह सधे हुए घोड़े के समान तुझे सुखदायी हो।

समाधियोग से उत्पन्न तेरा जो आनन्द है, हे हरणशील इन्द्रियों से युक्त इन्द्र ! जिस साधनभूत से तू विघ्नभूत भावनाओं का वध करता है. वह परमानन्द, हे वास-समर्थ इन्द्र ! तुझे मग्न करे।

संयमी मुख्य प्राण जिस भाषा में तेरी स्तुति करता है, हे ऐश्वर्यवन् इन्द्र ! मुझे भी, उस स्तुति वाणी का भली भांति ज्ञान करा दे ॥१३॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १२ ३ १२३ १२ ३ १ २ ३ १ २
विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरः सजूस्ततक्षुरिन्द्रं
३१ २ ३ १२ २ ३ १२ ३२ ३ १ २ ३ १
जजनुश्च राजसे । क्रत्वे वरे स्थेमन्यामुरीमुतो-
२र ३१२ ३ १ २
ग्रमोजिष्ठं तरसं तरस्विनम् ॥

३ १ २ ३ १२ ३१ २र ३२
नेमिं नमन्ति चक्षसा मेषं विप्रा अभिस्वरे ।
३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २ ३
सुदीतयो वो अद्रुहोऽपि कर्णे तरस्विनः
१ २र
समृक्वभिः ॥

१२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ २र
समु रेभासो अस्वरन्निन्द्रं सोमस्य पीतये । स्वः
३ १२ ३२ ३१२ ३ ३ १ २ २३ १ २
पतिर्यदी वृधे धृतव्रतो ह्योजसा समूतिभिः ॥१४॥

उत्तम शोभा और स्थायी श्रेष्ठ क्रियाशीलता के लिए सब जन मिलकर, सब हिंसक सेनाओं क परास्त करने वाले, उनके संहारक, तेजस्वी, वेगवान्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

निरालस इन्द्र का निर्माण व उद्भव करो ॥

ज्ञानी पुरुष सम्मिलित गान में अपनी दूर दृष्टि से स्पर्धा में विजयशील सोम के सम्मुख ही सिर नवाते हैं : उसको सर्वोपरि स्वीकार करते हैं । उत्तम कांति से सम्पन्न, परस्पर द्वेषभावना से रहित, कार्य के शीघ्र सम्पादक तुम लोग स्तुति मंत्रों से भी उसी सोम की स्तुति करो ॥

स्तुति करनेवाले जन परमानन्दरस का पान करने के लिए एक साथ मिलकर इन्द्र का ही नाम लेते हैं । वह इन्द्र ही परम सुख का अधिष्ठाता है और जब दृढव्रत होता है तो अपने बल-वीर्य द्वारा तथा उन्नति-गतियों के साथ आगे ही बढ़ता है ॥१४॥

१ २र ३ २उ ३ १२ ३१ २ १ २
यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः । विश्वा-
३१ २र ३ २३ १ २३२ ३२
सां तरुता पृतनानां ज्येष्ठं यो वृत्रहा गृणे ॥

२ ३ १ ३१२३ १ २ ३१ २३१ २
इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्मन्नवसे यस्य द्विता विधर्तरि ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २
हस्तेन वज्रः प्रति धायि दर्शतो महां देवो न
२ र
सूर्यः ॥१५॥

जो इन्द्र इन्द्रियों के मध्य स्वतः प्रकाशमान इन्द्रियों का अधिष्ठाता तथा रथरूप इन्द्रियों द्वारा गमनागमन का कर्ता, सब वासनाओं का विनाशक एवं सब से बड़ा विघ्नापहारक है, मैं उस इन्द्र की स्तुति करता हूँ ॥

विविध (इन्द्रिय आदि) को वश में करने वाले, साधक! अपनी रक्षा के लिए उस इन्द्र (दिव्य मनःशक्ति) को पुकार जो धारण करनेवाले विधाता के सदृश दूसरा है; वह रक्षा के लिए अपने हाथ में शस्त्र धारण किये रहता है: साधन सम्पन्न रहता है; दर्शनीय, महान् तथा दिव्य प्रेरक सूर्य की भांति प्रेरक है ॥१५॥

इति पञ्चमः खण्डः ।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ र ३ क २ र ३ २
परि प्रिया दिवः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २
स्वानैर्याति कविक्रतुः ॥

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३१ २
स सूनुर्मातरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत् ।

३ २ ३१ २ ३१ २
महान्मही ऋतावृधा ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २
प्रप्र क्षयाय पन्यसे जनाय जुष्टो अद्रुहः ।

३क २र३ १ २
वीत्यर्ष पनिष्टये ॥१६॥

द्यु लोक एवं पृथिवी लोक से बंधा हुआ यह प्रकाश लोक का क्रान्तदर्शी सोम अपनी दशन एवं कर्मशक्ति से सम्पन्न हुआ खूब शब्दपूर्वक—घोषणा पूर्वक —अपनी प्रिय गतियां करता है ॥

वह कान्तिमान् सोम पुत्रवत् प्रकट होकर मातृ-भूत, प्रसिद्ध द्यु एवं पृथिवी लोकों का नाम उज्ज्वल करता है : वह स्वयं महान् है; द्यु और पृथिवी लोक भी विस्तृत और परम सत्य की ओर बढ़ने-बढ़ाने वाले हैं ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सोम ! प्रेमसे सेव्य एवं द्वेषभावना का विनाशक तू स्तुति करनेवाले जनको बसाने और स्तुतिरूप व्यवहार की सिद्धि के लिए ऐश्वर्य प्रदान कर ॥

२ क १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
त्वं ह्या३ङ्ग दैव्य पवमान जनिमानि द्युमत्तमः ।
३ १ २ ३ १ २
अमृतत्वाय घोषयन् ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २३ ३ १ २
येना नवग्वा दध्यङ्ङपोर्णुते येन विप्रास
३ २ ३ १ २ ३ २ २ १ ३ ३ १ २ ३ २ ३
आपिरे । देवानां सुम्ने अमृतस्य चारुणो येन
२ ३ १ २
श्रवांस्याशत ॥१७॥

सर्वाधिक कान्ति (यश) से युक्त तू सोम दिव्यता का प्रवाह बहाकर मेरे जन्म जन्मान्तरों को अमरपन का संदेश देता है ॥

ज्ञानेन्द्रियों का वशी ध्यानवान् साधक जिस के सहारे रहस्य का भेदन करता है, मेधवी जन अपने लक्ष्य को जिसके द्वारा प्राप्त करते हैं और जिस

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

साधन से साधकजन दिव्यशक्तियों के सुखमय संगम स्थान में सुन्दर अमरत्व के ज्ञान-रहस्य को प्राप्त करते हैं—वह सोम ही है ॥१७॥

१ २   ३ २   ३ २ ३   ३   २ ३   १   २
सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं वारं वि धावति ।
१ २   ३ १   २ र   ३   १ २
अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥

३ १ २   ३ २ ३   २ ३   १ २   ३ १   २
धीभिर्मृजन्ति वाजिनं वने क्रीडन्तमत्यविम् ।
३   १   २ ३ २   ३ २ ३   १ २
अभि त्रिपृष्ठं मतयः समस्वरन् ॥

१ २   ३ १ २   ३   २   ३   २ ३   ३ १   २ ३ २
असर्जि कलशां अभि मीढ्वांत्सप्तिर्न वाजयुः ।
३   १   २ र   ३ १ २
पुनानो वाचं जनयन्नसिष्यदत् ॥१८॥

परमानन्दरस जब परिष्कृत होता है तो लहराता हुआ चिति की चलनी में से निकलता है; वह अनाहत नाद से पहले वाक् शक्ति को पवित्र करता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चितिशक्तियों में से पार आये, शरीर में नाना कर्म करते-कराते बलशाली सोम को धारणावती बुद्धियों द्वारा सिद्ध करते हैं और मननशक्तियाँ जाग्रत् स्वप्न एवं सुषुप्ति—तीनों स्तरों की ओर पुकारती हैं॥

देहों में प्रकट हुआ वह आनन्दवर्षी सोम वेगवान् अश्व की भांति वेग एवं बल प्रदान करता है; सब मलों को दूर करता एवं अनाहत नाद उत्पन्न करता वह द्रवित होता है ॥१८॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १
सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता
२ ३ २ ३ १ २र३ १ २र ३ १ २
पृथिव्याः। जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य
३ १ २र
जनितोत विष्णोः॥

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २
ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनाम् ऋषिर्विप्राणां महिषो
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
मृगाणाम्। श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३२ ३१ २ ३ १२
पवित्रमत्येति रेभन् ॥

१ २ ३ २ ३२उ ३ २३ २ ३ १२
प्रावीविपद् वाच ऊर्मि न सिन्धुर्गिरस्तोमान्पव-
३ २ ३ १ २र ३२३१२३ १
मानो मनीषाः । अन्तः पश्यन् वृजनेमावराण्या
२ ३ १ २र ३२
तिष्ठति वृषभो गोषु जानन् ॥१६॥

यह सोम द्रवित हो रहा है : यह धारणाशक्तियों का प्रकट करता है; द्यौ और पार्थिव लोकों को रचता है; अग्नि, सूर्य, इन्द्र और विष्णु शब्दों से व्यवहृत शक्तियों को धारण कराता है ॥

वह सोम, जो दिव्यता की इच्छुक, इन्द्रियों का ज्ञानोद्देष्टा, क्रान्तदर्शन की इच्छुक इन्द्रियों का लक्ष्य प्रापक, कर्मशील इन्द्रियों का ज्ञान प्रेरक, अन्वेषक इन्द्रियों को बल देने वाला, आकांक्षा का पूर्ति के लिये उन्हें वेगप्रदान करने वाला और साधक इन्द्रियों में वज्र की-सी दृढ़ता एवं स्थिरता का आधायक है, वह सोम अन्तर्नाद करता हुआ अन्तःकरण को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आविष्ट कर रहा है ॥

वह सोम मनोवृत्तियों में पहुँच कर समुद्र से उठती लहरों के समान, वाणी से प्रवृत्त स्तुतियों के समूहों को प्रेरित करता है : स्तुतिवाक् का वह प्रबल प्रेरक होता है। इन्द्रियरूप गौओं में बल-वीर्य का सिंचन करने वाला वह अन्तर्द्रष्टा एवं ज्ञानवान् सोम क्षुद्र ज्ञानवृतियों को अपने वश में रखता है : उनपर नियन्त्रण रखता है ॥१६॥

इति षष्ठः खण्डः ।

३ १ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १२
अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम् ।
२ ३ २ ३ १ २
अच्छा नप्त्रे सहस्वते ॥
३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अयं यथा न आभुवत् त्वष्टा रूपेव तक्ष्या ।
३ २उ ३ १ २
अस्य क्रत्वा यशस्वतः ॥
३ १ २र ३ २उ ३ २ ३ १ २
अयं विश्वा अभि श्रियोऽग्निर्देवेषु पत्यते ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२र ३१२
आ वाजैरुप नो गमत् ॥२०॥

हे मनुष्यो ! बलशाली बन्धुत्व के लिए यज्ञों का अधिकतम विस्तार करनेवाले अग्निको प्राप्त होओ ॥

जिस प्रकार बढ़ई गढ़ने योग्य विविध आकृतियों को प्रकट करता या रचता है उसी प्रकार यह अग्नि ही सब का रचियता है। इसकी सब रचनाएं वैसी ही हैं जैसी कि एक यशस्वी की होनी चाहिएं : दिव्य संकल्प अपनी विशिष्ट रचनाओं के कारण ही यशस्वी है।

यह अग्नि इन्द्रियों में सब प्रकार की शोभाओं को धारण कराता है। वह सब बलों सहित हमें प्राप्त हो ॥२०॥

३१ २ ३ १ २३ २३१२ ३ १२
इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम् ।
३१ २ ३क २र ३ १२ ३ २ ३ १२
शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारा ऋतस्य सादने ॥
२ ३ २ ३१२३ २ ३ १२ ३ १ २
न किष्ट्वद् रथीतरो हरी यदिन्द्र यच्छसे ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २
न किष्ट्वानु मज्मना न किः स्वश्व आनशे ॥
१ २ ३१ ३ १ २
इन्द्राय नूनमर्चतोक्थानि च ब्रवीतन ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सुता अमत्सुरिन्दवो ज्येष्ठं नमस्यता सहः ॥२१॥

हे इन्द्र ! इस सर्वोत्कृष्ट अमरता प्रदान करने वाले दिव्य आनन्द का उपभोग कर; परमसत्य की प्राप्ति के प्रयत्न में ज्ञान की निर्मल धाराओं ने इसे तेरे लिए बनाया है ॥

हे इन्द्र ! तुझसे अधिक श्रेष्ठ रथवाहक और कौन है ! तू तो इन ज्ञान और शक्ति के घोड़ों (ज्ञानेन्द्रिय एवं कर्मेन्द्रियों) को वश में रखता है। बल में भी तेरे समान कोई नहीं है और भली प्रकार व्यापनशील तू व्यापनशीलता अथवा वेग में सब से बढ़कर है।

वह इन्द्र ही है जिसकी उपासना करनी चाहिए; उसके ही गीत गाने चाहिएं : साधित दिव्य

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आनन्द उसी को प्रसन्न करते हैं; उसके ज्येष्ठ बल के सम्मुख सिर झुकाओ ॥२१॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्र जुषस्व प्र वहा याहि शूर हरिह ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ र ३ २ उ ३ १ २
पिबा सुतस्य मतिर्न मधोश्चकानश्चारुर्मदाय ॥
१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
इन्द्र जठरं नव्यं न पृणस्व मधोर्दिवो न ।
३ २ ३ २ ३ २ क १ २ ३ १ २ ३ १ २
अस्य सुतस्य स्वा३र्नोप त्वा मदाः सुवाचो अस्थुः ॥

१ २ ३ २ ३ २ उ ३ १ २ ३ २ उ ३ १ ३ १ २
इन्द्रस्तुराषाण्मित्रो न जघान वृत्रं यतिर्न । बिभेद
३ २ उ ३ १ २ ३ २ उ ३ २ ३ १ २
बलं भृगुर्न ससाहे शत्रून् मदे सोमस्य ॥२२॥

हे इन्द्र ! तू आनन्दरस को सेवन कर, आगे बढ़; इन्द्रियरूप अश्वों के प्रेरक, बलशालिन् ! आ; ज्ञानवान् की भांति माधुर्य की कामना करता हुआ मनोहर तू मग्नता के लिए साधित किये आनन्दरस

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

का पान कर ॥

हे इन्द्र ! प्रकाशलोक से सिद्ध किये इस मधुरूप आनन्द से तू अपने अन्तर्देश को भली भांति (स्तुत्य रूप में) परिपूर्ण करले; इसके आनन्द परमसुखरूप होकर वाणीरूप में प्रकट हों ॥

वह इन्द्र वृत्तियों में समस्वरता के उत्पादक की भांति हिंसक वृत्तियों का निरोधक तथा वशी के समान काम आदि विघ्नों को नष्ट करता है; योगी के समान घेरने वाली वृत्तियों के घेरे को तोड़ता है : इस प्रकार वह शत्रुओं का दमन करता और परमानन्द में मग्न रहता है ॥२२॥

इति सप्तमः खण्टः । इति पञ्चमोऽध्यायः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ षष्ठोऽध्यायः

ऋषिः—१ त्रय ऋषयः। २ कश्यपः। ३, ४, १३ असितो देवलो वा। ५ अवत्सारः। ६, १६ जमदग्निः। ७ अरुणः। ८ उरुचक्रिः। ९ कुरुसुतिः। १० भरद्वाजः। ११ भृगुर्जमदग्निर्वा। १२ सप्तर्षयः (भरद्वाज–कश्यप–गोतम–अत्रि–विश्वामित्र–जमदग्नि–वसिष्ठाः)। १४, १५, २३ गोतमः। १७ (१) ऊर्ध्वसद्मा (२) कृतयशाः। १८ त्रितः। १९ रेभसूनू। २० मन्युः २१ वसुश्रुतः। २२ नृमेधः॥ देवता—१—६, ११—१३, १६—२० पवमानः सोमः। ७, ११ अग्निः। ८ मित्रावरुणौः। ९,१४,१५ २२, २३ इन्द्रः। १० इन्द्राग्नी॥ छन्दः—१, ७ जगती २—६, ८–११, १३, १६ गायत्री। १२ बृहती। १४, १५, २१ पङ्क्तिः। १७ काकुभः प्रगाथः (विषमा ककुप् समा सतोबृहती) १८, २२ उष्णिक्। १९, २३ अनुष्टुप्। २० त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ७ निषादः। २—६, ८—११, १३, १६ षड्जः। १२ मध्यमः।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१४, १५, २१ पञ्चमः। १७ ऋषभः मध्यमश्च क्रमेण। १८, २३ ऋषभः। १६, २३ गान्धारः। २० धैवतः ॥

३ १२ ३१ २ ३१ २३ १ २ ३
गोवित् पवस्व वसुविद्धिरण्यविद्रेतोधा इन्दो
१२ ३ १ २ २ ३ २ २ ३ २उ
भुवनेष्वर्पितः। त्वं सुवीरो असि सोम विश्ववित्
३ २३ १२ ३१ २र
तं त्वां नर उप गिरेम आसते ॥

२ ३१ २ ३ २३ १२ ३
त्वं नृचक्षा असि सोम विश्वतः पवमान वृषभ
१ २र १ २ ३ १२३ १२
ता वि धावसि। स नः पवस्व वसुमद्धिरण्यवद्
३१ २३ १२ ३ १२
वयं स्याम भुवनेषु जीवसे ॥

३ २ ३१ २र ३ १२ ३१ २ ३ १२
ईशान इमा भुवनानि ईयसे युजान इन्दो हरितः
३क२र १ २ ३ १२ ३२उ ३ १२
सुपर्ण्यः। तास्ते चरन्तु मधुमद् घृतं पयस्तव

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २
व्रते सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः ॥१॥

हे आह्लादक ! तू ज्ञान-प्रकाश को पहुँचाने वाला, ऐश्वर्यदाता, ज्योति और बल-वीर्य को धारण कराने वाला सब भुवनों में विद्यमान है; परिस्रुत हो।

हे सोम ! तू विजयशील एवं सर्वगत है : ये सब जन ऐसे तुझ सोम की अपनी वाणी से उपासना करते हैं ॥

हे सोम ! तू नेतृत्व करनेवाली इन्द्रियों का दर्शक है। हे समर्थ ! चारों ओर से बहकर तू उन की ओर दौड़ता है; वह तू ऐश्वर्य एवं ज्योति के साथ हमें प्राप्त हो; इस प्रकार हम विविध अवस्थाओं में जीवन धारण करने में समर्थ बनें ॥

हे आह्लादक ! तू ले चलने वाली, सुष्ठुतया गमन करने वाली इन्द्रियों को वश में रखता हुआ, सब अवस्थाओं में अधिष्ठाता बन कर, उन्हें प्रेरित करता है; इस प्रकार तुझ से प्रेरित इन्द्रियां, तेरे मधुर एवं दीप्तियुक्त आनन्दरस को प्राप्त करती हैं :

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सोम ! वे श्रमशील तेरी व्यवस्था में रहें ॥१॥

१२ ३ २ ३ १२
पवमानस्य विश्ववित् प्र ते सर्गा असृक्षत ।
१२ ३ २ ३ १२
सूर्यस्येव न रश्मयः ॥
३२ ३ २ ३२उ ३ १ २ ३ १ २
केतुं कृण्वं दिवस्परि विश्वा रूपाभ्यर्षसि ।
३ १ २
समुद्रः सोम पिन्वसे ॥
३ १ २र ३ १२ ३ १२
जज्ञानो वाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि ।
१ २ ३ १ २र
क्रन्दं देवो न सूर्यः ॥२॥

परिस्रुत होकर सब को आविष्ट करने वाले सोम ! सूर्य की किरणों के सदृश तुझ प्रेरक की ज्ञान रश्मियां, विविध रचनाओं (रूपों) में प्रकट होती हैं ॥

रस की खान—समुद्ररूप—सोम ! तू प्रकाशलोक से (आकर) प्रज्ञान की सृष्टि करता हुआ समस्त रूपों को आविष्ट करता है : और इस प्रकार सब को तृप्त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करता है ॥

हे पवमान ! तू प्रज्ञान की सृष्टि करके अन्तःकरण को आविष्ट करता और वाणी को प्रेरित करता है : तुम्हारी प्रेरणा उसी प्रकार की होती है जैसे कि दिव्य सूर्य जगत् को कर्मों के लिए प्रेरित करता है ॥२॥

१ २र ३ १२ ३ १ २
प्र सोमासो अधन्विषुः पवमानास इन्दवः ।
३ २ ३ १ २
श्रीणाना अप्सु वृञ्जते ॥
३ १ २र ३ २ ३ २ ३१२ ३ १
अभि गावो अधन्विषुरापो न प्रवता यतीः ।
३ १ २र
पुनाना इन्द्रमाशत ॥
१ २ ३ १ २र ३ १२
प्र पवमान धन्वसि सोमेन्द्राय मादनः ।
१ २३ १ २र
नृभिर्यतो वि नीयसे ॥
२ ३ १ २र ३२ ३ १२ ३ १ २
इन्दो यदद्रिभिः सुतः पवित्रं परिदीयसे ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ १ २
अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्वं सोम नृमादनः पवस्व चर्षणीधृतिः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
सस्नियों अनुमाद्यः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवस्व वृत्रहन्तम उक्थेभिरनुमाद्यः ।
१ २ ३ १ २र
शुचिः पावको अद्‌भुतः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतः स मधुमान् ।
३ १ २ ३ २
देवावीरघशंसहा ॥३॥

परिस्रुत एवं आह्लादक सोम प्रेरक शब्द करते हैं—भली भान्ति प्रेरणा प्रदान करते हैं; वे परिपक्व बनाकर कर्मों में प्रगति उत्पन्न करते हैं ॥

जलों की भांति उत्तम मार्ग से— प्रवाहरूप में— चलते सोम इन्द्रियों को प्रेरित करते हैं; वे इन्द्रियों में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

परिस्रुत होकर मनःशक्ति तक पहुँच जाते हैं ॥

इन्द्र का आह्लादक सोम तू परिस्रुत होता, प्रेरणा करता आता है; रोका जाने पर ले जाने वाली इन्द्रियों में व्यवस्थित हो जाता है ॥

हे आह्लादक ! तू पर्वत के समान स्थिरप्रज्ञों द्वारा सिद्ध किया हुआ, अन्तःकरण की चलनी में समर्पित हो रहा है : मनःशक्ति के आधान के लिए तू सर्वथा समर्थ है ॥

हे सोम ! तू नेता इन्द्रियों का आह्लादक है, परिस्रुत हुआ तू सब का आवेष्टनकर्ता होकर आह्लाद को उत्पन्न करता है ॥

विघ्नों को भली भांति नष्ट करने वाले सोम परिस्रुत हो; स्तुतियों से ही तेरा रस प्राप्त होता है; तू स्वयं शुद्ध एवं अद्भुत शोधक है ॥

वह सिद्ध किया गया, मधुर, रसीला सोम शुद्ध एवं शोधक कहा गया है; वह दिव्य गुणों का आधायक एवं पाप प्रशंसा के संस्कारों तक को मिटा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

देता है ॥७॥

इति प्रथमः खण्डः ।

२ ३२ ३१ २ ३२ ३ १२
प्र कविर्देववीतयेऽव्या वारेभिरव्यत ।
३ १ २र ३ १ २र
साह्वान् विश्वा अभि स्पृधः ॥
१ २र ३२ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
स हि ष्मा जरितृभ्य आ वाजं गोमन्तमिन्वति ।
१२ ३ १ २
पवमानः सहस्रिणम् ॥
२ ३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १२ ३ २
परि विश्वानि चेतसा मृज्यसे पवसे मती ।
१ २ ३ १ २
स नः सोम श्रवो विदः ॥
३क २र ३१ २र ३१२ ३ २ ३ २
अभ्यर्ष बृहद्यशो मघवद्भ्यो ध्रुवं रयिम् ।
१२ ३ २ ३ १ २
इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥
१ २र ३ १ २र ३ १ २
त्वं राजेव सुव्रतो गिरः सोमाविवेशिथ ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २
पुनानो वह्व अद्भुत ॥
१ २र३ २ ३१२ ३ १ २ ३ १२
स वह्निरप्सु दुष्टरो मृज्यमानो गभस्त्योः ।
१ २ ३ १ २
सोमश्चमूषु सीदति ॥
३ २ ३ १ २र३ २ ३ १ २
क्रीडुर्मखो न मंहयुः पवित्रं सोम गच्छसि ।
१ २ ३ २ ३ १ २
दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥४॥

दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए क्रान्तदर्शी सोम को चिति के आवरणों में से शुद्ध किया जाता है : इस प्रकार परिशुद्ध सोम सब प्रतिस्पर्धी विघ्नों को पराजित करने में समर्थ बना देता है ।

परिस्रुत हुआ वह सोम उपासकों को ज्ञान-प्रकाश से सम्पन्न पोषकधन पहुंचाता है ॥

हे सोम ! तू चितिशक्ति का उद्बोधन कर सब का मार्जन करता है : मनोवृत्तियों के पापादि मल को दूर हटाता है; और चेतना को पवित्र करता है; वह

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तू सोम हमें अन्तर्ज्ञान प्राप्त करा।

हे सोम! तू विशाल कीर्तिसम्पन्न बन; ऐश्वय चाहने वालों को स्थिर आध्यात्मिक ऐश्वर्य और साधक स्रोताओं को प्रेरणारूप अन्न से भरपूर करदे।

हे विचित्र वाहक सोम! तू परिस्रुत होकर, शोभन व्यवस्थापक राजा की भांति व्यवस्थापक बन कर इन्द्रियों को आविष्ट कर॥

वह कर्मों में प्रवेश कराने वाला—कर्म प्रेरक, अजेय, ज्ञान एवं कर्म की शोधक किरणों में से शुद्ध किया गया सोम हृदयों को आविष्ट करता है।

सचेष्ट, त्याग की पवित्र भावना की भांति पूजा की भावना को लाने वाला तू सोम! स्तोता को कार्य करने में समर्थ बनाता हुआ अन्तःकरण की चलनी में पहुँचता है॥४॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
यवंयवं नो अन्धसा पुष्टंपुष्टं परि स्रव।
१ २ ३ १ २
विश्वा च सोम सौभगा॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
नि बर्हिषि प्रिये सदः ॥
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
उत नो गोविदश्ववित् पवस्व सोमान्धसा ।
३ १ २ ३ १ २
मक्षूतमेभिरहभिः ॥
२ ३ २ ३ १ २र३ २ ३ १ २ ३ १ २
यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रमभीत्य ।
१ २
स पवस्व सहस्रजित् ॥५॥

हे सोम ! जौ-जौ को तू प्राण-शक्ति से भरपूर करदे : हमारी गति का तिल-तिल शक्ति से भरापूरा हो; और इस प्रकार हमें विश्व भर का सौभाग्य प्राप्त रहे ।

प्राणशक्ति धारक तुझ सोम की स्तुति और प्रसिद्धि यथार्थ हैं; तू अपने प्रिय, हमारे अन्तःकरण रूप आसन पर विराजमान हो ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञान एवं कर्मशक्ति लाभ कराने वाले सोम ! तू अधिक से अधिक एकत्रित गति से, हमें प्राणशक्ति प्रदान कर ॥

जो सोम, जीतता है, कभी पराजित नहीं होता; और सम्मुख आकर दुर्भावनारूप शत्रु को मारता है; हज़ारों विघ्न-बाधाओं का विजयी, वह सोम, हमें प्राप्त हो ॥५॥

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
यास्ते धारा मधुश्चुतोऽसृग्रमिन्द ऊतये ।
१ २ ३ २ ३ १ २
ताभिः पवित्रमासदः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
सो अर्षेन्द्राय पीतये तिरो वाराण्यव्यया ।
१ २ ३ २ ३ २ ३ २
सीदन्नृतस्य योनिमा ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्वं सोम परि स्रव स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः ।
३ २ ३ १ २र
वरिवोविद् घृतं पयः ॥६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सोम ! तेरी जिन मधुर धाराओं का उन्नति-गति के लिए निर्माण हुआ है; उन धाराओं के रूप में तू हमारे हृदय की चलनी में स्थिर रह ॥

वह तू हे सोम ! इन्द्र के पान के लिए मनःशक्ति के उपयोग के हेतु - चिति के आवरणों को चुपचाप पार कर जा; और परमसत्य रूप मूल स्थान में रहता हुआ, प्रकट हो ॥

हे स्वादिष्ट सोम ! तू साधकों के लिए अभीष्ट सुखप्रापक, दीप्तियुक्त, दुग्धरूप परमानन्द को परि-स्रुत कर ॥

इति द्वितीयः खण्डः

२ ३ १ २ ३क२र ३ २ ३ १ २ ३१
तव श्रियो वर्ष्यस्येव विद्युतोऽग्नेश्चिकित्र उष-
२ ३ १ २ १र २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सामिवेतयः । यदोषधीरभिसृष्टो वनानि च परि-
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
स्वयं चिनुषे अन्नमासनि ॥
१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
वातोपजूत इषितो वशाँ अनु तृषु यदन्ना वेविषद्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १२ १ २ ३ २ २ ३
वितिष्ठसे । आ ते यतन्ते रथ्योऽ३ यथा पृथक्
१ २ ३१२ ३ १२
शर्धांस्यग्ने अजरस्य धक्षतः ॥
३ २ ३१२ ३ १ २ ३ १ २र ३
मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनमग्निं होतारं परि-
१२ ३ २ १ २र ३ १२ ३२उ
भूतरं मतिम् । त्वामर्भस्य हविषः समानमित्-
३१ २ ३ २
त्वां महो वृणते नान्यं त्वत् ॥७॥

जिस प्रकार बरसने वाले बादल की पहचान बिजली की कौंध से और अन्धकार विनाशक उषाओं की पहचान फैलने वाली किरणों से होती है, वैसे ही, तुझ ज्ञानवान् अग्नि की पहचान कराने वाली तेरी विभूतियां हैं। भौतिक अग्नि को छूट देने पर वह वनस्पतियों और वनों—छोटे-बड़े सब काष्ठों—को अपने मुख का अन्न बना लेता है : वैसे यह अग्नि अपना भोज्य स्वयं एकत्र करता है ॥

प्राणशक्ति से प्रेरित, अभीष्ट वस्तुओं में पहुँचकर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शीघ्र ही अपने अन्नभूत विषयों में व्याप्त हो उनमें स्थिर हो जाता है : जो जन इस इन्द्रियादि सम्पन्न रथरूप देह के उत्तम सवार हैं वे अजर एवं जाज्वल्यमान अग्नि के बलों को अनुरूप कार्यों में पृथक्-पृथक् प्रयुक्त करते हैं।

पवित्र बुद्धिरूप, यज्ञ को संवारने वाले, स्वयं यज्ञ कर्ता, अपनी सत्ता को भली भांति अनुभव कराने वाले चिति शक्तिरूप तुझ अग्नि को ही, दूसरे किसी को नहीं, छोटी-बड़ी सब आहुतियों, त्याग भावनाओं की समान रूप से स्थापना के लिए स्वीकार करते हैं ॥७॥

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
पुरूरुणा चिद्ध्यस्त्यवो नूनं वां वरुण ।
२ ३ १ २ ३ २
मित्र वंसि वां सुमतिम् ॥
१ २ ३ १२ ३ १२ ३ १ २
ता वां सम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धाम च ।
३ १ २
वयं वां मित्रा स्याम ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
पातं नो मित्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
साह्याम दस्यूं तनूभिः ॥८॥

हे वरुण और मित्र शक्तियो ! तुम्हारा विशाल रक्षण सामर्थ्य, अपार सुख सहित हमें प्राप्त हो; तुम दोनों उत्तम ज्ञान के प्रदाता हो ॥

उन तुम दोनों से कभी द्रोह न करके हम तुम से प्रेरणा और तेज को प्राप्त करें : हम तुम्हारे मित्र रहें ॥

हे मित्र और वरुण साथियो ! तुम दोनों अपने सब दोष दूर करने वाले साधनों द्वारा हमें दोषों से बचाओ और रक्षासाधनों द्वारा हमारी रक्षा करो; जिससे कि हम अपने शरीरों द्वारा हिंसक भावनाओं को पराजित कर सकें ॥८॥

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वा शिप्रे अवेपयः ।
१ २ ३ २ ३ २
सोममिन्द्र चमू सुतम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २ ३ १ २र
अनु त्वा रोदसी उभे स्पर्धमानमददेताम् ।
२ ३ १ २ २ ३ १ २
इन्द्र यद् दस्युहाभवः ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतावृधम् ।
२ ३ १ २ ३क २र
इन्द्रात् परि तन्वं ममे ॥६॥

हे इन्द्र ! शरीर रूप कटोरे में रक्षित सोम को पीकर तू अपने वीर्य से इतनी उन्नति कर कि तेरा अंग-अंग स्फूर्तिमान् हो उठे ।

हे इन्द्र ! तू हिंसक शत्रु भावनाओं को नष्ट करने में समर्थ हुआ है अतएव उन्नति में आगे बढ़ते हुए तुझ इन्द्र का अन्तरिक्षस्थ सब जन स्वागत करें ॥

मैं इन्द्र से फैली चार वेद एवं चार उपवेद रूप आठ चरणों वाली तथा शिक्षा-कल्प आदि नौ प्रकार की रचना वाली, परमसत्य की ओर गति कराने वाली वाणी का ज्ञान प्राप्त करता हूँ ॥६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ २ १ २ र
इन्द्राग्नी युवामिमे३ऽभि स्तोमा अनूषत ।
१ २ ३ २
पिबतं शम्भुवा सुतम् ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा ।
१ २ ३ २ ३ १ २
इन्द्राग्नी ताभिरा गतम् ॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ र ३ २
ताभिरा गच्छतं नरोपेदं सवनं सुतम् ।
१ २ ३ १ २
इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥१०॥

हे इन्द्र तथा अग्नि ! ये स्तुति वचन तुम्हें लक्ष्य करके कह गये हैं : हे कल्याणकारियो ! तुम दोनों स्तुतिरस का पान करो ॥

हे नेतृगुण से युक्त इन्द्र ! तथा अग्नि ! तुम्हारे जो सर्वप्रिय गुण समर्पक साधक के लिए हैं उनके सहित आओ !

हे नेताओ ! परमानन्द रस का पान करने के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

लिए, अपने स्पृहणीय गुणों को साथ लिये हुए, इस साधित यज्ञ में आओ।

इति तृतीयः खण्डः

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत्।
२ ३ २ ३ २ ३ २
सीदन् योनौ वनेष्वा ॥
३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अप्सा इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः।
१ २ ३ १ २
सोमा अर्षन्तु विष्णवे ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
इषं तोकाय नो दधदस्मभ्यं सोम विश्वतः।
१ २ ३ १ २
आ पवस्व सहस्रिणम् ॥११॥

अतिशय उजाला फैला देने वाले सोम! तू अन्तर्नाद करता हुआ हमारी इन्द्रियों में व्याप्त हो जा; इस प्रकार अपनी भक्त इन्द्रियों को अपना सुख-स्थान बना ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कर्म शीलता प्रदान करने वाले परमानन्द रस क्रमशः इन्द्र वायु (प्राण), वरुण, मरुत्, और अन्ततः, व्यापक शक्तियों के आधान करने के लिए हमें प्राप्त हों।

हे सोम! वृद्धि के लिए हमें चारों ओर से सहस्रों सुखों से युक्त ज्ञानान्न प्रदान करो ॥११॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ ३ २
सोम उ ष्वाणः सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम् ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति
१ २
धारया ॥

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः सोमो दुग्धाभिरक्षाः ।
३ २उ ३ १ २ ३ १ २र
समुद्रं न संवरणान्यग्मन् मन्दी मदाय
तोशते ॥१२॥

हे सोम! तू साधकों द्वारा चितियों के मार्गों

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

द्वारा सवन किया जा कर, अतिगतिशील और अति आह्लादक धारा के रूप में प्रकट होता है ॥

जैसे, गोपाल दुही हुई गायों को लेकर उन्हें पुनः सम्पन्न करने के लिये जल भरे प्रदेशों में पहुँचते हैं, वैसे ही आनन्द का साधक, जलों के भंडार समुद्र सदृश आनन्द के भंडार के पास, निरानन्द इन्द्रियों को लेकर, पहुँचता है। वह आह्लादक आनन्द के लिए ही सिद्ध किया जाता है।

१ २ ३ २ ३क २र ३ १ २र३ १ २
यत्सोम चित्रमुक्थ्यं दिव्यं पार्थिवं वसु ।
१ २ ३ १ २र
तन्नः पुनान आ भर ॥

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
वृषा पुनान आयूंषि स्तनयन्नधि बर्हिषि ।
२ ३ २उ ३ १ २
हरिः सन् योनिमासदः ॥

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
युवं हि स्थः स्वःपती इन्द्रश्च सोम गोपती ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ ३२
ईशाना पिप्यतं धियः ॥१३॥

हे सोम ! जो विचित्र, प्रशंसनीय, दिव्य और पार्थिव धन है, परिस्रुत होता हुआ तू, उससे हमें भरापूरा कर ॥

हे वर्षणसमर्थ ! हमारे जीवनों को पवित्र करता तथा प्रेरणा करता हुआ तू, दुःखहारी एवं आकर्षक बनकर, हृदयान्तर में सुखासन प्राप्त कर ॥

हे इन्द्रियों के वशी इन्द्र और सोम ! तुम दोनों परमसुख के पालक बनो; बुद्धियों के अधिष्ठाता बन कर हमें तृप्त करो ॥१३॥

इति चतुर्थः खण्डः ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ र
इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः ।
२ उ ३ २ ३ २ ३ १ २ र ३ १ २ र ३ १
तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र
१
णोऽविषत् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २३ २३ ३ १ २ ३ २
असि हि वीर से योऽसि भूरि पराददिः ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २र
असि दभ्रस्य चिद् वृधो यजमानाय शिक्षसि ।
३ १ २र ३ १ २
सुन्वते भूरि ते वसु ॥

२३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम् ।
३ १ २३ २ ३ २ ३ २३ ३ १ २र ३
युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधो
१ २ ३ १ २
ऽस्माँ इन्द्र वसौ दधः ॥१४॥

विघ्न विध्वंसक इन्द्र अपने साथियों (इन्द्रियों) सहित परमानन्द रूप बल की प्राप्ति के लिए उन्नति करता है; उस इन्द्र को ही हम अपने, छोटे-बड़े, सब संघर्षों में रक्षार्थ स्मरण करते हैं : वह ज्ञान-यज्ञों में हमारी रक्षा करता है ॥

शत्रुभूत भावनाओं को जीतने वाले वीर ! तू

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

साथियों सहित है : अकेला नहीं है। बहुतों को पराजित करता है। छोटे-से-छोटे सद्गुण को बढ़ाता है; यज्ञ करने वाले साधक को अपना बहुत सा ऐश्वर्य प्रदान करता है।

जीवन-संघर्ष में सब बाधाओं का पराभव करने वाले साधक को ही ऐश्वर्य प्राप्त होता है। हे इन्द्र ! जब तेरी ज्ञान-कर्मेन्द्रियां आनन्द में विभोर हुई तेरी सहायक एवं तेरे वश में होती हैं तो, तू सब विघ्नों को नष्ट कर हमें ऐश्वर्य-सम्पन्न कर देता है ॥१४॥

३ २ ३   १   २ ३ २ ३   १ २   ३ क २ र
स्वादोरित्था विषूवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यः ।
१   २ र   ३ १ २ ३ २   ३   १ २   ३ २ ३
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभथा
२ ३ १ २   ३ १ २
वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥

१   २   ३ २ ३   १ २   ३ १ २
ता अस्य पृशनायुवः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र ३२३ १ २ ३ १२३
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सायकं
२ ३१२ ३१ २
वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥
१ २ ३ १२३ १२ ३२ ३ १२
ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः ।
३ १ २ ३१ २ ३१ २ ३ २ ३ १२
व्रतान्यस्य सश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये । वस्वीरनु
३ १ २
स्वराज्यम् ॥१५॥

इन्द्रियां, तृप्ति कारक एवं सिद्ध किये गये परमानन्द का पान करती हैं और इस प्रकार बली इन्द्र के साथ-साथ बलवती बनी हुई प्रसन्न होती हैं; पश्चात् ऐश्वर्य-सम्पन्न वे इन्द्रियां स्वराज्य—अपने स्वाभाविक तेज—से शोभायमान होती हैं ॥

वे इन्द्रियां इन्द्र का संग चाहती हैं अतएव चमकीली किरणरूप इन्द्र की प्रिय वे इन्द्रियां ज्ञानरस को परिपक्व करती हैं; इस प्रकार ऐश्वर्यसम्पन्न वे इन्द्रियां स्वाभाविक शोभारूप, दुःखों का अन्त करने

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वाले साधन को प्रेरित करती हैं।

वे प्रज्ञानयुक्त इन्द्रियां अपनी वशवर्तिता से इस इन्द्र के बल को और अधिक बढ़ाती हैं : इस प्रकार वे ऐश्वयसम्पन्न इन्द्रियां पूर्ण-ज्ञान-प्राप्ति के लिए इसके विविध कर्मों में सहायक होती हैं और स्वाभाविक शोभा को प्राप्त करती हैं ॥१५॥

इति पञ्चमः खण्डः।

१ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ २
असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः ।
३ २उ ३ १ २
श्येनो न योनिमासदत् ॥
३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १
शुभ्रमन्धो देववातमप्सु धौतं नृभिः सुतम् ।
१ २ ३ २ ३ १ २
स्वदन्ति गावः पयोभिः ॥
२ ३ २ ३ १ २र३१२ ३ १ २
आदीमश्वं न हेतारमशूशुभन्नमृताय ।
२ ३ १ २ ३ १ २
मधो रसं सधमादे ॥१६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वाणी में स्थित, कर्मशक्ति के प्रदाता, प्रकाशपूर्ण सोम के एक चमकीले भाग को मैंने आनन्दप्राप्ति के लिये सिद्ध कर लिया है; वह अंशु शीघ्र एवं प्रशंसनीय गति से हृदयरूप सुखासन में विराजमान हो गया है ॥

शुद्ध, प्राणप्रद, दिव्य भावनाओं से प्राप्त, कर्मशीलता में धोये गए (साफ किये गए) तथा साधकों से उत्पादित सोम का आस्वादन, इन्द्रियां, उसके रसों सहित करती हैं ॥

और अश्व की भान्ति क्रियाशील एवं प्रेरक उस मधुर सोम के परमानन्द-रूप रस को अमरपन के लिये आनन्दोपभोग के सहस्थान, अन्तःकरण, में सुशोभित करते हैं ॥१६॥

३ २ ३ २ ३२३ ३ १२ ३ १ २
अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव

३२ १ २र ३ १ २
देवयुम् । वि कोशं मध्यमं युव ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३क २र ३ २ ३ २उ ३ २
आ वच्यस्व सुदक्ष चम्वोः सुतो विशां वह्निर्न
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३२उ ३
विश्पतिः । वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमपो जिन्वन्
१ २ ३ १ २
गविष्टये धियः ॥१७॥

हे प्रेरणाओं के अधिष्ठाता ! दिव्य सोम ! तू दिव्यताधायक उस विशाल यशोरूप तेजस्वी ऐश्वर्य को चहुँ ओर फैला दे; और इस प्रकार मनोमय एवं विज्ञानमय रूप मध्यम आवरण को काट डाल।

हे बलशाली सोम ! तू ज्ञान-कर्मेन्द्रियरूप पात्रों में उत्पादित और वाहकरूप में व्यापक भावनाओं के अधिष्ठाता के रूप में प्रकट हो । प्रकाश-लोक से सुख वर्षा को बहा; ज्ञान-प्रकाश को चाहने वाले साधक की बुद्धियों को प्रेरित कर और उसके कर्मों को गति भी प्रदान कर ॥

३ १ २उ३ १ २ ३ २ ३२ ३ १ २
प्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ १ २३१२ ३ २
विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता ॥
१२ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २र ३२
उप त्रितस्य पाष्योऽ३रभक्त यद् गुहा पदम् ।
३१ २ ३१ २र ३१२ ३२
यज्ञस्य सप्त धामभिरध प्रियम् ॥
१ २ ३२ ३ १२ ३ १ २र ३ २
त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्वैरयद्रयिम् ।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३१२
मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः ॥१८॥

बड़ी-बड़ी शक्तियों का प्राणभूत शिशु (सोम) परमसत्य की एक किरणमात्र को प्रेरित कर समस्त प्रिय पदार्थों को दो प्रकार से व्याप्त कर लेता है :

सोम के द्वारा समष्टि—व्यष्टि, स्थूल सूक्ष्म आदि रूप से पदार्थों के दो रूपों का सत्य ज्ञान होता है ॥

साधक की पाषाणवत् दृढ़ ज्ञान-कर्मेन्द्रियों के गुह्य स्थान में वह सोम अवस्थित रहता है : फिर यज्ञ की सप्तविध ज्योतिर्मयी भावनाओं से उसे प्रिय

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रूप में देखते हैं।

साधक को उसकी साधना के प्रत्येक स्तर पर, वह सोम, तीनों प्रकार के—भौतिक, दैविक एवं आत्मिक—ऐश्वर्य को भेजता है : तथा भली भांति कर्म-प्रेरक बन वह इस साधक की योग साधनाओं का निर्माण कराता है ॥१८॥

१ २ ३   १ २   ३ २ ३   १ २   ३ २
पवस्व वाजसातये पवित्रे धारया सुतः ।
१ २   ३   १   २   ३ २   ३   १ २
इन्द्राय सोम विष्णवे देवेभ्यो मधुमत्तरः ॥

१ २   ३ २ ३   १ २   ३ १ २   ३ १   २
त्वां रिहन्ति धीतयो हरिं पवित्रे अद्रुहः ।
३ २ ३ २ उ   ३ २ ३   १ २   ३   १ २
वत्सं जात न मातरः पवमान विधर्मणि ॥

१   २ र   ३ १   २ र
त्वं द्यां च महिव्रत पृथिवीं चाति जभ्रिषे ।
१ २   ३ १ २   ३   १ २   ३ २
प्रति द्रापिमुञ्चथाः पवमान महित्वना ॥१९॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सोम ! निष्पादित तू ज्ञान-बल प्रदान करने के लिए हृदय की चलनी में परिस्रुत हो; इस अवस्था में व्यापक इन्द्र तथा इन्द्रियों को अधिक आनन्द देने वाला बन ॥

चेतनाओं के आधार अन्तःकरण में प्रवहमान सोम ! जिस प्रकार उत्पन्न हुए बछड़े को गौएं चाहती हैं वैसे ही तुझ प्रिय दुःखहर्ता सोम का आस्वादन, परस्पर समन्वय से रहती हुईं ध्यान-वृत्तियां करती हैं ॥

हे महान् कर्मों के प्रेरक पवमान सोम ! तू अपने महत्त्व से द्युलोक, पृथिवी लोक और अन्तरिक्ष अर्थात् भुवनमात्र को घेरे हुए है ॥१६॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३
इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह
२ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ र ३ १ २
इन्वन् मदाय। हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं वरि-
३ २ ३ १ २ ३ १ २
वस्कृण्वन् वृजनस्य राजा ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १२३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३
अध धारया मध्वा पृचानस्तिरो रोम पवते
१ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ ३ २
अद्रिदुग्धः । इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुषाणो देवो
३१ २ ३ २ २र
देवस्य मत्सरो मदाय ॥
३ २ ३१ २ ३ २ ३ २ ३२उ ३ १क
अभि व्रतानि पवते पुनानो देवो देवाँत्स्वेन रसेन
३२ २ ३१ २ ३१ २र ३ २ ३ १ २
पृञ्चन् । इन्दुर्धर्माण्यृतुथा वसानो दश क्षिपो
३ २ ३ १ २
अव्यत सानो अव्ये ॥२०॥

आह्लादक बलशाली सोम इन्द्र को बलशाली बना कर हर्षोत्पादन के लिए ज्ञान-प्रकाश का प्रवाह बहाता हुआ बहता है। इस रूप में वह शक्ति का राजा वर प्रदान करता-सा राक्षसों का विनाश करता और कृपणों को दबाता है ॥

पश्चात् वह दृढ़ साधनों से दुहा गया, मधुर धारारूप में संयुक्त होकर आवरणों को पार कर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पहुँचता है : वह आह्लादक, दिव्य आनन्द इन्द्र की मित्रता का अनुभव करता हुआ, आनन्द पहुँचाने के लिए परमानन्द का सरोवर बनता है ।

वह दिव्य सोम प्रस्रुत होकर, दिव्य इन्द्रियों को अपने आनन्द से संयुक्त करता हुआ कर्मों को पवित्रता प्रदान करता है । आह्लादक सोम समय परायणता से,नियम से,गुणों को धारण कराता हुआ, क्षिप्रगति से युक्त इन्द्रियों को चिति के सर्वोच्च शिखर पर प्राप्त होता है ॥२०॥

इति षष्ठः खण्डः

१ २ ३१ २ ३१२
आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।
२३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
यद्ध स्या ते पनीयसी समिद्दीदयति द्यवीषं
३ २ ३ १ २
स्तोतृभ्य आ भर ॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
आ ते अग्न ऋचा हविः शुक्रस्य ज्योतिषस्पते ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ - ३
सश्चन्द्र दस्म विश्पते हव्यवाट् तुभ्यं हूयत
१२ ३२ ३ १ २
इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥

१ २र ३ १२ ३ १ २
ओभे सुश्चन्द्र विश्पते दर्वी श्रीणीष आसनि ।
३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १२ ३२ ३
उतो न उत्पुपूर्या उक्थेषु शवसस्पत इषं स्तोतृभ्य
१ २
आ भर ॥२१॥

हे प्रकाश स्वरूप ! तुझ प्रकाशमान एवं अविनाशी को हम प्रदीप्त करते हैं : प्रकाश लोक में तेरी प्रशंसनीय दीप्ति ही तो चमक रही है । स्तोताओं को अन्तःप्रेरणा प्रदान कर ॥

हे विशुद्ध ज्योति के अधिष्ठाता ! सब को सुख देने वाले ! बलशाली ! प्रजापालक ! दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिये की गई त्याग-भावना के वाहक अग्ने ! स्तुति पाठ द्वारा हम अपनी भावनाओं को तुझे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

समर्पित करते हैं; स्तोताओं को अन्तःप्रेरणा प्रदान कर।

हे आह्लादक, प्रजापालक, अग्ने! तू अपने भीतर (मुख में) दोनों स्रुवों—ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियों—में भरे त्यागभावरूप पदार्थों को परिपक्व करता है: हमारी इन्द्रियों में त्याग के संस्कारों को सुदृढ़ करता है;

और हे बलाधिपति! प्रशंसनीय कर्मों के प्रति शुभ भावनाओं से तू हमें भरपूर कर तथा स्तोताओं को अन्तःप्रेरणा प्रदान कर ॥२१॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र
त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यमरोचयः।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
विश्वकर्मा विश्वदेवो महाँ असि ॥

३ १ २ १ २ ३ २ १ २ ३ २ ३ २
विभ्राजं ज्योतिषा स्वा३रगच्छो रोचनं दिवः।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २
देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे ॥२२॥

हे स्तोताओ ! तुम उस विविध रूप से हमें भरपूर करने वाले, विशाल, वेदोपदेष्टा, ज्ञान-कर्मशाली स्तुतियोग्य इन्द्र (परमेश्वर) का विस्तृत कीर्तन करो ॥

हे इन्द्र ! (परमेश्वर) तू सब से अधिक सामर्थ्यवान् है; सूर्य आदि ज्योतिःपुञ्जों में भी तेरी ही चमक है; तू संसारमात्र का शिल्पी और सब का प्रकाशक है; तू महान है ।

हे इन्द्र ! ज्योति से प्रकाशित करता तू, प्रकाश लोक से परे (विद्यमान) : उससे भी अधिक प्रकाशमान — परमसुख को पहुँचाता है : हे इन्द्र ! दिव्यगुण के आधान की इच्छुक इन्द्रियां तेरी मित्र रहने का प्रयत्न करती हैं ॥२२॥

१ २ ३ १ २ २ १ २ ३ १ २
असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि ।
१ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ १ २
आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियं रजः सूर्यो न रश्मिभिः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
आ तिष्ठ वृत्रहन् रथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी ।
३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अर्वाचीनं सु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना ॥
२ १ १र ३ १
इन्द्रमिद्धरी वहतोऽप्रतिधृष्टशवसम् ।
१ २ ३ १ २र ३१ ३ १ २
ऋषीणां सुष्टुतीरुप यज्ञं च मानुषाणाम् ॥२३॥

हे बलशाली ! वासनाओं को पराजित करने वाले इन्द्र ! तेरे लिये यह परमानन्द सिद्ध किया गया है : आकर इस पर अधिकार करले ! जिस प्रकार सूर्य, (अन्धकाराच्छन्न) अन्तरिक्ष को अपने प्रकाश से भर देता है; वैसे ही यह इन्द्र का हितकारी (आनन्द) तुझे भी तृप्त करे ॥

हे विघ्न विनाशक इन्द्र ! इस शरीररूप रथ का अधिष्ठाता बन; यात्रा में ले जाने योग्य ज्ञान व कर्मेन्द्रियरूप दो घोड़े इसमें जुते हुए हैं । स्तोता अपनी स्तुति-वाणी के द्वारा मननेन्द्रिय को तेरे अनुकूल करे : तेरे संस्कार को दृढ़ बनावे ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अजेय बली इन्द्र को ही ज्ञान-कर्मेन्द्रियां, क्रान्त-द्रष्टा इन्द्रियों द्वारा की गई स्तुतियां और मनुष्यों की त्यागभावना—धारण करते हैं ॥२३॥

इति सप्तमः खण्डः। इति तृतीय. प्रपाठकः
इति षष्ठोऽध्यायः

अथ सप्तमोऽध्यायः

ऋषयः—१ आकृष्टाभाषाः सिकता, निवावरी च। २, ११ कश्यपः। ३ मेधातिथिः। ४ हिरण्य-स्तूपः। ५ अवत्सारः। ६ जमदग्निः। ७, २१ कुत्सः। ८ वसिष्ठः। १० श्यावाश्वः। १२ सप्तर्षयः (भरद्वाज—कश्यप—गोतम—अत्रि—विश्वामित्र—जमदग्नि—वसिष्ठाः) १३ अमहीयुः। १४ शुनः-शेपः। १५ मधुच्छन्दाः। १६ (१,१,२, पूर्वार्ध.) मान्धाता २ उत्तरार्धः गोधा। १७ असितो देवला

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वा । १८ (१) ऋणंचयो राजर्षिः । (२) शक्तिः । १९ पर्वतनारदौ । २० मनुः (सांवरणः) २२ बन्धुः, सुबन्धुः, श्रुतबन्धुर्विप्रन्बन्धुः क्रमेण । २३ भुवनः साधनो वा ॥ देवताः—१-६, ११-१३, १७-२१ पवमानः सोमः ७, २२ अग्निः । ८ आदित्यः । ९, १४,१६, २४ इन्द्रः ॥ १० इन्द्राग्नी । १५ सोमः । २३ विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ७ जगती । २-६, ८-११ १३, १४, १७ गायत्री । १५ प्रगाथः (विषमा- बृहती समासतो बृहती) । १२ महापंक्तिः । १८ (१) यवमध्या गायत्री (२) सतो बृहती । १९ उष्णिक् । २० अनुष्टुप् । २१ त्रिष्टुप् । २२ द्विपदा विराट् । २३ द्विपदा त्रिष्टुप् । २४—दैवी बृहती । अथवा २४-(१-३) द्विपदा विराट् ॥ स्वरः ॥ १–७ निषादः । २-६, ८-११, १३, १४, १७ षड्जः । १२ १५ मध्यमः । १६, २४ पञ्चमः । १८ (१) षड्जः (२) मध्यमः । १९ ऋषभः । २० गान्धारः । २१, २३ धैवतः । २२, २४ (१–३) पञ्चमः । २४ षड्जो वा ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधु प्रियं पिता देवानां
जनिता विभूवसुः । दधाति रत्नं स्वधयोरपीच्यं
मदिन्तमो मत्सर इन्द्रियो रसः ॥
अभिक्रन्दन् कलशं वाज्यर्षति पतिर्दिवः शतधारो
विचक्षणः । हरिर्मित्रस्य सदनेषु सीदति मर्मृ-
जानोऽविभिः सिन्धुभिर्वृषा ॥
अग्रे सिन्धूनां पवमानो अर्षस्यग्रे वाचो अग्रियो
गोषु गच्छसि । अग्रे वाजस्य भजसे महद्धनं
स्वायुधः सोतृभिः सोम सूयसे ॥१॥

यह देखो ! जीवन-यज्ञ का पथ-प्रदर्शक सोम, प्रिय अमृत रस बहा रहा है । यह दिव्य गुणों

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

का उत्पादक एवं रक्षक है, और व्यापक अतएव वास कराने वाला है। अपनी अमृतवर्षिणी धारा द्वारा रहस्यमय ऐश्वर्य धारण कराता है, यह अत्यन्त आह्लादक, आह्लाद का सरोवर, इन्द्र का हितकारी आनन्द है।

यह बलशाली सोम अन्तर्नाद करताहुआ हृदय-कलश में पहुँच रहा है; यह प्रकाश का अधिष्ठाता, सैंकड़ों धाराओं में आता तथा पथप्रदर्शक है। आकर्षक वर्षक सोम बहती चितिशक्तियों द्वारा शुद्ध किया हुआ, समन्वय-साधक मित्र की इन्द्रियों और उसके हृदय को आविष्ट करता है।

हे सोम ! तू चितिशक्तियों, वाणी और इन्द्रियों के आगे-आगे पथ-प्रदर्शक रूप में चलता है। बल-शाली इन्द्र का पथ-प्रदर्शक बना हुआ तू उसे भारी ऐश्वर्य का भाजन बनाता है और उत्तम साधनों वाला तू साधकों द्वारा सिद्ध किया जाता है ॥१॥

१२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २र
शुक्रासो वीरयाशवः ॥
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
शुम्भमाना ऋतायुभिर्मृज्यमाना गभस्त्योः ।
१२ ३ १ २ ३ १ २
पवन्ते वारे अव्यये ॥
१ २र ३ २ ३ २३ १ २ ३ २ ३ १ २
ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा ।
१२ ३१ २र
पवन्तामान्तरिक्ष्या ॥२॥

बलशाली, शुद्ध (चमकीले) एवं तीव्र परमानन्द वीर रस, ज्ञानकी ज्योति, शक्ति की तीव्रता और विजयशील शक्तियों को प्राप्त कराने वाले बन गये हैं।

परमसत्य के इच्छुक साधकोंसे स्तुत एवं ज्ञान की किरणों में परिष्कृत किये गये परमानन्द रस चिति के आवरण में से पार जा रहे हैं ॥

सोम, समर्पण की भावना से भावित साधक को प्रकाश लोक, पृथिवीलोक और अन्तरिक्ष लोक के ऐश्वर्य प्राप्त कराता है ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
पवस्व देववीरति पवित्रं सोम रंह्या ।
१ २ ३ ३ १ २र
इन्द्रमिन्दो वृषा विश ॥
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
आ वच्यस्व महि प्सरो वृषेन्दो द्युम्नवत्तमः ।
१ २र ३ १ २
आ योनिं धर्णसिः सदः ॥
१ ३ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः ।
३ १ २ ३ १ २
अपो वसिष्ट सुक्रतुः ॥
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
महान्तं त्वा महीरन्वापो अर्षन्ति सिन्धवः ।
१ २र ३ १ २
यद् गोभिर्वासयिष्यसे ॥
३ १ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरुणो दिवः ।
१ २ ३ १ २ २ ३
सोमः पवित्रे अस्मयुः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ १२३ २३ ३ २ २र३२
अचिक्रदद् वृषा हरिर्महान् मित्रो न दर्शतः ।
१ २र
सं सूर्येण दिद्युते ॥

१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
गिरस्त इन्द ओजसा मर्मृज्यन्ते अपस्युवः ।
२ ३१ २ ३ १ २
याभिर्मदाय शुम्भसे ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्नुमीमहे ।
२३ १२ ३१
तव प्रशस्तये महे ॥

३ १ २ ३१ २ ३ १ १३ २ ३२
गोषा इन्दो नृषा अस्यश्वसा वाजसा उत ।
३ २ ३ १ २ ३२
आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः ॥

३ १ ३ ३१ २र ३ १ २
अस्मभ्यमिन्दविन्द्रियं मधोः पवस्व धारया ।
३१ २ ३१ २
पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव ॥३॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दिव्यगुणों का आधान कराने वाले सोम! तू वेग से हृदय देश में प्रस्तुत हो; हे आह्लादक! वर्षण-समर्थ ! इन्द्र को आविष्ट कर।

हे सुखों के वर्षक, आह्लादक सोम ! तू अत्यधिक यशस्वी है; महान् ज्ञान को प्रकट कर। ध्रुव होकर सुख-स्थान (हृदय देश) में अवस्थित हो।

योग साधनों से निष्पन्न, (हृदय की) गहराई तक पहुँचने वाले सोम की धारा से प्रिय अमृत प्राप्त होता है : उत्तम कर्मों के प्रेरक सोम का साधक कर्मों की ओढनी ओढ़े रहता है : सदा कर्मठ जीवन व्यतीत करता है।

जब कि तू ज्ञान-किरणों से ढका जायगा तो तुझ महान् के पीछे पीछे महती कर्म भावनाएं भी बहती-सी तुझे पा लेंगी : ज्ञान के पश्चात् साधक मन पर कर्म-भावना स्वतः अधिकार जमा लेती है॥

परमानन्दरस की खान, आश्रयभूत और प्रकाश लोक का धारक सोम कर्मभावनाओं से परिशुद्ध होता है : वह सोम हृदयदेश में हमारा आश्रय

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बनता है ॥

मित्र के समान दर्शनीय वह महान् आकर्षक सोम सुखवर्षण सामर्थ्य से युक्त हुआ जब गर्ज उठा तब अपनी प्रेरकशक्ति के कारण चमकने लगा : सोम अपनी प्रेरक शक्ति के कारण जग में प्रसिद्ध है।

हे आह्लादक ! तेरे बल से कर्म और ज्ञान को प्राप्त कराने वाली वाणियां परिमार्जित होती हैं; उन्हीं से, आनन्द के लिये तेरी स्तुति की जाती है।

उस ज्ञानोत्पादक तुझ सोम को, सब बाधाओं को पराजित करने वाले परमानन्द के लिये और तेरी महती प्रशस्ति के लिए हम चाहते हैं ॥

हे आह्लादक सोम ! तू ज्ञान, वृद्धि, कर्मशक्ति और ऐश्वर्य का प्रदान करने वाला है : तथा यज्ञ-भावना का सदा से चला आया, सनातन, प्राण है।

हे आह्लादक ! तू इन्द्र हितकारी अमृत की धारा-रूप में प्रवहमान हो : ठीक उस प्रकार जिस प्रकार बरसने वाला मेघ खूब जल बरसाता है ॥३॥

इति प्रथमः खण्डः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

२ ३ २ ३ २ ३ ३क २ ३ ३ १ २
सना ज्योतिः सना स्व३र्विश्वा च सोम सौभगा ।
१२ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
सना दक्षमुत क्रतुमप सोम मृधो जहि ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

१२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
त्वं सूर्ये न आ भज तव क्रत्वा तवोतिभिः ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२३ २ ३ २३ २ ३ १२ ३ १२
तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक् पश्येम सूर्यम् ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

३क २र ३ १ २ ३ १२ ३ २
अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विबर्हसं रयिम् ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

१ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३२
अभ्य३र्षानपच्युतो वाजिन्त्समत्सु सासहिः ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

२ ३ १ २ ३ १२ ३ १२
त्वां यज्ञैरवीवृधन् पवमान विधर्मणि ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥

३१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३१
रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमा भर ।
१ २ ३ १ २
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे पवमान ! तू हमें महान् अन्तर्ज्ञान प्रदान कर और सब विघ्नों पर विजय लाभ करा; इस प्रकार हमें सुखपूर्वक निवास करने वालों में सर्वोत्तम बना ॥

हे सोम ! हमें ज्ञान की ज्योति और परमसुख प्रदान कर तथा सम्पूर्ण सौभाग्य प्राप्त करा; इस प्रकार हमें सुख से जीवन व्यतीत करने वाला बना।

हे सोम ! हमें ज्ञानबल और कर्मशक्ति दे तथा हमारे शत्रुओं को विनष्ट कर; इस प्रकार हमें सुख-जीवी बना।

साधक जन इन्द्र के पान के लिए सोम का उत्पादन करें; इस प्रकार सिद्ध किया गया वह सोम हमें सुखजीवी बना दे।

हे सोम ! अपनी कर्मशक्ति और रक्षणशक्तियों से तू हमें सर्व प्रेरक में स्थापित कर : तुझ से प्रेरणा पाकर हम कर्म करते हुए इतने सुरक्षित हों कि सर्व-प्रेरक परमेश्वर के भक्त बन जावें; इस प्रकार वह सोम हमें सर्वोत्तम जीवन यापन करने में समर्थ बनावे।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सोम ! तेरी कर्मशक्ति और रक्षण सामर्थ्य से हम चिरकाल तक ज्ञान व प्रकाश-स्वरूप प्रेरक को देखते रहें : उसका पथप्रदर्शन हमें प्राप्त रहे; इस प्रकार हमारा जीवन सर्वोत्तम बने ।

हे उत्तम साधनसे सम्पन्न सोम! दुहरा (ज्ञान-कर्म रूप से) फैलने वाले ऐश्वर्य को पहुँचा; इस प्रकार हमें सर्वोत्तम जीवन यापन करने दे ।।

हे सोम ! तू सब प्रकार के संघर्षों में अविचल और शत्रुओं को दबाने वाला होकर प्रकट हो : हमको सर्वश्रेष्ठ बना ।

हे पवमान सोम ! तुझ को धारक हृदय देश में, त्याग भावनाओं से बढ़ाया है : तू हमें सर्वश्रेष्ठ जीवन वाला बना ।

हे आह्लादक ! तू हमें उस अद्भुत, शक्ति-सम्पन्न, समस्त आयु-प्रद ऐश्वर्य—सामर्थ्य—से भरपूर करदे; और हमें सर्वश्रेष्ठ बना ।।४।।

२३ २ ३ १ २ ३ १२ ३१ २र
तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२३ २ ३ १ २
तरत् स मन्दी धावति ॥
३ १ २३ १२ ३ १२ ३ १२
उस्रा वेद वसूनां मर्तस्य देव्यवसः ।
२३ २ ३ १ २
तरत् स मन्दी धावति ॥
३ १ २ ३२ ३ २ ३ १२
ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा सहस्राणि दद्महे ।
२३ २ ३ १ २
तरत् स मन्दी धावति ॥
१ २र ३ २३ १ २ ३१ २ ३ १२
आ ययोस्त्रिंशतं तना सहस्राणि च दद्महे ।
२३२ ३ १ २
तरत् स मन्दी धावति ॥५॥

उत्पादित प्राण-प्रद सोम रस की धारा से आनन्दमय हुआ साधक तैर जाता है और (उन्नति पथ पर) दौड़ता है। भव सागर से पार जाने वाला साधक आनन्दमय हुआ, उन्नति की ओर दौड़-सी लगाता प्रतीत होता है ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उन्नति पथ की ओर चल ले चलने वाली सोम की धाराएं, मनुष्य को रक्षणसामर्थ्य प्रदान करती हुईं आध्यात्मिक ऐश्वर्य का लाभ कराती हैं; भव-सागर को तैरने वाला वह आनन्दी लक्ष्य की ओर दौड़ता है।

दुःखों को ध्वंस करने वाली (ज्ञानरूप) बल प्रदान करने वाली (कर्मरूप) अमृत की धाराओं के हजारों बलों को हम धारण करें; इस प्रकार भवसागर को तैरने वाला वह आनन्दी लक्ष्य की ओर दौड़ता है।

इन आनन्दधाराओं (ज्ञान एवं कर्मरूप) के तीन सौ और हजारों विस्तारों को हम धारण करें : इस प्रकार भवसागर को तैरने के लिए श्रम करने वाला आनन्दी लक्ष्य की ओर दौड़ने लगता है ॥५॥

३ १ २र ३ १ २र ३ २
एते सोमा असृक्षत गृणानाः शवसे महे।
३ १ २ ३ १ २
मदिन्तमस्य धारया ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि ।
३ १ २ ३ १ २
सनद्वाजः परि स्रव ॥
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
उत नो गोमतीरिषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः ।
३ २ ३ १ २
गृणानो जमदग्निना ॥६॥

अति आनन्द कारक सोम की धारा द्वारा महान् ज्ञान-प्राप्ति का प्रवचन करने वाले ये साधक भी 'सोम' हो गये हैं ।

अज्ञानतम को हटाकर ज्ञान का प्रकाश करने के लिए परिस्रुत होता हुआ सोम ज्ञान-प्रकाश से युक्त ऐश्वर्यों को प्राप्त करता है; हे ज्ञान के देने वाले सोम ! तू परिस्रुत हो !

कृतसंकल्प साधक द्वारा स्तुत सोम, ज्ञान-प्रकाश से सम्पन्न सब प्रेरणाओं को हमें प्रदान करता हुआ स्तुति भाजन बने ॥६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा
३ १ २ ३ २क ३ १ २ ३ १ २र
मनीषया। भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने
३ १ २र ३ १ २र
सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
भरामेध्मं कृणवामा हवींषि ते चितयन्तः पर्वणा-
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
पर्वणा वयम्। जीवातवे प्रतरां साधया धियोऽग्ने
३ १ २र ३ १ २र
सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १
शकेम त्वा समिधं साधया धियस्त्वे देवा हवि-
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २क १
रदन्त्याहुतम्। त्वमादित्याँ आ वह तान् ह्यु३-
२र ३ १ २र ३ १ २र
श्मस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥७॥

पूजनीय और सर्वव्यापक अग्नि के लिए, सुख-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कारक वाहन की भान्ति विद्यमान इस गुण कीर्तन का हम मननबुद्धि से मान करें; इसके संसर्ग में हमारा प्रकृष्ट ज्ञान कल्याणकारी बनता है; हे अग्ने ! तेरी मित्रता में हम कभी पीड़ित नहीं हों ।।

तेरे तेज को अनुभव करें, पोरु-पोरु से जाग्रत रहते हम तुझे भेंट देते रहें । हे ज्ञानस्वरूप ! जीवन-यज्ञ के लिए हमारी ज्ञान-कर्मशक्तियों को भली भांति तय्यार कर दे; तेरी मित्रता में हम कभी दुःखी न हों।

हम तुझे भेंट दे सकें; हमारी ज्ञान-कमशक्तियों को तय्यार कर; वे दिव्य शक्तियां (ज्ञान-कर्मेन्द्रियां) तुझे अर्पित की गई हवि का भोग कर लेती है : हमारी त्याग भावना से हमारी इन्द्रियों की ही शक्ति बढ़ती है । हे ज्ञानस्वरूप ! तू ज्योति के स्रोत दिव्य गुणों को प्राप्त करा; उन्हें हम चाहते हैं । तेरी मित्रता में हमें कभी दुःख न हो ।।७।। इति द्वितीयः खण्डः ।।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम् ।
३ १ २ ३ १ २
अर्यमणं रिशादसम् ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १२
राया हिरण्यया मतिरियमवृकाय शवसे ।
३१ २र ३१ २
इयं विप्रा मेधसातये ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२
ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह ।
२ ३क २र
इषं स्वश्च धीमहि ॥८॥

मेरे अन्तःकरण में प्रेरणा के स्रोत प्रकाशपुञ्ज के उदय हो जाने पर मैं स्वभावतः विघ्नविनाशक सामञ्जस्य एवं विवेककी प्रेरक शक्तियों और न्याय-शक्ति की स्तुति करता हूँ ।

यह हमारी, मनोहर सम्पत्तिरूपा, विवेचनशक्ति, अहिंसक—कुटिलता रहित–बल की प्राप्ति के लिए हो : यह विश्लेषणशक्ति पवित्रता की प्राप्ति के लिए हो ।

हे निष्पाप वृत्ति के अधिष्ठाता वरुणदेव ! हे सामञ्जस्य एवं सुहृद्भावना के प्रतीक मित्र !

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अपनी प्रेरणाओं सहित हम तेरे ही रहें : ज्ञान एवं परमसुख का हमें सदा ध्यान रहे : वे हमारा परम लक्ष्य बने रहें ॥८॥

३ २३ ३ २३ २३१२ १२ ३१ २र
भिन्धि विश्वा अप द्विषःपरि बाधो जही मृधः ।
१२ ३१ २र
वसु स्पार्हं तदा भर ॥
१ २ ३ १ २ ३१ २र३ २ ३ १२
यस्य ते विश्वमानुषग् भूरेर्दत्तस्य वेदति ।
१२ ३१ २र
वसु स्पार्हं तदा भर ॥
२ ३ १ २ ३ २ ३१ २र३ १२
यद्वीडाविन्द्र यत्स्थिरे यत् पर्शाने पराभृतम् ।
१२ २१ २र
वसु स्पार्हं तदा भर ॥९॥

हे इन्द्र ! द्वेषभावनाओं को दूर ही काट डाल, बाधक हिंसक भावों को नष्ट कर दे : इस प्रकार स्पृहणीय दिव्य आनन्द से भरपूर हो जा ॥

हे इन्द्र ! जिस तेरे बहुत से दान को (दान-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शीलता को) यह संसार सदा अनुभव करता है, उस स्पृहणीय दिव्य आनन्दैश्वर्य से भरपूर हो जा।

हे अदम्य इन्द्र ! दृढ़ और विचार शील (जन) में जो स्पृहणीय ऐश्वर्य रहा करता है उससे भरपूर हो।

३ २ ३ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु।
१ २ ३ १ २
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
तोशासा रथयावाना वृत्रहणापराजिता।
१ २ ३ १ २
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः।
१ २ ३ १ २
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥१०॥

हे इन्द्र और अग्नि तुम दोनों इस जीवनयज्ञ के ऋत्विक् (प्रवर्तक) हो तथा ज्ञान एवं कर्म दोनों में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

निष्णात हो; मुझे उस जीवन यज्ञ के प्रति जाग्रत रखो।

हे इन्द्र और अग्नि! तुम दोनों इस जीवन संग्राम में वृद्धि के अधिष्ठाता, सुखपूर्वक अथवा सुखवाहन से आगे बढ़ने वाले, विघ्न विनाशक एवं अपराजित रहते हो : मुझे इस यज्ञ के प्रति सबोध रखो।

इस जीवन-यज्ञ में बलवान् दिव्य पुरुषों ने स्थिर धारणाओं के द्वारा तुम दोनों के लिए यह मग्नता प्रदान करने वाला अमृत दुहा है: हे इन्द्राग्नि! उसके प्रति सदा सावधान रहो ॥१०॥

इति तृतीयः खण्डः

१ २ ३१ २३ १२ ३ १२
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः।
३२ ३ १ २ ३ १ २
अर्कस्य योनिमासदम् ॥
२ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २
तं त्वा विप्रा वचोविदः परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम्।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २
सं त्वा मृजन्त्यायवः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ र ३ १ २
रस ते मित्रो अर्यमा पिबन्तु वरुणः कवे।

१ २ ३ १ २
पवमानस्य मरुतः ॥११॥

हे आह्लादक ! तू प्राणशक्ति से सम्पन्न इन्द्र के लिए अत्यन्त मधुर अथवा अमृतमय होकर उसे परम पूजनीय (ऋत के अपने—मूल सुखस्थान—को प्राप्त कराने के लिए प्रवाहित हो ॥

आह्लादक एवं धारक परमानन्दरस को, वाणी के तत्त्ववेत्ता और विमलमति साधक निष्पन्न एवं शुद्ध करते हैं : जीवन को जीवन बनाने के लिए साधक तुझे ही सिद्ध करते हैं ॥

हे क्रान्तदर्शी ! तुझे सम्पन्न कर प्रवहमान तेरे आनन्दरस का पान करके हमारे भीतर मित्र, अर्यमा और वरुण शक्तियां उद्भूत होती हैं।

३ १ २ ३ १ २ र ३ २
मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि। रयिं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २३ २३ १२ ३क २र
पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि ॥
३ २र ३ १२ ३ २३ १ २ ३
पुनानो वारे पवमानो अव्यये वृषो अचिक्रदद्
१२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १
वने । देवाना सोम पवमान निष्कृतं गोभिरञ्जानो
२
अर्षसि ॥१३॥

चतुर के हाथ से शुद्ध किया गया तू हृदय-समुद्र में प्रेरणा की आवाज उठाता है। हे पवमान ! इस प्रकार प्रेरणा कर बहुत सी, लोकप्रिय और सुन्दर सम्पत्ति को प्राप्त करता है ॥

चिति के आवरण में से आता हुआ, पवमान सोम, वर्षण समर्थ होकर भक्ति-साधन इस देह में अनाहत नाद करता है। हे पवमान ! सोम ! तू ज्ञान-प्रकाश की किरणों से अधिक प्रकट होकर इन्द्रियों के आश्रय स्थान इन्द्र को प्राप्त हो जा ॥

३२३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २
समादित्येभिरख्यत ॥

१ २र ३ २ ३ १ २ ३१ २ ३ २३ २
समिन्द्रेणोत वायुना सुत एति पवित्र आ ।
१ २र ३ १ २
संसूर्यस्य रश्मिभिः ॥

२ ३ १ २ ३१२ ३ १ २ ३ १२
स नो भगाय वायवे पूष्णे पवस्व मधुमान् ।
१ २ ३ १ २र
चारुर्मित्रे वरुणे च ॥१३॥

हृदय में समाने वाले इस प्रसिद्ध परमानन्द को दस ज्ञान-कर्मेन्द्रियां संस्कृत करती या मथती है : वह फिर दिव्य आदित्य-शक्तियों के समान ख्याति वाला प्रसिद्ध हो जाता है ॥

उत्पादित परमानन्द हृदय देश को आप्लावित कर देता है : वह इन्द्र और प्राण शक्ति से तथा प्रेरक शक्ति की प्रेरक किरणों से संयुक्त रखता है ।

वह अमृतमय परमानन्द रस हमें भोग्यशक्ति,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्राणशक्ति, पोषणबल, तथा मित्र और वरुण की सामर्थ्य प्रदान करे ॥१३॥

इति चतुर्थः खण्डः

३ १ २ ३ २३ १ २ ३ १ २
रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः ।
३२ ३ २ ३१ २
क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥
२ ३ २३ १ २ ३२ ३ १ २
आ घ त्वावान् त्मना युक्तः स्तोतृभ्यो धृष्णवी-
३ १ ३ २र ३ २ ३क २र
यानः । ऋणोरक्षं न चक्रयोः ॥
१ २र ३१ २र ३ २
आ यद् दुवः शतक्रतवा कामं जरितॄणाम् ।
३ २उ ३ १ २र
ऋणोरक्षं न शचीभिः ॥१४॥

इन्द्र के साथ-साथ हमारी इन्द्रियां भी प्रसन्न हों और प्रचुर बल से संयुक्त रहें; इन से सम्पन्न बने हम आनन्दित हो उठें ॥

हे शत्रु-मान-भञ्जक इन्द्र ! तू साधकों के लिए

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

निष्पन्न— सिद्ध—होकर, स्वयं आत्मवशी एवं आत्म-सामर्थ्य से युक्त हुआ साधकों को लक्ष्य पर पहुँचा; जैसे कि पहियों को उसका धुरा लक्ष्य तक पहुँचाता है।

हे विविध ज्ञान कर्म शक्तियों से सम्पन्न इन्द्र ! तू साधकों को अपनी ज्ञानशक्तियों द्वारा यथेष्ट ऐश्वर्य प्राप्त करा : जिस प्रकार कि अरों द्वारा धुरी को लक्ष्य पर पहुँचाया जाता है ॥१४॥

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे ।
३ २ ३ १ २
जुहूमसि द्यविद्यवि ॥
१ २ ३ २ ३ १ ? ३ १ २
उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब ।
३ २उ ३ १ २ १ २
गोदा इद् रेवतो मदः ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम् ।
२ ३ १ २ ३ १ २
मा नो अति ख्य आ गहि ॥१५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दुहनेवाले को सरलता से दूध देने वाली गौ के समान उन्नति गति के लिए सुगमता से शोभन फल (रूप) देने वाले इन्द्र को हम सदा आत्म-समर्पण करते हैं॥

हे परमानन्द के भोक्ता इन्द्र ! तू परमानन्द के साधक आत्मयज्ञ में हमारा सान्निध्य कर तथा परमानन्द का उपभोग कर। आत्म-समर्पक का आनन्द, निश्चय ही, ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित रहता है।

तेरी उत्कृष्टतम सुष्ठु ज्ञान-सामर्थ्य का 'ज्ञान हमें प्राप्त हो, हमारा प्रत्याख्यान--निषेध--मत कर : हमें मत छोड़ : आकर हमें आश्रय दे ॥१५॥

३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ १
उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषा इव ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम् ।
३ १ २र ३ १ २र
देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
दीर्घं ह्यङ्कुशं यथा शक्तिं बिभर्षि मन्तुमः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १
पूर्वेण मघवन् पदा वयामजो यथा यमः देवो
२र ३ १ २र
जनित्र्यजजिनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥

१ २ ३ १ २र ३ २
अव स्म दुर्हणायतो मर्त्तस्य तनुहि स्थिरम् ।
३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्माँ अभिदासति ।
३ १ २र ३ १ २र
देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥१६॥

जिस प्रकार उषा का प्रकाश सर्वत्र फैल जाता है, वैसे ही हे इन्द्र ! तेरा प्रकाश पृथिवी से द्युलोक पर्यन्त विस्तृत है। बड़ों में बड़े और दूर द्रष्टाओं में सम्राट्भूत तुझको दिव्य माता ने बनाया; उसी कल्याणकारिणी जगन्माता ने ही तेरे स्वरूप को प्रकट किया है।

हे मननशील इन्द्र ! लम्बे अंकुश की भान्ति दूर तक पहुँचने वाली शक्ति तेरे पास विद्यमान है : उस से तू सब इन्द्रियों को वश में रखता है। जैसे बकरा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अगले पांव से वृक्ष की शाखा को खींचता है : वैसे ही हे ऐश्वर्यशालिन् ! तू अपने सदा से चले आये ज्ञान-सामर्थ्य द्वारा चञ्चल इन्द्रियों को थामे रखता है। दिव्य और कल्याणकारिणी जगन्माता ने ही तेरा निर्माण किया : उसी ने तेरा स्वरूप प्रकट किया है।

हे इन्द्र ! जो मरणधर्मा संस्कार दुष्ट एवं चोर प्रकृति का है, उसके बल को तू नीचा कर दे : उसे अपने ऊपर अंकित मत होने दे; जो हम साधकों को क्षीण-बल निस्तेज, करना चाहता है, उसको भी तू अपनी शक्ति से अभिभूत एवं पराजित, व पददलित करदे। दिव्य एवं कल्याणकारिणी जगन्माता ने ही तेरे स्वरूप को प्रकट किया है ॥१६॥

इति पञ्चमः खण्डः

१२ ३१ २३२ ३२३ १२
परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत् ।
१२ ३१ २
मदेषु सर्वधा असि ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२उ ३ २ ३२उ ३ २ ३ १ २र
त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु प्र जातमन्धसः ।
१ २ ३ १ २
मदेषु सर्वधा असि ॥
१ २र ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २
त्वे विश्वे सजोषसो देवासः पीतिमाशत ।
१ २ ३ १ २
मदेषु सर्वधा असि ॥१७॥

वाणी से बन्धा हुआ परमानन्द सिद्ध किया जाने पर पवित्र मन में बहने लगता है। हे सोम ! तू अपने आह्लादक गुण द्वारा सब को मग्न रखने की क्षमता रखता है ॥

हे सोम ! तू ज्ञान-प्रकाश का दाता एवं क्रान्तदर्शक है : ज्ञानरूपान्न से प्रकट हुआ—अमृत रूप है : तू अपने आह्लाद गुण द्वारा सब को मग्न रखने की क्षमता रखता है ।

दिव्यगुणों के कारण देवभूत सब इन्द्रियां उन्नति गति में, सोत्साह होकर तेरा पान करती हैं : अपने आह्लाद से सब को मग्न रखने की क्षमता,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तुझ में विद्यमान है ॥१७॥

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इडानाम्।
२ ३ १ २ ३ २
सोमो यः सुक्षितीनाम् ॥
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २ ३
यस्य त इन्द्रः पिबाद् यस्य मरुतो यस्य वार्य-
२ ३ १२ १ २र ३ १ २र ३ १२ ३ २ ३
म्णा भगः। आ येन मित्रावरुणा करामह एन्द्र-
१२ ३१
मवसे महे ॥१८॥

जो सोम पार्थिव धनों, बलशाली दान भावनाओं से भावित ऐश्वर्यों और स्वतः ज्ञान के प्रकाश का दाता तथा सर्वोत्तमलक्ष्य (परम लक्ष्य) तक पहुँचाने वाला (पिलाने वाला) है उस सोम का मैं निष्पादन (सवन) कर रहा हूँ।

हे सोम! जिस तेरा पान करके ही इन्द्र, इन्द्र है : प्राणशक्तियां तुझ से ही प्राणवती हैं; विवेकशक्ति और भोगशक्ति भी तुझ से ही प्रेरित है। मित्र और

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वरुणशक्तियों तथा दिव्यमन की शक्ति को इसी सोम से, साधक, महान् रक्षण-सामर्थ्य के योग्य बनाते हैं ॥१८॥

१ २ ३ १२ ३ २३ १ २
तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत ।
१ २ ३ ३ १ २ ३ १ २
शिशुं न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः ॥
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सं वत्स इव मातृभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते ।
३ १ २र ३ २ ३ १२
देवावीर्मदो मतिभिः परिष्कृतः ॥
३ १ २र ३ १ २ ३ ३ २र ३ १ २
अयं दक्षाय साधनोऽयं शर्धाय वीतये ।
३ २ ३२ ३ १ २ ३ २
अयं देवेभ्यो मधुमत्तरः सुतः ॥१९॥

हे मित्रो ! आनन्द-प्राप्ति के प्रयोजन से, उस प्रवाहित हो रहे, बालक की भांति प्रिय सोम को, हविरूप, स्तुतियों से प्रसन्न करते हुए, अपने अभिमुख करो ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जैसे माताओं से परिवर्धित बच्चा अपनी शक्ति को प्रकट करता है वैसे यह आह्लादक सोम, दिव्य गुणों का आधान कराता, मनन शक्तियों अथवा चिति शक्तियों द्वारा परिमार्जित होकर प्रकट होता है।

यह परिस्रुत सोम, बलशाली कार्य का साधक है; अज्ञानमल को हटाकर ज्ञान-प्रकाश की प्राप्ति-रूप बल प्राप्ति के लिए भी है और यह इन्द्रियों को दिव्य बनाने के लिए उत्तम अमृत है ॥१६॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २
मित्राः स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
ते पूतासो विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
सूरासो न दर्शतासो जिगत्नवो ध्रुवा घृते ॥
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
सुष्वाणासो व्यद्रिभिश्चिताना गोरधि त्वचि ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२३ १ २३ २३ १२ ३ १ २
इषमस्मभ्यमभितः समस्वरन् वसुविदः ॥२०॥

मार्ग के सर्वोत्तम दर्शक, आह्लादकारी सोम हमारे लिए प्रवाहित हो रहे हैं—ये सोम मित्र-स्वभाव, अन्तर्नाद से प्रेरक, निर्मल, ध्यानयोग के साधन और परम सत्यरूप सुख लोक तक पहुँचाने वाले हैं।

वे शोधित, बुद्धि का विकास करने वाले, ध्यान धारणा से परिपक्व, प्रेरक सूर्य की किरणों की भांति मार्ग एवं पदार्थों के स्वरूप के दर्शक, ज्ञान की दीप्ति के प्रति स्थिरता से गमनशील हैं: निश्चय ही ज्ञान को प्रदीप्त करते हैं।

दृढ़ धारणाओं से भली भान्ति प्रवाहित, ज्ञान की किरणों के आवरण में भी चेतना प्रदान करने वाले, ऐश्वर्य का लाभ कराने के प्रयोजन से, हमें चारों ओर से प्रेरणा का बल प्रदान कर रहे हैं ॥२०॥

३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३
अया पवा पवस्वैना वसूनि मांश्चत्व इन्दो सरसि
१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १
प्र धन्व । ब्रध्नश्चिद्यस्य वातो न जूतिं पुरुमे-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १२३ १२
धाश्चित् तकवे नरं धात् ॥

३१ २ ३१ २३१ २३ १ २ ३२ ३१२
उत न एना पवया पवस्वाधि श्रुते श्रवाय्यस्य

३२ ३ २ ३१२ ३१ २र ३२उ ३ १
तीर्थे । षष्टिं सहस्रा नैगुतो वसूनि वृक्षं न पक्वं

२ ३ १२
धूनवद् रणाय ॥

२३१ २ ३ २३ १२ ३१ २र ३ १२
महीमे अस्य वृष नाम शूषे मांश्चत्वे वा पृशने

३ १२ १ २ ३१२ ३ २३ २
वा वधत्रे । अस्वापयन् निगुतः स्नेहयच्चा-

३ २ ३ २३ १ २ ३२
पामित्राँ अपाचितो अचेतः ॥२१॥

हे आह्लादक ! अपनी प्रसिद्ध पवित्रता के द्वारा जीवन के साधनों को पवित्र करता हुआ तू मेरे मनोहर हृदय-सरोवर को शीघ्र भरपूर करदे। तेरे इस वायु-वेग को कोई आत्म-संयमी और मेधावी, स्थिर साधक ही शीघ्र उन्नति के लिए प्राप्त करता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

और श्रवण करने योग्य अन्तर्ज्ञान के स्रोतरूप अन्तःकरण में, हे सोम ! तू इस पवित्र-धारा रूप में बहकर आ और इस प्रकार हमें पवित्र कर। जिस प्रकार नीचे खड़ा मनुष्य फल-प्राप्तिरूप सुख के लिए पके वृक्ष को हिलाता और अनेक फल प्राप्त करता है; वैसे ही, निगूढ़ काम आदि को वश में करने वाला साधक हजारों प्रकार के ऐश्वर्यों की कामना करता हुआ परमसुख के लिए सोम को नाना रूपों में प्राप्त करता है।

सुखवर्षक सोम के ये दो महान् शस्त्र (साधनभूत) हैं—(१ साधक के लिए सुख की वर्षा करना और (२) शत्रुभूत संस्कारों को पराजित करना। ये सुखकारी व सुन्दर हैं और सब को छूने वाले और पीड़ा से बचाने वाले हैं। वह तू सोम गूढ शत्रुओं को सुलाता और नाद करता हुआ शत्रुओं को दूर कर एवं ज्ञान एवं चेतना-रहितों को भी दूर कर ॥२१॥

२ ३ २ ३ १ २ ३२ ३ २ ३ १ २
अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भुवो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३क २र
वरूथ्यः ॥

१२३१ २र ३१ २ ३१२ ३१२
वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमो रयिं दाः ॥

१ २ ३१२ ३१२२
तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे

१ २
सखिभ्यः ॥२२॥

हे अग्ने ! तू हमारे समीपतम तो है हीं; इसी लिए रक्षक, कल्याणकारी तथा वरण करने योग्य भी है ॥

वह अग्नि, सब में वास करने और वास कराने वाला, बसाने योग्य अन्तर्ज्ञान का स्रोत, अत्यधिक तेजस्वी है – वह हमें त्यागभावना से युक्त ऐश्वर्य को भली भान्ति प्रदान करता है ।

हे अत्यन्त कान्तिमय ! चमचमाते हुए तेजस्वरूप अग्ने ! मित्रों को सुख पहुँचाने के लिए हम तुम्हारी कामना करते हैं ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३२उ ३ १२ ३१ २३ १ २ ३ २
इमा नु कं भुवना सीषधेमेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ॥
३१ २ ३क२र ३१ २ ३ १ २र ३१
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह
२
सीषधातु ॥
३ २उ ३ १२ ३१ २ ३ १ २ ३१
आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्मभ्यं भेषजा
२
करत् ॥२३॥

इन्द्रशक्ति और सब दिव्य इन्द्रियाँ सब भुवनों को प्राप्त करें।

इन्द्रशक्ति लगातार वर्षभर—बारहों महीने—हमारे सामाजिक जीवन, शरीर और प्रज्ञारूप गृहस्थजीवन को सफल बनावे।

अपने सहायकों—इन्द्रियों और विचार शक्तियों—के समेत इन्द्र हमारे लिए रोगनाशक बने ॥२३॥

१ २र
प्र वो ऽर्चोप ॥१४॥

[यह मन्त्र तीन मन्त्रों का प्रतीक माना गया है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ये तीनों मन्त्र निम्न प्रकार हैं । इनकी व्याख्या कोष्ठान्तर्गत पृष्ठों पर देखिए–'प्रव इन्द्राय (पृ० २२४) अर्चन्त्यर्क (पृ० २२४) और उप प्रक्ते मधुम०(पृ०२२३) यहां इस रूप में इनका पाठ 'उद्व'शपुत्र' नामक ऊह-गान को दर्शाने के लिए माना जाता है ॥२४॥

इति सप्तमः खण्डः

इति सप्तमोऽध्यायः समाप्तः ॥

अथाष्टमोऽध्यायः

ऋषिः—१ (१-३ वृषगणः । (४-१२), २ (१-६) असितो देवलो वा । २ (१०-१२), ११ भृगुर्जमदग्निर्वा । ३, ६ भरद्वाजः । ४ यजतः । ५ मधुच्छन्दाः । ७ सिकता. निवावरी । ८ पुरुहन्मा । ६ पर्वतनारदौ । शिखण्डिन्यावप्सरसौ वा । १० अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः । १२ वत्सः । १३ नृमेधः । १४ अत्रिः ॥ देवताः—१-२, ७, ६-११ पवमानः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३२उ ३ १२ ३१ २३ १ २ ३ २
इमा नु कं भुवना सीषधेमेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ॥
३१ २ ३क२र ३ १ २ ३ १ २र ३१
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह
२
सीषधातु ॥
३ २उ ३ १२ ३१२ ३ १ २ ३१
आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्मभ्यं भेषजा
२
करत् ॥२३॥

इन्द्रशक्ति और सब दिव्य इन्द्रियाँ सब भुवनों को प्राप्त करें।

इन्द्रशक्ति लगातार वर्षभर–बारहों महीने—हमारे सामाजिक जीवन, शरीर और प्रज्ञारूप गृहस्थजीवन को सफल बनावे।

अपने सहायकों—इन्द्रियों और विचार शक्तियों—के समेत इन्द्र हमारे लिए रोगनाशक बने ॥२३॥

१ २र
प्र वो ऽर्चोप ॥२४॥

[यह मन्त्र तीन मन्त्रों का प्रतीक माना गया है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ये तीनों मन्त्र निम्न प्रकार हैं। इनकी व्याख्या कोष्ठान्तर्गत पृष्ठों पर देखिए—'प्रव इन्द्राय (पृ० २२४) अर्चन्त्यर्कं (पृ० २२४) और उप प्रक्षे मधुम०(पृ०२२३) यहां इस रूप में इनका पाठ 'उद्वंशपुत्र' नामक ऊह्-गान को दर्शाने के लिए माना जाता है ॥२४॥

इति सप्तमः खण्डः

इति सप्तमोऽध्यायः समाप्तः ॥

अथाष्टमोऽध्यायः

ऋषिः—१ (१-३ वृषगणः। (४-१२), २ (१-६) असितो देवलो वा। २ (१०-१२), १ भृगुर्जमदग्निर्वा। ३, ६ भरद्वाजः। ४ यजतः। ५ मधुच्छन्दाः। ७ सिकता. निवावरी। ८ पुरुहन्मा। ६ पर्वतनारदौ। शिखण्डिन्यावप्सरसौ वा। १० अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः। १२ वत्सः। १३ नृमेधः। १४ अत्रिः॥ देवताः—१-२, ७, ६-११ पवमानः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सोमः । ३ वैश्वानरः । ४ मित्रावरुणौ । ५, ८, १३-१४ इन्द्रः । ६ (१) अग्निः (२) इन्द्रः (३) इन्द्राग्नी । १२ अग्निः ॥ छन्दः—१ (१-३) त्रिष्टुप् । १ (४-१२), २, ४-६, ११,१२ गायत्री । ७ जगती । ८ प्रगाथः (विषमा बृहती, समासतो बृहती) ६ उष्णिक् । १० द्विपदा विराट् । १३ (१-२) ककुप् । १३ (३) पुर उष्णिक् । १४ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१ (१-३) धैवतः । १ (४-१२), २, ४—६, ११, १२ षड्जः । निषादः । ८ (१) मध्यमः (२) पंचमः । ६ ऋषभः । १० पञ्चमः । १३ (१-२) पञ्चमः । १३ (३) ऋषभः । १४ । ३ गान्धारः ॥

१ २र३ १२ ३ २ ३२ ३२३ १ २
प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा
१ २ ३ १ २ ३२ ३ १
विवक्ति । महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा
१३ २ ३क २र ३ १२
वराहो अभ्येति रेभन् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३१२ ३१ २ ३२उ ३ १उ ३ १२
प्र हंसासस्तृपला वग्नुमच्छामादस्तं वृषगणा
३ २३ १२ ३ १२ ३१२
अयासुः । अङ्गोषिणं पवमानं सखायो दुर्मर्षं
३१ २र ३२
वाणं प्र वदन्ति साकम् ॥
१ २ ३१२ ३२ ३ १२ ३
स योजत उरुगायस्य जूतिं वृथा क्रीडन्तं मिमते
१ २र ३ १ २ ३१२३ २३
न गावः । परीणसं कृणुते तिग्मशृङ्गो दिवा
२३१२३ १ २३२
हरिर्ददृशे नक्तमृज्रः ॥
२ ३२३ १२ ३१२ ३ १२३ १२
प्र स्वानासो रथा इवार्वन्तो न श्रवस्यवः ।
१ २ ३१ २
सोमासो राये अक्रमुः ॥
३ २ ३ १२ ३१ २र
हिन्वानासो रथा इव दधन्विरे गभस्त्योः ।
१२ ३१२
भरासः कारिणामिव ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिरञ्जते ।
३२र ३२ ३१ २
यज्ञो न सप्त धातृभिः ॥

१२ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३१ २ ३ २
परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा ।
१ २ ३ १२
मधो अर्षन्ति धारया ॥

३ १ २ ३१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १२
आपानासो विवस्वतो जिन्वन्त उषसो भगम् ।
२ ३ २ ३ १ २
सूरा अण्वं वि तन्वते ॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अप द्वारा मतीनां प्रत्ना ऋण्वन्ति कारवः ।
२ ३ १२ ३ १ २
वृष्णो हरस आयवः ॥

३ १२ ३ १ २ ३ १ २
समीचीनास आशत होतारः सप्तजानयः ।
३१ २र ३ १२
पदमेकस्य पिप्रतः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १२ ३ १ २३ १२ ३ १२ ३२
नाभा नाभिं न आ ददे चक्षुषा सूर्यं दृशे ।
३१ २र ३ १ २
कवेरपत्यमा दुहे ॥
३ २ ३२ ३२ ३१२ ३२ ३१ २ ३२
अभि प्रियं दिवस्पदमध्वर्युभिर्गुहा हितम् ।
१२ ३ १२
सूर पश्यति चक्षसा ॥१॥

यह परमानन्द रूप स्वयं दिव्य सोम क्रान्त-द्रष्टा की भांति प्रातिभ-ज्ञान बताता दिव्य गुणों के प्रादुर्भाव को स्पष्ट कर देता है। कर्म एवं प्रज्ञा की विशालता देने वाला, अपने तेज द्वारा सब का प्रिय, और पावक वह धर्म मेध-रूप सुख-वर्षक सोम वेग से शब्द करता, प्रेरित करता हुआ आता है ॥

हंसों की भांति गतिशील, वेगयुक्त और सुख-वर्षक परमानन्दरस, अनाहत नाद से प्रतिध्वनित हो, (प्रेरणा से प्रेरित) स्थान—अन्त:करण—में बलपूर्वक प्रविष्ट हुए; पुनश्च अङ्ग-अङ्ग को प्रतप्त एवं प्रदीप्त कर रहे अजेय एवं सम्भजनीय उस पवमान सोम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

के सम्बन्ध में सब मित्रभूत विचार शक्तियां विचार करती हैं।

वह परमानन्द सर्वव्यापक के-से वेग से युक्त है: उस लीलायमान को इन्द्रियां व्यर्थ ही मापना चाहती हैं ना! वह प्रखरज्ञानज्योति से सम्पन्न सोम बहुतायत उत्पन्न कर देता है; किसी प्रकार का अभाव नहीं रहने देता।

सुखवाहक रथों, सरीखे-वाहन केलिए आमन्त्रित करते तथा शीघ्रगामी बलशाली घोड़ों-सरीखे, अन्तर्ज्ञान प्रदान करने में बली व शीघ्रगति सोम ऐश्वर्य की ओर आगे बढ़ते चले आ रहे हैं॥

सुखवाहक रथों की भांति उन्नति यात्रा के लिए प्रेरित करते सोमों को ज्ञान एवं कर्मेन्द्रिय की किरणों में उठाया जा रहा है; ये सोम शिल्पियों के समूहों की भांति जीवन-यज्ञ के शिल्पी हैं।

जिस प्रकार राजा प्रशस्तियों से और यज्ञ सात ऋत्विजों से निखर उठते हैं वैसे ही परमानन्द का स्वरूप ज्ञान-किरणों से निखर जाता है॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

महती वेदवाणी द्वारा उत्पाद्यमान होते हुए आह्लादक परमानन्दरस उल्लास के लिए अमृत की धारा बहा रहे हैं ॥

विविधरूप से वास देने वाले इन्द्र के पेय बने हुए सोम, ज्ञानोदय के भोगैश्वर्य्य को प्राप्त कराते हुए, प्रेरणा देकर सूक्ष्म-तत्त्व का ज्ञान कराते हैं।

वे सदा से चले आये शिल्पी रूप सोम-सुख, वर्षक के तेज की प्राप्ति कराने के लिए सुखवर्षक की गरिमा का अनुभव कराने के लिए विचारशक्तियों के द्वारों को खोलते हैं।

सात ज्ञानेन्द्रियों (सात स्थानों में स्थित होने के कारण सात अन्यथा पांच) को आविष्ट होकर उन्हीं में पुनः उत्पन्न होने से ज्ञानेन्द्रियां सोम की पत्नीरूप हैं; ये सत्य सोम एक अन्तःकरण के स्थान को भरते हैं और जीवनयज्ञ में सर्वस्व अर्पण करके जीवन यात्रा में अपना व्यापक प्रभाव फैलाते हैं।

सर्वप्रेरक सूर्य को ज्ञान की आंख से देखने के लिए अपने अन्तःकरण में इस बन्धु समान सोम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

को बांधकर रखता हूँ और इस क्रान्तद्रष्टा द्वारा जन्मान्तर से छुटकारा दिलाने वाले परमानन्दरस को प्राप्त करता हूँ।

प्रिय, प्रकाशलोक के निवासी, इन्द्रिय आदि यज्ञसाधकों द्वारा गुप्त रूप में स्थापित सोम को साधक, ज्ञान के आलोक की सहायता से, देख लेता है। इति प्रथमः खण्डः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
असृग्रमिन्दवः पथा धर्मन्नृतस्य सुश्रियः।
३ १ २ ३ १ २
विदाना अस्य योजना ॥

२उ ३ १ २ ३ २ ३२३ १ २र
प्र धारा मधो अग्रियो महीरपो वि गाहते।
३२३ २ ३ १ २
हविर्हविःषु वन्द्यः ॥

२ ३ १ ३ १ २ ३ १ २र ३ १२
प्र युजा वाचो अग्रियो वृषो अचिक्रदद् वने।
२ ३ २ ३ १ २ ३२
सद्माभि सत्यो अध्वरः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२३ १ २र ३ १२ १ २३ १ २र
परि यत् काव्या कविर्नृम्णा पुनानो अर्षति ।
२र ३ १ २
स्वर्वाजी सिषासति ॥
१२ ३ २र ३ २ ३ १२
पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति ।
१ २ ३ १ २ ३१२
यदीमृण्वन्ति वेधसः ॥
२ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
अव्या वारे परि प्रियो हरिर्वनेषु सीदति ।
३ १ २ ३ २
रेभो वनुष्यते मती ॥
२ ३ १ २र३ १ २ ३ १ २र
स वायुमिन्द्रमश्विना साकं मदेन गच्छति ।
२ ३ १ २ ३ १२
रणा यो अस्य धर्मणा ॥
२ ३ १ २र३ २ ३ १ २ ३ १ २
आ मित्रे वरुणे भगे मधोः पवन्त ऊर्मयः ।
३ १ २ ३ १ २
विदाना अस्य शक्मभिः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ २ उ ३ १ २ ३ १ २
अस्मभ्यं रोदसी रयिं मध्वो वाजस्य सातये ।
२ ३ १ २ ३ १ २
श्रवो वसूनि सञ्जितम् ॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
आ ते दत्तं मयोभुव वह्निमद्या वृणीमहे ।
२ ३ १ २ ३ १ २
पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥

२ ३ १ २ र ३ २ र ३ १ २ ३ १ २
आ मन्द्रमा वरेण्यमा विप्रमा मनीषिणम् ।
२ ३ १ २ ३ १ २
पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥

२ ३ १ २ र ३ २ ३ १ २ ३ २
आ रयिमा सुचेतुनमा सुक्रतो तनूष्वा ।
२ ३ १ २ ३ १ २
पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥२॥

परम सत्य के धारयिता में भलीभांति आश्रित, परमसत्य के स्रोत से आये हुए आह्लादक परमानन्द रस, उस (परम सत्य) से युक्त करने की युक्ति को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सिखाने वाले मार्गों को बतलाते हैं ॥

आहवनीयों में सर्वोत्तम प्रशंसनीय हविरूप सोम अमृत की धारा के रूप में श्रेष्ठ और बड़े-बड़े विशाल कर्म-समुद्रों को पार कर लेता है।

वह सुखवर्षक सोम श्रेष्ठ वाणियों से संयुक्त हो, भजन करने योग्य परमेश्वर के लिए प्रेरित करता है : वह ही अन्तिम लक्ष्यभूत घर का सत्य मार्ग (उसकी प्राप्ति का साधनभूत) है।

जब वह क्रान्तदर्शक सोम धनरूप उत्तमवाणियों को प्रकट करता है तो वह बलशाली, परमसुख देता प्रतीत होता है।

जब इस सोम को ज्ञान-कर्मेन्द्रियां प्राप्त कर लेती हैं तो वह साधारणजनों के तेज को अभिभूत करने वाले राजा की भांति सुशोभित प्रतीत होता है।

वह प्रिय, दुःखहर्ता चितिशक्तियों के आवरणों को पार कर देहों में विराजमान होता है और अनाहत-नाद—प्रेरणा—करता हुआ—मति—समन-शक्ति—से प्राप्त किया जाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो साधक इस सोम के धारण करने योग्य बल में रमण करता है, उसमें सुख मानता है, वह उल्लास के साथ-साथ प्राणशक्ति, मनःशक्ति और ज्ञान एवं कर्मेन्द्रिय—सबको एक साथ वश में कर लेता है।

अमृत की ऊर्ध्व गामिनी धाराएं इस सोम की शक्तियों को साथ में लेकर मित्र, वरुण एवं भगरूप दिव्य गुणों की ओर चली जा रही हैं: साधक में इन गुणों का आधान करती हैं।

द्यावा पृथिवी बल प्रदान करने के लिए, अमृत रूप ऐश्वर्य को तथा अन्तःप्रेरणा-रूप ऐश्वर्य (सोम) को हमारे वश में करायें।

हम तेरे कल्याणजनक, सुखवाहक अतएव सब के अभीष्ट एवं पावक ओज को मांग रहे हैं।

वह तेरा ओज जो आह्लादक, वरणीय, मेधा-विकासक अतएव विचारशील, अतएव पावक एवं सबका अभीष्ट है;

हे शुभ कर्मों के प्रेरक! वह तेरा ओज जो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उत्तम रूप से चिताने वाला ऐश्वर्य रूप है और हमारे देहों में व्याप्त है; अतएव पावक और सबका अभीष्ट है—उस ओज को मांग रहे हैं ॥२॥

इति द्वितीयः खण्डः

३ १ २   ३ १   २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ
मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ
३ २ ३ २   ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३
जातमग्निम् । कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्नः
१ २   ३ २
पात्रं जनयन्त देवाः ॥

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १
त्वां विश्वे अमृत जायमानं शिशुं न देवा अभि
२र २ ३ १ २   ३ १ २ ३ १ २ ३
सं नवन्ते । तव क्रतुभिरमृतत्वमायन् वैश्वानर
२ ३ १ २र
यत् पित्रोरदीदेः ॥

१ २ ३ १ २ १ २   ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १
नाभिं यज्ञानां सदनं रयीणां महामाहावमभि सं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२र ३ २ ३क२र ३ १ २ २ १ २ ३ १
नवन्त। वैश्वानरं रथ्यमध्वराणां यज्ञस्य केतुं
३ ३ २
जनयन्त देवाः ॥३॥

दिव्यशक्तियों में सर्वश्रेष्ठ, पार्थिव प्राणियों के सुख-प्रापक, प्राणिमात्र में व्यापक परन्तु ऋत में प्रादुर्भूत, क्रान्तदर्शक, अत्यन्त प्रकाशमान, मनुष्यों के पूजनीय रक्षक अग्नि (संकल्प रूप) का साक्षात्कार हमारी इन्द्रियां करती हैं।

सब में व्यापक अग्ने ! जब, तू अपने ज्ञान-प्रकाश एवं कर्म-प्रेरणा के फल-स्वरूप उन पितृभूत ज्ञान-कर्मेन्द्रियों को अमर शक्ति प्राप्त कराता हुआ प्रदीप्त होता है तब, प्रत्यक्षीभूत तुझ अग्नि को सब इन्द्रियां और दिव्यगुण, इस प्रकार स्नेह भावना से लेती हैं जैसे किसी पुत्र को उसके माता-पिता।

यज्ञ भावनाओं से भावित कर्मों के केन्द्र, समस्त ऐश्वर्यों के भण्डार एवं विशाल (तृष्णाशान्त्यर्थ) जलाशय भूत अग्नि का सब अभिनन्दन करते हैं;

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

इन्द्रियां उस सर्वगत, प्रगतपथों के प्रशंसनीय महारथी, सब शुभ कार्यों के प्रतीकभूत संकल्पाग्नि को प्रत्यक्ष करती हैं ॥३॥

१ २ ३ १२ ३ १२ ३ २ ३ १
प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विपा गिरा ।
१ २ ३१ ३२
महि क्षत्रावृतं बृहत् ॥
३ २ ३ २ ३१२ ३२ ३ १ २र
सम्राजा या घृतयोनी मित्रश्चोभा वरुणश्च ।
३ २ ३१२ ३ २
देवा देवेषु प्रशस्ता ॥
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य ।
१ २ ३२ ३१२
महि वां क्षत्रं देवेषु ॥४॥

ज्ञान से विकसित वाणी द्वारा जीवन में मित्रभूत सामञ्जस्य की ओर दोष दूर करते हुए सुरक्षा की निश्चिततारूप वरुणशक्ति की पुकार करो । वे दोनों महान् बलशाली हैं और विशाल ऋत के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रापक है ॥

जो मित्र और वरुण स्वयं दीप्त हैं तथा ज्ञान-दीप्ति में ही जन्म लेते हैं और स्वयं दिव्य होते हुए सब दिव्य पदार्थों में सर्वोत्तम हैं—उनकी स्तुति करो।

हे मित्र और वरुण! तुम दोनों हमें पार्थिव और दिव्य महान् ऐश्वर्य देनेमें समर्थ हो, हमारी इन्द्रियोंमें भारी सामर्थ्य को धारण कराओ ॥४॥

१ २र ३ २ ३२ ३ १२
इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
अण्वीभिस्तना पूतासः ॥

१ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
उप ब्रह्माणि वाघतः ॥

१ २र ३ १ २ ३ १ २ १ २
इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २
सुते दधिष्व नश्चनः ॥५॥

हे इन्द्र ! अद्भुत कान्ति-सम्पन्न तू हमें प्राप्त हो; ये सोम जो तुझे लक्ष्य करके ही स्रवित हैं; अति सूक्ष्म ज्ञान-तन्तुओं द्वारा पवित्र एवं प्रवाहित हैं।

हे इन्द्र ! प्रज्ञा से प्रेरित, विकसित बुद्धि से सेवित, तू ज्ञान से सम्पन्न वेदज्ञों की स्तुतियां को प्रभावित कर॥

हे इन्द्र ! शीघ्रगति तू इन्द्रियों को वश में रखता हुआ वेदज्ञों की स्तुतियों को प्रभावित कर और इस आत्म-यज्ञ के प्रति हमारी आस्था को बढ़ा ॥५॥

१ २ ३ १ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
तमीळिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत् ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
कृष्णा कृणोति जिह्वया ॥
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ र ३ १ २
य इद्ध आविवासति सुम्नमिन्द्रस्य मर्त्यः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३१ २ ३२
द्युम्नाय सुतरा अपः ॥
२ ३ १२ ३१२ ३१ २ ३ १ २
ता नो वाजवतीरिष आशून् पिपृतमर्वतः ।
१ २ ३ २ ३ ३ २
एन्द्रमग्नि च वोढवे ॥६॥

हे साधक ! उस अग्नि की उपासना करो जो अपने तेज से सब भोगने योग्य पदार्थों में पहुँचा रहता है और अपनी ज्वाला से सबको छिन्न-भिन्न—निष्पाप—कर देता है।

जो मरणधर्मा में निवास करने वाला अग्नि प्रदीप्त किया हुआ, इन्द्र के सुख का उद्घाटन करता है और ज्ञान-प्रकाश के लिये कर्म-बन्धनों को सुख से तरण-योग्य बनाता है।

उस इन्द्र और अग्नि को सुख से धारण करने के लिये उन्हीं से प्रार्थना है कि वे हमारी ज्ञान-सम्पन्न प्रेरक ज्ञानेन्द्रियों और शीघ्रगामी कर्मेन्द्रियों को तृप्त करें ॥६॥

इति तृतीयः खण्डः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

५ २ ३ २ ३ १ २ ३२उ ३ २ ३१
प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न
२र ३ १२
प्र मिनाति सङ्गिरम् ।
१२ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३१२ ३१
मर्य इव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शत-
२ ३ २
यामना पथा ॥

२ ३ १ २ ३१ २ ३ १२ ३ १२ ३१२
प्र वो धियो मन्द्रयुवो विपन्युवः पनस्युवः संवर-
२ ३ १ २ ३क२र ३ २ ३ २
णेष्वक्रमुः । हरिं क्रीडन्तमभ्यनूषत स्तुभोऽभि
३२३ २३१२
धेनवः पयसेदशिश्रयुः ॥

१ २ ३१२ ३ २३ ३२ २ ३ १२३
आ नः सोम संयतं पिप्युषीमिषमिन्दो पवस्व
१२ ३ १ २ २ ३ १२३ २र ३१२
पवमान ऊर्मिणा । या नो दोहते त्रिरहन्नसश्चुषी
३१ २र३ १२ ३ १२
क्षुमद् वाजवन् मधुमत् सुवीर्यम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आह्लादक सोम इन्द्र के घर में आता ही है, मित्र अपने मित्र के साथ की गई प्रतिज्ञा को कभी भंग नहीं करता। जैसे पौरुषयुक्त जन युवा स्त्रियों के साथ चलता शोभित होता है वैसे ही यह सोम अपनी युवा ज्ञान-वृत्तियों सहित सैंकड़ों मार्गों से हृदय-गृह में प्रविष्ट होता शोभित होता है।

आनन्द की खोज में लगी हुईं, स्तुति करतीं एवं स्तुति करना चाहती हुईं तुझ सोम की प्रज्ञा-शक्तियों ने अवरोधक वृत्तियों को घेर लिया; पुनः वे धेनुरूप प्रज्ञाएं परमानन्द रसरूप अमृत को लिये हुए दुःखहर्ता लीलामय इन्द्र की स्तुति करतीं और उसमें ही अवस्थित हो जाती हैं॥

हे आह्लादक सोम! धारारूप में बहता हुआ तू हमें संगृहीत एवं बढ़ी हुई ज्ञान-प्रेरणा प्रदान कर: यह ज्ञान-प्रेरणा हमें दिन में तीन वार, बे रोक-टोक, वह (दूध) फल प्रदान करती है जो यश, ज्ञान, अमृत और बल से युक्त है॥७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २र ३ २ ३ १२ ३ १२
न किष्टं कर्मणा नशद् यश्चकार सदावृधम् ।
२ ३ २ ३२ ३ १२३ १२३१२ ३ १ २र
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णुमोजसा ॥
१२ ३१ २र ३१ २र ३ १२
अषाढमुग्रं पृतनासु सासहिं यस्मिन् महारु-
३१२ २ ३२३ १२ ३२३
रुज्रयः । सं धेनवो जायमाने अनोनवुर्द्यावः
१ २
क्षामीरनोनवुः ॥८॥

जो मनुष्य अपने आपको यज्ञों द्वारा सब से प्रशंसित, ज्ञान-सम्पन्न, अजेय, बल से धीर और इन्द्र की भांति सदा उन्नति करने वाला बना लेता है उसको कर्म से भी भला कौन पहुँच सकता है !

उस असह्य, तेजस्वी और युद्धों में सबसे अधिक सामर्थ्य वाले इन्द्र को भला कौन पहुँच सकता है ? जिसके पूर्णरूपमें सध जाने पर, फैलीं और बड़े वेग-वाली, प्रकाश लोक और पृथिवी लोक दोनों लोकों की गो-रूप किरणें नतमस्तक होती हैं ॥८॥

इति चतुर्थः खण्डः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २र ३ २३ १ २
सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्रगायत ।
२ ३ २ ३१ २र ३२
शिशुं नः यज्ञैः परि भूषत श्रिये ॥
१ २ ३ २उ ३ १ २ २ १ २ ३ १ २
समी वत्सं न मातृभिः सृजता गयसाधनम् ।
३ २क १ २ ३ १ २र
देवाव्यं३ मदमभि द्विशवसम् ॥
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
पुनाता दक्षसाधनं यथा शर्धाय वीतये ।
१ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
यथा मित्राय वरुणाय शन्तमम् ॥६॥

हे मित्रो ! आओ, बैठो; प्रद्रवित होते सोम का गान करो। उस सोम को, अपने बालक की भांति प्रिय समझते हुए, ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए, यज्ञिय कर्मों से भूषित करो ।

ऐश्वर्य के साधनभूत, दिव्य गुणों का आधान करने में सहायक, आह्लादक और ज्ञान एवं कर्म—दोनों—के बल-प्रदाता पुत्ररूप सोम का सम्मिलन

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उसकी मातृभूत इन्द्रियों से कराओ।

बल के साधनभूत सोम का इस प्रकार सम्पादन करो कि वह शारीरिक बल की वृद्धि के लिए हो और मित्र एवं वरुण शब्दाभिधेय आत्मिक बलों के लिए भी कल्याण का भली भांति विस्तार करे ॥६॥

२ ३क २र ३ १ २ ३ २
प्र वाज्यक्षाः सहस्रधारस्तिरः
३ २ ३ २र ३ १ २
पवित्रं वि वारमव्यम् ॥
२ ३क २र ३ १ २
स वाज्यक्षाः सहस्ररेता।
३ १ २ ३ १ २र ३ २
अद्भिर्मृजानो गोभिः श्रीणानः ॥
१ २ ३ १ २
प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा।
२र ३ १ २र ३ २
नृभिर्येमानो अद्रिभिः सुतः ॥१०॥

शक्तिमान् परमानन्द रस सहस्रों धाराओं में होकर चिति के आवरण को पार करके अदृश्य रूप

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

से हृदयदेश को आविष्ट करता है।

वह नाना शक्तियों का मूलकारण, शक्तिमान्, परमानन्द रस, कर्मों और प्रज्ञाओं से अधिक स्पष्ट होता एवं ज्ञान-किरणों से परिपक्व होता हुआ हृदय को आविष्ट करता है।

हे परमानन्दरस ! तू साधक जनों से नियन्त्रित और दृढ़ साधनों से सिद्ध होकर दिव्य मनःशक्ति की गुफा—अन्तःकरण—में प्रकट हो ॥१०॥

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे ।
२ ३१ २ ३ १ २
य वादः शर्यणावति ॥
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३क २र
य आर्जीकेषु कृत्वसु ये मध्ये पस्त्यानाम् ।
२ ३ १ २ ३ १ २
ये वा जनेषु पञ्चसु ॥
१ २ ३ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
ते नो वृष्टिं दिवस्परि पवन्तामा सुवीर्यम् ।
३ २ ३ २ ३ १ २
स्वाना देवास इन्दवः ॥११॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो परमानन्दरस दूर, समीप या इस देह में स्थित अन्तःकरण में : पुनश्च गृहमेधियों के ऋजु अथवा सरल कर्त्तव्यों की क्रम-व्यवस्था के मध्य अथवा प्रजा जन—ब्राह्मणादि प्रजामात्र—के कर्त्तव्य पालन के सिलसिले में उत्पन्न होते हैं; वे, दिव्य आह्लादक परमानन्दरस प्रेरणा देते हुए, हमारे लिए प्रकाशलोक से आने वाली, नाना पदार्थों की प्रसविनी होने से बलवती, ज्ञान-वर्षा को भेजें ॥११॥

॥ इति पञ्चमः खण्डः ॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
आ ते वत्सो मनो यमत् परमाच्चित् सधस्थात् ।
२ ३ १ २ ३ २
अग्ने त्वां कामये गिरा ॥
३ २उ ३२उ ३ २ ३ २ ३ १२ ३२
पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि दिशो विश्वा अनु प्रभुः ।
३ १ २
समत्सु त्वा हवामहे ॥
३२ ३ १ २र ३१ २
समत्स्वग्निमवसे वाजयन्तो हवामहे ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३१ २
वाजेषु चित्रराधसम् ॥१२॥

हे अग्ने ! आपका दुलारा पुत्र रूप यह मेरा मन दूरातिदूर अत्यन्त उत्कृष्ट स्थान में भी स्थित आपसे एक ही स्थान पर बन्धा हुआ है; मेरा मन निश्चय आपका ही भक्त है; मैं स्तुति से आपको चाह भी तो रहा हूँ ।

हे अग्ने ! समदृष्टि आप बहुत प्रकार से रक्षक हैं; सब दिशाओं में आपका प्रभुत्व है । जीवन में आते नाना संघर्षों के उपस्थित होने पर हम आपकी स्तुति करते हैं ।

संघर्षों में, ज्ञान, बल आदि की चाहना से अपनी रक्षा एवं प्रगति के लिए हम उस अग्नि को स्मरण करते हैं जो ज्ञानादि प्राप्ति के अर्थ अद्भुत ऐश्वर्य को प्रदान करने वाला है ॥१२॥

१ २ ३ १ २३ १ २ ३ १ २
त्वं न इन्द्रा भर ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे ।
२ ३१ ३ २१२
आ वीरं पृतनासहम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
१ २ ३ १ २
अथा ते सुम्नमीमहे ॥
१ २ ३२ ३ १ २
त्वां शुष्मिन् पुरुहूत वाजयन्तमुप ब्रुवे सहस्कृत।
१ २ ३ १ २
स नो रास्व सुवीर्यम् ॥१३॥

सैंकड़ों प्रज्ञाओं वाले एवं विविध कर्मों के साधक ! सब लोकों के द्रष्टा इन्द्र ! हमें वीरताधायक तथा शत्रु-विजेता बल एवं वीर्य से भरपूर करदे ।

हे बसाने वाले विविध-कर्म-साधक दिव्य मन अथवा प्रज्ञाशक्ति ! तू ही हमारा—हमारी मनोवृत्तियों का—पालक एवं निर्माता है : हम चाहते हैं कि तुझे शोभन कर्मों से अनुमीयमान परमसुख प्राप्त हो ।

हे बलशाली, बहुस्तुत, बलोत्पादक इन्द्र ! ज्ञान एवं बल प्रदान करते तुझसे मैं यह रहस्य की बात करता हूँ (तुझे मैं अपने मन की बात बताता हूँ)

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कि तू ही है जो हमें उत्तम वीर्य—ऐश्वर्यजनक शक्ति-प्रदान कर सकता है ॥१३॥

१ २ ३ २र ३ १ २
यदिन्द्र चित्र म इह नास्ति त्वादातमद्रिवः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर ॥
१ २र३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र द्युक्षं तदा भर ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
विद्याम तस्य ते वयमकूपारस्य दावनः ॥
१ २ ३ १ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३१ ३२
यत्ते दित्सु प्रराध्यं मनो अस्ति श्रुतं बृहत् ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
तेन दृढा चिदद्रिव आ वाजं दर्षि सातये ॥१४॥

हे चित्स्वरूप, अदम्य, इन्द्र ! तुझसे दिये जाने योग्य जो धन (ज्ञान-धन) मुझे प्राप्त नहीं है वह धन मुझे मुक्त-हस्त होकर प्रदान कर।

हे इन्द्र ! जिस किसी को तू उन्नति एवं ज्ञान का प्रकाश देने वाला अतएव स्वीकरणीय समझे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उसको भर ले; हम तेरी अन्तस्तल की गहराई में विद्यमान संकल्पाग्नि—संकल्पशक्ति—को अनुभव करते हैं ।

जो तेरे, दिशाओं में—जहां-तहां— बिखरे, अतएव दक्षता से वश में लाने योग्य मननशक्ति एवं विशाल प्रेरणा बल हैं, उनको साधनरूप से काम में लाकर, हे कठिन कर्मों के साधक इन्द्र ! तू (इन्द्रिय आदि में) बांटने के लिए ज्ञानादि बल के दृढ़-संघट्ट को तोड़-फोड़ डाल ॥१४॥

इति षष्ठः खण्डः । इति चतुर्थः प्रपाठकः ।

इत्यष्टमोऽध्यायः समाप्तः ॥

अथ नवमोऽध्यायः

ऋषिः—१ प्रतर्दनः । २–४ असितो देवलो वा । ५, ११ उचथ्यः । ६, ७ अमहीयुः । ८, १५ निध्रुविः । ९ वसिष्ठः । १० सुकक्षः । १२ कविः । १३ देवा-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तिथिः । १४ भर्गः । १६ अंबरीषः ऋजिश्वा च । १७ अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः । १८ उशनाः । १९ नृमेधः । २० जेता ॥ देवता—१-८, ११, १२, १५-१७ पवमानः सोमः । ६, १८ अग्निः । १०, १३, १४, १६, २० इन्द्रः ॥ छन्दः—२-८, १०, ११, १५, १८ गायत्री । १, ९ त्रिष्टुप् । १२ जगती । १३, १४ प्रगाथः (विषमा बृहती समासतो बृहती), १६, २० अनुष्टुप् । १७ द्विपदा पङ्क्तिः । १९ उष्णिक् ॥ स्वरः—२-८, १०, ११, १५, १८ षड्जः । १, ९ धैवतः । १२ निषादः । १३, १४ मध्यमः । १६, २० गान्धारः । १७ पञ्चमः । १९ ऋषभः ॥

१ २ ३१ २३१ २ ३ २ ३ १२
शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति विप्रं
३१२ ३१२ ३ २ ३ १ २र ३१
मरुतो गणेन । कविर्गीर्भिः काव्येना कविः सन्
२र ३२३१ २ ३ १ २
त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ॥

१ २ ३ १ २ ३२ ३१ ३१२ ३ १
ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्षाः सहस्रनीथः पदवीः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र३ १ २
कवीनाम् । तृतीयं धाम महिषः सिषासन् त्सोमो
३ २ ३ १ २ ३ २
विराजमनु राजति ष्टुप् ॥

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १
चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स
२र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २
आयुधानि बिभ्रत् । अपामूर्मिं सचमानः समुद्रं
३ २ ३ १ २ ३ १ २
तुरीयं धाम महिषो विवक्ति ॥१॥

प्राण एवं विचारशक्तियां, अपने गण सहित, प्रसुप्त परन्तु सचेतन एवं चेताने वाले, मनोहर, ज्ञान-प्रकाश से सब कुछ स्पष्ट कर देने वाले सोम, परमानन्द रस, को साधतीं और स्पष्ट करती हैं। वह सोम ज्ञान-प्रकाशक वाणियों से क्रान्तद्रष्टा एवं परमज्ञान से क्रान्तद्रष्टा होकर प्रेरणाशब्द करता, अन्तःप्रेरणा प्रदान करता हुआ, हृदय की चलनी में पहुँचता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह सोम जो विचार और कर्म दोनों में दूर-दृष्टि को उत्पन्न करता है, परमसुख तक पहुँचाता है अतएव बहुविध स्तुतियों के योग्य और क्रान्तद्रष्टाओं के पद के योग्य है; वह महान् बलशाली सोम तीसरे स्थान—साधक के लिए सुषुप्ति अवस्था—को प्रदान कराना चाहता है; अतएव स्तुति से उस विराट्शक्ति के सदृश प्रतीत होता है।

बुद्धि-इन्द्रिय-अन्तःकरण आदि सारी सेना का अधिष्ठाता, वेगवान पक्षी की भांति सशक्त स्वतन्त्र-गति होकर ज्ञान-रश्मियों को प्राप्त कराने हारा, विशुद्ध, सर्वसामर्थ्ययुक्त सोम, समुद्र में जल की लहरों की भांति आनन्द के स्रोत में से आनन्द की लहरों को पहुँचा कर चतुर्थ आनन्दमय महान् धाम को स्पष्ट करता है ॥१॥

३१ २र ३ २ ३१ २र ३ १ २
एते सोमा अभि प्रियमिन्द्रस्य काममक्षरन् ।
१२ ३ ३क२र
वर्धन्तो अस्य वीर्यम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १२ ३२ ३ १ २ ३२ ३ १ २
पुनानासश्चमूषदो गच्छन्तो वायुमश्विना ।
१ २ ३ १ २
ते नो धत्त सुवीर्यम् ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र
इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो हार्दि चोदय ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
देवानां योनिमासदम् ॥

३१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३१२
मृजन्ति त्वा दश क्षिपो हिन्वन्ति सप्त धीतयः ।
२ ३ १ २
अनु विप्रा अमादिषुः ॥

३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३क२र
देवेभ्यस्त्वा मदाय कं सृजानमति मेष्यः ।
१ २र
सं गोभिर्वासयामसि ॥

३ १ ३ २ ३ १ २र ३१ २र
पुनानः कलशेष्वा वस्त्राण्यरुषो हरिः ।
२ ३ १ २
परि गव्यान्यव्यत ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ १ २ ३ २३ ३ २ ३ १ २
मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
इन्दो सखायमा विश ॥
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
नृचक्षसं त्वा वयमिन्द्रपीतं स्वर्विदम् ।
३ १ २ ३ १ २र
भक्षीमहि प्रजामिषम् ॥
३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
वृष्टिं दिवः परि स्रव द्युम्नं पृथिव्या अधि ।
१ २ ३ १ २
सहो नः सोम पृत्सु धाः ॥२॥

इन सोमों ने इन्द्र का बल-वीर्य बढ़ा कर उसकी इच्छा को पूरा किया ।

बुद्धि-इन्द्रिय-अन्तःकरण आदि के अधिष्ठाता सोम, शीघ्रगति से इन्द्र को प्राप्त हो, हमें उत्तम वीर्य धारण करावें ।

हे सोम ! इन्द्र की सफलता के लिये प्रवहमान हो अन्तःकरण को प्रेरित कर; जिससे दिव्य-इन्द्रियां

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अपने स्थान पर स्थित हों ॥

तुझे दसों इन्द्रियां, ज्ञान एवं कर्म द्वारा शुद्ध करतीं और सात ध्यान-वृत्तियां प्रेरित करती हैं; इसके पश्चात् विकसित बुद्धियों वाले ज्ञानी तुझसे प्रसन्नता ग्रहण करते हैं ॥

हे सोम ! हम साधक, इन्द्रियों के हर्षार्थ, बलवती चितिशक्तियों को पारकर सुख की रचना करते तुझ सोम को ज्ञान किरणों से आवृत करते हैं ।

अंग-अंग को आविष्ट—पुलकित—करता, कांतिमान्, दुःखहारी परमानन्दरस ज्ञान-किरणों के आवरणों (वस्त्रों) को धारण करता है ।

ज्ञानैश्वर्य से सम्पन्न हम साधकों को पहुँच और सब द्वेषभावनाओं को नष्ट कर; इन्द्ररूप मित्र को आविष्ट कर ।

तुझ द्रष्टा, इन्द्र द्वारा पान किये गये, और परमसुख तक पहुँचाने वाले सोम का हम सेवन करें और वृद्धि को प्राप्त करें ॥

हे सोम ! तू प्रकाशलोक से पृथिवी पर तेज की

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वर्षा कर और संघर्षों में हमें सहनशक्ति धारण करा ॥२॥

इति प्रथमः खण्डः

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः ।
३ १ २र ३ २
वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम् ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र
पवमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गायत ।
३ २ ३ १ २
सुष्वाणं देववीतये ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः ।
३ २ ३ १ २
गृणाना देववीतये ॥

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीरिषः ।
३ १ २ ३ १ २
द्यु मदिन्दो सुवीर्यम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अत्या हियाना न हेतृभिरसृग्रं वाजसातये ।
२उ ३ १ २ ३ १ २
वि वारमव्यमाशवः ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
ते नः सहस्रिणं रयिं पवन्तामा सुवीर्यम् ।
३ २ ३ २ ३ १ २
स्वाना देवास इन्दवः ॥
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
वाश्रा अर्षन्तीन्दवोऽभि वत्सं न मातरः ।
३ १ २र
दधन्विरे गभस्त्योः ॥
२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमानः कनिक्रदत् ।
२ ३ २ ३ १ २
विश्वा अप द्विषो जहि ॥
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः स्वर्दृशः ।
१ २ ३ १ २
योनावृतस्य सीदत ॥३॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चिति के आवरणों को पार करता सोम, अनेक धाराओं में बहता हुआ, प्राणशक्ति-सम्पन्न इन्द्र के स्थान में पहुँच रहा है।

रक्षा चाहने वालो! दिव्य इन्द्रियों के भोग के लिए परिस्रुत, विचार-शक्तियों को विकसित करने वाले पवमान की स्तुति करो।

दिव्यता के आधान की प्रेरणा करते, बहुबली सोम, ज्ञान-बल को प्रदान करने के लिये, बह रहे हैं।

हे आह्लादक सोम! बल-प्राप्ति के लिये हमें विशाल प्रेरणाएं और ज्ञान-प्रकाशयुक्त सुसामर्थ्य प्रदान कर।

ज्ञान की किरणों द्वारा प्रेरित-से ये सोम चिति के आवरण को पारकर व्याप्त हो, ज्ञान-धन प्रदान करने की सामर्थ्य से युक्त होते हैं।

वे दिव्य आह्लादक सोम प्रेरणा-प्रदान कर हमें सहस्रों प्रकार के बलदाता, सामर्थ्ययुक्त ऐश्वर्य को पहुँचावें।

जिस प्रकार गौवें अपने बछड़े को स्नेह से पुका-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रती हुईं उनके पास पहुँचती हैं वैसे ही ये सोम प्रेरणा देतेहुये अपने प्रिय साधक इन्द्र के पास पहुँचते हैं; पुनश्च इन्द्र उन्हें अपनी ज्ञान एवं कर्म-इन्द्रिय रूप बाहुओं में धारण करता है।

इन्द्र का प्रिय, आनन्द का स्रोत, प्रेरणा-शब्द-कारी पवमान सोम सब द्वेषभावनाओं को नष्ट कर दे।

अनुदार वृत्तियों को नष्ट करने वाले, परमसुख के मार्ग के प्रदर्शक, पवमान, सोम, परमसत्य के आश्रय में स्थिर करते हैं ॥३॥

इति द्वितीयः खण्डः

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
सोमा असृग्रमिन्दवः सुता ऋतस्य धारया।
१ २ ३ १ २
इन्द्राय मधुमत्तमाः ॥
३ १ २र ३ १ २ ३ २उ १ २
अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न धेनवः।
२ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्र सोमस्य पीतये ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १२३ १ २ ३ १ २ ३ २
मदच्युत् चेति सादने सिन्धोरूर्मा विपश्चित् ।
१ २ ३ १ २र ३ २
सोमो गौरी अधि श्रितः ॥
३ १ २र ३ २ ३ १२
दिवो नाभा विचक्षणोऽव्या वारे महीयते ।
२ ३ २ ३१ २ ३ २
सोमो यः सुक्रतुः कविः ॥
१ २र ३ २ ३ २ ३ २ ३२३ १ २
यः सोमः कलशेष्वा अन्तः पवित्र आहितः ।
२उ ३ १ २
तमिन्दुः परि षस्वजे ॥
२र ३ १ २ ३१ २र ३ १ २
प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि ।
२ ३ १ २ ३ १२
जिन्वन् कोशं मधुश्चुतम् ॥
१ २ ३ २३ १ २ ३ २ ३ १ २३१ २
नित्यस्तोत्रो वनस्पतिर्धेनामन्तः सबर्दुघाम् ।
३ १ २र ३ २
हिन्वानो मानुषा युजा ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ १ २
आ पवमान धारया रयिं सहस्रवर्चसम् ।
३ १ २ ३ १ २
अस्मे इन्दो स्वाभुवम् ॥
३ २ ३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २र ३२
अभि प्रिया दिवः कविर्विप्रः स धारया सुतः ।
१ २ ३ १ २
सोमो हिन्वे परावति ॥४॥

आह्लादक उत्पादित सोम परमसत्य की धारा के रूप में प्रवहमान होकर इन्द्र के लिए अति मधुर—अमृतमय—बन जाते हैं ।

दुधार गौवें जैसे अपने बछड़े के सन्मुख स्नेह से आत्म समर्पण करती हैं वैसे ही इन्द्र को सोमामृत का पान कराने के लिए विकसित ज्ञानशक्ति वाली इन्द्रियां आत्म-समर्पण करती हैं ।

सोम, शुभ्र-चिति का आश्रय लेकर, आनन्ददाता एवं प्रज्ञा-विकासक होकर, समुद्र की लहरों-सरीखी अन्तःकरण की, निवास के योग्य, वृत्तियों में वास करता है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञान-प्रकाश का केन्द्रभूत, चिति के आवरण के पारंगत, कान्तदर्शी सोम पूजा योग्य है; शुभ कर्मों का प्रेरक है।

जो सोम इन्द्रियों में और पावक अन्त:करण में स्थापित है उसका आलिंगन यह आह्लाद लेनेवाला इन्द्र करता है।

आह्लादक सोम, आनन्द-स्रोतरूप अन्त:करण के तल पर स्थित प्रेरणावाणी से संयुक्त होता है और इस प्रकार अमृत बरसाते कोश को प्रदान करता है।

नित्यस्तुत, स्तुतियों का अधिष्ठाता सोम मनुष्य की योगसाधना के द्वारा अन्त:करण में चरमसुखरूप दूध दुहानेवाली धेनुरूप सरस्वती को प्रेरित करता है;

हे पवमान, आह्लादक सोम ! तू हमारे लिये परमसुख के उत्पादक, हजारों सामर्थ्यों के प्रदाता ऐश्वर्य की धाराओं को बहा।

क्रान्तदर्शी, विचारशक्तियों का विकासक, धारा रूप में उत्पादित, सोम दूर देश में विद्यमान, प्रकाश-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

लोक के प्रति प्रेरणा करता है ॥७॥

इति तृतीयः खण्डः

२ ३   १   २   ३   १   २ ३ १ २   ३ २
उत्ते शुष्मास ईरते सिन्धोरूर्मेरिव स्वनः ।
३ १   २   ३ २
वाणस्य चोदया पविम् ॥
३   २   ३   १ २   ३   १   २र   ३   १ २
प्रसवे त उदीरते तिस्रो वाचो मखस्युवः ।
२उ   ३   २ ३   १ २
यदव्य एषि सानवि ॥
२   ३   २ ३   १ २   ३ १   २र   ३   १ २
अव्या वारैः परि प्रियं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।
१ २   ३   १ २
पवमानं मधुश्चुतम् ॥
१   २   ३ २ ३   १ २
आ पवस्य मदिन्तम पवित्रं धारया कवे ।
३ २   ३   १ २ ३   १ २
अर्कस्य योनिमासदम् ॥
१   २   ३   १ २   ३ २   ३   १   २
स पवस्य मदिन्तम गोभिरञ्जानो अक्तुभिः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २
ऐन्द्रस्य जठरं विश ॥५॥

सिन्धु की तरंग से जैसे शब्द निकलता है वैसे ही हे सोम! तेरे बल अथवा शक्तियों की तरंगें प्रेरणा शब्द करती हैं; हे सोम! तू शरीर की प्रवर्तक-शक्ति को प्रेरित करता रह।

हे सोम! जब कि तू चिति की सर्वाधिक उन्नत चोटी पर पहुँचता है तो, तेरे प्रकट होने पर साधक की तीनों—ज्ञान, कर्म और कर्ममय वाणियां, प्रस्फुरित हो उठती हैं।

उस, प्रिय, मनोहर सोमको दृढ़ धारणाओं—अथवा सुखजलवर्षक मेघभूत साधनों से प्रेरित कर चिति के आवरणों में से उत्पादित करते हैं: वह पवमान सोम अमृत चुआता हमें पहुँचता है।

हे प्रचुरमात्रा में उल्लास प्रदान करने वाले, कान्तदर्शी सोम! अति प्रकाशमान, स्तुत्य, परम-प्रकाशक के परमस्थान को प्राप्त कराने के लिये, तू धारारूप में मेरे अन्तःकरण में द्रवित हो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह अत्यन्त आह्लादक सोम व्यञ्जक (प्रकाशक) ज्ञान-रश्मियों से संयुक्त होकर इन्द्र के उदर में प्रविष्ट हो : इन्द्र को आविष्ट करे ॥५॥

इति चतुर्थः खण्डः

३ २ ३ १ २॰ ३ १॰ २ ३ २३ २
अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा ।
३ १ २ ३ १ २र
अवाहन् नवतीर्नव ॥
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पुरः सद्य इत्थाधिये दिवोदासाय शम्बरम् ।
२ ३ २ ३ २ ३ १ २
अध त्यं तुर्वशं यदुम् ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १
परि णो अश्वमश्वविद् गोमदिन्दो हिरण्यवत् ।
१ २ ३ २ ३ १ २
क्षरा सहस्रिणीरिषः ॥६॥

हे आह्लादक ! तेरे आनन्दरसों में से जिसने ९९ वर्ष पार कराये हैं, उसी आनन्द की लहर में उमड़ता चला आ ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सोम ! तू यहां, शीघ्र ही, उस सत्यज्ञान व सत्यकर्मा साधक के लिये कल्याण के विनाशक, हिंसक जन (की भावना) को पराजित कर।

हे अश्व की भांति कर्मशक्ति से सम्पन्न, ज्ञान-शक्ति-सम्पन्न और अतएव ऐश्वर्यशालिन् आह्लादक सोम ! तू हमें हजारों फल देने वाली प्रेरणाएं प्रदान कर ॥६॥

३ १ २ ३ २र ३ २ ३ १ २
अपघ्नन् पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः ।
१ ३ १ २ ३ २
गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
महो नो राय आ भर पवमान जही मृधः ।
१ २ ३ २ ३ १ २
रास्वेन्दो वीरवद् यशः ॥
१ ३ २ ३ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ ३
न त्वा शतं च न हुतो राधो दित्सन्तमा मिनन् ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
यत् पुनानो मखस्यसे ॥७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सोम इन्द्र के स्थान—अन्तःकरण—में प्रविष्ट होकर अनुदार हिंसक भावों को नष्ट करता हुआ प्रकट होता है।

हे पवमान सोम ! तू हमें भारी ऐश्वर्य से भरपूर कर और हिंसक भावनाओं को नष्ट कर; हे आह्लादक ! हमें विस्तारशील यश प्रदान कर।

जब कि प्रसूयमान तू दानभावना से हमें भावित करता है तो इस प्रकार तुझ ऐश्वर्य के दानशील सोम को सैंकड़ों भी कुटिलवृत्तियां पराभूत नहीं कर पातीं ॥७॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २३ १२
अया पवस्य धारया यया सूर्यमरोचयः ।
३ १ २र ३२
हिन्वानो मानुषीरपः ॥
१ २ ३ २३ १२ ३ १२ ३ १ २र
अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनावधि ।
३ १ २ ३ १ २
अन्तरिक्षेण यातवे ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २उ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
उत त्या हरितो रथे सूरो अयुक्त यातवे ।
२ ३ २ ३ १ २ ३ २
इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन् ॥८॥

हे सोम ! जिस अमृत की धारा से तूने प्रेरक मन को प्रकाशित किया उसी से मानवकर्मों को प्रेरित करता हुआ तू पवित्रता के प्रवाह को चला ।

पवमान प्रेरक सोम, अन्तरिक्ष से--उन्नति के मार्ग से--जाने के लिए मन और वेग को संयुक्त करता है ।

और वह प्रेरक सोम, उन्नति गति के लिए उन हरणशील, वाहक, इन्द्रियों को इस वाहक रथरूप देह में जोड़ता है : इसी सोम को आह्लादक इन्द्र कहते हैं ॥८॥

इति पञ्चमः खण्डः

३ १ २ ३२३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१२ ३१
अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूतमध्वरे
२ १ २र३ १ २ ३ २ ३ १ २
कृणुध्वम् । यो मर्त्येषु निध्रुविर्ऋतावा तपुर्मूर्धा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३२
घृतान्नः पावकः ॥

२ ३२ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३२ ३१२ ३
प्रोथदश्वो न यवसेऽविष्यन् यदा महः संवरणाद्

१ २ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
व्यस्थात् । आदस्य वातो अनु वाति शोचिरध

३ १२ ३ १२
स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति ॥

१ २र ३ १२ ३ २उ ३ १२ ३ १२
उद् यस्य ते नवजातस्य वृष्णोऽग्ने चरन्त्यजरा

३ २ २ ३ १ २३ २ ३१ २ ३ २ ३१
इधानाः । अच्छा द्यामरुषो धूम एषि सं दूतो

२ ३ १२३ २ ३ २
अग्न ईयसे हि देवान् ॥६॥

ज्ञानेन्द्रिय की ज्वालाओं से सोत्साह तुम साधक दिव्य संकल्पाग्नि को, जो कि यज्ञ का सर्वोत्तम साधन है, इस जीवनयज्ञ में अपना अग्रगामी (दूत =वाहक) बनाओ; वह अग्नि मनुष्य में अचल, परमसत्य का प्रापक, तपस्वियों में मूर्धास्थानीय,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तेजस्विता को ही भोजनरूप से पचाने वाला) अति तेजस्वी) और शोधक है।

खाद्य की इच्छा से अपने आवरण रूप घर से जैसे शब्द करता बलवान् घोड़ा निकलता है वैसे यह बलवान, वेगवान् संकल्पाग्नि जब अपने महान् आवरण रूप अन्तःकरण से शब्दों में प्रकट होता है तो इसकी देदीप्यमान प्राणशक्ति भी इसका अनु-करण करती है। हे अग्ने ! तेरा वह गमन निश्चय ही आकर्षक बनता है।

नवोदित, सुखवर्षक तुझ संकल्पाग्नि के मन्द न पड़ने वाले तेज जब प्रकट होते हैं तो तेरी वह चमकीली धाक द्यु लोक में पहुँचती है; हे दिव्यगुणों के अग्रदूत तू दिव्यगुणों को प्राप्त कराता है ॥६॥

१ २र ३२ ३ २३ १ २
तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे ।
१ २र ३ १ २
स वृषा वृषभो भुवत् ॥
२ ३ १ २र ३१ २र३ १ २र ३२
इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स बले हितः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३२उ ३ २
द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः ॥
३ २उ ३ १ २र३ १ २ ३ १२
गिरा वज्रो न सम्भृतः स बलो अनपच्युतः ।
३ २ ३ १ २र
ववक्ष उग्रो अस्तृतः ॥१०॥

बड़ी-बड़ी ज्ञान की अवरोधक, तामसी प्रवृत्तियों को नष्ट करने के लिये, हम, प्रज्ञाशक्ति को बलवान् बनाते हैं। वह दिव्यशक्ति, अपनी ज्ञानवर्षा से, हम पर सुखों की वर्षा करे।

वह इन्द्र जो कुटिलताओं को दमन करने में समर्थ, सर्वाधिक बलशाली और बल के कार्यों में नियुक्त है, वह परमानन्द रस का पान करने वाला इन्द्र यशस्वी एवं स्तुति का पात्र है।

वज्र की भांति ठोस, अडिग बलरूप वह इन्द्र वाणी से तेजस्वी एवं अहिंसित बनाया गया है ॥१०॥

इति षष्ठः खण्डः

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २३ १ २
अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ नय ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २
पुनाहीन्द्राय पातवे ॥
२३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३क २र
तव त्य इन्दो अन्धसो देवा मधोर्व्याशत ।
१ २ ३ १ २
पवमानस्य मरुतः ॥
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २
दिवः पीयूषमुत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
३ २ ३ १ २
सुनोता मधुमत्तमम् ॥११॥

हे साधक ! धारणाओं से सिद्ध किये सोम को अन्तःकरण में उंडेल दे; इन्द्र के पीने के लिए अन्तः-करण से इसे पवित्र कर ।

हे आह्लादक ! तुझ पवमान के प्राणशक्ति सम्पन्न अन्नरूप अमृत को दिव्य गुण-युक्त विचार और प्राण-शक्तियां उपभोग करें ।

हे साधको ! प्रकाशलोक के अमृतरस-रूप उत्तम, अति मधुर सोम को शत्रु-संहारक आयुधों से युक्त इन्द्र के लिए उत्पन्न करो ॥११॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानाम-
३ २ ३ १ २ १ २ ३ २उ ३ १ २र
नुमाद्यो नृभिः। हरिः सृजानो अत्यो न सत्व-
३ २ ३ १ २ ३ २
भिर्वृथा पाजांसि कृणुषे नदीष्वा ॥
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २क १ २
शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः स्व३ः सिषासन्
३ १ २र १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३
रथिरो गविष्टिषु। इन्द्रस्य शुष्ममीरयन्नपस्युभि-
१ २ ३ १ २ ३ १ २
रिन्दुर्हिन्वानो अज्यते मनीषिभिः ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणा तविष्यमाणो
३ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
जठरेष्वा विश। प्र नः पिन्व विद्युदभ्रेव रोदसी
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
धिया नो वाजां उप माहि शश्वतः ॥१२॥

प्रकाशलोक का धारक, दिव्यगुणों द्वारा बलरूप में सम्पादन करने योग्य, तथा मनुष्य जिससे आन-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

न्दित हो उठते हैं वह आनन्द-रस प्रवाहित हो रहा है; जब यह आकर्षक दुःखहर्ता रस सम्पन्न हो उठता है तो, अपने सात्विक बलों से, नाड़ियों में प्रवहमान बलों को व्यर्थ कर देता है।

जैसे शूरवीर पुरुष अपने दोनों हाथों में आयुध धारण किये रहता है वैसे ही यह बलशाली सोम परमसुख पहुँचाने की इच्छा से ज्ञान एवं कर्म—दोनों प्रकार की इन्द्रियों—में साधन-सम्पन्न रहता है; वह ज्ञान-प्रकाश के मार्गों का भली-भांति ज्ञाता रथी है। इन्द्र को बल प्रदान करते और प्रेरित करते इस सोम को कर्मयोगी विचारक साधते हैं: प्रदीप्त करते हैं।

हे पवमान सोम! तू बलशाली होकर दिव्यमन के अङ्ग-अङ्ग में आविष्ट हो जा; जैसे बादल की चमक द्यावा-पृथिवी को भर देती है ऐसी ही वह तू हमारे अन्तःकरणरूप अन्तरिक्ष को तृप्त कर; और हमारे लिए चिरस्थायी ज्ञान-बलों को उत्पन्न कर ॥१२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २उ ३ २ ३क २र ३ २ ३ १ २
यदिन्द्र प्रागपागुदङ् न्यग् वा हूयसे नृभिः ।
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ ३ १ २
सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशर्ध तुर्वशे ॥
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
यद्वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्र मादयसे सचा ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १
कण्वासस्त्वा स्तोमेभिर्ब्रह्मवाहस इन्द्रा यच्छन्त्या
२
गहि ॥१३॥

हे इन्द्र ! पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण—चारों—ओर से मनुष्य तुझे पुकारते हैं; हे सर्वश्रेष्ठ! मनुष्य तुझे बहुत वार प्रत्यक्ष कर चुके हैं, तू झुकने वाले मनुष्य के दोषों को दूर करने वाला बन ।

हे इन्द्र ! तू रमणीय, हिंसक, गतिमान् अथवा समर्थ पुरुष में समान भाव से आनन्दित रहता है; वेद-ज्ञान के वाहक, बुद्धिमान् पुरुष तुझको अपने वश में करते हैं; तू आ ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १२ ३ १२ ३ १ २ ३ २ ३१ २र
उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः ।
३ १ २ ३२ ३ १
सत्राच्या मघवान् त्सोमपीतये
३ १ २र३ १ २
धिया शविष्ठ आ गमत् ॥
२र ३ १ २ ३१ २र ३ १ २ ३ १ २
तं हि स्वराजं वृषभं तमोजसा धिषणे निष्टतक्षतुः ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३
उतोपमानां प्रथमो नि षीदसि सोमकामं हि ते
१ २
मनः ॥१४॥

इन्द्र हमारे, आभ्यन्तर और इस प्रत्यक्ष, दोनों वचनों को सुनकर सद्बुद्धि के द्वारा ऐश्वर्य-सम्पन्न एवं बलवान् बन कर परमानन्दरूप रस का पान करने के लिए हमें प्राप्त हो ।

उस स्वयं प्रकाशस्वरूप, सुखवर्षक प्रज्ञाशक्ति का निर्माण साधकगण उसके स्थिति-स्थान—अन्तः-करण—में बल से कर पाये थे, वह तू इन्द्र सब

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उपमेय पदार्थों में प्रमुख शक्तिरूप है : तेरा सकल्प परमानन्द से प्रेरित है ॥१४॥

॥ इति सप्तमः खण्डः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ र ३ १ २
पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः ।
३ १ २ र ३ १ २
वायुमा रोह धर्मणा ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवमान नि तोशसे रयिं सोम श्रवाय्यम् ।
१ २ ३ १ २ र
इन्दो समुद्रमा विश ॥

३ १ २ ३ १ २ २ १ २ ३ २
अपघ्नन् पवसे मृधः क्रतुवित् सोम मत्सरः ।
३ १ २ र ३ १ २
नुदस्वादेवयुं जनम् ॥१५॥

हे दिव्य रस ! तू निरन्तर प्रवाहित हो; तेरा आह्लाद इन्द्र को प्राप्त हो; तू अपनी धारकशक्ति से जीवनशक्ति—प्राणशक्ति—का अधिष्ठाता बन ।

हे पवमान सोम ! तू अन्तर्ज्ञानयुक्त आत्मज्ञान

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रूप ऐश्वर्य को प्रदान करता है, हे आह्लादक ! तू अन्तःकरण में प्रविष्ट हो।

मेरी प्रत्येक क्रिया में पहुँचने वाले सोम ! तू हर्ष का सरोवर है; तू पाप-भावनाओं को विनष्ट कर पवित्रता के प्रवाह को लाता है। पाप-भावनाओं की ओर प्रवृत्त जन को यहां से हटा दे ॥१५॥

अभी नो वाजसातमं रयिमर्ष शतस्पृहम् ।
इन्दो सहस्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभासहम् ॥
वयं ते अस्य राधसो वसोर्वसो पुरुस्पृहः ।
नि नेदिष्टतमा इषः स्याम सुम्ने ते अध्रिगो ॥
परि स्य स्वानो अक्षरदिन्दुरव्ये मदच्युतः ।
धारा य ऊर्ध्वो अध्वरे भ्राजा न याति गव्ययुः ॥

हे आह्लादक सोम ! तू हमें वह ऐश्वर्य पहुँचा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो प्राणशक्ति से भरपूर, सैंकड़ों का अभीष्ट, सहस्रों का पालक, अति तेजस्वी और अपने विरोधी तेजों को मात देता है।

हे बसाने वाले सोम ! हम तेरे बास देने वाले, बहुतों के अभीष्ट प्रेरणारूप धन के अत्यन्त समीप हों; हे शक्तिशालिन् ! तेरे सुखमय रूप में स्थित रहें।

वह आह्लादक सोम प्रेरणा-शब्द करता और आनन्दरस को चुआता हुआ चिति के आवरण को पार करके आता है और इस जीवन की प्रगतिरूप यज्ञ में, हमें अपने प्रभाव से ज्ञान-प्रकाश पहुँचाता हुआ धारारूप में ऊर्ध्वगमन करता है ॥१६॥

१ २ ३ १ २ ३ २
पवस्व सोम महान् त्समुद्रः
३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
पिता देवानां विश्वाभि धाम ॥
३ १ २ ३ १ २
शुक्रः पवस्य देवेभ्यः सोम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रूप ऐश्वर्य को प्रदान करता है, हे आह्लादक ! तू अन्तःकरण में प्रविष्ट हो।

मेरी प्रत्येक क्रिया में पहुँचने वाले सोम ! तू हर्ष का सरोवर है; तू पाप-भावनाओं को विनष्ट कर पवित्रता के प्रवाह को लाता है। पाप-भावनाओं की ओर प्रवृत्त जन को यहां से हटा दे ॥१५॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अभी नो वाजसातमं रयिमर्ष शतस्पृहम् ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्दो सहस्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभासहम् ॥
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
वयं ते अस्य राधसो वसोर्वसो पुरुस्पृहः ।
१ २र ३ १ २र ३ १ २
नि नेदिष्ठतमा इषः स्याम सुम्ने ते अध्रिगो ॥
२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
परि स्य स्वानो अक्षरदिन्दुरव्ये मदच्युतः ।
२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २
धारा य ऊर्ध्वो अध्वरे भ्राजा न याति गव्ययुः ॥

हे आह्लादक सोम ! तू हमें वह ऐश्वर्य पहुँचा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो प्राणशक्ति से भरपूर, सैंकड़ों का अभीष्ट, सहस्रों का पालक, अति तेजस्वी और अपने विरोधी तेजों को मात देता है।

हे बसाने वाले सोम ! हम तेरे वास देने वाले, बहुतों के अभीष्ट प्रेरणारूप धन के अत्यन्त समीप हों; हे शक्तिशालिन् ! तेरे सुखमय रूप में स्थित रहें।

वह आह्लादक सोम प्रेरणा-शब्द करता और आनन्दरस को चुआता हुआ चिति के आवरण को पार करके आता है और इस जीवन की प्रगतिरूप यज्ञ में, हमें अपने प्रभाव से ज्ञान-प्रकाश पहुँचाता हुआ धारारूप में ऊर्ध्वगमन करता है ॥१६॥

१२   ३१   २३२
पवस्व सोम महान् त्समुद्रः
३ २ ३ २ ३   २ ३ १   २र
पिता देवानां विश्वाभि धाम ॥
३ १   २   ३ १   २
शुक्रः पवस्य देवेभ्यः सोम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
दिवे पृथिव्यै शं च प्रजाभ्यः ॥
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
दिवो धर्तासि शुक्रः पीयूषः
३ १ २र ३ १ २
सत्ये विधर्मन् वाजी पवस्व ॥१७॥

हे सोम ! तू समस्त आनन्दों का भण्डार और दिव्यगुणों का जनयिता है; सब के हृदयों में प्रतिद्रवित हो ।

हे सोम ! तू कान्तिमान् है; दिव्यगुणों के लिये प्रवाहित हो; द्युलोक, पृथिवी लोक और इनमें निवास करने वाली प्रजाओं के लिए कल्याणकारी हो ।

हे सोम ! तू दिव्यता का धारक, कान्तिमान् अमृतरूप है; बलशाली होकर सत्यस्वरूप और विश्व को नाना रूप में धारण करने हारे परमेश्वर में प्रकाशित हो ॥१७॥

॥ इत्यष्टमः खण्डः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २ ३२ ३१ २ ३२
श्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम् ।
२ ३ २३ २र
अग्ने रथं न वेद्यम् ॥
३ १ २ ३ २ ३ २ ३२ ३ १ २ ३ २
कविमिव प्रशंस्यं यं देवास इति द्विता ।
१ २र ३२
नि मर्त्येष्वादधुः ॥
१ २ ३ २ ३ १ २ ३१र २र
त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँः पाहि शृणुही गिरः ।
१ २ ३२३१र २र
रक्षा तोकमुत त्मना ॥१८॥

जो दिव्य अग्नि तुम्हारा दुलारा अतिथि और मित्र की भांति अति प्रिय है, उसकी, मैं स्तुति करता हूँ। वह रथ की भांति सब पदार्थों का वाहक—उन का ज्ञान कराने व उनको प्राप्त करानेवाला—है।

क्रांतदर्शी की भांति प्रशंसनीय उस अग्नि को दोनों प्रकार की—ज्ञान एवं कर्म-इन्द्रियां—मनुष्यों में धारण किये हुए हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सर्वशक्तिशालिन्! अग्ने! तू दानशील—आत्म-समर्पक—मनुष्यों की रक्षा कर; उनका कहना सुन; और छोटे-से-छोटे की भी अपने पूर्ण सामर्थ्य से रक्षा कर ॥१८॥

१ २ ३ १ २
एन्द्र नो गधि प्रिय सत्राजिदगोह्य ।
३ २उ ३ १ २ ३ १र २र ३ २
गिरिर्न विश्वतः पृथुः पतिर्दिवः ॥
३ ५र २र ३ २ ३ २ ३ १ २
अभि हि सत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी ।
१र २र ३ २ ३ १र २र ३ १
इन्द्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः ॥
१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र दर्ता पुरामसि ।
३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
हन्ता दस्योर्मनोर्वृधः पतिर्दिवः ॥१९॥

हे प्रिय, सर्वविजयी, कभी न छिपने हारे इन्द्र! तू हमारे समीप आ। तू पहाड़ की भांति सब ओर से विशाल और प्रकाशलोक का पालक है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सत्यस्वरूप ! परमानन्द का पान करने वाले इन्द्र तू द्यु एवं पृथिवी दोनों लोकों में स्थित पदार्थों से अधिक श्रेष्ठ है। हे इन्द्र ! तू साधक मन को बढ़ाने वाला और प्रकाशलोक का अधिष्ठाता है।

हे इन्द्र ! तू अनादिकाल से चले आये अन्नमयादि जीव कोषों को तोड़ने वाला है; आवरण अज्ञानान्धकार का विनाशक, साधक की मननशक्ति को बढ़ाने वाला और प्रकाशलोक का अधिष्ठाता है ॥१९॥

३२ ३१ २र ३१ २र
पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत ।
२३ १२ ३१२ ३२ ३१२ ३२
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥
२ ३२ ३ २३२ २ ३ १२
त्वं बलस्य गोमतोऽपावरद्रिवो बिलम् ।
२ ३१ २र ३१२
त्वां देवा अबिभ्युषस्तुज्यमानास आविषुः ॥
२३१२३१२३१ २र
इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमैरनूषत ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ १ २ ३१२ ३२ ३ १ ३ १२
सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसीः ॥२०॥

वह इन्द्र जो अन्नमय आदि जीव-कोषों को तोड़ने वाला, सदा युवा, क्रान्तदर्शी, अपरिमित तेजस्वी है वह, सब कर्मों का कर्ता, रक्षा के साधनों से सम्पन्न और इसीलिए बहुस्तुत है

हे अडिग इन्द्र ! तू ज्ञानयुक्त बल के प्रवेश-द्वार का प्रहरी है; इन्द्रियां निर्भय होकर तुझ से ही बल प्राप्त करके तेरी शरण में आती हैं। अर्थात् इन्द्रियों को ज्ञान-बल प्रज्ञाशक्ति से ही प्राप्त होता है।

अपने प्रभाव अर्थात् अपनी धाक से सब के अधिष्ठाता बने इन्द्र को स्तुतियों से प्रसन्न करो; उसकी देन (दान) हजारों ही नहीं हैं; वे बहुत-सी और भरी-पूरी हैं॥

॥ इति नवमः खण्डः ॥
॥ इति नवमोऽध्यायः समाप्तः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ दशमोऽध्यायः

ऋषिः—१ पराशरः। २ शुनःशेपः। ३ असितो देवलो वा। ४-७ राहूगणः। ५ (१-४) ५ (प्र०), ६ प्रियमेधः। ५ (द्वि-च०), ६ (१), १४ नृमेधः। ६ (द्वि०-च०) इध्मवाहः। ८ पवित्रो वशिष्ठो वा। ९ वसिष्ठः। १० वत्सः। ११ शतं वैखानसाः। १२ सप्तर्षयः। १३ वसुः। १५ भर्गः। १६ भरद्वाजः। १७ मनुः। १८ ऽम्बरीषः ऋजिश्वा च। १९ अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः। २० अमहीयुः। २१ त्रिशोकः। २२ गोतमः। २३ मधुच्छन्दाः॥ देवताः—१-७, ११-१३, १६-२० पवमानः सोमः। ८ पावमान्यध्येतृस्तुतिः। ९ अग्निः। १०, १४, १५, २१-२३ इन्द्रः॥ छन्दः—१, ९ त्रिष्टुप्। २-७, १०, ११, १६, २०, २१ गायत्री। ८, १८, २३ अनुष्टुप्। १३ जगती। १४ निचृद्बृहती। १७, २२ उष्णिक् १२, (१-२), १४, १५ प्रगाथः (बृहती, समा सतोबृहती) १३ (३) १९ द्विपदा विराट्॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्वरः—१, ६ धैवतः । २–७, १०, ११, १६, २०, २१ षड्जः । ८, १८, २३ गान्धारः । १३ निषादः । १२ (१–२) १४, १५, १३ (३), १९ पञ्चमः । १७, २२ ऋषभः ॥

अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मन् जनयन् प्रजा भुवनस्य गोपाः । वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत् सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः ॥

मत्सि वायुमिष्टये राधसे नो मत्सि मित्रावरुणा पूयमानः । मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि द्यावापृथिवी देव सोम ॥

महत् तत् सोमो महिषश्चकारापां यद् गर्भोऽवृणीत देवान् । अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽज-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २३ २३१२
नयत् सूर्यं ज्योतिरिन्दुः ॥१॥

जब वह रस का अथाह भण्डार, सोम, उमड़ा तो पहले ही आक्रमण में उसने प्रजाओं को सबके रक्षकरूप में परिवर्तित कर दिया। वह सुखवर्षक, उच्च स्थान से चेतना की चलनी में आया हुआ और विशाल सोम बढ़कर (प्रेरणा) शब्दयुक्त (गर्जते हुए) बादल का रूप धारण कर लेता है।

हे सोम! तू अभीष्ट ऐश्वर्य के लिए प्राणशक्ति को अह्लादित करता है; और प्रवाहित किया गया मित्र और वरुणशक्तियों को बढ़ावा देता है। हे दिव्य सोम! तू प्राण के बल को, दिव्य-इन्द्रियों को अथवा द्युलोक एवं पृथिवीलोक में स्थित सभी को हर्षित करता है।

सोम ने वर्षक बादल बन कर एक महान् कार्य कर डाला कि दिव्य-इन्द्रियों को सब ज्ञान-कर्मों के उत्पादयिता गर्भ के रूप में छिपा लिया; फिर द्रवित होकर इन्द्र को बलशाली किया और उस प्रेरक प्रज्ञा-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शक्ति के भीतर ही आह्लादक-ज्योति को प्रकट किया ॥१॥

३२ ३ १ २र ३ १ २
एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयते ।
३ १ २र ३ १ २
अभि द्रोणान्यासदम् ॥
३१ २र ३१ २ ३ २ ३१ २
एष विप्रैरभिष्टुतोऽपो देवो वि गाहते ।
२३ १ २ ३ १२
दधद् रत्नानि दाशुषे ॥
३१ २र ३ २ ३ २ ३ १ २३ १ २
एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः ।
१ २
पवमानः सिषासति ॥
३२ ३१ २ ३ १२
एष देवो रथर्यति पवमानो दिशस्यति ।
३ १ २ ३२
आविष्कृणोति वग्वनुम् ॥
३२ ३ १ २३ २ ३ १२ ३१ २
एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २
हरिर्वाजाय मृज्यते ॥

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
एष देवो विपा कृतोऽति ह्वरांसि धावति ।

१ २ ३ १ २
पवमानो अदाभ्यः ॥

३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
एष दिवं वि धावति तिरो रजांसि धारया ।

१ २ ३ १ २
पवमानः कनिक्रदत् ॥

३ २उ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
एष दिवं व्यासरत् तिरो रजांस्यस्तृतः ।

१ २ ३ २
पवमानः स्वध्वरः ॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः ।

१ २ ३ १ २
हरिः पवित्रे अर्षति ॥

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ २
धारया पवते सुतः ॥२॥

अमर बनाने वाला, दिव्य सोम, जो मानो बसन्त लाने वाला है, देह आदि में निवास-स्थान बनाने के लिए आमन्त्रित है।

विकसित बुद्धियों से स्तुत यह दिव्य सोम, समस्त ज्ञान एवं कर्मों में रम जाता है; इस प्रकार आत्म-समर्पक भक्त को सब सुख-साधन प्रदान करता है।

यह पवमान सोम, अपने बलों द्वारा शूरवीर की भांति नेतृत्व करता हुआ, सब वरणीय सुख आदि को प्रदान करता है।

यह दिव्य सोम वाहक-शरीर का संचालक है और परिस्रुत होता-होता प्रेरणा करता है; इस प्रकार स्तुति को प्रकट करता है : इसकी स्तुति बरबस करनी पड़ती है।

परमसत्य को प्राप्त करने वाले स्तुतिकर्ता इस दुःखहर्ता, दिव्य पवमान सोम को ज्ञान-बल के लिए

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शुद्ध करते हैं—साधते हैं।

यह दिव्य, ज्ञान-प्रकाश से सिद्ध किया गया, पवमान सोम अदृश्य होकर सब कुटिल-वृत्तियों को पार करता दौड़-सी लगाता है।

वह पवमान सोम प्रेरणा-शब्द करता अपने प्रवाह से सब अज्ञानावरणों को पार करता प्रकाश-लोक की ओर दौड़ता-सा है। सिद्ध किया गया सोम सीधा परमसत्य को प्राप्त कराता है।

यह पवमान सोम, निष्कण्टक पथ पर चलता हुआ, बे रोकटोक सब आवरणों को काटता—पार करता—हुआ प्रकाशलोक तक पहुँच गया : सोम की सहायता से साधक सब विघ्न-बाधाओं को पार करता परम देव का साक्षात् कर लेता है।

यह दिव्य सोम दिव्य-इन्द्रियों के लिए निष्पन्न होकर अपने सनातन स्वभाव से ही अन्तःकरण में पहुँच कर दुःखहर्ता कहलाता है।

यह वह प्रसिद्ध नाना कर्मों का प्रेरक, और चेतना का उत्पादक सोम प्रेरणा प्रदान करता धारा-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रूपमें बहता पवित्र कररहा है ॥१॥ इति प्रथम: खण्ड:

३२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २
एष धिया यात्यण्व्या शूरो रथेभिराशुभिः ।
२ ३ १ २ ३ २
गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥
३२ ३१ २ ३१ ३१ २
एष पुरू धियायते बृहते देवतातये ।
२ ३ १ २ ३ १ २
यत्रामृतास आशत ॥
३१ २ ३ २ ३ २३ १ २ ३१२
एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप द्रोणेष्वायवः ।
३ २ ३ १ २र
प्रचक्राणं महीरिषः ॥
३२ ३१ २र ३ २ ३ १ २ ३ २
एष हितो विनीयतेऽन्तः शुन्ध्यावता पथा ।
१२ ३ २ ३ १२
यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः ॥
३२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
एष रुक्मिभिरीयते वाजी शुभ्रेभिरंशुभिः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ १ २
पतिः सिन्धूनां भवन् ॥

३१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ क१ १ २
एष शृङ्गाणि दोधुवच्छिशीते यूथ्योऽ३ वृषा ।

३ १ २र ३ १ २
नृम्णा दधान ओजसा ॥

३१ २र ३१ २र ३ ३ १ २र
एष वसूनि पिब्दनः परुषा ययिवाँ अति ।

२ ३ १ २
अव शादेषु गच्छति ॥

३ २ ३ २ ३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
एतमु त्यं दश क्षिपो हरिं हिन्वन्ति यातवे ।

३ २ ३ १ २
स्वायुधं मदिन्तमम् ॥३॥

शूरवीर योद्धा जिस प्रकार शीघ्रगामी वाहक रथों में चलता है वैसे ही यह सोम सूक्ष्म विचार-शक्ति के सहारे प्रज्ञाशक्ति के स्थान—अन्तःकरण—में प्रविष्ट होता है ।

यह सोम जब नाना प्रकार की विचार-शक्तियों

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

से सम्पन्न हो आगे बढ़ता है तो दिव्यगुणों की विशाल पंक्ति खड़ी कर देता है : अमर इन्द्रियां इस दिव्यगुणावली का ही भोजन करती हैं।

साधना करने योग्य और विशाल प्रेरणाओं को चक्रवत् निर्माण करने वाले सोम को जीवन यज्ञ के साधक सिद्ध करते हैं।

यदि गतिशील साधक प्रयत्न करें तो इस सोम को शुद्धिकारक मार्ग से--अन्त:करण की सहायता से--अन्त:करण में स्थापित किया जा सकता है।

समुद्र अथाह जल का भण्डार व उसका अधिष्ठाता होता है, वैसे ही सोम ज्ञान का भण्डार है।

यूथाधिपति बलशाली सांड जैसे अपने बलातिरेक से सिर को जमीन में धुनता हुआ अपने सींगों को तेज करता है; वैसे ही यह सोम अपने मनुष्यों के पथ-प्रदर्शक ओज से उत्तेजना देकर ज्ञान की उच्चताओं का सम्पादन करता है।

यह सोम प्राणों को प्रेरित करता हुआ, अंग-अंग में पहुँच कर, हरियाली उत्पन्न कर देता है :

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रफुल्लता प्रदान करता है।

इस उस प्रसिद्ध दु:खहर्ता सोम को, उन्नतिगति के लिए दस इन्द्रियां हेरती हैं; वह सोम जो सुष्ठु साधनों से सम्पन्न और हर्षदाता है ॥३॥

इति द्वितीय: खण्ड:

३२ ३ २र ३ २उ ३ १२
एष उ स्य वृषा रथोऽव्या वारेभिरव्यत ।
२ ३ १ २ ३ १ २
गच्छन् वाजं सहस्रिणम् ॥

३१ ३२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
एतं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभि: ।
२ ३ १ २ ३ १ २
इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥

३१ २र३ २ ३२उ ३१ २
एष स्य मानुषीष्वा श्येनो न विक्षु सीदति ।
१ २ ३ २उ ३ १२
गच्छञ्जारो न योषितम् ॥

३२उ ३ १ २र ३ १ २र
एष स्य मद्यो रसोऽव चष्टे दिव: शिशु: ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२र ३ २ ३ १ २
य इन्दुर्वारमाविशत् ॥
३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
एष स्य पीतये सुतो हरिरर्षति धर्णसिः ।
२ ३ १ २ ३ २ २ ३
क्रन्दन् योनिमभि प्रियम् ॥
३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
एतं त्यं हरितो दश मर्मृज्यन्ते अपस्युवः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
याभिर्मदाय शुम्भते ॥४॥

यह वह प्रसिद्ध सुखवर्षक, वाहनरूप सोम, सहस्रों प्रकार से फल देनेवाले ऐश्वर्य को प्राप्त करता, चिति के आवरणों में से प्रकट किया जाता है।

इस दुःखहर्ता सोम को त्रिविध दुःखों के पार जाने की इच्छा वाले साधक की इन्द्रियां साधनाओं से साधती हैं : वे इस आह्लादक का पान इन्द्र को कराना चाहते हैं।

यह वह प्रसिद्ध सोम बाज की भांति झपट कर मानुषी प्रजाओं में आविष्ट हो जाता है : जैसे कोई

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रेमी अपनी प्रिय स्त्री के पास पहुँचने में शीघ्रता करता है।

यह वह प्रसिद्ध आह्लादक परमानन्दरस दीख पड़ रहा है जो कि प्रकाशमय लोक की गोद में विश्राम करने वाला उसका पुत्ररूप है और आह्लादकारी बन कर चिति के आवरणों में भी पहुँच जाता है : उन्हें भी ज्ञान के आलोक से प्रकाशित कर देता है।

यह वह, पीने के लिए प्रवाहित, दु:खहर्ता, सोम, साधक को धीरज बंधाता हुआ पहुँच रहा है। यह प्रेरणा देता हुआ अपने प्रिय स्थान (अन्त:करण) में पहुँचता है।

कर्मठ बनाने के संस्कार वाली दसों इन्द्रियां इसी प्रसिद्ध सोम को शुद्ध करती हैं : इन्हीं के द्वारा वह आनन्द प्रदान करने योग्य हो जाता है ॥४॥

इति तृतीय: खण्ड:

३ २ ३ २   ३ १   २र   ३ १   २र३ १ २
एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन्मनसस्पति: ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३ १ २
अव्यं वारं वि धावति ॥

३२ ३ २३ ३ १ २ ३१ २ ३२
एष पवित्रे अक्षरत् सोमो देवेभ्यः सुतः ।

२ ३ १ २ ३ २
विश्वा धामान्याविशन् ॥

३२ ३१ २ ३२ ३ २ ३ १ २
एष देवः शुभायतेऽधि योनावमर्त्यः ।

३ १ २ ३ १ २
वृत्रहा देववीतमः ॥

३२उ ३ १ २ ३१ ३ ३ १ २ ३ २
एष वृषा कनिक्रदद् दशभिर्जामिभिर्यतः ।

१ २ २र
अभि द्रोणानि धावति ॥

३१ २र ३ १२ ३ २ ३ १ २
एष सूर्यमरोचयत् पवमानो अधि द्यवि ।

३२ ३ ३ १ २र
पवित्रे मत्सरो मदः ॥

३१ २र ३ १ २ ३ १ २
एष सूर्येण हासते संवसानो विवस्वता ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २३ १ २र
पतिर्घ्राचो अदाभ्यः ॥५॥

यह बलशाली, साधकों द्वारा सिद्ध किया गया, सबको जतलाने वाला, मननशक्तियों का अधिष्ठाता चिति-शक्तियों के आवरणों की ओर--उनमें से पार होकर--विशुद्ध होने के लिए दौड़ता है।

दिव्यता चाहने वाली इन्द्रियों के लिए, सिद्ध किया गया सोम, पावक अन्तःकरण में पहुँचा और सब स्थानों में व्याप गया।

यह अमरता-सम्पादक, दिव्य सोम अपने मूल स्थान में ही शोभित होता है; यह विघ्नों (अदिव्य-ताओं) का विनाशक और दिव्यताओं का सर्वोत्तम प्रापक है।

यह सुखवर्षक, प्रेरणाशब्द करता सोम, बन्धु-रूप दस इन्द्रियों द्वारा संयत रहता है; वह देह में चिति के अधारभूत विभिन्न अंगों की ओर दौड़ता है।

इस पवमान सोम ने द्युलोक—मनोमय कोश—

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

में अवस्थित दिव्य प्रज्ञा को प्रसन्न किया : पावक अन्तःकरण में यह आह्लादकरस आनन्द स्रोत का प्रतिरूप है।

यह पवमान सोम ज्ञान की किरणों से दीप्तियुक्त प्रज्ञाशक्ति (इन्द्र = सूर्य) द्वारा ओढ़ा जाता है : प्रज्ञाशक्ति परमानन्द में लीन हो चमक उठती है। यह सोम वाणी का अदम्य अधिष्ठाता है; इसकी प्रेरणा को कोई दबा नहीं सकता ॥५॥

इतिः चतुथः खण्डः

३२ ३२३ १ २ ३ २३ १ २
एष कविरभिष्टुतः पवित्रे अधि तोशते ।
३ २र ३ १२
पुनानो घ्नन्नप द्विषः ॥

३१ २र ३ १२ ३ १ २र
एष इन्द्राय वायवे स्वर्जित् परि षिच्यते ।
३ १२ ३ १ २
पवित्रे दक्षसाधनः ॥

३२३ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३२
एष नृभिर्वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १२ ३ १
सोमो वनेषु विश्ववित् ॥

३२ ३ १२ २र १२ ३२
एष गव्युरचिक्रदत् पवमानो हिरण्ययुः ।

३ २ ३ १ २र
इन्दुः सत्राजिदस्तृतः ॥

३१ ३क २र ३ १ २ ३ २३ १ २
एष शुष्म्यसिष्यदद्न्तरिक्षे वृषा हरिः ।

३ २उ ३ २ ३ १
पुनान इन्दुरिन्द्रमा ॥

३२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
एष शुष्म्यदाभ्यः सोमः पुनानो अर्षति ।

३ १२ ३ २
देवावीरघशंसहा ॥६॥

स्तुति किया गया यह क्रान्तदर्शी सोम पावक अन्तःकरण में स्थित हो सन्तोष प्रदान करता है; यह पवमान दुःखद द्वेषभावनाओं को नष्ट कर देता है ।

प्राणशक्ति सम्पन्न प्रज्ञाशक्ति के लिए परम-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सुख जीत लाने वाला, बलों का साधन-भूत सोम, पावक अन्तःकरण में ध्यान-वृत्तियों द्वारा प्रवाहित किया जाता है।

प्रकाशलोक के मूर्धाभूत बहुत ऊंचे स्तर से द्रवित, सुखवर्षक, भजनयोग्य देहों के सब अंगों में पहुँचे हुए सोम को साधक इन्द्रियां वश में करती या साधती हैं।

यह पवमान सोम ज्ञान-प्रकाश एवं हिरण्य-रूप परमैश्वर्य से संयुक्त होने की प्रेरणा करता है : यह आह्लादक आत्मिक संघर्ष में विजय प्राप्त कराता है और स्वयं बेलाग रहता है।

यह बलवान्, सुखवर्षक, दुःखहर्ता सोम अन्तरिक्षरूप प्राणमय कोष में द्रवित होता, आह्लादक रूप में प्रज्ञाशक्ति को चारों ओर से आविष्ट कर देता है।

यह बलवान्, अदम्य सोम प्रवाहित किया हुआ पहुँच रहा है, यह दिव्यगुण वालों का रक्षक और पाप-प्रशंसकों का विनाशकारी है ॥६॥

इति पंचमः खण्ड

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३२ ३२३ २३ १२ ३१२
स सुतः पीतये वृषा सोमः पवित्रे अर्षति ।
३ १ २र ३२
विघ्नन् रक्षांसि देवयुः ॥
२ ३ १२ ३१ २र ३ २
स पवित्रे विचक्षणो हरिरर्षति धर्णसिः ।
३ १र ३ १ २
अभि योनिं कनिक्रत् ॥
२ ३ १ २ ३ २ ३१ २र ३ १ २
स वाजी रोचनं दिवः पवमानो वि धावति ।
३ १ २र ३ १२
रक्षोहा वारमव्ययम् ॥
२ ३२उ ३ १ २ ३ १२
स त्रितस्याधि सानवि पवमानो अरोचयत् ।
३ २ ३ १२ ३२
जामिभिः सूर्यं सह ॥
२ २३१ २र ३ १ २ ३ १ २र
स वृत्रहा वृषा सुतो वरिवोविद्दाभ्यः ।
२ ३ १ २
सोमो वाजमिवासरत् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३२ ३ १ २ ३ २ १ २र
स देवः कविनेषितोऽ३ऽभि द्रोणानि धावति।
१ ३ १ २ ३ १ २
इन्दुरिन्द्राय मंहयन् ॥७॥

पान करने के लिए सिद्ध किया, सुखवर्षक सोम पावक अन्तःकरण में पहुँचता है और इस प्रकार वह विघ्नयुक्त दुर्भावनाओं को श्रेष्ठ करके दिव्यगुणों से मेल कराता है।

वह बुद्धि का विकास करने वाला, दुःखहर्ता और धीरज बंधाने वाला सोम पावक अन्तःकरण में पहुँचता है : वह अपने मूल स्थान की ओर प्रेरित करता है।

वह बलशाली पवमान, प्रकाशलोक से चलकर रोचक दौड़-सी लगाता, विघ्न-राक्षसों को नष्ट करता, चिति के आवरण में आ पहुँचता है।

वह त्रिविध दुःखों को पार करने की इच्छा वाले साधक की साधना के उत्कृष्टतम स्तर पर प्रवाहित हुआ सोम, बन्धुभूता वृत्तियों-सहित प्रज्ञाशक्ति को उत्तम बना देता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह विघ्नरूप आवरक अज्ञान का नाशक, सुख-वर्षक, सर्वोत्तम ऐश्वर्य का लाभ कराने वाला और अदम्य, सोम, स्वयं ऐश्वर्य की ओर गति करता प्रतीत होता है।

वह दिव्य सोम, क्रान्तदर्शनशक्ति से प्रेरित हुआ साधक के अंग-अंग में व्याप्त हो रहा है : वह आह्लादक इस प्रकार इन्द्र को आनन्द पहुँचाता है ॥७॥

इति षष्ठः खण्डः

१ २ ३ ० ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम् ।
२ ३ १ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना ॥
३ २ उ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम् ।
२ ३ १ २ ३ १ ३ १ २र ३ २
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम् ॥
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि घृतश्चुतः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
ऋषिभिः संभृतो रसो ब्राह्मणेष्वमृतं हितम् ॥
३ १२ ३२ ३१ २र ३२
पावमानीर्दधन्तु न इमं लोकमथो अमुम् ।
२ ३ १ २ ३ २३२ ३ १ २
कामान् त्समर्धयन्तु नो देवीर्देवैः समाहृताः ॥
१२ ३२ ३१२ ३ १२ ३२३ १२
येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा ।
१२ ३१२ ३१ २
तेन सहस्रधारेण पावमानीः पुनन्तु नः ॥
३ २ ३ १२३ ३१२ ३२
पावमानीः स्वस्त्ययनीस्ताभिर्गच्छति नान्दनम् ।
१ २ ३१ २ ३१ २
पुण्याँश्च भक्षान् भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति ॥८॥

जो साधक, द्रष्टाओं (विचार-शक्तियों) द्वारा एकत्रित परमानन्दरस के रूप में पावमानी ऋचाओं का मनन करता है, वह, मन द्वारा आस्वादन करने योग्य, प्रद्रवित, परमानन्द का पूरा भोग प्राप्त करता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो साधक, द्रष्टा विचारशक्तियों द्वारा एकत्रित परमानन्दरस के रूप में पावमानी ऋचाओं का मनन करता है, उसको सत्यश्रवण द्वारा वह परमानन्द शुद्ध दुग्ध, स्नेहपूर्ण घृत और मधुर जल के रूप में प्राप्त होता है।

कल्याण की आवाहक पावमानी ऋचाएं सरलता से फल देने वाली और ज्योतिःस्वरूप घृत चुआने वाली गायों के सदृश हैं; पावमानी ऋचाओं के मनन से दिव्य प्रकाश प्राप्त होता है; वह उस परमानन्दरस के रूप में है जिसे द्रष्टा शक्तियों द्वारा एकत्रित किया गया है और जो अमृतरूप में ज्ञानेन्द्रियों में धारण किया गया है।

पावमानी ऋचाएं इस लोक तथा उस परलोक को हमारे लिए धारण करें; दिव्य इन्द्रियों द्वारा एकत्रित आनन्द के रूप में वे हमारी अभिलाषाओं को पूर्ण करें।

जिस परिपूत परमानन्द से दिव्यता चाहने वाली इन्द्रियां सदा आत्मा को पवित्र करती हैं:

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अनेक धाराओं से परिपूत उसी परमानन्द से पावमानी ऋचाएं हमें पवित्र करें।

पावमानी ऋचाएं कल्याण की आवाहक हैं; उनका मनन कर साधक आत्मा परम आनन्दमय स्थिति को पा लेता है : उस अवस्था में उसे पुण्य भोग मिलते हैं और वह अमर हो जाता है ॥८॥

इति सप्तमः खण्डः

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३
अगन्म महा नमसा यविष्ठं यो दीदाय समिद्धः
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
स्वे दुरोणे । चित्रभानुं रोदसी अन्तरुर्वी स्वाहुतं
३ १ २ ३ १ २
विश्वतः प्रत्यञ्चम् ॥

२ ३ १ ३र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३
स मह्ना विश्वा दुरितानि साह्वान् अग्नि ष्टवे दम
२ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २
आ जातवेदाः । स नो रक्षिषद् दुरितादवद्याद्-
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अस्मान् गृणत उत नो मघोनः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २र ३२ ३ २ २ ३ १ २ ३ २
त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वां वर्धन्ति मति-
३१ २ १ २र ३ १ २ ३ १ २
भिर्वसिष्ठाः । त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयं पात
३ २ ३ १ २
स्वस्तिभिः सदा नः ॥६॥

हम भारी भेंट के समय उस बलवान् संकल्पाग्नि का सेवन करें जिसको उसके अपने स्थान (मन) में प्रज्वलित करने पर वह खूब प्रदीप्त (जाग्रत) हो उठता है : जो चित्र विचित्र ज्ञान किरणों से युक्त है; अन्नमय एवं मनोमय कोश के मध्य स्थित विशाल अन्तरिक्ष रूप अन्तःकरण में भली-भांति आहुति रूप में डाला गया साधक की वृत्तियों में सब जगह पहुँच जाता है; हम उस संकल्पाग्नि को प्राप्त करें ।

वह अग्नि अपनी महिमा से सभी पापवृत्तियों को दबाता है; अतएव सब पदार्थों का ज्ञान कराने वाले उस अग्नि की स्तुति गृहरूप मन में की जाती है । वह अग्नि स्तुति करते और ज्ञानैश्वर्य से धनी बने हम को निन्दनीय पापाचरण से बचावे ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे दिव्य संकल्परूप अग्ने ! तू विवेकशक्ति द्वारा न्यायकारी और सामञ्जस्य द्वारा मित्र रूप है; प्राण-शक्ति-सम्पन्न साधक (इन्द्रियां) अपनी विचार-शक्तियों द्वारा तुझे बढ़ाते हैं; तेरी बढ़ोतरी में ही उन्हें ऐश्वर्यसुख प्राप्त होते हैं; विविध संकल्प-शक्तियो ! तुम अपनी कल्याण-भावनाओं से सदा हमारी रक्षा करो ॥९॥

३२उ ३ १ २र ३१ २ ३ १ २

महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव ।

१ २३ १ २

स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे ॥

२ ३ २ ३ १ २र३ १ २३ २ ३ १ ३

कण्वा इन्द्रं यदक्रत स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम् ।

३ १ २ ३ १ २

जामि ब्रुवत आयुधा ॥

३ २ ३२ ३ १२३ १ २र ३ १२

प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद्भरन्त वह्नयः ।

१ २ ३ २ ३ १२

विप्रा ऋतस्य वाहसा ॥१०॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह दिव्य मनःशक्ति महान् है, जो अपने प्रभाव की वृष्टि-सी करती हुई बरसते बादल की-सी है और वत्सरूप मन की स्तुति-साधना से बढ़ती है।

साधक इन्द्रियां जब स्तुतियों से इन्द्र को जीवन-यज्ञ का साधन बना लेती हैं तो अन्य साधनों को निष्प्रयोजन बताती हैं।

जब कि परमसत्य की प्रजाभूत इस मनःशक्ति को तृप्त करतीं और धारण करतीं ज्ञान-वाहिका इन्द्रियां, परमसत्य के प्रापक ओज से, विकसित (चेतनायुक्त) हो जाती हैं तब दूसरे साधनोंको निष्प्रयोजन बताते हैं॥१०॥

इति अष्टमः खण्डः

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवमानस्य जिघ्नतो हरेश्चन्द्रा असृक्षत।
३ २ २ ३ १ २
जीरा अजिरशोचिषः॥
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवमानो रथीतमः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३१ २
हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः ॥
१२ ३क २र ३ १ २ ३ १ २
पवमान व्यश्नुहि रश्मिभिर्वाजसातमः ।
१२ ३२ ३ १२
दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥११॥

उस पवमान तथा विघ्नों को नष्ट कर दुःखों का हरण करने वाले परमानन्द की अक्षीणकान्ति धारायें बह रही हैं।

वह पवमान सोम देहरूप रथ का सर्वोत्तम वाहक सवार, अपनी शुभ्र ज्ञानकिरणों से शुभ्रतम, सर्वोत्तम दुःखहर्ता और प्राणशक्तियों का नेता है।

हे पवमान, वह तू सर्वोत्तम बल प्रदाता, स्तोता साधक को उत्तम वीर्य धारण करा कर अपनी ज्ञान-किरणों से सब स्थानों में व्यापक हो जा—अपना प्रभाव उत्पन्न कर ॥११॥

२३१ २ ३२३ ३ १ २३२ ३ २
परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र ३ २क २उ ३ २ ३ २ ३ १
दधन्वाँ यो नर्यो अप्स्व३न्तरा सुषाव सोममद्रिभिः ॥

३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २
नूनं पुनानोऽविभिः परि स्रवाऽदब्धः सुरभिन्तरः ।
१ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३
सुते चित् त्वाप्सु मदामो अन्धसा श्रीणन्तो
२ ३ १ २
गोभिरुत्तरम् ॥

१२ ३ १ २र ३ १ २
परि स्वानश्चक्षस देवमादनः
२३ १ २ ३ २
क्रतुरिन्दुर्विचक्षणः ॥१२॥

जो सोम सर्वोत्कृष्ट यज्ञ करने योग्य आहुति है; जो नेता इन्द्रियों को उनके कार्यों के मध्य थाम्भे रखता है—उन्हें बल एवं उत्साह प्रदान करता है; और जिस सोम को अन्तःकरण में परिस्रुत किया जाता है; उस परिस्रुत परमानन्द को अपने भीतर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

इधर-उधर अङ्ग-अङ्ग में रमा लो।

चितिशक्तियों में से शुद्ध होकर द्रवित होता अधिक बलवान (बलवन्तर) हुआ परमानन्द बे-रोक-टोक हमारे अन्तःकरण में निश्चय ही भर जाय। जब वह परमानन्दरस सिद्ध हो जाता है तो प्राणशक्ति और ज्ञानरश्मियों का संयोग कर श्रेष्ठतर बनाये गये सोम से भावित कर्म करने में हमें हर्ष होता है।

दिव्य इन्द्रियों का आह्लादक, कर्म प्रेरक, आह्लादक, द्रष्टा सोम हमें ज्ञान-दृष्टि प्रदान करने के लिए प्रेरणा प्रदान करे ॥१२॥

१ २ ३ १ २ ३२३ ३ २३ १२ ३ २
असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो
३ १ २र २ २उ ३१ २ ३ १२
अभि गा अचिक्रदत्। पुनानो वारमत्येष्यव्ययं
३ १ २र ३१२ ३ १ २
श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदत् ॥
३१ ३ १ २ ३१ २ ३ १२ १२ ३ २
पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २उ १
गिरिषु क्षयं दधे । स्वसार आपो अभि गा उदा-
२३ १ २र ३ १ २ ३२
सरन् त्सं ग्रावभिर्वसते वीते अध्वरे ॥
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २३ २ ३ २ ३ २
कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनम् अत्यो न मृष्टो
३ १ २र ३ १२ ३ १ २
अभि वाजमर्षसि । अपसेधन् दुरिता सोम नो मृड
३१ २र ३ १ २ ३ १ २
घृता वसानः परि यासि निर्णिजम् ॥१३॥

ज्ञान-प्रकाश से दीप्त, सुखवर्षक, दुःखहर्ता, आह्लादक के रूप में दर्शनीय परमानन्द उत्पन्न होकर अपने अनाहत नाद से इन्द्रियों को प्रेरणा देता है; फिर चिति की विकाररहित चलनी में छन कर पवित्र होता हुआ बाज की-सी शीघ्रगति से अपने ज्ञान-दीप्ति से चमकते घर—अन्तःकरण—में विराजमान होता है ।

महान् वज्र का जनक अथवा विस्तृत हरियाली का उत्पादक जलवर्षक मेघ पृथिवी के मध्य पर्वत की

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऊंचाइयों पर निवास करता है : उससे बह कर पृथिवी की ओर आने वाली जल धारायें निकलती हैं : फिर वह मेघों सहित शान्त अन्तरिक्ष में निवास करता है।

यहां मेघरूप में सुख-वर्षक सोम का वर्णन है।

हे सोम ! परमानन्दरस ! तू क्रान्तदर्शी रूप में अज्ञानावरण के भेदक की ख्याति को प्राप्त करता है; और शुद्ध एवं तेज किया हुआ तू अति वेगवान् अश्व की-सी गति से ज्ञान की ओर जाता है। हे सोम ! ऐसा तू दुर्भावनाओं और दुष्कर्मों को हमसे दूर रखता हुआ हमें सुखी रख : तू ज्ञान की दीप्ति से आवृत हुआ और अधिक निखर जाता है ॥१३॥

१ २ ३ २३ १ २र १२
आयन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत। वसूनि
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
जातो जनिमान्योजसा प्रति भागं न दीधिमः ॥
१ २ ३ १ २र ३१ २र ३१२
अलर्षिरातिं वसुदामुप स्तुहि भद्रा इन्द्रस्य रातयः।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १२ ३१ २र ३ १२ ३ १ २
यो अस्य कामं विधतो न रोषति मनो दानाय
३ १२
चोदयन् ॥१४॥

हम उस प्रेरक प्रभु का आश्रय लेते हुए अगले पिछले—सब—ऐश्वर्यों का उपभोग उस इन्द्र की शक्ति से कर पाते हैं और अपने-अपने अंश (भाग) के अनुसार वह भोग हमें प्राप्त होता है।

पर्याप्त दान-शीलता से युक्त उस ऐश्वर्य-प्रदाता की स्तुति कर; उस इन्द्र के दान कल्याणकारी हैं: प्रज्ञाशक्ति की साधनासे साधक को सब कल्याणकारक पदार्थ उपलब्ध हो सकते हैं। जो साधक है अपने मन को ध्यान-धारणा में लगाता है, दिव्य मनः-शक्ति उसकी इच्छापूर्ति में विघ्न नहीं होने देती: वह मनन शक्ति का दान के लिए प्रेरित करती रहती है ॥१४॥

१२ ३ १ २ ३ १२ ३ १२ १२
यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि । मघ-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २उ ३ १ २ ३२३ २र ३ १ २र
वन् छ्न्धि तव तन्न ऊतये वि द्विषो वि मृधो
जहि ॥

१ २र ३ १२ ३२उ ३ १ २
त्वं हि राधसस्पते राधसो महः क्षयस्यासि
३२ १ २ ३१ २ ३१
विधर्ता । तं त्वा वयं मघवन्निन्द्रगिर्वणः सुता-
२
वन्तो हवामहे ॥१५॥

हे दिव्य मन ! हमारे डर के कारण को दूर कर हमें निर्भय बना; हे बलवन ! तू समर्थ है; अतएव हमारी रक्षा के लिए द्वेष और हिंसा की भावनाओं को नष्ट कर।

ऐश्वर्य के अधिष्ठाता इन्द्र ! तू ऐश्वर्य-सम्पन्न महान् जीवन का धारण कराने वाला है; हे ऐश्वर्य-शालिन, स्तुति-योग्य इन्द्र ! हम ऐश्वर्य की कामना से तुझ इन्द्र को पुकारते हैं ॥१५॥

इति दशमः खण्डः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३२३ १ २र ३२
त्वं सोमासि धारयुर्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे ।
१२ ३१ २
पवस्व मंहयद् रयिः ॥
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्वं सुतो मदिन्तमो दधन्वान् मत्सरिन्तमः ।
१ २ २ १ २र
इन्दुः सत्राजिदस्तृतः ॥
१ २ ३ १ २र ३क २र३ १२
त्वं सुष्वाणो अद्रिभिरभ्यर्ष कनिक्रदत् ।
३ २ ३ २ ३ १ २
द्युमन्तं शुष्ममा भर ॥१६॥

हे सोम ! इस जीवन-यज्ञ में तू ही आह्लादक एवं प्रभावयुक्त पालक है : ऐश्वर्य प्रदान करता मेरे अन्तःकरण में द्रवित हो ।

परिस्रुत तू ही सबसे अधिक आह्लादक और आह्लाद का सर्वोत्तम स्रोतभूत पालक है : तू ही वह आह्लादक है जो जीवनयज्ञ में जीत दिलाता हुआ भी स्वयं चोट नहीं खाता ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अभेद्य ग्रन्थियों में से परिस्रुत किया गया तू प्रेरणाशब्द करता पहुँच; और ज्ञान की चकाचौंध से चमकते ज्ञान-बल को प्रदान कर ॥१६॥

१२ ३१२ ३ २३ १२ ३१२
पवस्य देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा ।
२ ३२३ १२
आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः ॥
१२ ३ १ २३२ ३ २३ १२
तव द्रप्सा उदप्रुत इन्द्रं मदाय वावृधुः ।
२ ३१२ ३१२३ १ २
त्वां देवासो अमृताय कं पपुः ॥
१ २ ३ १ २ ३२
आ नः सुतास इन्दवः पुनाना धावता रयिम् ।
३१२ ३१२
वृष्टिद्यावो रीत्यापः स्वर्विदः ॥१७॥

हे आह्लादक सोम ! तू दिव्य इन्द्रियों के भोजन के लिए अपने पूरे बल-सहित धारा रूप में प्रवाहित हो; हे अमरताधायक सोम ! तू हमारे हृदयरूप घर में विराजमान हो ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तेरे रसवाहक और शीघ्रगति आनन्दरस प्रज्ञाशक्ति को बलवान् बनाते हैं; तुझ सुखद आनन्दरस का पान दिव्य इन्द्रियां दिव्यता के लिए करती हैं।

परिस्रुत आह्लादक सोम परिवाहित होते हुए चारों ओर से ऐश्वर्य को लाते हैं; वे आह्लादक रस ज्ञान कान्ति के वर्षक, कर्मशक्ति के प्रापक और अन्त में परमसुख के प्रापक होते हैं ॥१७॥

२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण ।
२ ३ २उ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र
यो देवान् विश्वाँ इत् परि मदेन सह गच्छति ॥
२र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
द्वियं पञ्च स्वयशसं सखायो अद्रिसंहतम् ।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रियमिन्द्रस्य काम्यं प्रस्नापयन्त ऊर्मयः ॥
२ ३ १ २ ३ १ २र
इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
नरे च दक्षिणावते वीराय सदनासदे ॥१८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो सब इन्द्रियों को परमानन्द से विभोर कर देता है उस कमनीय, दुःखहर्ता और भरण-पोषण-समर्थ परमानन्द को चिति के आवरणों में से छान कर शुद्ध कर प्रवाहित करते हैं ।

जिस ध्यान-धारणाओं से संग्रहणीय, इन्द्र के अभीष्ट, अपनी कीर्ति के कारणभूत, प्रिय, सोम को दस, ऊर्ध्वगति, मित्रभूत इन्द्रियां जल धाराओं के समान स्नान का साधन बनाती हैं, उस सोम को प्रवाहित करते हैं ॥

हे सोम ! तुझे उस इन्द्र (प्रज्ञाशक्ति) को पिलाने, तृप्त करने के लिए प्रवाहित किया जाता है जो इन्द्र अज्ञान-विघ्न का नाशक, क्रियाशक्ति-सम्पन्न प्रवर्तक और जीवन रूप यज्ञ के गृह अर्थात् शरीर का अधिष्ठाता शक्तिशाली वीर है ॥१८॥

१ २   ३ २ ३   ३ २
पवस्य सोम महे दक्षाया-

३   २   ३ २   ३ १   २र
श्वो न निक्तो वाजी धनाय ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
प्र ते सोतारो रसं मदाय
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
पुनन्ति सोमं महे द्युम्नाय ॥
१ २ ३ १ २ र
शिशुं जज्ञानं हरिं मृजन्ति
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
पवित्रे सोमं देवेभ्य इन्दुम् ॥१६॥

जिस प्रकार परिपुष्ट एवं बलिष्ठ अश्व धन-प्राप्ति अथवा युद्ध-विजय का साधन बनता है वैसे ही, हे सोम! तू महती शक्ति का साधन है : परमानन्दरस अतिशय शक्तिदाता है।

वे साधक योगिजन, उस प्रेरक परमानन्दरस को आनन्द-प्राप्ति और भारी तेजस्विता की प्राप्ति के लिए प्रवाहित करते हैं ॥

इस शरीर में शयन करने वाले, चेतनोत्पादक, दुःखहर्ता, सुखदाता सोम (परमानन्द) को साधक जन इन्द्रियों के लिए अन्तःकरण में परिशुद्ध करते हैं ॥१६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२३ २ ३२३ २३ १ २३ १ २र
उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम् ।
१ २ ३ १ २
इन्दुं देवा अयासिषुः ॥

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
तमिद् वर्धन्तु नो गिरो वत्सं संशिश्वरीरिव ।
१ २र ३ १ २
य इन्द्रस्य हृदं सनिः ॥

१ २ ३ १ २र ३१ २ ३ २ ३ १२
अर्षा नः सोम शं गवे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् ।
१२ ३१२
वर्धा समुद्रमुक्थ्य ॥२०॥

सुष्ठुतया उत्पन्न, कर्म-प्रेरक ज्ञानकिरणों अथवा स्तुतियों से क्रमशः साधित, आनन्दरस को इन्द्रियों ने प्राप्त किया।

उस परमानन्द को, जो प्रज्ञाशक्ति के भीतर व्याप्त हो जाता है; हमारी वाणियां इस प्रकार बढ़ावें—उत्साहित करें जैसे माताएं पुत्र को बढ़ाती हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सोम ! तू हमें परम सुख पहुँचा; इन्द्रियों को निरन्तर तृप्त करने वाली प्रेरणारूप शक्ति प्रदान कर; हे प्रशंसनीय ! तू रसों के सागर रूप अन्तःकरण को बढ़ा ॥२०॥

इत्येकादशः खण्डः

२ ३ २ ३ २ ३ १२ ३१ २ ३ १ २
आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् ।
२३ २ ३ २ ३ १ २
येषामिन्द्रो युवा सखा ॥
३ २र ३ १ २३ १ २ ३ २ ३१ २र
बृहन्निदिध्म एषां भूरि शस्त्रं पृथुः स्वरुः ।
२ ३ २ ३ २ ३ १ २
येषामिन्द्रो युवा सखा ॥
१ २ ३ ३ ३ २उ ३ १२ १ २ ३ १ २
अयुद्ध इद् युधा वृतं शूर आजति सत्वभिः ।
२३ २ ३ २ ३ १ २
येषामिन्द्रो युवा सखा ॥२१॥

जिनकी प्रकाशमयी प्रज्ञा सदा तरुण एवं मित्र होती है, वे विद्वान् अपनी दृढ़ संकल्प की अग्नि को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रदीप्त करते हैं और दिव्यशक्तियों के स्वागत के लिए सदा (अन्तःकरण रूप) आसन को बिछाये (तय्यार) रखते हैं।

जिनकी प्रकाशमयी प्रज्ञा सदा तरुण एवं मित्र होती है, उनका संकल्परूप तेज बड़ा है। वे स्तवन भी पर्याप्त करते हैं और प्राणबल भी उनका विशाल होता है।

जिस साधक की प्रकाशमयी प्रज्ञा सदा तरुण एवं मित्र होती है वह, अकेला संघर्ष करता हुआ भी, अनेक सहायक योद्धाओं से सुरक्षित शत्रुभूत दुर्भाव को अपने सात्त्विक बलों से पछाड़ देता है—जैसे कि शूरवीर योद्धा ॥२१॥

२र ३ २ ३१२३ २३ १ २ ३ १२
य एक इद् विदयते वसु मर्ताय दाशुषे ।
१२ ३ १ २ ३ १ २ ३२
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥
२ ३ १ २ ३२ ३ २ ३१२ ३ २ १
यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावाँ आविवासति ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र ३ २३ १ २ ३ २
उग्रं तत् पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग ॥
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत् ।
३ १ २ ३ २३ १ २ ३२
कदा नः शुश्रवद् गिर इन्द्रो अङ्ग ॥२२॥

हे शिष्य ! वह इन्द्र, अकेला ही, अजेय एवं सब का अधिष्ठाता बना हुआ, समर्पण करने वाले दानी साधक को नाना ऐश्वर्य प्रदान करता है ।

हे शिष्य ! सिद्ध की गई प्रज्ञाशक्ति वह उग्र तेज प्रदान करती है कि साधक को बहुतों में से पृथक् प्रकट कर देती है ।

वह इन्द्र हमारी स्तुतियों को तो जब कभी भी सुन ही लेता है और साधना न करने वाले जन को, क्षुद्र पौधे को जैसे पांव से कुचलदेते हैं—वैसे, अपने सामर्थ्य से, कभी भी विनष्ट कर देता है ॥२२॥

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २ ३ २३ १ २
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे ॥
२र ३ १ २र३ १२र ३ १२
यत् सानोः सान्वारुहो भूर्यस्पष्टः कर्त्वम् ।
२र ३ १२ ३१२ ३ १२
तदिन्द्रो अर्थं चेतति यूथेन वृष्णिरेजति ॥
३ २उ ३ २ ३ २३ १२ ३ २
पुंक्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्य प्रा ।
१ २ ३ १ २र
अथा न इन्द्र सोमपा गिरामुपश्रुतिं चर ॥२३॥

विविध ज्ञान एवं कर्म के प्रेरक इन्द्र की, स्तोता स्तुति और भक्त पूजा करते हैं तथा विद्वान उसी को ध्वज-दंड की भांति ऊंचा उठाये रखते हैं।

जब साधक ऊंची से ऊंची (चोटी की भी चोटी) चित्तभूमि पर पहुँचता है तो वह बहुत सी कर्त्तृत्वशक्ति प्रकट करता है : वह तो इन्द्र ही अपने इष्ट को जानकर और सुखवर्षक रूप में अपने दल-बल के साथ आगे बढ़ रहा हो—ऐसा ही है।

हे आनन्दरस के पान करने वाले इन्द्र ! हमारी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वाणियों की ध्वनि को सुन : और ज्ञान-साधना से सम्पन्न, सुख साधन-समर्थ लक्ष्यप्रापक ज्ञान-कर्मेन्द्रिय रूप घोड़ों को लक्ष्य-यात्रा के वाहन रूप रथ में जोड़ ॥२३॥

इति द्वादशः खण्डः, पञ्चमश्च प्रपाठकः;
इति दशमोऽध्यायः

अथ एकादशोऽध्यायः

ऋषिः—१, ६ मेधातिथिः । २, १० वसिष्ठः । ३ प्रगाथः । ४ पराशरः । ७ त्र्यरुणस्त्रसदस्यू । ८ अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः । ६ हिरण्यस्तूपः । ११ सार्पराज्ञी ॥ देवता—आप्री सूक्तम् । १ (१) इध्मः समिद्धो वाग्निः, (२) तनूनपात्, (३) नराशंसः (४) इडः । २ आदित्याः । ३, ५, ६ इन्द्रः । ४, ७-६ पवमानः सोमः । १० अग्निः । ११ सार्पराज्ञी ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

छन्दः—१-३, ११ गायत्री । ४ त्रिष्टुप् । ५, ६ (विषमा बृहती समास्तो बृहती) । ७ पिपीलिका-मध्या अनुष्टुप् । ८ द्विपदा पंक्तिः । ९ जगती । १० विराड् जगती ॥ स्वरः—१-३, ११ षड्जः । ४ धैवतः : ५, ६ मध्यमः । ७ गान्धारः । ८ पञ्चमः । ९, १० निषादः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सुषमिद्धो न आ वह देवाँ अग्ने हविष्मते ।
१ २ ३ १ २
होतः पावक यक्षि च ॥
१ २ ३ २ ३ १ २
मधुमन्तं तनूनपाद् यज्ञं देवेषु नः कवे ।
३ १ २ ३ १ २
अद्या कृणुहय्ूतये ॥
२ ३ १ २ ३ १ ३ २ ३ २ ३ १ २र
नराशंसमिह प्रियमस्मिन् यज्ञ उप ह्वये ।
१ २ ३ १ २
मधुजिह्वं हविष्कृतम ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
अग्ने सुखतमे रथे देवाँ ईडित आ वह ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३ १२
असि होता मनुर्हितः ॥१॥

हे ज्ञानस्वरूप, संकल्परूप अग्ने ! तू भली-भांति प्रदीप्त होकर हममें से समर्पणभावना से भावित साधक में दिव्य गुणों का आधान कर; हे त्याग-भावना के साधक अतएव शोध- अग्ने ! तू साधक में यजन की भावना भी फूंक दे।

हे शरीरों को न गिरने देने वाले—आधारभूत, अन्तर्ज्ञान प्रदान करने वाले अग्ने ! तू आज हमारी उन्नतिगति के लिए मधुरता से परिपूर्ण यज्ञभावना को हमारे लिए सिद्ध कर।

इस जीवन,यज्ञमें मैं नर-नरमें प्रशंसितरूप से विद्यमान् प्रिय अग्नि को पुकारता हूँ : वह अर्थात् उसका साधक मधुरभाषी और हवि प्रदाता बने।

हे अग्ने ! तेरी स्तुति (साधना) करने पर तू अत्यन्त सुखी वाहनरूप रथ से दिव्य गुणों का आधान कर; मनन-शक्ति में स्थापित तू ही आत्मिक यज्ञ का प्रारम्भ करने वाला बनता है ॥१॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा ।
३ १ २ ३ १ २ र
सुवाति सविता भगः ॥
३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ र
सुप्रावीरस्तु स क्षयः प्र नु यामन्त्सुदानवः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
ये नो अंहोऽतिपिप्रति ॥
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
उत स्वराजो अदितिरदब्धस्य व्रतस्य ये ।
३ १ २ र
महो राजान ईशते ॥२॥

आज ज्ञान एवं कर्मशक्ति-प्रेरक के उदय होने पर सब दोषों से विमुक्त, मित्र, अर्यमा, सविता और भग शब्दों से सूचित दिव्यगुणों वाला वह प्रेरक, उस-उस गुण रूप फल को प्रदान करता है।

वह आश्रय भलीभांति हमारा रक्षक हो और प्रतिदिन हमें सुष्ठु दान वाला हो—ऐश्वर्य का प्रापक हो जिससे कि हम पापों को तर जावें ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो अखण्डित व्रत के कारण स्वयं अखण्डित और स्वतः अपने प्रकाश से प्रकाशित होते हैं वे बड़े ऐश्वर्यशाली होकर सबके अधिष्ठाता बनते हैं ॥२॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र
उ त्वा मदन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः ।
१२ ३ १ २
अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥
३ २ ३ १ २ २३ २ ३ ३ २ ३ १ २
पदा पणीनराधसो नि बाधस्व महाँ असि ।
२उ ३ २ ३ २ २र
न हि त्वा कश्च न प्रति ॥
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम् ।
२उ ३ १ २
त्वं राजा जनानाम् ॥३॥

हे अभेद्य शक्तिमन् ! परमानन्द तुझे हर्षित करे; हमें ऐश्वर्य प्राप्त हो । परमानन्द की विनाशक भावनाओं को नष्ट कर ।

हे प्रज्ञाशक्ति ! तू अनुदार साधनाविरोधी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भावनाओं को रोक, तू महान् शक्तिशाली है । तेरे समान तो कोई भी नहीं है ।

हे इन्द्र ! तू उत्पन्न एवं अनुत्पन्न सब पदार्थों का, ज्ञान की दृष्टि से, अधीश्वर है एवं सब जनों का राजा है ॥३॥

इति प्रथमः खण्डः

१ २र ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २र ३ १
आ जागृविर्विप्र ऋतं मतीनां सोमः पुनानो
२ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
असदच्चमूषु । सपन्ति यं मिथुनासो निकामा
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अध्वर्यवो रथिरासः सुहस्ताः ॥

१ २ ३ १ उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १
स पुनान उप सूरे दधान ओभे अप्रा रोदसी वी
२र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
ष आवः । प्रिया चिद् यस्य प्रियसास ऊती
३ १ २र ३ २ ३ १ २र
सतो धनं कारिणे न प्र यंसत् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
स वर्धिता वर्धनः पूयमानः सोमो मीढ्वाँ अभि
३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
नो ज्योतिषावित् । यत्र नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः
३ १ २ ३ १ २र ३ २
स्वर्विदो अभि गा अद्रिमिष्णन् ॥४॥

चारों ओर से चेतनता लाता हुआ, बुद्धि का विकासक सोम, मनन-शक्तियों से परमसत्य का प्रकाश करता इन्द्रियों में प्रतिष्ठित होता है : इसी सोम का आदर, सपत्नीक, इच्छाओं से प्रेरित वे साधक करते हैं जिनके वाहनभूत रथ सर्वोत्तम अवस्था में हैं और जो कर्म करने में कुशल है।

वह प्रवाहित होता परमानन्द परम-प्रेरक परमेश्वर में ध्यान का साधक बना पृथिवी एवं द्युलोक—दोनों को पूर्ण करता उनमें स्थित पदार्थमात्र को प्रकट करता है। लक्ष्य तक पहुँचे जिस सोम की भली लगने वाली धारायें उन्नतिगति की साधन बनती हैं; कमकर को जैसे लौकिक धन देते हैं, वैसे,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह सोम उपासक को ऐश्वर्य प्रदान करता है।

वह सबको बढ़ाने और स्वयं बढ़ने वाला प्रवाहित होता सोम सुखवर्षक रूप में हमें अपनी ज्योति से उस स्थिति में पहुँचा देता है जिस स्थिति को, कि, हमारे परमपद—(परमलक्ष्य) को जाननेवाले, परमसुख का लाभ करने वाले धर्ममेघ को चाहते हुए, पूर्वज पहुँचे थे ॥४॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
मा चिदन्यद् वि शंसत सखायो मा रिषण्यत ।
२ ३ १ २ ३ १२३ १ २ ३१ २र ३ १ २
इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत ॥

३ १ २ ३१ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
अवक्रक्षिणं वृषभं यथा जुवं गां न चर्षणीसहम् ।
३१ २ ३ १ २ २ १ २र ३ १ २
विद्वेषणं संवननमुभयङ्करं मंहिष्ठमुभयाविनम् ॥५॥

हे मित्रो ! किसी अन्य की स्तुति कर खिन्न मत होओ; सब मिलकर उस सर्व-समर्थ इन्द्र की ही

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्तुति करो और बार-बार उसके ही गीत गाओ।

उस इन्द्र (प्रज्ञाशक्ति) की ही स्तुति करो जो बैल की भांति बलवान् और शीघ्रगामी नेता है, और पृथिवी की भांति मनुष्यादि प्रज्ञाओं को वहन करता है; दुष्टों के लिए अप्रीतिकारक तथा श्रेष्ठों का भक्तिपात्र—दोनों प्रकार का है; अतएव महान् पूजनीय एवं दुष्ट तथा श्रेष्ठ दोनों—का रक्षक है ॥५॥

२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३
उदु त्ये मधुमत्तमा गिरः स्तोमास ईरते। सत्रा-
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
जितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
कण्वा इव भृगवः सूर्या इव विश्वमिद् धीतमा-
२ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
शत। इन्द्रं स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो
अस्वरन् ॥६॥

वे प्रसिद्ध अति मधुर वचन, स्तुति-वाक्यके रूप में हमें प्रेरणा प्रदान करते हैं: वे विघ्नबाधाओं को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पार करा ज्ञानधन प्रदान करने वाले सोम ऐसे हैं कि उनकी अग्रगति अक्षुण्ण रहती है; इसीलिये वे ऐश्वर्य ले आनेवाले वाहक रथों की भान्ति हैं।

जैसे तपस्वी विद्वान् ध्यानयोग से तथा सूर्य की किरणें इस विश्व भर में पहुँच रखते हैं वैसे ही वे सोम समस्त पदार्थों का ज्ञान कराते हैं। वे सोम स्तुति वचनों से अर्चित करते, प्राणशक्ति और ज्ञानधारणाओं को पहुँचाते हुए प्रज्ञाशक्ति को प्रेरित करते हैं॥६॥

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः।
३ २ ३१ २ ३ १ २
द्विषस्तरध्या ऋणया न ईरसे॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३
अजीजनो हि पवमान सूर्यं विधारे शक्मना
१२ १ २ ३ १२ ३ १२
पयः। गोजीरया रंहमाणः पुरन्ध्या॥
२ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २ ३१ १ ३
अनु हि त्वा सुतं सोम मदामसि महे समर्य-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
राज्ये । वाजाँ अभि पवमान प्र गाहसे ॥७॥

हे सोम! तू परमैश्वर्य प्रदान करने के लिए प्रवाहित हो; इस कार्य के मार्ग में आने वाले विघ्नों को विनष्ट कर और शत्रु-विनाशिका गति से हमें भी प्रेरित कर॥

हे पवमान सोम! तू शरीर को धारण करने में समर्थ, इन्द्रियों को वेगवान् करने योग्य गति से गमन करता हुआ अपनी सामर्थ्य से निरालम्ब अन्तरिक्ष में फलस्वरूप सर्वप्रेरक शक्ति को प्रकट करता है।

हे सोम! तेरे निष्पन्न होजाने पर हमें जितेन्द्रियता का जो महान् साम्राज्य प्राप्त हो जाता है, उसमें हम आनन्द लूटते हैं। निष्पन्न होता हुआ तू हमारी इन्द्रियों में रम जाता है॥७॥

२ ३ १ २ १ २
परि प्र धन्व इन्द्राय सोम
३ २ ३ १ २ ३ १ २र
स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र ३ १ २र३
एवामृताय महे क्षयाय
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
स शुक्रो अर्ष दिव्यः पीयूषः ॥
१ २ ३ १ २ ३
इन्द्रस्ते सोम सुतस्य पेयात्
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
क्रत्वे दक्षाय विश्वे च देवाः ॥८॥

हे परमानन्ददायक सोम ! मित्रता, पोषकता और आनन्दोपभोग के गुणों वाले इन्द्र के लिये तू प्रवाहित हो; उसको प्राप्त हो : परमानन्द की सिद्धिप्राप्त प्रज्ञाशक्ति में ये सब गुण प्रकट होते हैं ॥

अमरतारूप महान् लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ही व दीप्तिमान् परमानन्द हमें प्राप्त हो; वह दिव्य अमृत है।

हे सोम ! सम्पन्न हुए तुझ अमृत का पान प्रज्ञाशक्ति करे और सब इन्द्रियां भी बलशाली कर्मशीलता–सफलता–के लिए तेरा पान करें ॥८॥

इति द्वितीयः खण्डः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सूर्यस्येव रश्मयो द्रावयित्नवो मत्सरासः प्रसुतः
३ १ २ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २ ३
साकमीरते । तन्तुं ततं परि सर्गास आशवो
१ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १
नेन्द्रादृते पवते धाम किं चन ॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु मन्द्राजनी
३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३
चोदते अन्तरासनि । पवमानः सन्तनिः सुन्व-
१ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
तामिव मधुमान् द्रप्सः परि वारमर्षति ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
उक्षा मिमेति प्रति यन्ति धेनवो देवस्य देवीरुप
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३
यन्ति निष्कृतम् । अत्यक्रमीदर्जुनं वारमव्ययम्
२ ३ २ ३ २उ ३ १ २
अत्कं न निक्तं परि सोमो अव्यत ॥६॥

... किरणों की भांति गतिशील, आनन्द ...

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

की स्रोतभूत सोम की धाराएं, सम्पन्न की गईं एक साथ प्रेरणा प्रदान करती है: अपने प्रस्रवण-समय एक विस्तृत तन्तु जाल का निर्माण करती हुईं वे धाराएं पहुँचकर (फैल कर भी) इन्द्र (प्रज्ञाशक्ति) के अतिरिक्त और किसी स्थान में प्रवाहित नहीं होतीं।

जब मननशक्ति का सोम से सम्पर्क हो जाता है तो वह मधुर अमृतानन्दरस से सिंचित हो जाती है। इस प्रकार एक आनन्ददायक धारा मुख्यस्थान के भीतर प्रेरित होती है। साधकों की सन्तति-सी यह पवमान रस-सन्तति मधुर रस रूप में चिति के आवरण में से पार होने के लिये पहुँचती है।

वीर्यसेचन-समर्थ साँड जब गर्जता है तो गौएं उसके [illegible] गमन करती हैं—इसी प्रकार उस सुखवर्षक सोम [illegible] स्थान में इन्द्रियां पहुँचती हैं; वह चिति के शुभ्र आ[illegible] [illegible] एवं रक्षणसमर्थ बन जाता है॥८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २र ३ १ २ ३२ ३ १ २
अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युतं जनयत
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ २
प्रशस्तम् । दूरेदृशं गृहपतिमथव्युम् ॥
२ ३ २उ ३ १ २ ३क २र ३ २ ३ १ २ ३
तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन् त्सुप्रतिचक्षमवसे
१ २ ३ २ २उ ३ २ ३ १ २
कुतश्चित् । दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः ॥
१ २ ३ १ २र ३क २र
प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो नोऽजस्रया सूर्म्या
१ २र ३ १ २ ३ १ २
यविष्ठ । त्वां शश्वन्त उप यन्ति वाजाः ॥१०॥

हे मनुष्यो ! ज्ञान और कर्म की शक्तियों द्वारा मन और बुद्धि की अरणियों में से हाथ में आये (प्रत्यक्ष हुए) अग्निदेव को तुम अपने भीतर प्रकट करो । वह अग्नि दूर-दूर तक दिखाने वाला, हमारी आत्मिक सत्ता का स्वामी और इसका स्थिर निवासी है ॥

उस अग्नि को अन्तःकरणरूप घर में इन्द्रियां

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

खोज पाती हैं : वह जो सर्वोत्तम पथ-प्रदर्शक और कहीं से भी अर्थात् सब ओर से रक्षक है। और जो बल की प्राप्ति कराने वाला, अग्नि नित्य ही अन्तःकरणरूप घर में रहता है।

हे अग्ने ! प्रदीप्त हुआ तू अपनी सदा युवती ज्ञानमयी ज्योति के सहित निरन्तर प्रकाशित रह; हे यविष्ठ ! समस्त ऐश्वर्य तुझे ही सदा प्राप्त रहते हैं : प्रज्ञाशक्ति दृढ़ संकल्प के ही वशीभूत है ॥१०॥

१ २र ३ १२ ३१२ ३२
आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः ।
३ १२ ३१ २
पितरं च प्रयन् त्स्वः ॥
३ १ २ ३२उ ३ १२ ३ २
अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती ।
२र ३१ २र
व्यख्यन्महिषो दिवम् ॥
३२उ ३ १ २ ३ १ २३१२
त्रिंशद् धाम वि राजति वाक् पतङ्गाय धीयते ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३२३१ २
प्रति वस्तोरहद्युभिः ॥११॥

जिस प्रकार गमनशील पृथिवी उस देदीप्यमान ज्योति (सूर्य) की परिक्रमा करती है और इस गति में वह मातृभूत सूर्य को अपने सम्मुख रखती और उस उत्पादक को पहुंचने का प्रयत्न करती है उसी प्रकार ज्ञान एवं कर्मरूप इन्द्रियाँ उस तेजःपुञ्ज सर्वप्रेरक सूर्य के अभिमुख उस सुखस्वरूप को पहुँचने का यत्न करती हुईं उसकी ओर गति करती हैं।

महती दिव्यता का प्रकाश करती हुई, दिव्य सूर्य की प्राण एवं अपान रूप शुभ्र शक्ति इस ब्रह्माण्ड के भीतर गति कर रही है।

वह परमात्मा तीसों घड़ियों तक अपने दिव्य प्रकाश सहित विराजता है। उस सर्वव्यापक की ही स्तुति की जाती है ॥११॥

इति तृतीयः खण्डः;

इत्येकदशोऽध्यायः समाप्तः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ द्वादशोऽध्यायः

ऋषिः—१ (१–२) गोतमः (३) । ८, ११ वसिष्ठः । २, ७ भरद्वाजः । ३ प्रजापतिः । ४, १२ सोभरिः । ५ मेधातिथि-मेध्यातिथी । ६ (१) ऋजिश्वा, (२) ऊर्ध्वसद्मा । ९ तिरश्चीः । १० सुतंभरः । १२, १९ नृमेध-पुरुमेधौ । १४ शुनःशेपः । १५ नोधाः । १६ मेधातिथिः । १७ रेणुः । १८ कुत्सः। २० अगस्त्यः ॥ देवता—१, २, ७, १०, १३, १४ अग्निः । ३, ६, ८, ११, १५, १७, १८ पवमानः सोमः । ४, ५, ९, १२, १६, १९, २० इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ७, १०, १४ गायत्री । ३, ९, । १९ (१, २) २० (२, ३) अनुष्टुप् । ४, ६, १३ प्रगाथः काकुभः (विषमा ककुप् समासतो बृहती च) । ५, १९ (३) बृहती ८, ११, १५, १८ त्रिष्टुप् । ११, १६ प्रगाथः (विषमा बृहती, समासतो बृहती) १७ जगती । १९ (३) बृहती । (१) बृहती, स्कन्धोग्रीवी ॥ स्वरः—१, २, ७, १०, १४ षड्जः । ३, ९, १६

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(१, २) २० (२, ३) गान्धारः । ४-६, १३,
१६, १९ (३) २० (१) मध्यमः । ८ ११, १५,
१८ धैवतः । १७ निषादः ॥

३ १ २ ३१ २र ३ १२
उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये ।
३ २ ३ १ २ ३२
आरे अस्मे च शृण्वते ॥
१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
यः स्नीहितीषु पूर्व्यः संजग्मानासु कृष्टिषु ।
१२ ३ २३ १२
अरक्षद् दाशुषे गयम् ॥
२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
स नो वेदो अमात्यमग्नी रक्षतु शन्तमः ।
३२उ ३ १२
उतास्मान् पात्वंहसः ॥
३१ २ ३ २३ २३ १ २ ३ १ २
उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्रहाजनि ।
३ १ २र
धनञ्जयो रणेरणे ॥१॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जीवनयज्ञ का प्रयत्नपूर्वक अनुष्ठान करते हुए हम दृढ़-संकल्प रूप अग्नि को बुलावें : वह अग्नि ऐसा है कि दूर हो या समीप-दोनों अवस्थाओं में साधक की सुनता है ।

वह संकल्पाग्नि परस्पर स्नेह करने वाली तथा समान भाव से बरतने वाली कर्मशील प्रजाओं में आदरणीय है: वह अग्नि दानी व्यक्ति के लिए ऐश्वर्य की रक्षा करता है ।

वह हमारे साहचर्य को प्राप्त हो: हम उसे अपना साथी बनावें; वह अति कल्याणमय अग्नि हमारी रक्षा करे और हमको पाप से बचावे ॥

सब लोग उसका यही वर्णन करते हैं कि वह अग्नि अज्ञान आदि आवरणों को हटाकर हमें प्रत्येक संघर्ष में विजय रूप धन को जीत कर देता है ॥१॥

१ २ ३ १ २र ३ १२
अग्ने युंक्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः ।
२३ १२ ३ १२
अरं वहन्त्याशवः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
अच्छा नो याह्या वहाभि प्रयांसि वीतये ।
२ ३ १
आ देवान् त्सोमपीतये ॥
१२ ३ १ २र ३ १ २
उदग्ने भारत द्युमदजस्रेण दविद्युतत् ।
२ ३ १ २
शोचा वि भाह्यजर ॥२॥

हे उन्नतिपथ के नेता! अपनी अश्व-समान शीघ्रगामी, साधन-समर्थ, सर्वगामी शक्ति-किरणों को, जो खूब ले चलने वाली हैं, अपने रथ में जोड़ ले।

हे अग्ने हमें गति-(उन्नति की ओर) प्राप्त कराने और हमारी दिव्य इन्द्रियों को परमानन्द प्राप्त कराने के लिये हमारे सम्मुख आ;—हम संकल्प-शक्ति को सिद्ध करें।

हे भरण-पोषण-समर्थ! प्रकाशमान तेज से निरन्तर प्रकाशित होता तू उन्नति कर और हे अमर! अपनी कान्ति से प्रकाशित हो उठ ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

५ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद् वचः ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः ॥
२ ३ १ २र ३ २उ ३ २ ३क २र
आ जामिरत्के अव्यत भुजे न पुत्र ओण्योः ।
१ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
सरज्जारो न योषणां वरो न योनिमासदम् ॥
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
स वीरो दक्षसाधनो वि यस्तस्तम्भ रोदसी ।
२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
हरिः पवित्रे अव्यत वेधा न योनिमासदम् ॥३॥

उस सोम की अनाहत वाणी (अन्तःप्रेरणा) संजीवन तत्त्व को निष्पन्न करने वाले के लिए है, साधारण जन उसे नहीं सुन पाता। हे ज्ञानी तपस्वियो ! दान-विरोधी कुत्ते के समान लोभी (लोभ-वृत्ति) को नष्ट करो; त्याग-भावना को मत छोड़ो ॥

मां-बाप की गोद में जैसे पुत्र, वैसे ही वह

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बन्धु-स्वरूप सोम अपने आश्रय—अन्तःकरण—में सुरक्षित रखा जाता है: वह अपने आश्रय में जाने के लिए इसी प्रकार जाता है जैसे कोई प्रेमी प्रेमिका के प्रति अथवा वर कन्या के प्रति अथवा आकृष्ट हुआ जाता है।

निश्चय ही वह परमानन्द बलवान् एवं बल का साधन है जिसने पृथिवी एवं द्युलोक के मध्य-स्थित सब कुछ थाम रखा है; वह दुःखहर्ता सोम अपने आश्रय में जाने के लिए मेधावी की भांति अन्तःकरण में पहुँचता है ॥३॥

३ २ ३ १ २र ३१ २ ३ १
अभ्रातृव्यो अना त्वम् अनापिरिन्द्र जनुषा सना-
२ ३१२ ३ १ २
दसि । युधेदापित्वमिच्छसे ॥
१ २ ३१ २ ३ १२ ३ १ २ ३क२र
न की रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः।
३ २ ३ १ २ ३१ २र३ २उ ३ १२
यदा कृणोषि नदनुं समूहस्यादित् पितेव
हूयसे ॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे इन्द्र ! तू जन्म से ही, अपने प्रकट होने के समय से ही (स्वभावतः ही) अजातशत्रु, नेतारहित (स्वतन्त्र) बन्धु-बान्धवरहित—अकेला है । अब संघर्ष में सहयोग देकर बन्धुत्व स्थापित करना चाहता है ।

क्या तू कभी केवलमात्र धनवाले को मित्र बनाता है ? तेरा आनन्द तो वही लेते हैं जो कर्म-शक्ति से सुष्ठु रमण करने वाले हैं । जब तू अपने स्तोता (साधक) जन को मित्र बनाता है तो उस का नेतृत्व करता है; तभी तो तू पिता की भांति पुकारा जाता है ॥४॥

१ २ ३२३ २ ३२ ३ १ २र ३ १२
आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये ।
३ २३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ १२
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोम
पीतये ॥

२ ३ १२ ३ २३ १२ ३१२ ३
आ त्वा रथे हिरण्यये हरी मयूरशेप्या । शिति-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ १ २ ३१२ ३१२
पृष्ठा वहतां मध्वो अन्धसो विचक्षणस्य पीतये ॥
२ ३ २क १ २ ३१ २ ३ १ २ १ २
पिबा त्व३स्य गिर्वणः सुतस्य पूर्वपा इव । परि·
३ १ २ ३१२ ३ २उ ३१ २
ष्कृतस्य रसिन इयमासुतिश्चारुर्मदाय पत्यते ॥५॥

हे दिव्य मन ! तेरे चमकीले वाहन में जुती सैंकड़ों-हजारों, समाहित एवं ज्ञान-तन्तुओं से सम्पन्न वृत्तियां तुझे परमानन्द का उपभोग कराने के लिए ले जावें ।

हे दिव्य मन ! तेरे चमकीले वाहन में जुती हुई दुःख हरने वाली, मयूर पुच्छ की भांति विविध वर्ण (वृत्ति) वाली, विशुद्ध ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियां, मधुर, प्राणशक्ति-सम्पन्न, प्राप्त करने योग्य परमानन्द रस को उसका पान करने के लिए ले जावें ।

हे दिव्य मन ! तू इस वाणियों द्वारा स्तुत, समाधि द्वारा निष्पादित परमानन्दरस को ऐसे पी जा जैसे कोई पहले पीने का अभ्यासी शीघ्र पी जाता

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

है; इस शुद्ध, स्वादु रस की यह प्राप्ति परम हर्ष के लिए बहुत अच्छी मानी जाती है ॥५॥

१ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २र३ १२ ३
आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुरं रज-
१२ ३ १२३१२
स्तुरम् । वनप्रक्षमुदप्रुतम् ॥
३१२ ३१ २३१२ ३२ ३२ ३ १ २
सहस्रधारं वृषभं पयोदुहं प्रियं देवाय जन्मने ।
३२३ २ ३१ २ ३१ २र ३२ ३२
ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे राजा देव ऋतं
३२
बृहत् ॥६॥

जैसे वेगवान्, धूल उड़ा रहे (बली) अश्व को सजाते हैं; उसी प्रकार इस ज्ञान और कर्म को लाने वाले और अज्ञान को भगाने वाले, साधना के लक्ष्य-भूत (परब्रह्म) से सम्पर्क कराने वाले, ज्ञान-रस से ओत-प्रोत सोम को निष्पन्न करो और उसको अपने अङ्ग-अङ्ग में सींचो ।

उस सोम को जो सहस्रों सुखवर्षक धाराओं में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

होकर अमृतरूप दुग्ध देने वाला है और दिव्य जन्म के लिए प्रिय साधन है; जो सोम परमसत्य से प्रकट होकर उसी परमसत्यरूप लक्ष्य से निरन्तर बढ़ता है; स्वयं प्रकाशित, दिव्यगुणयुक्त, महान् सत्य स्वरूप है ॥६॥

इति द्वितीयः खण्डः

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया ।
१ २ ३ १ २र
समिद्धः शुक्र आहुतः ॥
१२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
गर्भे मातुः पितुष्पिता विदिद्युतानो अक्षरे ।
१ २ ३ २ ३ २ ३ २
सीदन्नृतस्य योनिमा ॥
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
ब्रह्म प्रजावदा भर जातवेदो विचर्षणे ।
२ ३ २ ३ १ २ ३ २
अग्ने यद् दीदयद् दिवि ॥७॥

स्तुति से सिद्ध किया गया यह प्रदीप्त अग्नि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञान-धन द्वारा अज्ञान आदि बाधाओं को नष्ट करता रहता है।

परमसत्य के विश्रामस्थल—मूल तत्त्व में—प्रतिष्ठित होता एवं प्रतिष्ठापित करता वह संकल्पाग्नि मातृभूत—निर्माता—साधक के स्थिर अन्तःकरण में पालक का पालक बना चमकता है।

हे अग्ने! जब तू प्रकाशलोक में प्रदीप्त हो उठता है तो, हे सब उत्पन्न पदार्थों को जतलाने वाले, सर्वद्रष्टा! तू नाना सन्तान-वितान सहित ज्ञान को हमारे लिए वहन करता है: संकल्पशक्ति को तीव्र कर साधक विविध ज्ञान को प्राप्त करता है ॥७॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः सम-
३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
पृक्त रसम्। सुतः पवित्रं पर्येति रेभन् मितेव सद्म
३ २ ३ १ २
पशुमन्ति होता ॥

३ १ २ र ३ २ क १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
भद्रा वस्त्रा समन्या३ वसानो महान् कविर्निवच-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ १ २ ३क २र ३ १ २
नानि शंसन् । आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो
३ १ २र ३ १ २
विचक्षणो जागृविर्देववीतौ ॥
१२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २ ३ २ ३
सम्रु प्रियो मृज्यते सानो अव्ये यशस्तरो यशसां
१ २ ३ २ ३ १ २३ १ २ ३१ २ ३१
क्षैतो अस्मे । अभि स्वर धन्वा पूयमानो यूयं
२ ३ २ ३ १२
पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥८॥

उस प्रसिद्ध प्रकाशमयी प्रेरणा से द्रवित हुए दिव्य सोम ने इन्द्रियों से रस का सम्पर्क कराया। इस प्रकार परिष्कृत वह परमानन्दरस गर्जता हुआ—प्रेरणा देता हुआ—हृदय में प्रविष्ट होता है : उसी प्रकार जिस प्रकार कि यज्ञ साधक का लक्ष्य एक परिमित स्थान, पशु-वृत्तियों से भरे, हृदय को शुद्ध करना होता है।

वस्त्ररूप भद्र भावनाओं में लिपटा हुआ वह महान् क्रान्तदर्शक, प्रेरणा देता हुआ, ज्ञान-कर्मेन्द्रियों

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

में प्रवाहित होकर, विविध ज्ञान का प्रदर्शक बना दिव्यता के आधान में सदा जागरूक रहता हुआ विचरण करे।

वह प्रिय सोम हमारे लिए पृथिवी स्थानीय हो कर भी, चिति के उच्चतम उत्कर्ष में सिद्ध होता है; अतएव यशस्वियों में अधिक यशस्वी है। लक्ष्य-बेधक ध्यानी से प्रवाहित वह सोम प्रेरणा दे। वे सोम कल्याणमयी भावनाओं द्वारा हमारे सदा रक्षक बने रहें॥८॥

२ ३ २ ३ १ २ ३२ ३ २३ १ २
एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना।
३ २३ १ २३ १ २ ३ २ ३ १ २
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्धैराशीर्वान्ममत्तु॥
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्र शुद्धो न आ गहि शुद्धः शुद्धाभिरूतिभिः।
३ २ ३ १ २र ३ १ २
शुद्धो रयिं नि धारय शुद्धो ममद्धि सोम्य॥
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २र ३ १२
इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं शुद्धो रत्नानि दाशुषे।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ १ २ ३ १ २र
शुद्धो वृत्राणि जिघ्नसे शुद्धो वाजं सिषाससि ॥९॥

आओ तो ! उस प्रकाशपूर्ण इन्द्र को, जो विशुद्ध स्तोत्रों से अधिक समृद्ध होता है, निमल आनन्द की भेंट दें। निर्मल आनन्द से वह आनन्दित हो उठता है।

वह शुद्ध प्रज्ञाशक्ति हम पर अधिकार कर ले; वह जो शुद्ध उन्नतिगतियों से शुद्ध हुई है : शुद्ध प्रज्ञा ही वास्तविक ऐश्वर्य का धारण करावे; हे सोम्य ! शुद्ध ही वास्तविक परमानन्द के भोग को प्राप्त करता है।

शुद्ध प्रज्ञा ही हमारे लिए ऐश्वर्य को और समर्पक भक्त को रमण-साधन प्रदान करती है। शुद्ध प्रज्ञाशक्ति ही विघ्नों का वारण करती है और शुद्ध प्रज्ञा से ही ज्ञान-धन को प्राप्त कर सकता है ॥९॥

इति तृतीयः खण्डः

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्ने स्तोमं मनामहे सिध्रमद्य दिविस्पृशः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २ ३ १ २
देवस्य द्रविणस्यवः ॥

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ २
अग्निर्जुषत नो गिरो होता यो मनुषेष्वा ।

१ २ ३ ३ २ १ २
स यक्षद् दैव्यं जनम् ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
त्वमग्ने सप्रथा असि जुष्टो होता वरेण्यः ।

१ २ ३ १ २र
त्वया यज्ञं वि तन्वते ॥१०॥

दिव्यभावना से भरे धनकी कामना करतेहुए हम प्रकाशलोक को पहुँचा देने वाले नेतारूप अग्नि (संकल्परूपाग्नि) के स्तोत्र का नित्य मनन करते हैं; मानों वह उच्चलोक को छूने वाला ऊंचा उन्नति का साधन वृक्षरूप हो ।

वह अग्नि हमारी वाणियों को सुने : हमें सिद्ध हो; जो मानुष-जीवनयज्ञों का साधक होता है और दिव्यभावनाओं के साधक जन के यज्ञ का साधन है।

हे अग्ने ! तू खूब विशाल है : सब में प्रसिद्ध है :

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

अतएव स्नेह-पात्र, वरणीय, यज्ञसाधक है : यज्ञ का
ताना-बाना तेरी ही सहायता से बुना जाता है ॥१०॥

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३
अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामङ्गोषिणमवावशन्त
१ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २र ३ १ २ ३ १
वाणीः । वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि रत्नधा
२ ३ १ २
दयते वार्याणि ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
शूरग्रामः सर्ववीरः सहावान् जेता पवस्व सनिता
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
धनानि । तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्स्वषाढः
३ १ २र ३ १ २
साह्वान् पृतनासु शत्रून् ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३
उरुगव्यूतिरभयानि कृण्वन् त्समीचीने आ पवस्वा
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ २क १
पुरन्धी । अपः सिषासन्नुषसः स्वऽ३र्गाः सं
२र ३ २ ३ २ ३ १ २
चिक्रदो महो अस्मभ्यं वाजान् ॥११॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi
CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उस तीनों लोकों को छूने वाले, सुखवर्षण-समर्थ प्राणधारक, अङ्ग अङ्ग में रमनेवाले सोम को वाणियां चाहती हैं : वह हमारी स्तुतियों का पात्र है। साधक भक्तों में बस रहा वह सोम, बाधाओं को हटाने वाले वरुण की भांति दुर्भावनाओं को रोक कर हृदय-समुद्र को नाना रत्नों की खान बनाता है और वारण करने योग्य दुर्भावनाओं को नष्ट करता है।

वह सोम, जो, नाना प्रकार के बलों का अधिष्ठाता, सर्वाधिक बलदायक, सहनशीलता, विजयशीलता आदि को लाता हुआ, बहता है; और इस प्रकार ऐश्वर्य प्रदान करता है। उसके दिये हुए साधन बहुत तीक्ष्ण, लक्ष्य बेधन में अतिशीघ्रकारी, संघर्षों में स्वयं पराजित न होकर सब प्रकार के शत्रुओं को पराजित कराने वाला है।

जिसकी ज्ञानयुक्त प्रेरणाशक्ति बहुत विशाल है; इसीलिए सर्वत्र अभयों की सृष्टि-सी बनाता जाता है : वह इस शरीर को धारण करने वाले ज्ञान एवं कर्म दोनों उपयुक्त पात्रों में प्रवाहित हो। इस प्रकार

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हमें ज्ञान एवं कर्मशक्तियों को प्रदान करता वह अज्ञान व दुःख को हटा कर प्रकाशित होती सुख-सम्प्रदायों को देता हुआ हमें महान् ऐश्वर्यों की ओर प्रेरित करता है ॥११॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र३ १ २ २
त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पतिः । त्वं
३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इत् पुर्वनुत्तश्चर्षणीधृतिः ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
तमु त्वा नूनमसुर प्रचेतसं राधो भागमिवेमहे ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
महीव कृत्तिः शरणा त इन्द्र प्र ते सुम्ना नो
अश्नुवन् ॥१२॥

हे इन्द्र ! तेरी यह कीर्ति है कि तू सरल मार्ग से चलने वाला और शक्तिमान् है । मार्ग की अदम्य एवं अप्रतिम बाधाओं को तू नष्ट करता है और अकेला भी बहुतों से अपराजित तू कर्मठ मनुष्यों का रक्षक है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उस तुझ इन्द्र को, हे प्राणवन् ! (शक्तिशालिन्), चेतना देने वाले सिद्धि के एक अंश के समान, हम चाहते हैं। हे इन्द्र ! तेरा आश्रय एक महान् आवरण की भांति रक्षक है : तुझसे प्राप्त सुखसाधनों को हम प्राप्त करें ॥१२॥

१ २ ३ १ २३ २ २र३१२
यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम् ।
३ २ ३१ २ ३१२
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥

३ १ २र ३१२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अपां नपातं सुभगं सुदीदितिमग्निमु श्रेष्ठशोचि-
१ २ ३२ ३ १२ ३ २ ३२उ
षम् । स नो मित्रस्य वरुणस्य सो अपाम् आ
३ १ २ ३ २
सुम्नं यक्षते दिवि ॥१३॥

हे यज्ञके सर्वोत्तम सम्पादक ! देवों के देव, अमर, अग्ने ! इस जीवन-यज्ञ का उत्तम रीति से निर्वाह करने के लिए हम तुझको स्वीकार करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कर्मशक्ति को क्षीण न होने देने वाले, अतएव सौभाग्य हेतु चमक उत्पन्न करने वाले और स्वतः श्रेष्ठ कान्तियुक्त अग्नि को हम स्वीकार करते हैं। वह हमारे मित्रत्व एवं वरुणत्व तथा कर्मशक्ति के सुख की हवि दिव्यता के कुण्ड में प्रदान करता है ॥

इति चतुर्थः खण्डः

१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः ।
२र ३ १ २ ३ १ २
स यन्ता शश्वतीरिषः ॥
१ २ ३ १ २र
न किरस्य सहन्त्य पर्येता कयस्य चित् ।
१ २ ३ १ २
वाजो अस्ति श्रवाय्यः ॥
१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
स वाजं विश्वचर्षणिरर्वद्भिरस्तु तरुता ।
१ २ ३ १ २
विप्रेभिरस्तु सनिता ॥१४॥

हे अग्ने ! संकल्पाग्ने ! तू जिस मरणधर्मा को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

संघर्षों में बचा कर और ज्ञान की ओर प्रेरित कर देता है; वह निश्चय ही शाश्वत धनों को प्राप्त कर लेता है।

सहनशक्ति देने वाले इस अग्नि को लांघने वाली कोई शक्ति नहीं है; इसका बल कीर्तियुक्त है।

वह सर्वद्रष्टा अग्नि, कर्मशक्तियों से जीवन-संग्राम से तराने वाला और विकसित चित्तवृत्तियों से परमैश्वर्य का प्रापक है ॥१४॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३
साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो
१ २ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३
धनुत्रीः । हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे
२ ३ २ ३ २
अत्यो न वाजी ॥

२ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
सं मातृभिर्न शिशुर्वावशानो वृषा दधन्वे पुरुवारो
३ २ २ ३ १ २र ३ १ ३ ३ १
अद्भिः । मर्यो न योषामभि निष्कृतं यन् त्सं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२र ३ १ २ ३ १ २
गच्छते कलश उस्रियाभिः ॥

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
उत प्र पिप्य ऊधरघ्न्याया इन्दुर्धाराभिः सचते

३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३
सुमेधाः । मूर्धानं गावः पयसा चमूष्वभि श्रीणन्ति

१ २ ३ २ ३ २
वसुभिर्न निक्तैः ॥१५॥

दुःखहर्ता परमानन्द ने एक साथ अपने रस से सींचती हुई. स्वयं सरणशील, परमोत्कृष्ट सूर्य (परमेश्वर) से स्वयं प्रादुर्भूत हुई, धीर पुरुष की नाना मनोवृत्तियों को चारों ओर से घेर लिया; फिर वह अत्यन्त बली व वेगवान् अश्व की भांति वेगपूर्वक हृदय-कलश में रम गया।

जैसे माताएं शिशु को पालती-पोसती हैं, वैसे ही परमानन्दरस, जो समर्थ एवं विविध एवं बहुत से विघ्नों का नाशक है, वह कर्ममयी इन्द्रियों से धारण किया जाता है। जिस प्रकार पुरुषत्व शक्ति का प्रमाण स्त्रीसंग है वैसे ही सोम की शक्ति का

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञान ऊर्ध्वसमर्पण करने वाली इन्द्रिय-शक्तियों से होता है ॥१५॥

१ २ ३१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः।
३ १ २ ३ १ २ ३२ १ २
आपिर्नो बोधि सधमाद्ये वृधे३ ऽस्मां अवन्तु
३ १ २
ते धियः ॥

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २र ३ १
भूयाम ते सुमतौ वाजिनो वयं मा न स्तरभि-
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २
मातये। अस्माँ चित्राभिरवतादभिष्टिभिरा नः
३ १ २
सुम्नेषु यामय ॥१६॥

हे आत्मन्! तू इस साधित परमानन्द को पी और प्रकाश (ज्ञान) पूर्ण को पीकर प्रसन्न हो उठ। साथ मिलकर प्रसन्नता लाभ करने के स्थान इस भक्ति-मण्डप में बन्धु के समान हमें भी बोध करा; तेरी विचारशक्तियां उन्नति की दिशायें (बढ़ते हुए)

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञान ऊर्ध्वसमर्पण करने वाली इन्द्रिय-शक्तियों से होता है ॥१५॥

१ २ ३१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः ।
३ १ २ ३ १ २ ३२ १ २
आपिर्नो बोधि सधमाद्ये वृधे३ ऽस्माँ अवन्तु
३ १ २
ते धियः ॥
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २र ३ १
भूयाम ते सुमतौ वाजिनो वयं मा न स्तरभि-
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २
मातये । अस्माँ चित्राभिरवतादभिष्टिभिरा नः
३ १ २
सुम्नेषु यामय ॥१६॥

हे आत्मन् ! तू इस साधित परमानन्द को पी और प्रकाश (ज्ञान) पूर्ण को पीकर प्रसन्न हो उठ । साथ मिलकर प्रसन्नता लाभ करने के स्थान इस भक्ति-मण्डप में बन्धु के समान हमें भी बोध करा; तेरी विचारशक्तियां उन्नति की दिशायें (बढ़ते हुए)

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हम सबकी रक्षक हों।

हे इन्द्र! तेरी शुभ मन्त्रणा के अधीन रहते हुए हम ऐश्वर्यशाली बनें; हमें हिंसकभावनाओं के जाल में मत फेंक। अपनी विविध-विचित्र प्रेरणाओं द्वारा हमारी रक्षा कर, हमें सुख-वृत्तियों में व्यवस्थापित कर ॥१६॥

१२ ३ २ ३ १२ ३ २ ३ १२ ३१
त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुहिरे सत्यामाशिरं परमे
३ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
व्योमनि। चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि
३ २ ३१ २र
चक्रे यदृतैरवर्धत।
१ २र ३ १ २ ३ १२ ३२उ ३ १
स भक्षमाणो अमृतस्य चारुण उभे द्यावा का-
२ ३ १ २ १ २ ३ २ ३२ ३ १२ ३
व्येना वि शश्रथे। तेजिष्ठा अपो मंहना परि व्यत
१ २ ३२ ३ १२ ३ १ २ ३२
यदी देवस्य श्रवसा सदो विदुः ॥
१ २ ३१ २र ३ १ २ ३१२
ते अस्य सन्तु केतवोऽमृत्यवोऽदाभ्यासो जनुषी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २र १ २ ३ १ २ ३क२र ३१
उभे अनु । येभिर्नृम्णा च देव्या च पुनत
२र ३ १ २
आदिद् राजानं मनना अगृभ्णत ॥१७॥

परमानन्द के साधक को, उसकी, सर्वोत्कृष्ट उन्नति-स्थान की ओर प्रस्थान-यात्रा में सात दुधार गौएं (मस्तिष्क के सात छिद्रों में वर्तमान ज्ञानेन्द्रियां) तीन वार (जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति में) सत्य स्वरूप दूध देती हैं : उसकी साधना का फल प्रदान करती हैं। सत्य ज्ञानों द्वारा ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ता है, त्यों-त्यों, इस सत्य-स्वरूप दूध (फल) की शुद्धि के लिए चार दूसरे (प्राणमय आदि कोशों) सुन्दर भुवनों का क्रमशः निर्माण कर लेता है।

जब अन्तर्ज्ञान से उस दिव्य सोम का घर—स्थान—जान लेते हैं तब उस परमानन्द में भव्य अमरपन का मेल हो जाने से वह अपनी क्रांतदर्शन-शक्ति से सारे भूमण्डल पर छा जाता है : अमर परमानन्द के प्रभाव में कौन नहीं रहता ! वह अपनी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उभे अनु । येभिर्नृम्णा च देव्या च पुनत आदिद् राजानं मनना अगृभ्णत ॥१७॥

परमानन्द के साधक को, उसकी, सर्वोत्कृष्ट उन्नति-स्थान की ओर प्रस्थान-यात्रा में सात दुधार गौएं (मस्तिष्क के सात छिद्रों में वर्तमान ज्ञानेन्द्रियां) तीन वार (जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति में) सत्य स्वरूप दूध देती हैं : उसकी साधना का फल प्रदान करती हैं। सत्य ज्ञानों द्वारा ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ता है, त्यों-त्यों, इस सत्य-स्वरूप दूध (फल) की शुद्धि के लिए चार दूसरे (प्राणमय आदि कोशों) सुन्दर भुवनों का क्रमशः निर्माण कर लेता है।

जब अन्तर्ज्ञान से उस दिव्य सोम का घर—स्थान—जान लेते हैं तब उस परमानन्द में भव्य अमरपन का मेल हो जाने से वह अपनी क्रांतदर्शन-शक्ति से सारे भूमण्डल पर छा जाता है : अमर परमानन्द के प्रभाव में कौन नहीं रहता ! वह अपनी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

महिमा से तेजस्वी कर्मशक्तियों को आविष्ट करता है।

उस परमानन्द के वे दोनों जन्म—(ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियों में द्विधा प्रादुर्भाव रूप) इसके ज्ञापक झंडे, अमिट एवं अखण्डित रहें। जिनकी सहायता से और दिव्यता प्राप्ति की अभिलाषा से वह प्रवाहित होता है। और हम इस राजा की भांति कांतिमान् परमानन्द को मनन से ही धारण करते हैं ॥१७॥

इति पञ्चमः खण्डः

३ २ ३ २ ३क २र ३ २ २ ३ १ २र
अभि वायुं वीत्यर्षा गृणानो३ऽभि मित्रावरुणा
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३
पूयमानः। अभी नरं धीजवनं रथेष्ठाम् अभीन्द्रं
१ २ ३ १ २
वृषणं वज्रबाहुम् ॥

३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १
अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्षाभि धेनूः सुदुघाः पूय-
२ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
मानः। अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्याभ्यश्वान्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २
रथिनो देव सोम ॥

३ १ २ ३ १ २र ३ २र ३ १ २
अभी नो अर्ष दिव्या वसून्यभि विश्वा पार्थिवा

३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ १
पूयमानः । अभि येन द्रविणमश्नवामार्ष्यार्षेयं

३ ३ १ २
जमदग्निवन्नः ॥१८॥

हे सोम ! तू प्रेरणा प्रदान करता हुआ प्राण-शक्ति को अपने वेग से जीत; पवित्रता प्रदान करता मित्रत्व एवं वरुणत्व प्रदान कर; इन्द्रियों की नेत्री मनःशक्ति को विचार प्रेरणा और देहाधिष्ठातृत्व में विजय प्राप्त करा और प्रज्ञाशक्ति को सुखवर्षक एवं विघ्नविनाशक शक्ति प्रदान कर।

आच्छादकों (पंच-कोषों) में आच्छादकता का शुभ गुण तेरे कारण है; प्रवाहित होता तू ही इन्द्रिय-शक्तियों को सम्यक् रूप से आनन्दरस का दोहन करने वाली बनाता है; भरण-पोषण के लिए हमें आह्लादकारी ऐश्वर्य की प्राप्ति की प्रेरणा भी तेरे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अधीन ही मिलती है और हे दिव्य सोम ! रथरूप देह की वाहक कर्मेन्द्रियों में भी तेरी प्रेरणा विद्यमान है।

प्रवाहित होता तू प्रेरणारूप से हमें दिव्य और पार्थिव ऐश्वर्यों को प्राप्त करा; और हमें इस प्रकार प्रेरित कर कि चक्षु आदि की दर्शनादि सामर्थ्य से युक्त ज्ञानरूप ऐश्वर्य का उपभोग करें ।।१८।।

१ २र ३ १२ ३१ २
यज्जायथा अपूर्व्य मघवन् वृत्रहत्याय ।
१ २३१२ ३ १२ ३१ २र
तत् पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्ना उतो दिवम् ।।
१२ ३ १ २ ३ २३२ ३१ २र
तत्ते यज्ञो अजायत तदर्क उत हस्कृतिः ।
१ २र ३१२ ३ १ ३२उ ३ १ २
तद् विश्वमभिभूरसि यज्जातं यच्च जन्त्वम् ।।
३ १२ ३ १ २र३ १ २र ३ २
आमासु पक्वमैरय आ सूर्यं रोहयो दिवि ।
३१ २र ३ २ ३ २ ३ १२
धर्मं न सामं तपता सुवृक्तिभिर्जुष्टं गिर्वणसे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१

बृहत् ॥१६॥

हे अद्वितीय इन्द्र (प्रज्ञा-सामर्थ्य) जब तू अज्ञानादि विघ्नों को नष्ट करने के लिए सन्नद्ध हो जाता है तो सचमुच ऐसा प्रतीत होता है कि इस पृथिवी का विस्तार भी तेरा किया हुआ है और सब लोकों समेत द्युलोक को भी तूने ही थाम रक्खा है।

यजन क्रिया भी तुझसे प्रकट हुई प्रतीत होती है; ऊष्मा और प्रकाश की क्रियाएं भी तेरी प्रेरणा से हैं; समस्त संसार, जो सत्ता में आया है या आयेगा—सब तेरे ही प्रभाव से प्रभावित है।

असिद्धों (कच्चों) में सिद्धता—परिपक्वता की प्रेरणा का मूल तू ही है; गतिशील (सूर्य) को इतनी गति प्रदान करता है कि उसे उच्चतम स्थान (द्युलोक में) में चढ़ा देता है। हे साधको ! वाणी से सेवनीय इन्द्र के प्रीतिकारण, धूप आदि उष्णता की भांति बल एवं स्फूर्ति प्रदाता बृहत् सोम की साधना करो ॥१६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २र ३ २३ १ २ ३ १ २र
मत्स्यपायि ते महः पात्रस्येव हरिवो मत्सरो
१२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
मदः । वृषा ते वृष्ण इन्दुर्वाजी सहस्रसातमः ॥
१ २ ३क३ ३ २ ३ १२
आ नस्ते गन्तु मत्सरो वृषा मदो वरेण्यः ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
सहावाँ इन्द्र सानसिः पृतनाषाडमर्त्यः ॥
२३ ३ १ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २
त्वं हि शूरः सनिता चोदयो मनुषो रथम् ।
३२ ३ १ २ ३२३ २ ३ २ ३ १ २
सहावान् दस्युमव्रतमोषः पात्रं न शोचिषा ॥२०॥

हे इन्द्र ! तू प्रसन्नता प्रदान कर; पात्ररूप तुझ में भरा अत्यन्त आकर्षक, आनन्द का स्रोत रूप महान आह्लाद पी लिया गया है; सब सुखों के वर्षक ! तेरा आह्लादरस सुखवर्षक, ज्ञान-बल-प्रदाता और सहस्रों के प्रशंसनीय दाता के रूप में विद्यमान है ।

हे इन्द्र ! तेरा आह्लाद-स्रोत, सुखवर्षक, वरणीय हर्ष हमें प्राप्त हो; उसी आह्लाद के कारण, हे इन्द्र !

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तू शत्रु-जेता, सेवन करने योग्य, हिंसक सेनाओं का पराजेता और अमर है।

हे इन्द्र! तू ही वह शूरवीर है जो दाता है और मननशक्ति के वाहनभूत शरीर का प्रेरक है : तू दुःखदाता, संकल्प-कर्महीनता की प्रवृत्ति को दबाने वाला और उसे पवित्र करने वाला है जैसे कि अशुद्ध पात्र को अग्नि से तपा कर शुद्ध करते हैं ॥२०॥

इति षष्ठः खण्डः ॥ इति द्वादशोऽध्यायः ।

अथ त्रयोदशोऽध्यायः

ऋषिः—१ कविः । २, ६, १६ भरद्वाजः । ३ असितो देवलो वा । ४ सुकक्षः । ५ विभ्राड् । ६, ८ वसिष्ठः । ७ भर्गः । १०, १७ विश्वामित्रः । ११ मेधातिथिः । १२ शतं वैखानसाः । १३ यजतः । १४ मधुच्छन्दाः । १५ उशनाः । १८ हयतः प्रागाथः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१९ बृहद्दिवः । २० गृत्समदः ॥ देवता—१, ३, १५, पवमानः सोमः । २, ४, ६, ७, १४, १९, २० इन्द्रः । ५ सूर्यः । ८ सरस्वान् । ९ सरस्वती । १० सविता । ११ ब्रह्मणस्पतिः । १२, १६, १७ अग्निः । १३ मित्रा-वरुणौ । १८ अग्निर्हवींषि वा ॥ छन्दः—१, ३, ४, ८,—१४, १७, १८ गायत्री । २ (४) बृहती २ (१, ३) अनुष्टुप् । ५, ६, ७ प्रागाथम् । (विषमा बृहती, समासतो बृहती) १५, १९ त्रिष्टुप् । १६ (१) वर्धमाना (२, ३) गायत्री । २० (१) अष्टिः (२, ३) अतिशक्वरी ॥ स्वरः—१, ३, ४, ८, ९, १०–१४, १६–१८ षड्जः । २ (१, २) मध्यमः । ३ गान्धारः । ५ निषादः । ६, ७ मध्यमः । १५, १९ धैवतः । २० (१) मध्यमः, (२, ३) पञ्चमः ॥

१२ ३२उ ३ २३ २ ३१ २र
पवस्व वृष्टिमा सु नोऽपामूर्मिं दिवस्परि ।
३ १ २३ १ २र
अयक्ष्मा बृहतीरिषः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ १२३ २३ १२ ३१ २र
तया पवस्य धारया यया गाव इहागमन् ।
१ २ ३ १२ ३२
जन्यास उप नो गृहम् ॥
३१ २ ३ १२ ३१ २ ३१२
घृतं पवस्व धारया यज्ञेषु देववीतमः ।
३ १ २ ३१ २र
अस्मभ्यं वृष्टिमा पव ॥
१ २ ३ २ ३क १२ ३१२ ३ १२
स न ऊर्जे व्य३व्ययं पवित्रं धाव धारया ।
३१२ ३२३ १ २
देवासः शृणवन् हि कम् ॥
१२ ३ १२ ३१ २
पवमानो असिष्यदद् रक्षांस्यपजङ्घनत् ।
३२ ३२३ १२
प्रत्नवद् रोचयन् रुचः ॥१॥

हे सोम ! हम पर ज्ञानरूप प्रकाश के लोक से धारारूप में कर्मों की वृष्टि बरसा; इस प्रकार अक्षीण एवं विशाल प्रेरणाएं तुझसे प्राप्त होती रहें ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सोम ! इस प्रकार धारारूप में हमें प्राप्त हो कि हमारी ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियां इधर-उधर न भटक कर हमारे वश में हों : वे सबकी हितकारिणी बनी अपने घर में ही रहें ।

दिव्यता-प्राप्ति के कर्मों (यज्ञों) में सोम श्रेष्ठतम दिव्यताप्रापक है : वह ज्ञान को धारारूप में प्रदान करे; इस प्रकार हम पर वर्षा बरसावे ।

वह सोम धारारूप से अक्षीणबल अन्तःकरण में प्रवाहित होता बल प्रदान करे : इन्द्रियां उस सुखप्रद आनन्द की प्रेरणा को मानती ही हैं ।

जब वह पवमान सोम द्रवित होता आता है तो सब कुवासनाओं को मार भगाता है; वह अपनी प्राचीन कान्तियों को वैसे ही चमकाता—बनाये रखना—चाहता है ॥१॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर ।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अरङ्गमाय जग्मयेऽपश्चादध्वने नरः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ १२३ १ २ ३ १ २
एमेनं प्रत्येतन सोमेभिः सोमपातमम् ।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २
अमत्रेभिर्ऋजीषिणमिन्द्रं सुतेभिरिन्दुभिः ॥
१२ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
यदी सुतेभिरिन्दुभिः सोमेभिः प्रतिभूषथ ।
२३ १ २ ३ १ २ ३२उ ३ १ २र
वेदा विश्वस्य मेधिरो धृषत् तन्तमिदेषते ॥
३ १ २ ३ २र ३ १ २ ३ १ २ ३२
अस्माअस्मा इदन्धसो ऽध्वर्यो प्र भरा सुतम् ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३
कुवित् समस्य जेन्यस्य शर्धतो
१ २ ३ १२
ऽभिशस्तेरवस्वरत् ॥२॥

हे साधको ! इस (ब्रह्मानन्द के) पिपासु, उन्नति-पथ पर खूब चलाने वाले, स्वयं पीछे न रहने वाले, इन्द्र (प्रज्ञाशक्ति) के लिए ब्रह्मानन्द का संकलन करो ।

हे साधको ! इस प्रसिद्ध, सोम-पायियों में सर्व-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

श्रेष्ठ, ऋजु-प्रेरक (स्वभाव एवं सरलता से प्रेरित करने वाले) इन्द्र को, आह्लादकारी, धारणासाधक निष्पादित आह्लादरसों द्वारा सिद्ध करो।

इस इन्द्र को निष्पादित आह्लादक परमानन्द-रसों द्वारा अलंकृत करने पर वह मेधावी विघ्नों को दूर कर सब कुछ जान लेता है : ऐसा वह इन्द्र उस-उस संकल्प—सब संकल्पों—को पूर्ण करता ही है।

हिंसारहित यज्ञ के सम्पादक ! प्राणशक्ति से निष्पादित आनन्दरस का संग्रह इसी इन्द्र के लिए कर : यही वह इन्द्र है जो सब उत्साह-सम्पन्न परन्तु जीतने योग्य शत्रुओं की हिंसा से सर्वथा रक्षा करता है ॥२॥

इति प्रथमः खण्डः

३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
बभ्रवे नु स्वतवसेऽरुणाय दिविस्पृशे।
१ २ ३ १ २
सोमाय गाथमर्चत ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २र
हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ १२
मघावा धावता मधु ॥
२३१ २र ३ २३ १ २
नमसेदुप सीदत दध्नेदभि श्रीणीतन ।
२ ३ १ २
इन्दुमिन्द्रे दधातन ॥
३ १ २र ३ १२ ३ १ २र
अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोम शं गवे ।
३१ २ ३२
देवेभ्यो अनुकामकृत् ॥
१२ ३ १२३ १२३ १२
इन्द्राय सोम पातवे मदाय परि षिच्यसे ।
३ १ २र३ १ २
मनश्चिन्मनसस्पतिः ॥
१२ ३१२ ३१ २
पवमान सुवीर्यं रयिं सोम रिरीहि णः ।
२ ३ १ २ ३२
इन्दविन्द्रेण नो युजा ॥३॥

हे साधको ! भरण-समर्थ, स्वतन्त्र बलशाली,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तेजस्वी, ज्ञान-प्रकाश के लोक को छूने वाले—उससे सम्बन्ध स्थापित कराने वाले सोम के गुण गावो।

हे साधको! बन्धन-मुक्त दृढ़ धारणाओं से निष्पादित सोम को अन्तःकरण में स्थापित कर पवित्र करो। उस मधुररस-रूप परमानन्द में अमृतरूप मधु का सम्मिश्रण करो।

हे साधको! श्रद्धा से इस सोम में मग्न होओ और इसको ध्यान और धारणा से परिपक्व करो। इस प्रकार आह्लादक रूप बने इस सोम का आधान प्रज्ञाशक्ति में करो।

हे सोम! तू शत्रुभावनाओं का विध्वंसक एवं दूर-द्रष्टा होकर इन्द्रियों की इच्छाओं का पूरक होता; ज्ञान के लिए कल्याणकारी बन।

हे सोम! तुझे इन्द्र के पान व उसकी मग्नता के लिये सिद्ध किया जाता है; तू मननशक्ति का परिचायक और अतएव उस मननशक्ति का भी पालक है।

हे पवमान, सोम! तू हमें उत्तम सामर्थ्ययुक्त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्राणबल प्रदान कर। हे आह्लादक! इस प्रकार तू हमारा प्रज्ञाशक्ति से संयंग करा दे ॥३॥

२र ३ २ ३ १ २ ३१ २र
उद्धेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्।
१ २
अस्तारमेषि सूर्य ॥
२३ १ २३ १ २र ३ १२ ३क२र
नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा।
१ २ ३ १ २
अहिं च वृत्रहावधीत् ॥
२ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १२
स न इन्द्रः शिवः सखाश्वावद् गोमद् यवमत्।
३ १ २
उरुधारेव दोहते ॥४॥

हे प्रेरक सूर्य! तू अन्तर्ज्ञान के धनी, ज्ञानवर्षक, मनुष्यों के हितकारी कार्यों के सम्पादक, काम-क्रोध आदि तामस भावों को परे फैंक देने वाले दिव्यमन (प्रज्ञाशक्ति) को ही प्राप्त होता और उसे ऊंचा उठाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जिस इन्द्र ने अपने दूर-दूर तक प्रभावशाली ओज साधन से अनेक वार आवरणों को दूर किया और आवरक अज्ञानरूप आवरण को तोड़ डाला वह इन्द्र, कल्याणकारी मित्ररूप में बड़ी-बड़ी विशाल धाराओं में कर्म, ज्ञान एवं दोनों के मिश्रणभूत फल (दूध) को प्रदान करता है ।।४।।

इति द्वितीयः खण्डः

१ २ ३१ २ ३ २उ ३१२ ३१
विभ्राड् बृहत् पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद् यज्ञ-
२ ३१२ १२ ३ १ २ ३१२३ १२
पतावविह्रुतम् । वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना
३ १ २ ३ १ २र
प्रजाः पिपर्ति बहुधा वि राजति ।।

३ २ ३१ २र ३ १ २३ १२ ३ २ ३१ २
विभ्राड् बृहत् सुभृतं वाजसातमं धर्मं दिवो धरुणे
३ १ २र ३ १ २३१ २ ३१ २३
सत्यमर्पितम् । अमित्रहा वृत्रहा दस्युहन्तमं
१ २ ३१ २ ३ २
ज्योतिर्जज्ञे असुरहा सपत्नहा ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १ २ ३
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमं विश्वजिद् धन-
१ २ ३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
जिदुच्यते बृहत् । विश्वभ्राड् भ्राजो महि सूर्यो
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
दृश उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम् ॥५॥

वह ज्योतिष्मान, विशाल प्रेरक (प्रज्ञाशक्ति) परमानन्द के रस का पान करे और इस प्रकार उन्नतिगति के अधिष्ठाता साधक को सरल एवं अ-प्रतिहत जीवन प्रदान करे। प्राणशक्ति से प्रेरित वह प्रेरकशक्ति स्वसामर्थ्य से सब प्रजाओं की रक्षा करती, उन्हें सन्तुष्ट करती और अनेक रूप में प्रकट होती है।

वह ज्योतिष्मान विशाल प्रेरक (प्रज्ञाशक्ति), सुष्ठुतया पालित, ज्ञान-बल प्रदाता, धारणकर्ता, ज्ञान-प्रकाश-लोक के आश्रय में सत्यरूप से प्रतिष्ठा-पित है। वह शत्रुहन्ता, विघ्नहन्ता, शक्तिशाली बाधकों का विनाशक और प्रतिस्पर्धाओं का विनाशक

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(सूर्य) उस ज्योति को प्रदीप्त कर देता है जो हिंसक भावनाओं की श्रेष्ठ विनाशिका है।

समस्त ज्योतियों में श्रेष्ठ इस विशाल ज्योति को सर्वविजेता और भोग्यविजेता कहा जाता है : यह ज्योतिष्मान् सूर्य (प्रेरक), विशाल ज्योतिष्मान् दर्शनशक्ति को और अमूक सहनशील ओज का बहुत अधिक विस्तार करता है ॥५॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा
२ र
ज्योतिरशीमहि ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २
मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्यो३ माशिवासोऽव-
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
क्रमुः। त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपोऽति शूर
तरामसि ॥६॥

हे इन्द्र ! जैसे पिता-पुत्रों का पोषण करता है

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वैसे तू हमारे लिए ज्ञान ले आ; हे बहुस्तुत ! इस उन्नति मार्ग में हमें ऐसी शिक्षा दे जिससे हम जीवों को प्रकाश प्राप्त हो।

हे इन्द्र ! ऐसी व्यवस्था कर कि अज्ञात परन्तु साथ-साथ रहने वाले असाध्य एवं अमंगलकारी भाव हमें पराजित न कर सकें। हे शूर ! तेरी सहायता से हम प्रवहमान—सदा से चली आई कर्म-धाराओं को तैर कर पार चले जावें ॥६॥

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २ १ २
अद्याद्या श्वःश्वः इन्द्र त्रास्व परे च नः । विश्वा
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
च नो जरितृन्त्सत्पते अहा दिवा नक्तं च
रक्षिषः ॥

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३क२र३
प्रभङ्गी शूरो मघवा तुवीमघः सम्मिश्लो वीर्याय
२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र
कम् । उभा ते बाहू वृषणा शतक्रतो नि या वज्रं
३ १ २
मिमिक्षतुः ॥७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे इन्द्र ! आज, कल और परसों भी तू हमारा रक्षक बना रह; हे सद्वृत्तियों के परिपालक सब दिन—रात-दिन—तू अपने सब स्तोताओं का पालन करता है।

तोड़-फोड़ करने वाला, निर्भय, ऐश्वर्यशाली, विविध ऐश्वर्य का भण्डार, सब में रमा हुआ इन्द्र पराक्रम के लिए सुखदाता है। हे विविधकर्मा इन्द्र ! तेरी दोनों—ज्ञान-कर्मरूप बाहुएं—सुखवर्षक हैं : वे दोनों वज्ररूप ज्ञान को धारण किये हुए हैं ॥७॥

इति तृतीयः खण्डः

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
जनीयन्तो न्वग्रवः पुत्रीयन्तः सुदानवः ।
१ २
सरस्वन्तं हवामहे ॥८॥

उत्पादनार्थ भार्याओं की और पुत्रों की कामना करते उन्नतिशील एवं उत्तम दानशील हम आनन्द-रस के सागररूप परमात्मा को नित्य स्मरण करते हैं ॥८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा ।
१२ ३ १ २
सरस्वती स्तोम्या भूत् ॥९॥

सरस्वती, जो प्रियाओं में सबसे अधिक प्यारी और ज्ञान-साधनभूत सात ऋषियों (२ आंख, २ कान, २ नाक, १ रसना) की भगिनी तुल्य है, वह सुष्ठुतया सेवित होने पर स्तुति करने योग्य है ॥९॥

१ २ ३१ २र ३ १ २ ३१ २
तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
२ ३ १ २ ३ १ २
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥१०॥

जो प्रेरक एवं प्रकाशक हमारी बुद्धियों एवं कर्म-प्रवृत्तियों को प्रेरित करता है उसके उस प्रसिद्ध, वरण करने योग्य एवं काम-क्रोध आदि तामस अंकुरों को भस्म कर डालने वाले तेज का हम ध्यान करते हैं ॥१०॥

३ २ ३ १२ ३ १ २
सोमानां स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २ ३ २
कक्षीवन्तं य औशिजः ॥११॥

हे वेदवाणी के अधीश्वर ! ऐसी कृपा कर कि ज्ञान-साधना करने वाले कुशल पुरुष को दिव्य परमानन्दरस सरलता से प्राप्त हों ॥११॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः ।
३ १ २ ३ १ २
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥१२॥

हे अग्ने ! तू हमें जीवन देता है; बल तथा अन्न भी दे । दुष्ट वृत्तियों को दूर से ही नष्ट कर दे : उन्हें मुझ तक पहुँचने भी मत दे ॥१२॥

१ २ ३ १ २ ३२ ३ २ ३ १ २
ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य ।
१ २ ३ २ ३ १ २
महि वां क्षत्रं देवेषु ॥
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते ।
३ १ २ ३ १ २
अद्रुहा देवौ वर्धेते ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १२ ३क २र३२उ ३ १ २
वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती दानुमत्याः ।
३२ ३ १२
बृहन्तं गर्तमाशाते ॥१३॥

मित्रभूत सामञ्जस्य और दोष दूर करते हुए सुरक्षा की निश्चिततारूप वरुण—ये दोनों हमें पार्थिव और दिव्य महान ऐश्वर्य दिलाने में समर्थ हैं। हमारी इन्द्रियों में उनका महान् बल हो।

मित्र और वरुण परस्पर विरोध न करती हुईं दिव्यशक्तियां, परमसत्य को वेदज्ञान से प्राप्त कराती हुईं प्रेरक बल का उपभोग कराती हैं और इस प्रकार वे स्वयं भी बढ़ती हैं।

वे मित्र और वरुण सुखवर्षा और ज्ञानप्रकाश के मूल कारण, पानी की भांति कर्म एवं ज्ञान का प्रवाह लाने वाले, दान देने योग्य, चेतनादायक अन्न के अध्यक्ष विशाल ब्रह्माण्डरूप रथरूप में व्याप्त रहते हैं ॥१३॥

३ १ २ ३ १२३१ २र३ १ २ ३ १२
युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ २
रोचन्ते रोचना दिवि ॥
३१ २ ३ २ ३ २३ १२ ३ १२
युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे ।
१ २ ३ २ ३ १२
शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥
३२ ३ १ २ ३२३ १ २ ३ १ २
केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे ।
२ ३ १ २
समुषद्भिरजायथाः ॥१४॥

जो स्थिर आसन साधक समस्त देह में गतिमान्, मर्मस्थानों की रक्षा करते उनमें विद्यमान विशाल (इन्द्र) को योगाभ्यास से साधते हैं : वे कान्ति-सम्पन्न होकर ज्ञान-प्रकाशमय मोक्षस्थिति में विराजते हैं।

इस इन्द्र के वाहनभूत देह में प्रिय, हरणशील, नाना प्रकार से शरीर को धारण करने वाली, स्वतः गतिशील, दृढ़ अधिष्ठातृ-शक्तिरूप नेता इन्द्र की वाहिका ज्ञान और कर्म—इन्द्रियां इसको साधती हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यह इन्द्र ज्ञानरहित देहादि संघात के निमित्त चेतना को और रूपरहित के लिए रूपवत्ता को प्रकट करता तपाते कर्म-विपाकों द्वारा प्रकट होता है ॥१४॥

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्वे तुभ्यं पवते त्वमस्य
२ ३ १ २ ३ १ २र३२उ ३ १ २ ३
पाहि । त्वं ह यं चकृषे त्वं ववृष इन्दुं मदाय
१ २ ३ १ २
युज्याय सोमम् ॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३
स ईं रथो न भूरिषाडयोजि महः पुरूणि सातये
१ २ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३
वसूनि । आदीं विश्वा नहुष्याणि जाता स्वर्षाता
१ २ ३ १ २
वन ऊर्ध्वा नवन्तः ॥

३ २र ३ १ २र ३ २ ३ २उ
शुष्मी शर्धो न मारुतं पवस्वाऽनभिशस्ता दिव्या
३ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
यथा विट् । आपो न मक्षू सुमतिर्भवा नः सह-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३२३ ३ २
स्राप्साः पृतनाषाण् न यज्ञः ॥१५॥

हे इन्द्र ! इस सोम को तेरे लिए निष्पन्न करता हूँ—यह तेरे लिए बहता है—तू इसका पान कर। जिस आह्लादक सोम को मग्नता और ब्रह्म-साक्षात्कार के लिए तू ही बनाता और उसे चुनता है।

वह सोम सुखवाहक रथ की भांति अत्यधिक सहनशक्ति का दाता, ऐश्वर्यों के प्रदान के लिए इन्द्रियों में तेज का आधान करता है; अनन्तर मनुष्यों के योग्य उत्कृष्ट उत्पन्न परमसुख के प्रदान करने योग्य सब (पदार्थ) वश में हो जाते हैं।

वह बलवान् सोम प्राण सम्बन्धी बल के समान देह में प्रवाहित होता है और दिव्य इन्द्रियगण की भांति अखण्डित है। वह जलों की भांति शीघ्रगामी है: (इन्द्रियों में शीघ्रगति से बहता है); अतएव अनेक रूपों एवं कर्मों में व्यापता, शत्रुभावनारूप सेना को जीतते सेनापति की भांति वह यज्ञरूप

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हमारी बुद्धियों को प्रेरित कर शुभ बनाने वाला हो ॥१५॥

१२ ३ २ ३ २ ३ १ ३ ३२
त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः ।
३२ ३ १ २ ३ १२
देवेभिर्मानुषे जने ॥

१ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २ ३ २
स नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा महः ।
२ ३१ २ ३ १ २
आ देवान् वक्षि यक्षि च ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३१२ ३१ २
वेत्था हि वेधो अध्वनः पथश्च देवाञ्जसा ।
१ २ ३१ २
अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो ॥१६॥

हे पथ-प्रदर्शक ! हम मनुष्य जनों की ज्ञान और कर्म--इन्द्रियां सकल श्रेष्ठ कर्मों के प्रेरक रूप में आपको ही अपना अगुआ बनाती हैं।

जीवन-यज्ञ में वह अग्नि आनन्दकारक वाणियों द्वारा हम से तेज का संगम कराये; हे अग्ने ! तू

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दिव्यगुणों को ला और हमसे उनका मेल भी करा। संकल्प से सिद्ध वाणी में वह तेज होता है कि वह फिर दिव्यगुणों के आधान का साधन बनती है।

हे मेधावी जीवन-यज्ञों के शुभ सम्पादक, अग्ने! तू दिव्यगुणों के प्रापक छोटे-बड़े सब प्रकार के मार्गों व उपायों को शीघ्र ही जतला देता है ॥१६॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
होता देवो अमर्त्यः पुरस्तादेति मायया।
३ १ २ ३ १ २
विदथानि प्रचोदयन् ॥
३ १ २र ३ २ ३ १ २
बाजी वाजेषु धीयतेऽध्वरेषु प्र णीयते।
१ २ ३ २ ३ १ २
विप्रो यज्ञस्य साधनः ॥
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
धिया चक्रे वरेण्यो भूतानां गर्भमा दधे।
१ २ ३ २ ३ १ २
दक्षस्य पितरं तना ॥१७॥

जीवन-यज्ञ का सम्पादक, अमर, देव अग्नि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञातव्य कर्मों की प्रेरणा प्रदान करता हुआ बुद्धि से साक्षात् होता है।

वह बलवान् संकल्परूप अग्नि बल-साध्य कार्यों में नियुक्त किया जाता है और उन्नति-गतिरूप यज्ञों में आगे-आगे नियुक्त किया जाता है : इसप्रकार वह बुद्धि-प्रकाशक संकल्प जीवन-यज्ञ का साधन बनता है।

वह संकल्पाग्नि धारणाशक्ति से संयुक्त हुआ सर्वश्रेष्ठ बनता है; और उत्पन्न सब कार्यजात का मूल कारण होता है और बल के उत्पादक का विस्तार भी वही करता है : बल की उत्पत्ति में साधक बनता है ॥१७॥

२ ३१ २ ३ २ ३ १२ ३ १२
आ सुते सिञ्चत श्रियं रोदस्योरभिश्रियम् ।
३१ २ ३२
रसा दधीत वृषभम् ॥

१ २ ३ २ ३ ३क १ ३ २ ३ २ ३ १ २
ते जानत स्वमोक्यां३सं वत्सासो न मातृभिः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २
मिथो नसन्त जामिभिः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
उप क्ष्मेषु वप्सतः कृण्वते धरुणं दिवि ।
१ २ ३ २ ३ ३ क २ र
इन्द्रे अग्ना नमः स्वः ॥१८॥

पृथिवी से अन्तरिक्ष तक स्थित सब में विद्यमान उस साधनभूत अग्नि को अपने साध्य यज्ञ में प्राप्त करो; उस सुखवर्षण-समर्थ अग्नि को आनन्दरस पहुँचाओ ।

जैसे पुत्र अपनी बन्धुभूत माताओं का साथ नहीं छोड़ते वैसे ही साधक इन्द्रियां उस अग्नि (संकल्प) को अपना समान घर का निवासी मानती हैं ।

इन्द्रिय प्रदेशों में उस अग्नि का ग्रहण करते हुए साधक, ज्ञान-प्रकाश-लोक में धारक बल के रूप में उसका ग्रहण करते हैं; इस प्रकार इन्द्र और अग्नि को परमसुख अर्पित करते हैं ॥१८॥

१ २ र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ २ २र ३ २ ३ २ ३ २उ ३
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रून् अनु यं विश्वे
२ ३ १ २
मदन्त्यूमाः ॥
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वावृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर्दासाय भियसं
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३
दधाति । अव्यनच्च व्यनच्च सस्नि सं ते नवन्त
१ २ ३ १ २
प्रभृता मदेषु ॥
२उ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ २ उ ३
त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति विश्वे द्विर्यदेते त्रिर्भव-
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३
न्त्यूमाः । स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा
२ ३ २ उ ३ १ २ ३ १ २
समदः सु मधु मधुनाभि योधीः ॥१६॥

समस्त लोकों में यह इन्द्र ही सबसे अधिक प्रशस्त ज्योति थी : जिससे दीप्ति से बलवान् तेजस्वी पुरुष उत्पन्न हुआ। वह जब प्रकट होता है

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तभी सब अज्ञानरूप सन्तापकों को मार भगाता है और उसके पश्चात् सब प्राणी हर्षित हो उठते हैं।

अपने महान् सामर्थ्य से बढ़ा हुआ वह अति वीर्यशाली इन्द्र, विघ्नों का शत्रु, विनाशक को त्रास देता है : वह प्रज्ञाशक्ति स्थावर और जंगम दोनों प्रकार की रचनाओं को आप्लुत करती है : इस प्रकार तुझ से पालित-पोषित सब प्रसन्नता में तेरी अधीनता स्वीकार करते हैं।

ये जो सब पदार्थ दुगने या तिगुने हो जाते हैं वे सब अपने कर्म को तुझ तक ही सीमित रखते हैं। हे इन्द्र ! तू देहादि सुखोपभोग से भी अधिक आनन्ददायक ब्रह्मानन्दरस को स्वादु से संगत कर; और उस अतिमधुर को मोक्षरूप मधु से मिला ॥१६॥

१ २ ३ १ २र ३ २ ३१
त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृम्पत्
२र ३ २ ३१ २ ३ २ १ २
सोममपिबद् विष्णुना सुतं यथावशम् । स ईं
३ २ ३ २३ १२ ३ २ ३१ २र ३ २
ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरुं सैनं सश्चद् देवो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३२ ३१ २र ३१ २र
देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥

३२ ३१ २र ३१ २र ३२
साकं जातः क्रतुना साकमोजसा ववक्षिथ साकं
३२ ३क२र ३२३ ३ १२ ३२
वृद्धो वीर्यैः सासहिर्मृधो विचर्षणिः । दाता
१२ ३२र ३ २३ १२ ३ १२ ३२
राध स्तुवते काम्यं वसु प्रचेतन सैनं सश्चद् देवो
३२ ३१ २र ३१ २र
देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥

२३ १२ ३ १२ ३ १२ ३१ २३१
अध त्विषीमाँ अभ्योजसा कृविं युधा भवदा
२र ३ २३ १ २ १२
रोदसी अपृणद् अस्य मज्मना प्र वावृधे । अध-
३ २ ३२३ १२ ३ १ २ ३ १२
त्तान्यं जठरे प्रेमरिच्यत प्र चेतय सैनं सश्चद्-
३२ ३२ ३१ २र ३१ २र
देवो देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥२०॥

वह महान् बलशाली तीनों लोकों (जाग्रत,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्वप्न और सुषुप्ति अवस्थाओं) में यज्ञ-साधित परमानन्द का जी भर कर पान करता और तृप्त हो उठता है। इस प्रकार मग्न हुआ वह सचमुच आह्लादक, महत्वशालिनी विशाल शक्ति वाले, सत्यस्वरूप इन्द्र को प्राप्त कर बड़े-बड़े काम निष्पन्न करता है।

हे इन्द्र ! तू ज्ञान के साथ-साथ उत्पन्न हुआ और अपनी बल-वीर्य से ब्रह्माण्ड को धारण करने की शक्ति को प्रकट करता है (युवा अवस्था); फिर नाना प्रकार की शक्तियों के साथ बढ़ा : वृद्ध हुआ : प्रत्येक अवस्था में तू शत्रुओं को वश में करने वाला दूरदर्शी सिद्ध होता है। जो तुझे सिद्ध करता है उस को तू ,हे ज्ञानवन् ! अभीष्ट ऐश्वर्य प्रदान करता है : वह ऐसा साधक, सच्चा आह्लादक बना इस सत्य-स्वरूप इन्द्र को प्राप्त करता है।

इस प्रकार कांतिमान् इन्द्र अपने ओज से बंधनों को विघ्ननाशक प्रयत्न से जीत लेता है और इसका प्रभाव सब लोकों में छा जाता है इस प्रकार यह और बढ़ता है। वह दूसरे को अपनी शरण में धर लेता

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

है, इसको अधिक शक्तिशाली बनाता है और प्रकृष्ट रूप से सचेतन कर देता है। वह दिव्य सत्यस्वरूप आह्लादक उस सत्यस्वरूप इन्द्र को प्राप्त होता है ॥२०॥

इति षष्ठः खण्डः, षष्ठश्च प्रपाठकः

इति त्रयोदशोऽध्यायः

अथ चतुर्दशोऽध्यायः

ऋषिः—१, ९ प्रियमेधः। २ नृमेधपुरुमेधौ। ३, ७ त्र्यरुणत्रसदस्यू। ४ शुनःशेपः। ५ वत्सः। ६ अग्निः। ८ विश्वमनाः। १० वसिष्ठः। ११ सोभरिः। १२ शतं वैखानसाः। १३ वसूयवः। १४ गोतमः। १५ केतुः। १६ विरूपः॥ देवता—१, २, ५, ८, ९ इन्द्रः। ३, ७ पवमानः सोमः। ४, १०–१६ अग्निः। ६ विश्वेदेवाः॥ छन्दः—१, ४, ५, १२—१६ गायत्री। २, १० प्रागाथं (विषमा बृहती, समासतो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बृहती) ३, ७, ११ बृहती (ऊर्ध्वा) ६ अनुष्टुप् । ८, ६ उष्णिक् (६ निचृत्) ॥ स्वरः—१, ४, ५, १२—१६ षड्जः । २, ३, ७, १०, ११ मध्यमः । ६ गान्धारः । ८, ६, ऋषभः ।

३ १ २र ३१ २ ३ १ २ ३ २
अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे ।
३ २ ३ २ ३ १ २
सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥
१ २र ३१ २ ३१ २ ३ १ २
आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि ।
२ ३ २ ३१ २
यत्राभि संनवामहे ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२ ३ २ ३ १२
इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु ।
१ २ ३२ ३२
यत् सीमुपह्वरे विदत् ॥१॥

हे मनुष्य ! यथार्थ ज्ञान के लिए प्रकाश के पालक इन्द्र (प्रकाशमयी प्रज्ञा अथवा आत्मा) का उद्बोधन कर; वह सत्य का अभिव्यञ्जक और उसका

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पालक है।

अन्तःकरण में गतिशील चमकती चिति-धारायें उत्पन्न हो रही हैं; वहीं हम उस इन्द्र के सन्मुख झुकते हैं : उसका साक्षात्कार कर उसे साधते हैं।

शक्तिशाली इन्द्र (प्रज्ञाशक्ति या आत्मा) के लिए ही गतिशील ज्ञान-प्रकाशकी किरणें सिद्ध करने योग्य परमानन्दरस को दुहती—उत्पन्न करती—हैं; उसको वह इन्द्र अपने भीतर प्राप्त करता है ॥१॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २
आ नो विश्वासु हव्यमिन्द्रं समत्सु भूषत ।
२३ १ २ ३ १२ ३ १ २
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम ॥
२ ३ १ २३ १ २र ३ १ २ ३ ५ २ ३
त्वं दाता प्रथमो राधसामस्यसि सत्य ईशान-
२ ३ २ ३ १ २र ३२ ३ १२
कृत् । तुविद्युम्नस्य युज्या वृणीमहे पुत्रस्य शवसो
३२
महः ॥२॥

हे मनुष्यो ! सर्वोत्तम गति के लिए किए गए

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सब संघर्षों में हमारा समर्पण इन्द्र को ही भूषित करे। सब बड़े-बड़े यज्ञ भी उस विघ्न-निवारक, सर्वोत्कृष्ट विजेता और स्तुत्यनुसार गुणयुक्त को ही भूषित करें॥

हे इन्द्र! तू ही ज्ञानैश्वर्यों का प्रथम दाता है; सच्चा प्रभुत्व-सम्पादक तू ही है; अति बलवान् तुझ से समाधि द्वारा संगत होकर हम दुःखत्राता महान् बल को प्राप्त करें ॥२॥

३ २ ३१२ ३ २उ ३क २र ३ २ ३ २ ३१
प्रत्नं पीयूषं पूर्व्यं यदुक्थ्यं महो गाहाद् दिव आ
२र १ २ ३ १ २र ३ १२
निरधुक्षत। इन्द्रमभि जायमानं समस्वरन्॥
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१२
आदीं के चित् पश्यमानास आप्यं वसुरुचो
३ २ ३क २र ३ १ २र ३१
दिव्या अभ्यनूषत। दिवो न वारं सविता
२
व्यूर्णुते॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ २ ३
अध यदिमे पवमान रोदसी इमा च विश्वा
१२ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १
भुवनाभि मज्मना। यूथे न निष्ठा वृषभो वि
२र
राजसि ॥३॥

विद्वान् लोग जब उस पूर्ण (शक्तिमान्) अमृत रूप ब्रह्मानन्दरस को, जो अति पुरातन स्तुतियोग्य है, विशाल और गम्भीर प्रकाशलोक से मथ कर साक्षात् प्राप्त करते हैं तो, प्रकट होते इन्द्र की उत्तम रीति से स्तुति करते हैं।

जब, कोई साधक, जो उत्कृष्ट ऐश्वर्य में रुचि और दिव्यत्व की चाहना रखते हैं और इस ब्रह्मानन्द का साक्षात्कार करते हुए इसकी स्तुति करते हैं-इसे साधते हैं तो, जैसे सूर्य द्युलोक के आवरण को हटा कर प्रकाश फैलाता है वैसे ही प्रेरक प्रज्ञा आवरण को हटा कर ज्ञानप्रकाश को फैला देती है।

हे पवमान—प्रवहमान—सोम! जब इन द्यु-लोक-पृथिवी लोक ही नहीं, अपितु, सब लोकों में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अपने प्रभाव को तू फैलाता है तो गौओं के गोल में स्थित बलवान् बैल की भाँति शोभित होता है : जैसे बैल गौओं का सुखदाता अधिष्ठाता व पालक है वैसे ही ब्रह्मानन्दरस सब भुवनों का सुख दाता व अधिष्ठाता है ॥३॥

३२३ २उ ३ १२ ३१ २३१ २र
इमसू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम् ।
१ २ ३२३ १ २
अग्ने देवेषु प्र वोचः ॥
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२
विभक्तासि चित्रभानो सिन्धोरूर्मा उपाक आ ।
३ २ ३ १ २
सद्यो दाशुषे क्षरसि ॥
१ २ ३१ २र ३१२
आ नो भज परमेष्वा वाजेषु मध्यमेषु ।
२ ३ २ ३ १ २
शिक्षा वस्वो अन्तमस्य ॥४॥

हे उन्नायक अग्ने ! संविभाग का यह प्रशंसनीय गायन हमारी इन्द्रियों को भली-भांति सिखा दे ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे कान्तिसम्पन्न ! जैसे विशाल नद के समीप से छोटी छोटी लहरें—नहरें—काट ली जाती हैं वैसे तू विभाग करके देने वाला है; आत्म-समर्पक के लिए शीघ्र आनन्द की धारा बहा देता है।

हे अग्ने ! अति उत्कृष्ट पदार्थों में और मध्य कोटि के पदार्थों में भी हमारा भाग दे; तथा निकृष्ट-तम कोटि का जो ऐश्वर्य है उसे भी हमें भागानुसार दे ।।४।।

३ २उ ३ १ २र ३ २ ३१ २ ३१२
अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह ।
३१ २र
अहं सूर्य इवाजनि ।।

३२ ३ २३ १ २ ३ १२ ३२
अहं प्रत्नेन जन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत् ।
२उ ३ २ ३ २ ३२
येनेन्द्रः शुष्ममिद् दधे ।।

१ २र ३ १ २ ३१ २र३ १ २ ३२
ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुरृषयो ये च तुष्टुवुः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २र ३ १ २
ममेद् वर्धस्व सुष्टुतः ॥५॥

मैं पालक के सत्यज्ञान को धारण करने योग्य बुद्धि को ग्रहण कर ही लूं और फिर सूर्य की भांति प्रकाश और प्रेरणा का पुञ्ज बन जाऊं ॥

मैं स्तोता साधक की भांति अपने सनातन जन्म से ही, स्वभाव से ही, स्तुति-वाणियों को प्रकट करता हूँ; इस कृत्य से इन्द्र बलवान् ही बनता है।

हे इन्द्र! कुछ अज्ञानी साधकों ने तेरी साधना नहीं की और कुछ दूरद्रष्टाओं ने तुझे साध लिया, वह ठीक है। मुझ से भली-भांति सिद्ध किया हुआ तू मुझे ही बढ़ा ॥५॥

इति प्रथमः खण्डः

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्जोषि ब्रह्म सहस्कृत।
१ २ ३ २ उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
ये देवत्रा य आयुषु तेभिर्नो महया गिरः ॥
१ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
प्र स विश्वेभिरग्निभिरग्निः स यस्य वाजिनः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ २ ३ २उ ३ २उ ३ १२
तनये तोके अस्मदा सम्यङ् वाजैः परीवृतः ॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ र
त्वं नो देवतातये रायो दानाय चोदय ॥६॥

बल से उत्पादित संकल्परूप अग्ने! तू अपनी सब प्रकार की ज्योतियों (शक्तियों) द्वारा वेद-ज्ञान का सेवन कराता है; दिव्य और साधारण जीवों में जो ज्योतियां हैं, उनसे हमारी वाणियों को बड़ा बना। संकल्प के बल पर कहा गया वचन कर्म में परिणत होता है।

जिस बलवान् साधक का संकल्प उसकी सब ज्योतियों (शक्तियों) सहित उसका अपना है, पुत्र और पौत्रों में और हम सब में, वही, ज्ञान एवं कर्म की सामर्थ्यों से घिरा रहता है।

हे अग्ने ! तू अपनी अग्नियों (शक्तियों) द्वारा हमारे वेद-ज्ञान और (यज्ञ) त्यागभावना को बढ़ा;

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तू ही दिव्यता के विस्तार के लिए हमारे धन में दान भावना की प्रेरणा कर ॥६॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३
त्वे सोम प्रथमा वृक्तबर्हिषो महे वाजाय श्रवसे
१ २ १ २र ३क २र
धियं दधुः । स त्वं नो वीर वीर्याय चोदय ॥
३क २र ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २र
अभ्यभि हि श्रवसा ततर्दिथो त्सं न कंचिज्ज-
३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २र ३ १ २
नपानमक्षितम् । शर्याभिर्न भरमाणो गभस्त्योः ॥
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३
अजीजनो अमृत मर्त्याय कम् ऋतस्य धर्मन्न-
१ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
मृतस्य चारुणः । सदासरो वाजमच्छा सनि-
ष्यदत् ॥७॥

हे सोम ! उत्कृष्ट कोटिके साधक (तेरे स्वागत के लिए) हृदयासन को खोलकर–बिछाकर महान ऐश्वर्यरूप अन्त:प्रेरणा के लिए तुझ में ध्यान लगाते हैं; वह तू शूरवीर, उन्हें वीरता के लिए प्रेरित कर ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हम जीवन-संघर्ष में वीरता से आगे बढ़ने का संकल्प धारण करें।

जिस प्रकार कोई बुद्धिमान् पुरुष किसी अक्षत (साबुत) सार्वजनिक जलपान गृह को हाथों की अंगुलियों---अंजुलियों—से भरता हुआ-सा किसी जल-स्रोत को तोड़ लेता है वैसे ही अन्तर्ज्ञान की प्रेरणा से पोषित करने वाला साधक आनन्द के स्रोतरूप इस सोम के बांध को तोड़ता है।

हे सोम ! तूने मरणधर्मा मनुष्य के लिए अति प्रिय और अमर परमसत्य के धारक अमरसुख को प्रकट किया : ज्ञान और बल को प्रदान करता तू नित्य प्रवहमान हो ॥७॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २र

एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु ।

१ २र ३ २

प्र राधांसि चोदयते महित्वना ॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

उपो हरीणां पतिं राधः पृञ्चन्तमब्रवम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २ ३ २ ३ १ २
नूनं श्रुधि स्तुवतो अश्व्यस्य ॥
२ ३क २ ३२ ३ २ ३२ ३१२३ २
न ह्यं३ऽग पुरा च न जज्ञे वीरतरस्त्वत् ।
१ २ ३२उ ३ २ ३ १ २
न की राया नैवथा न भन्दना ॥८॥

अपनी महिमा से ऐश्वर्य की प्राप्ति कराने वाले इन्द्र को इसी प्रकार रस से सींचों : हे इन्द्र ! तू शान्तिदायक रस का पान कर।

ज्ञानैश्वर्य से सम्पर्क कराने वाली इन्द्रियों के अधिष्ठाता इन्द्र को मैं यह कह रहा हूँ कि तू कर्मशील साधक की बात ही, निश्चय, सुन : कर्मशील साधक प्रज्ञाशक्ति को वश में कर लेता है।

हे इन्द्र ! तुझसे अधिक बलशाली पहले भी कोई प्रकट नहीं हुआ; धन के लिए, रक्षा केलिए न स्तुति-पात्रता के लिये ही कोई तुझसे अधिक हुआ ॥८॥

३ २ ३ १ २ ३१ २र
नदं व ओदतीनां नदं योयुवतीनाम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ १ २ ३ १ २
पतिं वो अघ्न्यानां धेनूनामिषुध्यसि ॥६॥

ऊपर उठाने वाली—उन्नति की दिशा में ले जाने वाली विचारधाराओं के प्रेरक; मिश्रणामि श्रण-कर्मशक्ति-प्रदान करने वाली वृत्तियों के उपदेष्टा और अविनाशी ध्यान-वृत्तियों के अधिष्ठाता इन्द्र की प्रार्थना कर ॥६॥ इति द्वितीयः खण्डः

३१ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २
देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्वासिचम् ।
१ २ ३ २ ३१२ ३ १ २र ३१
उद् वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वम् आदिद् वो देव
२
ओहते ॥

१ २र ३२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
तं होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत ।
१ २ ३ १ २ ३२ ३१२ ३ १ २र
दधाति रत्नं विधते सुवीर्यम् अग्निर्जनाय
३ १ २
दाशुषे ॥१०॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे मनुष्यो ! तुम्हारा इष्टदेव ऐश्वर्य-प्रदाता है; अतएव वह भरी हुई आहुति अर्थात् पूर्ण आत्म-समर्पण चाहता है। पूरा भर दोगे अथवा तृप्त कर दोगे तो वह तुम्हारे लिए शीघ्र ही ऐश्वर्य उठा ले आयेगा।

जो अग्नि आत्मसमर्पक और परिचर्या करने वाले साधक को सामर्थ्ययुक्त रमणीय ऐश्वर्य धारण कराता है; उस उन्नति-प्रेरक कार्यों के सम्पादक, ज्ञानवाहक और वाहन-समर्थ अग्नि को इन्द्रियां साधती हैं ॥१०॥

१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन् व्रतान्यादधुः ।
२ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनम् अग्निं नक्षन्तु नो
१ २
गिरः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ३
यस्माद् रेजन्त कृष्टयश्चर्कृत्यानि कृण्वतः । सह-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्रसां मेधसाताविव त्मनाऽग्निं धीभिर्नमस्यत ॥

प्र दैवोदासो अग्निर्देव इन्द्रो न मज्मना । अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि ॥११॥

उन्नततम स्थिति का मार्ग-प्रदर्शक दीख गया; इसको लक्ष्य में रखकर ही हम अपने संकल्प धारण करते हैं। भली-भांति प्रदीप्त, उन्नतिपथ के पथिक (आर्य), को उत्साहित करने वाले अग्नि की ही हम स्तुति करेंगे।

जिससे भय खाते कर्मिष्ठ निरन्तर कर्मों में लगे रहते हैं, ज्ञान-बल एवं मेधा को प्राप्त कराने के लिए सहस्रों का दान देने हारे के तुल्य उस अग्नि को धारणाओं से नमस्कार करो : उसके अधीन होओ।

जैसे अन्तरिक्षस्थ सूर्य बल द्वारा पृथिवी की सेवा करता है वैसे ही प्रकाशदाता का दिव्य ज्ञानाग्नि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

'नाक' (आनन्दमय कोश) में रहता हुआ अपने बल से पार्थिव चेतना (अन्नमय कोशस्थ) का भी सेवक है ॥११॥

२ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः ।
३१ २ ३ १ २
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ।
१ २ ३ २
तमीमहे महागयम् ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् ।
१ २ ३ २र ३ १ २
दधद् रयिं मयि पोषम् ॥१२॥

हे अग्ने ! तू हमें आयु देता है; बल तथा अन्न भी दे। दुष्ट वृत्तियों को दूर से ही नष्ट कर दे : उन्हें मुझ तक पहुँचने भी मत दे ।

वह अग्नि जो सब का द्रष्टा, पावक और सब

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

का हितकारी, सब कार्यों में आगे-आगे धारण किया जाता है; उस महान् प्राणवान् की हम स्तुति करते हैं।

हे अग्ने ! शोभन ज्ञान-कर्म से सम्पन्न कराने वाला तू हमें प्रभावशाली तेज प्रदान कर जो हम में पुष्टिकारक ऐश्वर्य को धारण कराये ॥१२॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया।
२ ३१ २ ३ १ २
आ देवान् वक्षि यक्षि च ॥
१ २ ३ १२ ३१ २
तं त्वा घृतस्नवीमहे चित्रभानो स्वर्दृशम्।
३२३ ३१२
देवां आ वीतये वह ॥
३ १ २ ३ २ ३ १ २
वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तं समिधीमहि।
१ २ ३१ २ ३२
अग्ने बृहन्तमध्वरे ॥१३॥

हे पावक अग्ने देव ! तू अपनी कांतिसम्पन्न,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आनन्दमयी, प्रेरणा से दिव्य गुणों का आवाहन करता और हमसे उसका संगम कराता है।

हे नाना कांतियुक्त, ज्ञान-ज्योति से शुद्ध करने वाले अग्ने ! लक्ष्यभूत परमसुख का दर्शन कराने वाले तेरी हम स्तुति करते हैं : उत्तम गति की प्राप्ति के लिए दिव्यगुणों का आधान करो।

हे क्रान्तदर्शिन् ! उत्तम गति या ज्ञान की हवि वाले, ज्योतिष्मान् तुझ अग्नि को हम प्रदीप्त करते हैं; हे अग्ने ! उस तुझको जो हमारी उन्नति गति के यज्ञ में सबसे महान् है ॥१३॥

इति तृतीयः खण्डः ।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अवा नो अग्न ऊतिभिर्गायत्रस्य प्रभर्मणि ।
१ २ ३ १ २
विश्वासु धीषु वन्द्य ॥
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
आ नो अग्ने रयिं भर सत्रासाहं वरेण्यम् ।
१ २ ३ २ ३ १ २
विश्वासु पृत्सु दुष्टरम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २   ३ १ २ ३ २ ३ १ २
आ नो अग्ने सुचेतुना रयिं विश्वायुपोषसम् ।
३ १ २   ३ १२
मार्डीकं धेहि जीवसे ॥१४॥

सब कार्यों में प्रथम अभिनन्दनीय अग्ने ! तू गान (भक्ति) के साधन के पोषक कार्य में रक्षा-साधनों से हमारी रक्षा कर ।

हे अग्ने ! तू विपत्तियों पर विजयी होने वाले, वरणीय और विघ्नों की सारी सेनाओं से अजेय धैर्यबल को प्रदान कर ।

हे अग्ने ! हमारे जीवनयज्ञ के निर्वाहार्थ, सुख-कारक और समस्त मनुष्यों के पोषक ऐश्वर्य को उत्तम ज्ञान के सहित हमें धारण करा ॥१४॥

३ १ २   ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १२
अग्निं हिन्वन्तु नो धियः सप्तिमाशुमिवाजिषु ।
१२   ३ १ २
तेन जेष्म धनन्धनम् ॥
२ ३ २ ३ १ २ ३ १२   ३ २ ३ २
यया गा आकरामहै सेनयाग्ने तवोत्या ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३१२
तां नो हिन्व मघत्तये ॥

१ २ ३२ ३ १ २ ३१ २र ३ १२
अग्ने स्थूरं रयिं भर पृथुं गोमन्तमश्विनम् ।

३ २उ ३१ २ ३२
अङ्धि खं वर्तया पविम् ॥

२ ३ १२ ३२३ १ २र ३ २
अग्ने नक्षत्रमजरमा सूर्यं रोहयो दिवि ।

२३ २ ३१ २
दधज् ज्योतिर्जनेभ्यः ॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३२
अग्ने केतुर्विशामसि प्रेष्ठः श्रेष्ठ उपस्थसत् ।

१ २ ३२उ ३ १२
बोधा स्तोत्रे वयो दधत् ॥१५॥

हमारी ज्ञान-कर्म शक्तियाँ, युद्धों में शीघ्रगामी अश्व की भांति संकल्पशक्ति को प्रेरित करें; इस प्रकार हम बहुत-सा ऐश्वर्य जीत लावें।

हे अग्ने ! तेरी जिस रक्षक सेना की सहायता से हम अपनी इन्द्रियों को अपने वश में करते हैं उस,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

रक्षक शक्ति को ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए प्रेरित कर।

हे अग्ने ! ज्ञान व कर्मेन्द्रियों से प्राप्तव्य स्थिर एवं विशाल ऐश्वर्य को प्राप्त करा : सुख को शीघ्र पहुँचा और प्रेरक शब्द का प्रयोग कर।

हे अग्ने ! तूने इस नक्षत्रभूत, अजर सूर्य को आकाश में स्थापित किया है : जो कि प्राणियों को प्रकाश प्रदान करता है। परमेश्वर की संकल्पशक्ति की सूर्य एक रचनामात्र है।

हे अग्ने ! तू समस्त प्राणियों को ज्ञान देने वाला मार्ग-प्रदर्शक—है। सबसे अधिक प्रिय और सर्वोत्तम हृदय-देश में विराजमान है। साधक स्तोता को प्राणशक्ति प्रदान करता उसे ज्ञान प्रदान कर ॥१५॥

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३२
अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्।
३ १ २र
अपां रेतांसि जिन्वति ॥
१ २३ १२ ३ २ ३ १ २ ३क २र
ईशिषे वार्यस्य हि दात्रस्याग्ने स्वःपतिः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ २३ १२
स्तोता स्यां तव शर्मणि ॥
१२ ३ १ २३ १२ ३१ २र
उदग्ने शुचयस्तव शुक्रा भ्राजन्त ईरते ।
२३ १ २ ३१ २
तव ज्योतींष्यर्चयः ॥१६॥

यह अग्नि, सब दिव्यगुणों में अग्रणी, द्युलोक में भी ऊंची उठी ककुद् की भांति ऊंचा पृथिवी का पालक है : [सब अवस्थाओं में साधक के लिए संकल्पशक्ति की प्रधानता दर्शायी गई है]; यह कर्मों के कारण को पनपाता है।

हे अग्ने ! तू वरणीय परन्तु दातव्य परमसुख का पालक है : तेरी शरण (रक्षण) में मैं भी साधक बनूं ।

हे अग्ने ! तेरी शुभ्र कान्तियां अति प्रदीप्त होती हुईं ऊर्ध्वगमन (उन्नति) के लिए प्रेरित करती हैं : तेरी इन आभाओं का हम पूजन—भली भांति सदुपयोग—करें ॥१६॥

इति चतुर्थः खण्डः इति चतुर्दशोऽध्यायः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ पंचदशोऽध्यायः

ऋषिः—१, ११ गोतमः। २, ६ विश्वामित्रः। ३ विरूपः। ४, ७ भर्गः। ५ त्रितः। ६ उशनाः। ८ सुदीतिपुरुमीढौ तयोर्वान्यतरः। १० सोभरिः। १२ गोपवनः। १३ भरद्वाजः। १४ प्रयोगोऽग्निर्वा पावको बार्हस्पत्यः, अथवाग्नी गृहपतिवशिष्ठौ, सहसः सुतौ तयोर्वान्यतरः॥ अग्निर्देवता॥ छन्दः—१–३, ६, ६, १४ गायत्री। ४, ७, ८ प्रगाथम् (विषमा बृहती समासतो बृहती)। ५ त्रिष्टुप्। १० प्रागाथं काकुभन् (विषमा ककुप् समासतो बृहती)। ११ उष्णिक्। १२ प्रगाथः (१) अनुष्टुप् (२, ३) गायत्री। १३ जगती॥ स्वरः—१–३, ६, ६, १४ षड्जः। ४, ७, ८, १० मध्यमः। ५ धैवतः। ११ ऋषभः। १२ (१) गान्धारः (२, ३) षड्जः। १३ निषादः॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ २ ३क२र
कस्ते जामिर्जनानामग्ने को दाश्वध्वरः।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ २
को ह कस्मिन्नसि श्रितः ॥

२ ३१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
त्वं जामिर्जनानामग्ने मित्रो असि प्रियः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
सखा सखिभ्य ईड्यः ॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३२ ३२ ३२
यजा नो मित्रावरुणा यजा देवां ऋतं बृहत् ।
२ ३ २ ३ १ २र
अग्ने यक्षि स्वं दमम् ॥१॥

हे अग्ने ! साधक जनों में कोई ही तेरा जन्म से बन्धा बन्धु है; कोई ही समर्पण यज्ञ करने वाला है। तू क्या है और कहां स्थित है ?

हे अग्ने ! तू स्वयं साधकों का बन्धु ही नहीं है अपितु उनका प्रिय मित्र है : मित्रभूत तू अपने मित्रों के लिए स्तुति करने योग्य है।

हे संकल्पाग्ने ! तू हम से मित्र और वरुण का संगम करा; इन्द्रियों से बृहत् परमसत्य का संगम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करा; हे अग्ने ! तू स्वयं अपनी वश्यता को प्रदान करता है ॥१॥

३ १ २ ३क२र ३ १ २र ३ २
ईडेन्यो नमस्यस्तिरस्तमांसि दर्शतः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
समग्निरिध्यते वृषा ॥
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
वृषो अग्निः समिध्यते ऽश्वो न देववाहनः ।
२ ३ १ २
तं हविष्मन्त ईडते ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वृषणं त्वा वयं वृषन् वृषणः समिधीमहि ।
२ ३ १ २ ३ २
अग्ने दीद्यतं बृहत् ॥२॥

वह स्तुति करने योग्य, नमस्कार करने योग्य, अज्ञानान्धकार को पार करा दिखाने वाला, वह शक्तिशाली अग्नि प्रदीप्त किया जाता है ।

वह शक्तिशाली अग्नि प्रदीप्त किया जाता है जो सुवाहक स्फूर्तिमय अश्व की भांति दिव्यगुणों का

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वाहन है अथवा इन्द्रियों का वाहन है : उस अग्नि की स्तुति समर्पणभावना से भावित साधक करते हैं।

हे समर्थ ! सामर्थ्य की चाह करने वाले हम साधक तुझ सुखवर्षण समर्थ का ध्यान करते हैं; हे अग्ने ! खूब प्रदीप्त हो उठ ॥२॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
उत् ते बृहन्तो अर्चयः समिधानस्य दीदिवः ।
१ २ ३ १ २
अग्ने शुक्रास ईरते ॥
१ २ ३ २क १ २ ३ १ २
उप त्वा जुह्वो३ मम घृताचीर्यन्तु हर्यत ।
१ २ ३ १ २
अग्ने हव्या जुषस्व नः ॥
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
मन्द्रं होतारमृत्विजं चित्रभानुं विभावसुम् ।
३ १ २ ३ १ २
अग्निमीडे स उ श्रवत् ॥३॥

हे अग्ने ! जब तुझे प्रदीप्त किया जाता है तो प्रदीप्त तेरी चमकती बड़ी-बड़ी ज्वालाएं ऊपर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उठने लगती हैं।

हे प्रिय अग्ने! मेरी ज्ञान-दीप्तियों से संयुक्त समर्पण भावनाएं तुझ तक ही पहुँचें : विचारधारा से मैं संकल्पाग्नि को ही पहले प्रदीप्त करूं। हे अग्ने! तू हमारी आहुतियों को स्वीकार कर।

उस आह्लादक, नियम से यज्ञ-सम्पादक, नाना प्रकार की ज्ञान-दीप्तियों से प्रदीप्त, दीप्ति से आवृत अग्नि की स्तुति करता हूँ : और वह ही सुनता है : प्रदीप्त संकल्पाग्नि अन्तर्ज्ञान प्रदान करता है ॥३॥

३ १ २ ३ १२ ३ २क २ ३ १२
पाहि नो अग्न एकया पाह्यू३त द्वितीयया।
३ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते। पाहि चतसृ-
२
भिर्वसो ॥

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
पाहि विश्वस्माद् रक्षसो अराव्णः प्र स्म वाजेषु
१ २र १ २ ३ १
नोऽव। त्वामिद्धि नेदिष्ठं देवतातय आपिं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२र ३ २
नक्षामहे वृधे ॥४॥

बलाधिपति एवं सबको बसाने वाले ज्ञानस्वरूप! आप एक, दो, तीन; नहीं-नहीं चार दिव्य वाणियों-ऋक्, यजुः, साम और अथर्व-द्वारा हमारी रक्षा करें। हे अग्ने! तू हमें हिंसा और अनुदारता की सब भावनाओं से बचा; सब जीवन-संघर्षों में तू ही हमारी रक्षा कर। दिव्य भावनाओं के विस्तार के लिए और बढ़ोतरी—वृद्धि के लिए हम तुझ समीपतम बन्धु की ही शरण में आते हैं ॥४॥

इति प्रथमः खण्डः

३१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १
इनो राजन्नरतिः समिद्धो रौद्रो दक्षाय सुषुमां
२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
अदर्शि। चिकिद् वि भाति भासा बृहताऽसि-
३ १ २ ३ १ २
क्नीमेति रुशतीमपाजन् ॥
३ १ २र ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
कृष्णां यदेनीमभि वर्पसाभूज् जनयन् योषां बृहतः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३२ ३ २ ३१ २र ३ २ ३१
पितुर्जाम् । ऊर्ध्वं भानुं सूर्यस्य स्तभायन् दिवो
२र ३१ २र
वसुभिररतिर्वि भाति ॥
३ २ ३२ ३ १२ ३ २ ३ १२ ३ २
भद्रो भद्रया सचमान आगात् स्वसारं जारो
३उ २र ३ २ ३ १ २र३ २ ३ २३
अभ्येति पश्चात् । सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन्
१२ ३१ २ ३ २ ३१२
रुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात् ॥५॥

सूर्य रूप अग्नि, प्रकाशमान्, चक्रवत् भ्रमित, प्रदीप्त, और भयावह भी, दक्षसाधक को शोभायमान दीख पड़ता है; वह प्रकाशमान अपनी बड़ी दीप्ति सहित प्रकाशित होता तथा कृष्णवर्णा रात्रि को दूर कर प्रकाशवती उषा को लाता है।

जबकि बहुत बड़े, पालक पिता रूप सूर्य से प्रकट की गई स्त्रीरूप उषा को अभिव्यक्त करता अग्नि, काली—अन्धकार स्वरूपा—चलती रात्रि को तिरस्कृत करता है तब यह अग्नि, चक्रवत् भ्रमणशील

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सूर्य के रूप में द्युलोक को आच्छादित करने वाले तेजों सहित सूर्य के प्रकाश को ऊपर थाम्भता हुआ प्रकट होता है : यही अग्नि सूर्यरूप में दीख पड़ता है।

शोभन सूर्य तेजस्विनी उषा के साथ आया; रात्रि का क्षय करने वाला वह दौड़ने वाली उषा के पीछे-पीछे आता है। भली-भांति पहचान करानेवाले प्रकाशों के साथ अधिष्ठातारूप में स्थित वह सूर्याग्नि चमकते वर्णों से रात्रि के अन्धकार पर विजय प्राप्त कराता है ॥५॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २
कया ते अग्ने अङ्गिर ऊर्जो नपादुपस्तुतिम् ।
१ २ ३ १ २
वराय देव मन्यवे ॥
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो ।
१ २ ३ १ २ र
कदु वोच इदं नमः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ ३ २३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
अधा त्वं हि नस्करो विश्वा अस्मभ्यं सुक्षितीः।
१ २ ३ १२
वाजद्रविणसो गिरः ॥६॥

हे अङ्ग-अङ्ग में रमे हुए, दिव्य अग्ने ! वरण करने योग्य मन्यु रूप बल के लिये किस वाणी से हम तेरी स्तुति करें।

हे पाप से रक्षकरूप में बलरूप अग्ने ! किस हव्य का हम दान करें; यह नमस्कार कौन कहे ?

निश्चय से ही तू हमारे लिए शोभन निवास—उत्तम शरण—और सब वाणियों को ज्ञानरूप धन वाली बनाता है ॥६॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १
अग्न आ याह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे। आ
२र ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १२
त्वामनक्तु प्रयता हविष्मती यजिष्ठं बर्हिरासदे।
२ ३ १ २ ३ २ ३१२
अच्छा हि त्वा सहसः सूनो अङ्गिरः स्रुचश्चर-
३२ ३ १ २र ३१२ ३ २ ३१ २
न्त्यध्वरे। ऊर्जो नपातं घृतकेशमीमहेऽग्निं यज्ञेषु

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २
पूर्व्यम् ॥७॥

हे अग्ने ! तू अपनी दीप्तियों, शक्तियों के समेत हमें प्राप्त हो; यज्ञ सम्पादक रूप में तुझे हम स्वीकार करते हैं; हमारी समर्पण भावनायुक्त संयत प्रज्ञा, अति पूजनीय यजनशील तुझ को हृदयासन पर अंकित (विराजमान) करने के लिए भली भांति पहचाने ॥

हे बल के अभिव्यंजक, अङ्ग-अङ्ग में व्याप्त, अग्ने ! जीवनयज्ञ में (घृतादि ज्ञान) सेचन करने की साधनभूत इन्द्रियादिगण तुझे लक्ष्य करके ही गति करती हैं; वे तेरा ही सम्वर्धन करती हैं; जैसे कि साधारण यज्ञ में अग्नि में ही स्रुवों से हव्य डालते हैं। हम तुझ बल को स्थायी बनाये रखनेवाले ज्ञानप्रदीप्त, यज्ञीय भावनाओं से ओत-प्रोत—पूर्ण—तुझ संकल्पाग्नि की कामना करते हैं ॥७॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
अच्छा नः शीरशोचिषं गिरो यन्तु दर्शतम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अच्छा यज्ञासो नमसा पुरूवसुं पुरुप्रशस्तमूतये ॥
३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अग्निं सूनुं सहसो जातवेदसं दानाय वार्या-
३ २ ३ ३ २ ३ २ ३ १ २र
णाम् । द्विता यो भूदमृतो मर्त्येष्वा होता
३ १ २ ३ २
मन्द्रतमो विशि ॥८॥

हम उस अग्नि की स्तुति करें जो प्रशान्त दीप्ति-युक्त और मार्ग-प्रदर्शक है : हमारी यज्ञीय भावनाएं प्रगति के लिए उस बहुतों को बसाने वाले और बहुतों से स्तुत अग्नि का ही, नमस्कारपूर्वक आश्रय लें।

सहनशक्ति के अभिव्यंजक, सब पदार्थों का ज्ञान व लाभ कराने वाले उस अग्नि को ही वरणीय पदार्थों के प्राप्त करने के लिए प्राप्त होओ। जो स्वयं अमर है और प्राणियों में दो रूप में कार्य करता है : प्रजाओं में प्रथम तो दिव्यगुणों का सम्पादन और फिर अत्यन्त सुख का उत्पादन ॥८॥

इति द्वितीयः खण्डः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ ३ २
अदाभ्यः पुरएता विशामग्निर्मानुषीणाम् ।
२ ३ २ ३ २ ३ १ २
तूर्णी रथः सदा नवः ॥
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अभि प्रयांसि वाहसा दाश्वाँ अश्नोति मर्त्यः ।
१ २ ३ १ २
क्षयं पावकशोचिषः ॥
३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
साह्वान् विश्वा अभियुजः क्रतुर्देवानामसृक्तः ।
३ २ ३ १ २
अग्निस्तुविश्रवस्तमः ॥६॥

कभी न दबने वाला यह अग्नि जीवन यज्ञ में मनुष्य प्रजाओं के आगे-आगे चलता है, सदा नूतन बना, शीघ्रगामी रथ की भांति शीघ्र और सुख से यात्रा कराने वाला साधन है ॥

समर्पण भावना से भावित साधक मनुष्य उस वाहक अग्नि के द्वारा ही प्रगतियों को और (लक्ष्य-भूत) पावक ज्ञानदीप्ति के सुख वासस्थान को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्राप्त करता है ।

वह अग्नि सब आक्रमणकारी दुर्भावनाओं का विजेता, दिव्य-भावनाओं का ज्ञापक, अजर और बहुविध अन्तर्ज्ञान से युक्त है ॥९॥

३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३१
भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो
२ ३२ ३ २ ३१ २र
अध्वरः । भद्रा उत प्रशस्तयः ॥
३१ २र ३२३ १ २ ३ १ २ ३ २
भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये येना समत्सु सासहिः ।
१ २ ३१ २ ३ २ ३ १२ ३१ २
अव स्थिरा तनुहि भूरि शर्धतां वनेमा ते
३ १ २
अभिष्टये ॥१०॥

भली भांति उपासित अग्नि हमारा कल्याण करे; उससे प्रदीप्त दान-भावना कल्याणकारी हो; अग्नि से प्रेरित ऐश्वर्ययान प्रगति-यज्ञ कल्याणकारी हो और इस प्रकार हमारे संकीर्तन भी सुखप्रद हों ।

हे अग्ने ! तू आवरक विघ्नों को मार भगाने में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

इच्छाशक्ति को भली बना; इसी से संघर्षों में विजयी बनाता आया है। बहुत बल दिखाती शत्रु भावनाओं की दृढ़ सेनाओं को भी नीचा दिखा; अभीष्ट प्राप्ति के लिए तुझे ही भजते हैं। १०॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो ।
३ १ २ ३ २ ३ १ २
अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः ॥
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
स इधानो वसुष्कविरग्निरीडेन्यो गिरा ।
३ २ ३ १ २
रेवदस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि ॥
३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ ३ २
क्षपो राजन्नुत त्मनाग्ने वस्तोरुतोषसः ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति ॥११॥

प्रकाशयुक्त ज्ञानधन के अधिष्ठाता, बल के प्रतीक, सर्वव्यापक अग्ने ! हमें महान् अन्तर्ज्ञान प्रदान कीजिये।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह दीप्त किया, वासयिता, क्रान्तदर्शक अग्नि वाणी से स्तुत्य है; हे विविध शक्तिशालिन्! तू हमें ज्ञानादि की प्रेरणा देता प्रदीप्त हो।

हे दीप्तिमन्, सबके अधिष्ठाता, तीक्ष्णमुख अग्ने! तू अपने बल से रात-दिन के और रात-दिन के सन्धि काल उषा काल के भी दुर्भावनारूप हिंसक राक्षसों को एक-एक करके भस्म करदे ॥११॥

इति तृतीयः खण्डः

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् ।
३ २ ३ २३ १ २ ३२ ३२ ३ १ २
अग्निं वो दुर्यं वच स्तुषे शूषस्य मन्मभिः ॥

१ २र ३ १ २ ३२उ ३ १ २
यं जनासो हविष्मन्तो मित्रं न सर्पिरासुतिम् ।
३१ २ ३ १२
प्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः ॥

१ २ ३ १२ ३ २ ३२ ३ १२
पन्यांसं जातवेदसं यो देवतात्युद्यता ।
३ १ २र ३ २
हव्यान्यैरयद् दिवि ॥१२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे मनुष्यो ! प्रजा में से प्रत्येक व्यक्ति, सर्वप्रिय, अतिथिरूप, सर्वव्यापक अग्नि की अर्चना करे। मैं उस गृहागत अग्नि की स्तुति परमानन्द की चेतनाओं और वचनों से करता हूँ।

समर्पण-भावनाओं वाले साधक जन ज्ञान-तेज के प्रेरक जिस अग्नि की प्रशस्तियों से प्रशंसा करते हैं;

उस स्तुति योग्य, सब कुछ प्राप्त कराने वाले अग्नि की स्तुति करो जो दिव्यता का विस्तार करने वाली और उन्नति की ओर ले जाने वाली हमारी दान-भावनाओंको (परमोत्कृष्ट लक्ष्यभूत) प्रकाशलोक की ओर प्रेरित करता है ॥१२॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
समिद्धमग्निं समिधा गिरा गृणे शुचिं पावकं
३ १ २ ३ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पुरो अध्वरे ध्रुवम् । विप्रं होतारं पुरुवारमद्रुहं
३ २ ३ १ २ ३ १ २
कविं सुम्नैरीमहे जातवेदसम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३१२ ३१२ ३१२ ३१२
त्वां दूतमग्ने अमृतं युगेयुगे हव्यवाहं दधिरे
२१ २र ३१२३ १२ ३ १२ ३२
पायुमीड्यम् । देवासश्च मर्तासश्च जागृविं विभुं
३ २ ३ १ २ ३ १ २
विश्पतिं नमसा नि षेदिरे ॥
३ १२ ३२ ३ १ २ ३ २ ३२ ३ २ ३ १ २ ३
विभूषन्नग्न उभयां अनु व्रता दूतो देवानां रजसी
१ २ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २र
समीयसे । यत्ते धीतिं सुमतिमावृणीमहे ऽध स्मा
३ १२ ३१ २
नस्त्रिवरूथः शिवो भव ॥१३॥

वाणीरूप आहुति से प्रदीप्त अग्नि की स्तुति करता हूँ—धारण किये संकल्प को वाणी से स्थिर करता हूँ। वह अग्नि जो स्वयं पवित्र—दुर्भावनाओं से रहित—है अतएव पावक है; जीवनयज्ञ में स्थिरता से आगे-आगे स्थापित किया जाता है; बुद्धि का विकासक है, यज्ञ-सम्पादक है, अनेक प्रकार से रक्षक है, हमारा प्रिय, क्रान्तदर्शक और सब कुछ पहुँचाने

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वाला है : उसकी हम मननक्रियाओं से उपासना करते हैं।

हे अग्ने ! दिव्यभावनाओंके सन्देशवाहक, अमर तुझको हम सदा यज्ञ-भावना के पुरस्कर्तारूप में रक्षक एवं स्तुत्य को धारण करते हैं; दिव्य गुणों वाले और मरणशील सब साधक, जागरूकता के प्रेरक अपनी सत्ता से सामर्थ्ययुक्त अतएव प्रजाओं के पालकरूप में विद्यमान तेरा ही नम्रता से सेवन करते हैं : तेरी सामर्थ्य से लाभ उठाते हैं।

हे अग्ने ! तू देव और मर्त्य दोनों को, जब वे कर्मनिष्ठ हों तो, अलंकृत करता हुआ, दिव्यगुणों के सन्देश-वाहकरूप में सब लोकों में पहुँच जाता है। हम इसीलिए तेरी सुविचारित कर्मशैली का आश्रय लेते हैं; आहवनीयादि तीन स्थान के निवासी यज्ञिय अग्नि की भांति तीन जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्ति) अवस्थाओं में स्थायी हुआ-हुआ तू हमारे लिए कल्याणकारी हो ॥१३॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः ।
३ १ २र
वायोरनीके अस्थिरन् ॥
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २र
यस्य त्रिधात्ववृतं बर्हिस्तस्थावसन्दिनम् ।
१ २ ३ १ २ ३ २
आपश्चिन्नि दधा पदम् ॥
३२ ३१ २ ३१ २र ३ १ २
पदं देवस्य मीढुषोऽनाधृष्टाभिरूतिभिः ।
३ १ २र ३ २
भद्रा सूर्य इवोपदृक् ॥१४॥

हे अग्ने ! आपके आस-पास मंडराती रहनेवाली निरन्तर आपकी ओर निर्देश करने वाली वाणियां प्राणायाम के योग से आप में ही स्थिर हो जाती हैं; भक्त की स्तुति का एकमात्र लक्ष्य सत्य सत्ता ही है।

संकल्पाग्नि के लिए हमारा अन्तःकरणरूप आसन जो सत्त्व, रज और तम रूप तीन तत्त्वों को धारण करता है, खुला और स्वतन्त्र बिछा हुआ है; वह

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अग्नि उस पर कर्मरूप अपना पांव रखता है।

उस समस्त कामनाओंके पूरक दिव्य अग्निका यह पद अबाधित उन्नति गतियों सहित, सूर्य की भांति कल्याणकारी उपनेत्र सरीखा है ॥१४॥

इति चतुर्थः खण्डः

॥ इति पञ्चदशोऽध्यायः ॥

अथ षोडशोऽध्यायः

ऋषिः—१, ८, १८ मेधातिथिः । २ विश्वामित्रः । ३, ४ भर्गः । ५ सोभरिः । ६, १५ शुनःशेपः । ७ सुकक्षः । ९ विश्वकर्मा । १० अनानतः । ११ भरद्वाजः । १२ गोतमः । १३ ऋजिश्वा । १४ वामदेवः । १६ हर्यतः । १७ देवातिथिः । १९ श्रुष्टिगुः । २० पर्वत-नारदौ । २१ अत्रिः ॥ देवता—१, ३, ४, ७, ८, १५–१९ इन्द्रः । २ इन्द्राग्नी । ५

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अग्निः । ६ वरुणः । ९ विश्वकर्मा । १०, २०, २१ पवमानः सोमः । ११ पूषा । १२ मरुतः । १३ विश्वेदेवाः । १४ द्यावापृथिव्यौ ॥ छन्दः—१, ३–५, ८, १८–१९ प्रागाथम् (विषमा बृहती समासतो बृहती । २, ६, ७, ११–१६ गायत्री । ९ त्रिष्टुप् । १० अत्यष्टिः । २० उष्णिक् । २१ जगती ॥ स्वरः—१, ३, ५, ८, १७––१९ मध्यमः । २, ६, ७, ११––१६ षड्जः । ९ धैवतः । १० गान्धारः । २० ऋषभः । २१ निषादः ॥

३ १ २ ३१२ ३ २३ ३१२
अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः ।
३ १२ ३२३ १२ ३१ २
समीचीनास ऋभवः समस्वरन् रुद्रा गृणन्त
३२
पूर्व्यम् ॥

३ १ २र ३ २ ३ २३ १ ३२३
अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यं शवो मदे सुतस्य
१ २ ३१ २र ३१२३१ २र
विष्णवि । अद्या तमस्य महिमानमायवोऽनु

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २
ष्टुवन्ति पूर्वथा ॥१॥

हे इन्द्र! (प्रज्ञाशक्ति) जीवन का पूर्ण आनन्द उठाने के लिये आयु चाहने वाले मनुष्य तेरी ही स्तुति करते हैं; सम्यक् दृष्टि से सम्पन्न प्राण के वशी तुझे ही साधते हैं और रुद्र भी तुझ पूर्ण की ही स्तुति करते हैं।

इन्द्र इस निष्पन्न परमानन्द के व्यापक हर्ष में ही समर्थ बनाने योग्य बल को बढ़ा लेता है; उस इन्द्र की इस महिमा को मनुष्य आज भी पहले की भांति जानते हैं ॥१॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः।

१ २ ३ २ ३ १ २
इन्द्राग्नी इष आ वृणे ॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २
इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम्।

३ १ २र३ १ २
साकमेकेन कर्मणा ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १२३ २र ३ १ २ ३१२
इन्द्राग्नी अपसस्पर्यु प प्र यन्ति धीतयः ।
३ १ २ ३ २क १२
ऋतस्य पथ्या३ अनु ॥
१ २ ३ १ २ ३१ २ ३ १२
इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च ।
३ २३ १२ ३ २
युवोरप्तूर्यं हितम् ॥२॥

साम के गायक, ब्रह्ममार्ग को जाननेवाले स्तोता भक्तसाधक, हे इन्द्र और अग्नि ! तुम्हारा पूजन करते हैं : मैं भी प्रेरणा के लिए तुम्हें स्वीकार करता हूँ ।

हे इन्द्र और अग्नि ! तुमने साथ मिलकर एक ही (समाधि-सिद्धि रूप) कर्म से हिंसक भावनाओं को पालने वाली ६० पुरियों को झटक कर परे कर दिया । (६० से अभिप्राय जन्माजन्मान्तर के विविध देहों से है) ।

हे इन्द्र और अग्नि ! परमसत्य के मार्गप्रदर्शक तुम्हारे पीछे-पीछे ही हमारी विचारशक्तियां कर्मों के पार पहुँच जाती हैं ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे इन्द्र और अग्नि ! तुम दोनोंके बल एक स्थान पर लगते हैं और वे आगे ले चलने वाले हैं : कर्मों के प्रति प्रेरणा तुम दोनों में विद्यमान है ॥२॥

३ २क १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
शग्ध्यू३ षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
२ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदम् अनु शूर
१ २
चरामसि ॥

३ १ २र ३ १ २र ३ १ २ ३
पौरो अश्वस्य पुरुकृद् गवामस्युत्सो देव हिर-
१ २ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २उ ३
ण्ययः । न किर्हि दानं परि मर्धिषत् त्वे यद् यद्
२ ३ १ २र
यामि तदा भर ॥३॥

कर्म एवं ज्ञान साधनों के स्वामिन इन्द्र ! अपनी समग्र रक्षण-समर्थताओं को साथ लेकर तू हमारे इष्ट की पूर्ति कर। मनोविकार नाशक हे शूर ! ज्ञान-धन के प्रदाता के रूप में प्रसिद्ध तेरा अनुगमन हम,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तुझे ऐश्वर्य की साक्षात् मूर्ति मान कर ही करते हैं।

हे इन्द्र! तू कर्मशीलता के प्रतीक अश्व को भरपूर करने वाला और ज्ञानेन्द्रिय रूप गौओं का पूरयिता है : हमारी कर्तृत्व एवं ज्ञानशक्तियां प्रज्ञाशक्ति के कारण ही पूरा-पूरा कार्य कर पाती हैं। इस प्रकार तू एक सुवर्णमय - सर्वोत्तम—आनन्दरस का स्रोत है। तेरी दानशीलता को कोई नष्ट नहीं कर सकता, मैं तुझ से जो-जो मांगूं, पूरा कर दे ।।३।।

२उ ३ १२ ३ २उ ३ १२ १ २
त्वं ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये। उद्वावृ-
३ १ २ ३ २ ३ १ २
षस्व मघवन् गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये ।।

२ ३२ ३१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
त्वं पुरू सहस्राणि शतानि च यूथा दानाय मंहसे।
१ २ ३१ २ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १
आ पुरन्दरं चकृम विप्रवचसं इन्द्रं गायन्तो
२
ऽवसे ।।४।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे इन्द्र ! अपने सेवक के पास आ और परमधन की प्राप्ति कराने के लिए उसे भाग्यशाली बना । हे ऐश्वर्यशालिन् ! ज्ञान और कर्मशक्ति चाहनेवाले भक्त को वैसी सिद्धि के लिए बलवान् बना ।

हे इन्द्र ! तू बहुत से—हजारों सैंकड़ों—समूहों को दानशील साधक के लिए देता है; विकासित बुद्धि एवं वाक्शक्ति वाले हम रक्षा के लिए इन्द्र को गान द्वारा पुकारते हुए उसे (शब्दार्थ में) देह नगरी का भेत्ता बना देते हैं ।४।।

२३ ३ १२३ २३ १२ ३ १ २र

यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम् ।

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ २र ३ १२

मघोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्वग्नये ।।

२ ३ २ ३ २ ३क२र ३ १ २ ३ १ २ ३

अश्वं न गीर्भी रथ्यं सुदानवो मर्मृज्यन्ते देव-

१२ ३२ ३ १ २र ३ १ २ १ २ ३

यवः । उभे तोके तनये दस्म विश्पते पर्षि राधो

३ २ ३

मघोनाम् ।।५।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो दाता सब आवश्यक पदार्थों को पहुँचा कर मनुष्यों का सुखकारी बनता है; मधु के पात्रों की भांति मधुरता से भरी हमारी पहली स्तुतियां उसी नेता को प्राप्त हों।

दान-भावना से भावित, दिव्यता के इच्छुक साधक अपनी स्तुतियों से वाहनसामर्थ्य अश्व की भांति सुवाहक प्रज्ञाशक्ति को साधते हैं। हे दर्शनीय, प्रजापते! तू पुत्र-पौत्रों, दोनों, में ऐश्वर्यों का धन भरता है।

इति प्रथमः खण्डः

३१ २ ३ १२३१ २
इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय।
१ २ ३ १ २र
त्वामवस्युरा चके ॥९॥

हे पापों के निवारक प्रभो! मेरी इस पुकार को सुन और इस समय मुझे सुखी कर; रक्षा की चाहना करता मैं तुझसे प्रार्थना करता हूं ॥९॥

२ ३ १ २ ३ १ २र
कया त्वं न ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ २ ३ १ २
कया स्तोतृभ्य आ भर ॥७॥

हे समर्थ इन्द्र ! तू किस अद्भुत रक्षा सामर्थ्य से हमें आनन्दित करता है और किस उत्तमता से भक्त साधकों को परिपूर्ण करता है। सचमुच तेरा यह कर्म अद्भुत है ॥७॥

२ ३ २ ३ १२ ३१ २ ३क२र ३ २ १ २
इन्द्रमिद् देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे । इन्द्रं
३ १ ३ १ २ ३ २ ३ १२ ३१२
समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ॥
१ २ ३१ २ २३ १ २ १२
इन्द्रो मह्ना रोदसी पप्रथच् छव इन्द्रः सूर्यमरो-
१ २ ३ २ ३ १२ ३ १२
चयत् । इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिर इन्द्रे
३ २ ३ १ २
स्वानास इन्दवः ॥८॥

इन्द्रियों की शक्ति की वृद्धि के लिये, आत्मयज्ञ की प्रगति के लिए, आध्यात्मिक संग्राम में विजय-प्राप्ति के लिए और ज्ञानधन की प्राप्ति के लिये—हम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

इन्द्र का ही सहारा लेते हैं।

उस परमेश्वर ने अपनी महिमा से द्युलोक एवं पृथिवी लोक--दोनों का विस्तार किया; उसी बलवान् इन्द्र ने सूर्य आदि को ज्योति से युक्त किया : सब लोकों को नियम में भी उसने ही रखा : ये प्रेरणा करते-से आनन्दरस उसी इन्द्र तक पहुँचाते हैं ॥८॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २क
विश्वकर्मन् हविषा वावृधानः स्वयं यजस्व तन्वां३
१ २र १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १
स्वा हि ते । मुह्यन्त्वन्ये अभितो जनास इहा-
२र ३ १ २ ३ १ २
स्माकं मघवा सूरिरस्तु ॥९॥

हे विश्वभर के रचयिता परमेश्वर ! समर्पण-भावना से बढ़ता-बढ़ता अन्त में तू स्वयं यज्ञ-सम्पादक बन; अग्नि, सूर्य, चन्द्र आदि समग्र भूत-रूप अपने ही शरीर में इनकी हवि दे। साधारणजन तेरे इस यज्ञ को न समझते हुए चाहे मूढ़ या

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आश्चर्यचकित रहें; हम साधकों का तू परमैश्वर्यवान् ही प्रेरक है : यज्ञ भावना की अग्नि को हमारे हृदयों में प्रज्वलित करता है ॥६॥

२ ३ १ २र ३ २उ ३ १२
अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति
३१ २ ३ २ ३ २ ३१ २ १ २ ३१ २
सयुग्वभिः सूरो न सयुग्वभिः । धारा पृष्ठस्य
३ १ २ ३ १ २र २ ३ २ ३१
रोचते पुनानो अरुषो हरिः । विश्वा यद् रूपा
२ ३ १ २र ३ ३ १ २ ३ १ २
परियास्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः ॥

२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
प्राचीमनु प्रदिशं याति चेकितत् सं रश्मिभिर्यतते
३ २उ ३ १ २ ३ १ २र १ २ ३ २ ३
दर्शतो रथो दैव्यो दर्शतो रथः । अग्मन्नुक्थानि
२उ ३ १ २ १ २ ३ १ २र ३
पौंस्येन्द्रं जैत्राय हर्षयन् । वज्रश्च यद् भवथो
१ २ ३१ २र
अनपच्युता समत्स्वनपच्युता ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २३ २ ३ १ २ ३
त्वं ह त्यत् पणीनां विदो वसु सं मातृभिर्मर्जयसि
१ २र ३१ २ ३ २ ३१२ ३ २ ३ २उ
स्व आ दम ऋतस्य धीतिभिर्दमे । परावतो न
३ २उ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २ ३१
साम तद् यत्रा रणन्ति धीतयः । त्रीधातुभिर-
२ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २
रुषीभिर्वयो दधे रोचमानो वयो दधे ॥१०॥

जिस प्रकार अपने सहयोगियों की सहायता से कोई शूरवीर अपने सब शत्रुओं को जीत लेता है, वैसे अपनी अज्ञाननाशिका दीप्ति से निर्मल करता हुआ पवमान सोम, सब द्वेषभावनाओं पर विजय प्राप्त कराता है : परमानन्द की ज्योति से आप्लावित साधक के हृदय से द्वेषभावनाएं दूर भाग जाती हैं। जब वह शिरोगत सातों (सात गोलकों में स्थित होने से) इन्द्रियों द्वारा सब में आविष्ट हो जाता है तो सर्वतः दीप्तिमान्, आकर्षक दिव्यानन्द बहता हुआ अपने प्रवाह से जीवन-पथ के विविध स्तरों को चमकाता है : उनको प्रत्यक्ष कराता है ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यह सोम ज्ञान कराता हुआ प्रकाश के अभिमुख वर्तमान दिशा(पूर्व)की ओर जाता है: ज्ञानके प्रकाश को लाने वाला है। वह अपनी ज्ञानरश्मियों से सुन्दर, दिव्यगुणों के आवाहक रथरूप में दीख पड़ता है। (सोम की इस अवस्था से) बलशालिता के कारण निकली उच्चशब्दवाली स्तुतियां विजयलाभ के हेतु प्रज्ञाशक्ति को पहुँचती है : परमानन्द में विभोर प्रज्ञाशक्ति विजयिनी होगी—ऐसी उक्तियां बलात् प्रसूत होती हैं : और उस इन्द्र को, (विघ्न-नाशन का साधनभूत) वज्र भी मिल जाता है : इस प्रकार सोम और इन्द्र दोनों ही संघर्षों में अजेय बन जाते हैं।

हे दिव्यानन्द ! तू इन्द्रियों तक अपने ऐश्वर्य को सीमित रखने वाले कंजूसों के उस प्रसिद्ध ऐश्वर्य को लेकर उसे अपने गृहस्वरूप अन्तःकरण में, यथार्थ-ज्ञानरूप परमसत्य की शोधक विचार-धाराओं से शुद्ध करता है : इन्द्रिय-सुख में दिव्यानन्द का मिश्रण होने से उसकी मलिनता नष्ट हो जाती है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह परिशुद्ध परमानन्दरूप ऐश्वर्य, दूर से सुनाई देने वाले साम-गान की भांति मधुर है : उस में विचारधारायें अथवा विचारपूर्ण योगी साधक मग्न होते हैं और वह सोम, कान्तिमान् सत्त्व, रज और तम रूप तीन धारक तत्त्वों से, प्रदीप्त हुआ जीवन धारण करता है ॥१०॥

इति द्वितीयः खण्डः

३१ २ ३२ ३ १२ ३ १ २३ २ ३२
उत नो गोषणिं धियमश्वसां वाजसामुत ।
३१ २ ३ १२
नृवत् कृणुह्यूतये ॥११॥

ज्ञान प्रकाश से पोषण के विधायक प्रभो ! तू हमारी उन्नति-गति के लिए हमारी बुद्धि और क्रियाशक्ति को ऐसी बना कि हमारी ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियों को प्रेरणा प्राप्त हो; ज्ञानैश्वर्य से हम रहित न रहें और हमारा विस्तार भी यथावत् होता रहे ॥११॥

३ १ २ ३ १२
शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य सत्यशवसः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ २र ३ १२
विदा कामस्य वेनतः ॥१२॥

हे नेतृरूप प्राणशक्तियो ! तुम सफल होने के लिए निरन्तर गतिशील, परिश्रमी और सत्यबल से बली स्तोता साधक की इच्छापूर्ति कराओ ॥१२॥

१२ ३२३ १२ ३२ ३१२ ३ २
उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये ।

३ १ २
सुमृडीका भवन्तु नः ॥१३॥

ये दिव्यगुण अमर परमेश्वर के अभिव्यंजक होते हुए पुत्ररूप हैं, वे हमारी बात समीप से सुनें : हमें प्राप्त हों और हमें भली भांति सुख देने वाले हों ॥१३॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १२
प्र वां महि द्यवी अभ्युपस्तुतिं भरामहे ।

२ ३ २३ १२
शुची उप प्रशस्तये ॥

३ १ ३क २र ३ २उ ३ १२
पुनाने तन्वा मिथः स्वेन दक्षेण राजथः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ २ ३ २
ऊर्ध्वाथे सनाद्दृतम् ॥
३२ ३ १ २ ३ १२ ३ १२ ३२
मही मित्रस्य साधथस्तरन्ती पिप्रती ऋतम् ।
१२ ३१ २र
परि यज्ञं नि षेदथुः ॥१४॥

महती पृथिवी और प्रकाशमान् सूय ! साधक तुम दोनों को लक्ष्य करके तुम्हारा वर्णन करते हैं; तुम्हारी सबसे बड़ी कीर्ति यह है कि तुम दोनों परस्पर शुद्ध अर्थात् मित्र हो।

तुम दोनों अपने-अपने शरीर से पृथक् दीखते हुए अपने बल से विराजमान हो और सदा परम-सत्य को वहन करते हो : उसकी सत्ता का प्रकाश करते हो।

पृथिवी अपने मित्रभूत सूर्य को साधे (प्रेरणा द्वारा) परमसत्य को वितरण करती और पूर्णरूप से तृप्त करती है; इस प्रकार पृथिवी और सूर्य तुम दोनों यज्ञिय भावना को स्थापित करते हो ॥१४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १२ ३ १२ ३ १ २ ३ १
अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम् ।
२ ३ १ २
वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
स्तोत्रं राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्य ते ।
१ २ ३ १ २
विभूतिरस्तु सूनृता ॥
३ १ २ ३ २ ३ १ २र
ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन् वाजे शतक्रतो ।
२ ३ १ २
समन्येषु ब्रवावहै ॥१५॥

जैसे कपोत गर्भवती कपोती के समीप रक्षक एवं प्रेमी रूप में रहता है; वैसे ही यह साधक तेरा ही है; तू हम साधकों की प्रार्थना को ध्यान व प्रेम से सुन ।

हे ऐश्वर्यों के अधिष्ठाता, शूरवीर प्रेरक तेरा वर्णन और आराधन ही हमारे लिए सत्य एवं सुखके प्रदाता ऐश्वर्य का कारण हो ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सैंकड़ों कर्मशक्तियों से युक्त इन्द्र ! इस ऐश्वर्य-प्राप्तिरूप यज्ञ में तू हमारी उन्नतिगति के लिए हमारे अधिष्ठाता के रूप में स्थिर हो ! अन्य अवसरों पर भी हम आपस में सलाह कर लिया करें ॥१५॥

२ ३ १२ ३१ ३ २ ३१ २ ३ १२
गाव उप वदावटे मही यज्ञस्य रप्सुदा ।
३ १ २ ३ १ २
उभा कर्णा हिरण्यया ॥
३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अभ्यारमिदद्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु ।
३ १ २ ३ १ २
अवटस्य विसर्जने ॥
३ २ ३ १२ ३२ ३ १ २ ३ १२
सिञ्चन्ति नमसावटमुच्चाचक्रं परिज्मानम् ।
३ १ २ ३ १ २
नीचीनबारमक्षितम् ॥१६॥

ये जो गौएं, दोनों सोने के (प्रशस्त) कर्ण वाली हैं; अर्थात् जिन इन्द्रियों के साधनभूत ज्ञान

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

एवं कर्म, दोनों, शक्तियां प्रशस्त हैं और जो इन्द्रियां हमारी यज्ञीय भावना को स्वरूप प्रदान करती हैं, और इसीलिए महान हैं, उन इन्द्रियों से विश्वस्त रूप में बातचीत कर—उन्हें अपने विश्वास में ले; जिससे वे तुझ अग्नि (संकल्प) के अनुसार ज्ञान एवं कर्म में प्रवृत्त हों।

चित्तवृत्तियां अन्तःकरणरूप आधार में विद्यमान आनन्दामृत का आस्वादन करती ही हैं। इस प्रकार प्रज्ञाशक्ति और चित्तवृत्तियों के बीच की खाई पट जाती है। चित्तवृत्तियों और मनःशक्ति में सामञ्जस्य हो जाता है।

साधकगण उच्चलोक में परिभ्रममाण, नीचे द्वार वाले अक्षुण्ण अन्तर को समर्पणों द्वारा सींचते-भरते—पाटते—हैं ॥१६॥

इति तृतीयः खण्डः

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३

मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य सख्ये तव । महत् ते

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३२ ३ १२
वृष्णो अभिचक्ष्यं कृतं पश्येम तुर्वशं यदुम् ॥
३ १ २र ३क २र ३ २ ३ २ ३ १ २
सव्यामनु स्फिग्यं वावसे वृषा न दानो अस्य
२ ३ १२ ३१ २ ३२३ २३२ ३
रोषति । मध्वा संपृक्ताः सारघेण धेनवस्तूयमेहि
२३ १२
द्रवा पिब ॥१७॥

हे इन्द्र ! तुझ बलवान् को मित्र बना लेने पर हमें भय और थकान कभी नहीं सतावें; तुझ बलशाली का जो महान् एवं प्रशंसनीय कार्य है, वह यही है कि जो हिंसाशील को यम नियमादि से नियन्त्रित कर दिया : इस कार्य को हम भी देखें।

वर्षणशील इन्द्र ! तू अनुकूल करवट (दिशा में) विद्यमान है : इस अवस्था में किया हुआ दान कभी व्यर्थ नहीं जाता। विचारशक्तियां मधु शहद अर्थात् अमृत से सींची जा चुकी हैं; शीघ्र आ, दौड़ कर इस अमृत का पान कर ॥१७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।
३ १२ ३ १२ ३ २ ३ १ २र
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत ॥
३ ४ ३२ ३१ २ ३ १२ ३ १ २
अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे ।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु
३ १ २
विप्रराज्ये ॥१८॥

हे शरीरों को बसाने वाले इन्द्र ! ये मेरी जो वाणियां तेरा बखान करें उन्हीं (वैसे ही) स्तुति-वचनों से, स्वयं शुद्ध और सब को निर्मल करने वाले विद्वान् साधक भी तेरी स्तुति करें ।

द्रष्टा ज्ञानेन्द्रियों से सहस्र गुण बलवान् बनाया गया यह इन्द्र (प्रज्ञा) समुद्र की भांति फैल जाता है—अपनी शक्ति का विस्तार कर लेता है । इसका यह महत्व सत्य है; विकसित ज्ञान प्रकाश के प्रभाव में मैं यज्ञियभावनाओं को लक्ष्यमें रखकर अग्निके इस

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बल की स्तुति करता हूँ ॥१८॥

२ ३ २३ ३ २ ३ १ २ ३२ ३ २
यस्यायं विश्व आर्यो दासः शेवधिपा अरिः ।
३१ २ ३२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २१
तिरश्चिदर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत् सो अज्यते
३ २
रयिः ॥

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
तुरण्यवो मधुमन्तं घृतश्चुतं विप्रासो अर्कमानृचुः ।
३ २ ३१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २३
अस्मे रयिः पप्रथे वृष्ण्यं शवोऽस्मे स्वानास
१ २
इन्दवः ॥१९॥

वह उन्नतिगतिशील हो या उस गति का अवरोधक हो; धन का रक्षक हो या लूटने वाला शत्रु हो—किसी भी रूप में जिस ऐश्वर्य के पीछे यह सारा संसार लगा हुआ है, वह परमेश्वर्य, निरन्तर, सब इन्द्रियों के स्वामिभूत, ज्ञान से प्रकाशित, साधनयुक्त तुझ इन्द्र में स्थापित किया जाता है ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

फुर्तीले बुद्धिमान् साधक आनन्दरस, ज्ञानरूप तेज से ओत-प्रोत पूजनीय इन्द्र की स्तुति करते हैं कि हम में वास्तविक (दान भावना से भावित) ऐश्वर्य बढ़े; वीर्यवान् बल आवे और प्रेरणा (अन्तर्ज्ञान) के प्रदाता आनन्दरस प्राप्त हों ॥१६॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २
गोमन्न इन्दो अश्ववत् सुतः सुदक्ष धनिव ।
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
शुचिं च वर्णमधि गोषु धारय ॥
१ २ ४ १ २ ३ १ २
स नो हरीणां पत इन्दो देवप्सरस्तमः ।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सखेव सख्ये नर्यो रुचे भव ॥
१ २ ३ २ ३ १ २ र ३ १ २ ३ १ २
सनेमि त्वमस्मदा अदेवं कं चिदत्रिणम् ।
३ १ २ ३ २ ३ २ २ ३ २
साह्वाँ इन्दो परि बाधो अप द्वयुम् ॥२०॥

हे आह्लादक सोम ! निष्पन्न हुआ तू कल्याणकारी बल के रूप में हमें ज्ञान एवं कर्मशक्तियों से

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

युक्त कर और हमारी इन्द्रियों को शुभ्र यशस्विनी बना।

इन्द्रियों के अधिष्ठातारूप आह्लादक सोम ! तू, ज्ञान-प्रकाश एवं कर्मशक्ति का श्रेष्ठ भंडार है; मित्र के लिए जैसे मित्र वैसे ही साधक का हितकारी बन तू उसकी दीप्ति का वर्धक बन।

हे सोम ! दिव्यानन्द ! तू हम से बंधे किसी भी (प्रत्येक-) अदिव्य स्वार्थभाव को पराजित कर; हे आह्लादक ! तू हमारी दुविधाओं—द्वन्द्व भावनाओं-शीत-उष्ण, जन्म-मरण, सुख-दुःख आदि—का विनाश कर ॥२०॥

३ २३क २र ३ १२ ३ १२ ३ २ ३क
अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मध्वा-
२र १ २ ३ १ ३२ ३ १ २
भ्यञ्जते। सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिर-
३ २ ३ २३ १ २
ण्यपावाः पशुमप्सु गृभ्णते ॥
३ २ ३ १२ ३ १ २र
विपश्चिते पवमानाय गायत मही न धारात्यन्धो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३ १ २ र ३ २ ३ २ ३
अर्षति । अहिर्न जूर्णामति सर्पति त्वचम् अत्यो
१ २ र ३ २ ३ १ २
न क्रीडन्नसरद् वृषा हरिः ॥
३ १ २ र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३
अग्रेगो राजाप्यस्तविष्यते विमानो अह्नां भुवने-
१ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १
ष्वर्पितः । हरिर् घृतस्नुःसुदृशीको अर्णवो ज्योती-
२ ३ २ ३ क २ र
रथः पवते राय ओक्यः ॥२१॥

ज्ञान से पवित्र हुए साधक अपने हृदय-समुद्र में आयी बाढ़ में गिरते हुए आनन्दवर्षी द्रष्टा सोम का उपभोग ज्ञान एवं कर्म की शक्ति में कर लेते हैं। वे उसको साक्षात् करते, व्यक्त करते और अपने में लीन कर उसके कर्मस्वरूप का आस्वादन करते तथा उसको मधुर बना लेते हैं।

इस सदसद्-विवेचिनी बुद्धि के प्रकाशक पवमान सोम की स्तुति करो, जो बड़ी धारा के रूप में प्राण-शक्ति प्रदान करता है और जैसे सांप जीर्ण-शीर्ण

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

त्वचा को छोड़ कर आगे चला जाता है, और वेगवान् अश्व खेलता-कूदता आगे बढ़ जाता है वैसे बह समर्थ एवं आकर्षक सोम भी बहता चला जाता है।

वह अग्रगामी, प्रकाशमान, कर्ममय सोम, जो ज्ञान-दिवसों के निर्माता के रूप में लोक में प्रतिष्ठित है, यहां वर्णित किया जा रहा है : वह आकर्षक, ज्ञान-ज्योति को फैलाने (टपकाने) वाला, भली-भांति दर्शाने वाला, आनन्दरस का सागररूप, ज्योतिरूप रथ का सवार सोम, निवास योग्य ऐश्वर्यों का दान करता है ॥२१॥

इति चतुर्थः खण्डः। इति सप्तमः प्रपाठकः।

इति षोडशोऽध्यायः।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ सप्तदशोऽध्यायः

ऋषिः—१, ७ शुनःशेपः । २ मधुच्छन्दाः । ३ शंयुः । ४ वसिष्ठः । ५ वामदेवः । ६ रेभसूनू । ८ नृमेधः । ९, ११ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ । १० श्रुतकक्षः सुकक्षो वा । १२ विरूपः । १३ वत्सः । १४ शुनःशेपः (एतत्साम) ॥ देवता—१, ३, ७, १२ अग्निः । २, ८—११, १३, १४ इन्द्रः । ४ विष्णुः । ५ इन्द्रवायू । ६ पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ७, ९, १०, १२, १३ गायत्री । ४ त्रिष्टुप् । ५, ६ अनुष्टुप् । ३, ८ प्रागाथम् [विषमा बृहती समासतो बृहती पंक्तिः] । [२, ३] गायत्री । [एतत्साम] ॥ स्वरः—१, २, ७, ९, १०, १२, १३ षड्जः । ३, ८ मध्यमः । ४ धैवतः । ५, ६ गान्धारः । ११ ऋषभः । १४ (१) पंचमः (२, ३ षड्जः [एतत्साम] ।

१ २ ३ १ २ ३ १ ३ २ ३ १ २र
विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं यज्ञमिदं वचः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २
चनो धाः सहसो यहो ॥

२ ३ २ २र ३ १ २ ३१ २३ १ २
यच्चिद्धि शश्वता तना देवंदेवं यजामहे ।

१ २र ३ २
त्वे इद्धूयते हविः ॥

३ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
प्रियो नो अस्तु विश्पतिर्होता मन्द्रो वरेण्यः ।

३ २ ३ १ २ ३२
प्रियाः स्वग्नयो वयम् ॥१॥

हे अग्ने ! बल से रचना करने योग्य ! तू अपनी समस्त ज्वालाओं समेत हमारी यज्ञिय भावना और हमारे इस बचन का बल धारण करा : इन दोनों को अधिक बलवान् बना ।

निरन्तर कर्मों के ताने-वाने से हम दिव्यगुणों का एक-एक करके जो भी यजन (साधन) करते हैं : वह हवि भी तुझ में ही दी जाती है । किसी भी दिव्यगुण की साधना करना संकल्पशक्ति की साधना के बिना सम्भव नहीं है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह समस्त प्रजाओं का अधिष्ठाता, हर्षदाता और वरण करने योग्य अग्नि हमारा प्रिय हो; और उत्तम संकल्पशक्ति (अग्नि) से संयुक्त हम उसके प्रिय हों ॥१॥

१ २ ३ २३ २ ३ १ २ ३ १२
इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः ।
३ १ २ ३ १२
अस्माकमस्तु केवलः ॥
१ २ ३२ ३१ २र ३ १ २
स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रादावन्नपा वृधि ।
३ २ ३ १ २
अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः ॥
१२ ३ २३ १२ ३ १ २३ १ २
वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियर्त्योजसा ।
१ २ ३ १ २
ईशानो अप्रतिष्कुतः ॥२॥

साधक जनो ! तुम्हारे लिये सर्वोपरि वर्तमान इन्द्र का आह्वान करते हैं; वह हमारा अद्वितीय ध्येय हो ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे सुखवर्षक, एक साथ देने वाले अद्वितीय इन्द्र! तू हमारे लिए उस हवि को उघाड़ दे : हमें यज्ञिय भोग भोगने दे।

जैसे वीर्य-सेचन समर्थ सुन्दर गति वाला बैल गौओं के गोल में पहुँचता है वैसे ही अविजेय, सब का अधिष्ठाता इन्द्र कर्मशील मनुष्यों को अपने प्रभाव से ज्ञान-सामर्थ्य प्रदान करता है ।।२।।

१ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय ।
३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १
अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे
२र
तु नः ।।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २र ३ १ २
पर्षि तोकं तनयं पर्तृभिष्ट्वमदब्धैरप्रयुत्वभिः ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्ने हेडांसि दैव्या युयोधि नोऽदेवानि ह्वरांसि
च ।।३।।

हे विलक्षण! रक्षणशक्ति से बसाने वाले!

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आनन्द-साधनों को हमारी ओर भेज । हे शक्ति-सम्पन्न ! इस समृद्धि का तू अधिष्ठाता एवं वाहक है; हमारी सन्तान के लिए भी कुछ आधार प्राप्त करा ।

हे अग्ने ! तू अभ्यर्थ एवं सदा साथ वर्तमान अनेक पालन-साधनों द्वारा हमारे पुत्र-पौत्रों तक का पालन करता है : हमारे मार्ग में आने वाले आधिदैविक, आध्यात्मिक और आधिभौतिक बाधाओं तथा कुटिलताओं को दूर कर ॥३॥

१ २र ३ २ ३ १ २ १ २र ३ १
किमित् ते विष्णो परिचक्षि नाम प्र यद् ववक्षे
२ ३ १ १ १ २र ३ १ २र
शिपिविष्टो अस्मि । मा वर्पो अस्मदपगूह
३ २उ ३ १ २ ३ १ ३ १ २
एतद् यदन्यरूपः समिथे बभूथ ॥

१ २र ३ १ २ ३ २ ३१ २
प्र तत् ते अद्य शिपिविष्ट हव्यम् अर्यः शंसामि
३ १ २ ३ १ १ २ ३ २ ३ १ २ ३
वयुनानि विद्वान् । तं त्वा गृणामि तवसमतव्यान्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ १ २र ३ १
क्षयन्तमस्य रजसः पराके ॥

१२ ३ १ २र ३ १ २
वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व

३ २ १२ ३ २ ३ १ २
शिपिविष्ट हव्यम् । वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो

३१ २ ३ २ ३ १ २
मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥४॥

हे विष्णो ! तेरे नाम की क्या व्याख्या करूं ? तू स्वयं ही कह रहा है कि मैं सब पदार्थों में प्रविष्ट हूँ। अपना यह तेजोमय रूप हम से मत छिपा; तू संघर्ष के अवसर पर दूसरे ही रूप में रहता है।

मैं अग्रगति साधक तेरी सब गतियों या कार्यों को जानता हुआ, हे सर्व-पदार्थ-व्यापक विष्णो ! तेरी वह प्रसिद्ध पूजा करता हूँ। मैं साधारण साधक तुझ महान् बलशाली की स्तुति करता हूँ; तू इन लोकों से दूर रहता है।

हे विष्णो ! मैं यज्ञरूप तेरे मुख में हवि प्रदान

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करता हूँ; हे सर्व-पदार्थ-व्यापक मेरी आहुति को स्वीकार कर। [साधक को चाहिए कि सर्वव्यापक परम प्रभु को अपना सर्वस्व समर्पित कर दे।] मेरी उत्तम स्तुतिरूप वाणियां तुझ विष्णु को मेरे लिए बढ़ावें : साधक स्तुति द्वारा उस विष्णु की महती व्यापक शक्ति का अनुभव करे : इस प्रकार स्वस्तियों से हम सदा सुरक्षित रहें ॥४॥

इति प्रथमः खण्डः

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २३ १ २
वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आ याहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रश्च वायवेषां सोमानां पीतिमर्हथः।
३१ २र ३ २उ ३ २ ३क २र
युवां हि यन्तीन्दवो निम्नमापो न सध्र्यक् ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३१२
वायविन्द्रश्च शुष्मिणा सरथं शवसस्पती।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
नियुत्वन्ता न ऊतय आ यातं सोमपीतये ॥५॥

हे प्राणशक्ते ! अवगुण छोड़ कर शुद्ध हुआ मैं साधक, दिव्यगुणों की अभिलाषाओं में, तुझसे प्राप्त सर्वश्रेष्ठ मधुर फल को प्राप्त करूं । हे स्पृहणीय देव ! तू योगयुक्त प्रज्ञाशक्ति के साथ परमानन्द का पान करने के लिए आ !

हे प्राणशक्ते ! तू और तेरे साथ प्रज्ञाशक्ति भी–तुम दोनों ही–इस परमानन्द का पान करने योग्य हो; जिस प्रकार निचान की ओर द्रव स्वयं बहते हैं, वैसे ही परमानन्दरस स्वभाव से तुम दोनों की ही ओर चले जाते हैं ।

हे वायु और इन्द्र ! तुम दोनों बलवान् और बलवद् वेग के अधिष्ठाता हो; योगयुक्त तुम दोनों ही परमानन्द का पान कर हमारे पथ-प्रदर्शन के लिए आओ ॥५॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
अध क्षपा परिष्कृतो वाजाँ अभि प्र गाहसे ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
यदी विवस्वतो धियो हरिं हिन्वन्ति यातवे ॥
१२ ३ २ ३ १ २ ३ १२
तमस्य मर्जयामसि मदो य इन्द्रपातमः ।
१ २र ३ १ २ ३ २ ३२ ३१ २ ३१२
यं गाव आसभिर्दधुः पुरा नूनं च सूरयः ॥
१ २र ३ १ २ ३ २३क २र
तं गाथया पुराण्या पुनानमभ्यनूषत ।
३१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
उतो कृपन्त धीतयो देवानां नाम बिभ्रतीः ॥६॥

जब भक्त साधक की विचारशक्तियां उच्चतर गति के लिए आकर्षक सोम को चाहती हैं तो अज्ञान की रात्रि के समाप्त होने पर परिस्रुत यह परमानन्द ज्ञान-शक्तियों की ओर प्रवृत्त करता है।

जो परमानन्द प्रज्ञाशक्ति के पान के लिए सर्वोत्तम है उसको हम परिशुद्ध करते हैं और ज्ञानेन्द्रियों ने इसे ही अपने मुखों द्वारा ग्रहण किया था और प्रेरक प्राणशक्तियों ने भी निश्चय ही इसका सहारा लिया था।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उस परिस्रुत होते हुए परमानन्द की स्तुति अति प्राचीन स्तुति वचन से करो; और सूर्य, अग्नि और दिव्य शक्तियों का नाम धारण करती हुई विचार-शक्तियां भी उसको ही समर्थ बनावें ॥६॥

१ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः ।
३ १ २ ३ १ २
सम्राजन्तमध्वराणाम् ॥
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
स घा नः सूनुः शवसा पृथुप्रगामा सुशेवः ।
३ २ ३ १ २
मीढ्वाँ अस्माकं बभूयात् ॥
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
स नो दूराच्चासाच्च नि मर्त्यादघायोः ।
३ २उ ३ २ ३ १ २
पाहि सदमिद् विश्वायुः ॥७॥

अश्व की भान्ति स्तुतिमय, शक्तिशाली और विघ्न निवारण समर्थ अग्निदेव की हम समर्पणों द्वारा वन्दना करते हैं; वह यज्ञों का सम्राट् भी तो है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह अग्नि बल से हमारा प्रेरक, विशालता से सब में व्यापक और शोभन रीति से रचयिता है; वह हमारा सुखों का वर्षण करने वाला होवे।

वह सब के जीवन का आधारभूत अग्नि पापी जीवन वाले मनुष्य से, वह मनुष्य दूरस्थ हो या समीपस्थ हो, हमारी प्रतिष्ठा को बचावे ॥७॥

१ २ ३ १२ ३ १ २र ३ १२
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः।
३ १ २ ३ १ २३१२ ३ १ २ ३ २
अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः॥
१ २ ३ १ २ ३१२ १ २३ ३ २
अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न
३ १२ १ २ ३ १२ ३ १२ ३१
मातरा। विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे वृत्रं
२ ३ १३
यदिन्द्र तूर्वसि ॥८॥

हे इन्द्र! तू आध्यात्मिक संघर्षों में समस्त दुर्वासनाओं को ललकारता है; हे शत्रुनाशक! हिंसक वृत्तियों का तू विनाशक है और उद्दंडताओं को ध्वंस

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कर व्यवस्था की स्थापना करता है।

जिस प्रकार मां-बाप अपने समर्थ बालक का अनुगमन करते हैं इसी प्रकार शीघ्र चलाने वाले तेरे बल के पीछे-पीछे ही सब लोक (द्यौ से पृथिवी तक) चलते हैं; हे इन्द्र! तू मन्यु के कारण जब आवरक अज्ञान को नष्ट करता है तो तेरे सब स्पर्धालु काम-क्रोधादि शत्रु (स्वयं) शिथिल पड़ जाते हैं ॥८॥

इति द्वितीयः खण्डः

३१ २र ३ १र ३ १२
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् यद् भूमिं व्यवर्तयत् ।
३ १ २ ३२ ३ २
चक्राण ओपशं दिवि ॥
२ १ २ ३ २३ १ २ ३ २
व्य३न्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना ।
२ ३ १ २र ३२
इन्द्रो यदभिनद् वलम् ॥
१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २
उद्गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन् गुहा सतीः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ २
अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् ॥९॥

ज्ञान और कर्म की सम्मिलित शक्ति इस कर्म-भूमि देह को मस्तिष्क (विचार-शक्ति) से सम्बद्ध रखती हुई जो घुमाती है उससे आत्मा की शक्ति में वृद्धि होती हैं।

प्रज्ञाशक्ति ने जब घेर लेने वाले काम क्रोधादि तामस आवरण को तोड़ डाला तो परमानन्द के उल्लास में उल्लसित हो, ज्ञान-प्रकाश की किरणें अन्तरिक्ष रूप चित्त में पहुँच गईं।

इन्द्र, निगूढ स्थान में विद्यमान ज्ञान-शक्तियों को अंग अंग में व्याप्त शक्तियों के लिए प्रकट करके घेरनेवाले तामस आवरण को नीचे पटक देता है—विनष्ट कर देता है ॥९॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम् ।
१ २ ३ १ २
आ च्यावयस्यूतये ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
युष्मं सन्तमनर्वाणं सोमपामनपच्युतम् ।
१२ ३१ २
नरमवार्यक्रतुम् ॥
१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ १
शिक्षा ण इन्द्र राय आ पुरु विद्वाँ ऋचीषम ।
१ २ ३ २ ३ १ २
अवा नः पार्ये धने ॥१०॥

सब दुष्ट भावनाओं के विजेता, सब स्तुतियों के लक्ष्यभूत इस इन्द्र को अपनी बढ़ोतरी के लिये साक्षात् प्राप्त कर ।

उस इन्द्र का साक्षात् कर; जो काम-क्रोधादि शत्रुओं से युद्ध करता अविचलित रहता है, परमानन्द रस का पान करता है, अविचल है, नेता है और जिसकी क्रियाशक्ति अनिवार्य है ।

हे स्तुतियों द्वारा प्राप्त करने योग्य इन्द्र ! तू जानता है, हमें समृद्धि-प्राप्ति के लिए खूब शिक्षा दे; जन्म-मरण के पार, मोक्ष स्थिति, में पहुँचाने वाले धन—मोक्षानन्द—की प्राप्ति के लिए हमारी रक्षा कर ॥१०॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ ३ १ ३ ३ १ २ र
तव त्यदिन्द्रियं बृहत् तव दक्षमुत क्रतुम् ॥
१ २ ३ २ ३ १ २
वज्रं शिशाति धिषणा वरेण्यम् ॥
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं पृथिवी वर्धति श्रवः ।
२ र ३ १ २
त्वामापः पर्वतासश्च हिन्विरे ॥
१ २ र ३ १ २ र ३ १ २ ३ १ २
त्वां विष्णुर्बृहन् क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः ।
१ २ र ३ २ ३ १ २
त्वां शर्द्धो मदत्यनु मारुतम् ॥११॥

हे इन्द्र ! तेरे उस ज्ञान-कर्मेन्द्रियों में वर्तमान, विशाल सामर्थ्य, विवेक, कर्म शक्ति और वरणीय साधन—दुर्भावनाओं को नष्ट करने की शक्ति—से हमारी धारणावती बुद्धि काम लेती है ।

हे ब्रह्माण्ड में व्यापक इन्द्रशक्ति ! तेरे बल को सूर्यादि नक्षत्रों से युक्त अन्तरिक्ष और तेरी कीर्ति को यह पृथिवी—पृथिवीस्थभूत पदार्थ—बढ़ा रहे हैं;

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जल और पहाड़ भी तेरा ही स्तुतिगान कर रहे हैं।

विशालता में निवास करने वाला व्यापकता का गुण, स्नेह-गुण, पापरूप अशुद्धि को दूर कर वरण करने का गुण तथा प्राणशक्ति का बल—ये सब बल—तेरे कारण ही हर्षित करते हैं ॥११॥

इति तृतीयः खण्डः

१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः ।
१ २३ १ २
अमैरमित्रमर्दय ॥

३ २उ ३ १ २३ १ २ ३ १ २ ३ २
कुवित् सु नो गविष्टयेऽग्ने संवेषिषो रयिम् ।
१२ ३१ २
उरुकृदुरु णस्कृधि ॥

१ २ ३१ २र ३ १ २
मा नो अग्ने महाधने परा वर्ग् भारभृद् यथा ।
३२३ २ ३१ २
संवर्गं सं रयिं जय ॥१२॥

हे अग्निदेव ! कर्मशील मनुष्य बल-प्राप्ति के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

लिए तेरे सम्मुख आत्मसमर्पण करते हैं; अपने तेज से हमारे अप्रिय कारक शत्रुओं को नष्ट करदे।

हे अग्ने! ज्ञान-प्रकाश को प्राप्त कराने के लिए हमें बहुत सा ऐश्वर्य भली भांति प्राप्त करा; हे विशालता के साधक! हमें भी बड़ा बना।

अग्ने! हमें भार मत समझ; लक्ष्यभूत ऐश्वर्य (मोक्ष) की प्राप्ति के प्रयत्न में हमारा साथ मत छोड़; मोक्षरूप ऐश्वर्य को हमारे लिए जीत कर ला ॥१२॥

१२ ३ २३ २ ३ १ २ ३१२
समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः।
३ १ २३ १ २
समुद्रायेव सिन्धवः ॥

१ २ ३२ ३ १२३ १ २ ३ १ २
वि चिद् वृत्रस्य दोधतः शिरो बिभेद वृष्णिना।
१ २ ३ १ २
वज्रेण शतपर्वणा ॥

२ ३ १ २ ३२३ ३१२
ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत समवर्तयत।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २३ १ २
इन्द्रश्चर्मेव रोदसी ॥१३॥

जिस प्रकार नदियां समुद्र को आत्मसमर्पण करती है, उसमें मिलकर तदाकार हो जाती हैं, वैसे ही सब कर्मशील प्रजाएं इन्द्र के प्रभावकारी कर्तृत्व के सन्मुख झुक जाती हैं : कर्मशील साधक प्रज्ञाशक्ति के अनुसार कार्य करते हैं।

सब को कम्पाने वाले आवरक अज्ञान के मूल को ही, इन्द्रने, सैंकड़ां पोरुओं—शक्तियों वाले, प्रकाशवर्षक वज्र (ज्ञान) से काट दिया।

इससे उस इन्द्र का बल प्रकाशित होता है कि वह इन्द्र द्युलोक एवं पृथिवीलोक दोनों लोकों के मध्य स्थित पदार्थमात्र को ढाल की भांति स्वेच्छा एवं सरलता से घुमाता है ॥१३॥

३२ ३ २ ३ १ २ ३१२
सुमन्मा वस्वी रन्ती सूनरी ॥

१२ ३१ २३ २ ३१ २र३१
सरूप वृषन्ना गहीमौ भद्रौ धुर्यावभि।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २र
तावमा उप सर्पतः ॥

२र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
नीव शीर्षाणि मृढ्वं मध्य आपस्य तिष्ठति ।

१ २ ३ १ २ ३ २
शृङ्गेभिर्दशभिर्दिशन् ॥१४॥

मननशक्ति से युक्त, बसाने वाली समस्त चेष्टा करनेहारी चितिशक्ति सुष्ठु नेत्री है : नेतृत्व करने वाली शक्ति है।

हे समान रूपवाले सर्व श्रेष्ठ इन्द्र ! ये दोनों भले शरीरवाले शरीररूप रथ के वाहन-समर्थ, प्राण और अपान हैं, इन्हें थाम ले : ये लो दोनों आपहुँचे।

शृङ्गरूप दस इन्द्रियों से संकेत करता इन्द्र कर्म-समुद्र के मध्य स्थित है : साधको ! इन शिरोभूत (सिर उठाती) इन्द्रियों को जीतने का यत्न करो ॥१४॥

इति चतुर्थः खण्डः

॥ इति सप्तदशोऽध्यायः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ अष्टादशोऽध्यायः

ऋषिः—१ मेधातिथिः प्रियमेधश्च । २ श्रुतकक्षः सुकक्षो वा । ३ शुनःशेपः । ४ शंयुः । ५, १५ मेधातिथिः । ६, ९ वसिष्ठः । ७ आयुः (बालखिल्यम्) । ८ अंबरीषः । १० विश्वमनाः । ११ सौभरिः । १२ सप्तर्षयः । १३ भरद्वाज-कश्यप-गोतम-अत्रि-विश्वामित्र-जमदग्नि-वसिष्ठाः । १४, १७ विश्वामित्रः । १६ निध्रुविः । १८ भरद्वाजः । १९ भरद्वाजः [एतत्साम] ॥ देवता—१, २, ४, ६, ७, ९, १०, १३, १५ इन्द्रः । ३, ११, १८ अग्निः । ५ विष्णुः । ८, १२, १६ पवमानः सोमः । १४, १७ इन्द्राग्नी । १९ वैश्वानरः [एतत्साम] ॥ छन्दः—१—५, १४, १६—१९ गायत्री । ६, ७, ९, १३ प्रागाथम् । ८ अनुष्टुप् । १० उष्णिक् । ११ प्रागाथं काकुभम् । १२, १५ बृहती । [१९ इति साम] ॥ स्वरः—१-५, १४, १६-१९ षड्जः । ६, ७, ९, ११-१३, १५ मध्यमः । ८ गान्धारः । १० ऋषभः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पन्यंपन्यमित् सोतार आ धावत मद्याय ।
१ २ ३ २ ३ १ २
सोमं वीराय शूराय ॥
१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
एह हरी ब्रह्मयुजा शग्मा वक्षतः सखायम् ।
१ २ ३ १ २र
इन्द्रं गीर्भिर्गिर्वणसम् ॥
१ २ ३ २ ३१ २र ३ २उ ३ २
पाता वृत्रहा सुतमा घा गमन्नारे अस्मत् ।
१ २ ३ १ २
नि यमते शतमूतिः ॥१॥

हे ज्ञानसाधको ! वीरत्व एवं शूरत्व के प्रेरक परमानन्द के लिये अति प्रशंसनीय आनन्द स्रोत की ओर दौड़ कर जाओ ।

हे आहर्त्ता ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियो ! तुम समाधि युक्त और शक्तियुक्त हो; मित्रभूत इन्द्र (प्रज्ञाशक्ति) को वहन करती हो; उस इन्द्र को जो स्तुतियों से स्तुति योग्य है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वह विघ्नों का नाशक इन्द्र, परिस्रुत परमानन्द रस को पान कर हमारे समीप ही पहुँच जाता है; इस प्रकार सैंकड़ों प्रकार से शक्तिशाली होकर नियम में बांधता है ॥१॥

१ २ ३ १ २ ३१ २३ १ २
आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः ।
२३ ३ १ २
न त्वामिन्द्राति रिच्यते ॥
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
विव्यक्थ महिना वृषन् भक्षं सोमस्य जागृवे ।
१ २ ३ १२
य इन्द्र जठरेषु ते ॥
१२ ३ २ ३ १ २
अरं त इन्द्र कुक्षये सोमो भवतु वृत्रहन् ।
२ ३ १ २ ३ १ २
अरं धामभ्य इन्दवः ॥२॥

जिस प्रकार नदियां समुद्र में प्रविष्ट हो समुद्रमय हो जाती हैं, वैसे ही आनन्द की धारायें इन्द्र में समा जाती हैं; हे इन्द्र ! तेरे से बाहर (बढ़कर) कोई

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नहीं है।

हे सुख वर्षक जागरूक इन्द्र ! तुझमें (तेरे पेट में) जो परमानन्द रस रूप भक्ष्य विद्यमान है, उसे अपनी महिमा से तूने प्राप्त कर रखा है।

हे विघ्ननाशक प्रज्ञाशक्ति ! ब्रह्मानन्द तेरे लिए पेटभर—पर्याप्त—हो और आह्लादकरस तेरे विविध धामों के लिए पर्याप्त हों ॥२॥

१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
जराबोध तद् विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय ।
१ २ ३ १ २ ३ २
स्तोमं रुद्राय दृशीकम् ॥
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
स नो महाँ अनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः ।
३ १ २र
धिये वाजाय हिन्वतु ॥
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
स रेवाँ इव विश्पतिर्दैव्यः केतुः शृणोतु नः ।
३ २ ३ २ ३ १ २
उक्थैरग्निर्बृहद्भानुः ॥३॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे स्तुति से बोधगम्य ! तू आत्म समर्पण में निपुण प्रत्येक स्तोता मनुष्य के लिए उसके मनोहर स्तोत्र में व्याप्त हो जा ।

वह महान्, अतुल, धाक से जाना जाने वाला, बहुत आह्लादक अग्नि, बुद्धि और बल के लिए हमें प्रेरित करे ।

ऐश्वर्य सम्पन्नता से प्रजापालक वह दिव्य ज्ञापक, और विशाल तेजवाला अग्नि स्तुतियों द्वारा हमें (हमारी प्रार्थना को) सुने ॥३॥

१ २ ३१ २र ३ १२ १ २
तद् वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने ।
२उ ३ २ ३ १२
शं यद् गवे न शाकिने ॥
२ ३ २३ १ २ ३१ २र ३ १ २
न घा वसुर्नियमते दानं वाजस्य गोमतः ।
२ ३ २३ २३ १ २
यत् सीमुपश्रवद् गिरः ॥
३ १ २ ३ २उ ३ १ २र ३ १ २र
कुवित् सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २
शचीभिरप नो वरत् ॥४॥

हे साधको ! तुम परमानन्द की प्राप्ति के लिए किये गये इस आत्म-यज्ञ में इन्द्रियगण से पूजित शक्तिशाली इन्द्र (प्रकाशमयी प्रज्ञा) का वह स्तुतिगान करो जो गान, ज्ञान (गवे) एवं कर्म शक्ति (शाकिने) दोनों-दृष्टियों-से कल्याणकारी हो।

जब कि वह इन्द्र स्तुतियों को सुनले : सिद्ध हो जाय, तो वह वास देनेवाला इन्द्र ज्ञान युक्त शक्ति के दान को निर्बाधरूप से देता है !

यह हिंसक भावनाओं को नष्ट करने वाली प्रकाशमयी प्रज्ञा उस बहुत अज्ञानी साधक के इन्द्रिय मय बाड़े (देह) में पहुच कर अपनी ज्ञानप्रेरणाओं से उस के बन्धन को दूर कर देती है ॥४॥

इति प्रथमः खण्डः

३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् ।
१ २ ३ २
समूढमस्य पांसुले ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
अतो धर्माणि धारयन् ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे ।
१ २ ३ २ ३ १ २
इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥

१ २र ३ २ ३ १ २र ३ १ २
तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः ।
३ २ ३ २ ३ १ २
दिवीव चक्षुराततम् ॥

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
तद् विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते ।
२ ३ १ २ ३ २ ३ २
विष्णोर्यत् परमं पदम् ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे ।
३ २उ ३ १ २
पृथिव्या अधि सानवि ॥५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सर्वव्यापक शक्ति इस संसार में इस प्रकार व्याप्त है कि तीनों स्थानों (stages)—पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौ--में अपना पांव जमाए हुए है। परन्तु अज्ञान-धूलि से धुन्धले अन्तःकरण में वह शक्ति अनुभव नहीं होती।

अतएव सब स्वभावजन्य गुण-कर्मों का धारण कराने वाले उस सर्वव्यापक ने अपनी शक्ति से सब लोकों को विक्रान्त किया हुआ है; वह लोक चालक और अविनाशी--अप्रतिहतगति है।

उस सर्वव्यापक परन्तु अदृश्य विष्णु के जगद्-रचना आदि कर्मों को देखो; उनसे ही साधक अपने कर्मों की प्रेरणा प्राप्त करता है; वह विष्णु साधक की प्रज्ञाशक्ति (इन्द्र) का साथ रहने वाला साथी जो है।

विद्वान् साधक विष्णु के उस सर्वोत्कृष्ट प्रभाव-स्थान--मोक्षस्थान--को सदा ऐसे ही देखते और अनुभव करते हैं, मानो द्युलोक में फैले हुए दृश्यों को साधारण जन देखते हैं।

विष्णु का जो सर्वोत्कृष्ट पद मोक्षरूप है उसको,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्तुति साधक मेधावी साधक निरन्तर जागरूक रहते, साधते हैं।

कारण कि पृथिवी पर भी उच्च दशा (मोक्ष) की प्राप्ति के लक्ष्य से विष्णु का विक्रम दीख पड़ता है अतएव हम दिव्य भावनाओं के संरक्षण में रहते आगे बढ़ें ॥५॥

मो षु त्वा वाघतश्च नारे अस्मन् नि रीरमन्।
आरात्ताद् वा सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि ॥

इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधौ न मक्ष आसते। इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पादमा दधुः ॥६॥

हे इन्द्र! तुझसे दूर रहने वाले—ज्ञानी मन के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रतिकूल आचरण करने वाले—मेधावी हों तो भी हमें नहीं सुहाते। हम चाहते हैं कि गोष्ठियों में भी, चाहे दूर से ही, प्रज्ञाशक्ति हम पर छाई रहे और हमारी बात ध्यान से सुने।

हे इन्द्र! जैसे शहद पर मक्खियां इकट्ठी हो जाती हैं वैसे ही ये ब्रह्म की साधना करने वाले तेरे साथ ब्रह्मानन्दरस पर एकत्रित हो जाते हैं; और जैसे धन चाहने वाले शूरवीर रथ पर सवार होते हैं वैसे ही स्तोता साधक अपने चरम इष्ट की प्राप्ति के लिए तुझ इन्द्र पर अपना पांव रखते हैं : प्रज्ञाशक्ति के अधिष्ठाता बनते हैं ॥६॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
अस्तावि मन्म पूर्व्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत। पूर्वी-
३ १ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २
ऋतस्य बृहतीरनूषत स्तोतुर्मेधा असृक्षत ॥

२उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
समिन्द्रो रायो बृहतीरधूनुत सं क्षोणी समु सूर्यम्।
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २उ ३ २ ३ १ २
सं शुक्रासः शुचयः सं गवाशिरः सोमा इन्द्र-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ममन्दिषुः ॥७॥

वह जो तेजःपूर्ण, सनातन वेद-ज्ञान सिद्ध किया गया है, इन्द्र (प्रज्ञाशक्ति) को उसका उपदेश दो और परमसत्य की सनातन बृहती ऋचाओं को पढ़ो; इस प्रकार स्तवन करने वाले की धारणावती बुद्धियों का ।नर्माण होता है।

इन्द्र बृहतीरूप ऐश्वर्य को भली-भांति प्राप्त कराये: पृथिवी और सूर्य--ृथिवी से लेकर सूर्य तक-सब भौतिक पदार्थों को प्राप्त करावे-उनसे उपयोग लेना सिखावे : पवित्र और वीर्यकारक पदार्थों को भी भली प्रकार प्राप्त करने की बुद्धि हो; और ज्ञान से मिश्रित ब्रह्मानन्दरस इन्द्र को भली भांति मग्न करे ॥७॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र

इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे ।

१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

नरे च दक्षिणावते वीराय सदनासदे ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३१ २ ३२ ३१ २ ३१२
तं सखायः पुरूरुचं वयं यूयं च सूरयः ।
३ २३ १२ ३२३ १२
अश्याम वाजगन्ध्यं सनेम वाजपस्त्यम् ॥

२३ १२३१ २र ३१ २ ३ १२
परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण ।
२ ३२३ ३२उ ३ १२ ३१ २र
यो देवान् विश्वाँ इत् परि मदेन सह गच्छति ॥८॥

हे सोम ! तुझे उस इन्द्र (प्रज्ञाशक्ति) को पिलाने, तृप्त करने के लिए अभिषुत किया जाता है जो इन्द्र अज्ञान-विघ्न का नाशक, विवेक-शक्ति-सम्पन्न, प्रवर्तक और जीवनरूप यज्ञ के गृह अर्थात शरीर का शक्तिशाली अधिष्ठाता, वीर है।

हे विद्वान् मित्रो ! हम-तुम साधक उस अत्यन्त रुचने वाले, ज्ञान-सुगन्धि से सुगन्धित सोम का भोजन करें; बल के अधिष्ठातारूप सोम को प्राप्त करें।

जो सोम सब इन्द्रियों को परमानन्द से विभोर कर देता है उस कमनीय, भरण-पोषण-समर्थ पर-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मानन्द को चिति के उभारों में से प्रवाहित करते हैं ॥८॥

१ २र ३ १ २र ३ १
कस्तमिन्द्र त्वा वसवा मर्त्यो दधर्षति । श्रद्धा हि
२र ३ १ २ ३ १ ३ १ २र
ते मघवन् पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति ॥
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र
मघोनः स्म वृत्रहत्येषु चोदय ये ददति प्रिया वसु ।
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
तव प्रणीती हर्यश्व सूरिभिर्विश्वा तरेम दुरिता ॥६॥

हे इन्द्र ! बसाने वाले (अन्न-धन प्रदाता) तेरा निरादर मनुष्यों में कौन कर सकता है ? पार करके पहुँचने योग्य लक्ष्यभूत मोक्ष-स्थित में तेरा आश्रय (श्रद्धा) है और द्युलोक में ज्ञानी तू ज्ञान को बांटना चाहता है । जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था में क्रमशः अन्नादि धन, श्रद्धा और ज्ञान का प्रकाश इन्द्र के इन्द्रत्व की स्थापना करते हैं ।

जो ऐश्वर्यसम्पन्न अपने प्रिय धनों को दान किये रहते हैं उन ऐश्वर्यशालियों को विघ्नों को हटाने में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

लगाए रख; हे समर्थेन्द्रिय ! विद्वानों के तुझसे किये गये प्रेम के द्वारा हम सब पापों के पार हो जांय ॥६॥

इति द्वितीयः खण्डः

२३ १ २३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
एदु मधोर्मदिन्तरं सिञ्चाध्वर्यो अन्धसः ।
३ २उ ३१ २र ३ १ २
एवा हि वीर स्तवते सदावृधः ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्र स्थातर्हरीणां न किष्टे पूर्व्यस्तुतिम् ।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
उदानंश शवसा न भन्दना ॥
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२
तं वो वाजानां पतिमहूमहि श्रवस्यवः ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
अप्रायुभिर्यज्ञेभिर्वावृधेन्यम् ॥१०॥

हे साधक ! हर्षदायक भक्तिरूप-रस को सींच; सदा उन्नतिशील वीर यही स्तुति करता है ।

हे इन्द्रियों के प्रतिष्ठापक इन्द्र ! तेरी सनातन स्तुति को न तो कोई बल से प्राप्त करता है न अपने

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तेज से ही ।

अन्तर्ज्ञान (प्रेरणा) की इच्छा वाले हम, ज्ञानों के अधिष्ठाता तुझको पुकारते हैं; तू निरन्तर होती रहने वाली प्रमाद-रहित समर्पणभावनाओं से परि-पुष्ट होता है ॥१०॥

१ २ ३क २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
तं गूर्द्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे ।
३ २ ३ १ २
देवत्रा हव्यमूहिषे ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २
विभूतरातिं विप्र चित्रशोचिषमग्निमीडिष्व
३ १२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
यन्तुरम् । अस्य मेधस्य सोम्यस्य सोभरे प्रेम-
३२ ३ १ २
ध्वराय पूर्व्यम् ॥११॥

सुखस्वरूप तक पहुँचा देने वाले उस अग्नि की स्तुति कर, जिस दिव्यशक्ति को हमारी इन्द्रियां यह महान् कार्य सौंपती हैं ।

हे ज्ञान को धारण करनेवाले, मेधावी, साधक !

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तू इस बहुत-सा (ज्ञान) दान करने वाले, विचित्र कान्ति से युक्त, नेतारूप अग्नि की उपासना कर; इस पवित्र, सोम-योग्य अग्नि का सनातन (रूप), हिंसा रहित यज्ञ के लिए ही है ॥११॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
आ सोम स्वानो अद्रिभिस्तिरो वाराण्यव्यया ।
२ ३ २ ३ २ ३क २र ३ २ ३ २ ३ १ २
जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दध्रिषे ॥
१ २ ३ १ २र ३क २र ३ २उ ३ १
स मामृजे तिरो अण्वानि मेष्यो मीढ्वांत्सप्तिर्न
२ ३२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३
वाजयुः । अनुमाद्यः पवमानो मनीषिभिः सोमो
१ २ ३ १ २
विप्रेभिर्ऋक्वभिः ॥१२॥

हे परमानन्दरस ! तू इन्द्रियों से उत्पन्न चिति-शक्तियों के आवरणों को पार करता हुआ, जिस प्रकार कोई विजयी वीर पुरुष नगर में प्रवेश करता है, वैसे ही हमारी पार्थिव और प्रकाशमयी चेतना को आविष्ट करता है। इस प्रकार आकर्षक बना हुआ

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तू भक्ति-पात्रों में अपना स्थान बनाता है।

हर्षकारक, मेधावी, विकसित-बुद्धि, स्तुतिपाठकों द्वारा सिद्ध किया गया वह सोम चितिशक्ति के सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्त्वों को प्राप्त कर बलेच्छु वेगवान् अश्व की भांति सुखवर्षक और शुद्ध हो जाता है ॥१२॥

३ १ २ ३ १ २ र ३ २ १ २
वयमेनमिदा ह्योऽपीपेमेह वज्रिणम् । तस्मा उ
३ १ २ र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
अद्य सवने सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते ॥
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
वृकश्चिदस्य वारण उरामथिरा वयुनेषु भूषति ।
२ ३ ३ १ २ ३ २ ३ ३ २ ३ २ ३ १ २
सेमं न स्तोमं जुजुषाण आ गहीन्द्र प्र चित्रया
३ २
धिया ॥१३॥

कल तक हम ज्ञान-वज्रधारी इस आत्मा को ही तृप्त करते रहे; आज इस ज्ञान-यज्ञ में भी उसके

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

लिए ही आनन्दरस भरो और उसको ही भूषित करो।

मार्ग-रोधक, दुःखदायी चोर भी प्रज्ञाशक्ति के प्रज्ञान के फलस्वरूप शोभायमान हो जाता है-सीधा हो जाता है; वह इन्द्र तू हमारी इस स्तुति को सेवन कर विचित्र धारणाशक्ति के साथ हमें प्राप्त हो ॥१३॥

१ २ ३ १ ३ २उ ३ १ २
इन्द्राग्नी रोचना दिवः परि वाजेषु भूषथः ।
१ २ ३ २ ३क २र
तद् वां चेति प्रवीर्यम् ॥
१ २ ३ १ २ ३ २र ३ १ २ ३ १ २
इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप प्र यन्ति धीतयः ।
३ १ २ ३ २क १ २
ऋतस्य पथ्या३ अनु ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च ।
३ २ ३ १ २ ३ २
युवोरप्तूर्यं हितम् ॥१४॥

हे प्रकाशमय इन्द्र और अग्नि ! तुम दोनों प्रका-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शलोक में ज्ञान के कार्यों में शोभित होते हो; तुम्हारा यह सामर्थ्य स्पष्ट ही ज्ञात होता है।

हे इन्द्र और अग्नि ! परमसत्य के मार्ग-प्रदर्शक तुम्हारे पीछे-पीछे ही हमारी विचार-शक्तियां कर्मों के पार पहुँच जाती हैं।

हे इन्द्र और अग्नि ! तुम दोनों के बल एक ही स्थान पर लगते हैं और वे आगे ले जाने वाले हैं; कर्मों के प्रति प्रेरणा तुम दोनों में विद्यमान है ॥१४॥

१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र
क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद् वयो दधे।
३ १ २र ३ १ २र ३ १ ३ १ २
अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिप्र्यन्धसः
३ २ ३ २ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १
दाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे। न
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
किष्ट्वा नि यमदा सुते गमो महाँश्चरस्योजसा ॥
२ ३१ २र ३ १ २र३ १ २ २
य उग्रः सन्ननिष्टृतः स्थिरो रणाय संस्कृतः। यदि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्तोतुर्मघवा शृणवद्धवं नेन्द्रो योषत्या गमत् ॥१५॥

यह जो इन्द्र अमृत रस की प्राप्ति के लिये किये गये यज्ञ में साथ-साथ पान करता है इसे कौन जानता है ? और कौन जानता है कि इसकी कितनी आयु है ? ब्रह्मानन्द के आनन्द में मग्न हुआ यह वेगवान् अपने तेज से, (अन्नमय आदि) आवरक देहों को तोड़ डालता है।

जैसे बनैला हाथी अपने मद-जलों के कारण बहुत से स्थानों पर विचरण करता है; वैसे ही तुझे भी कोई बन्धन में नहीं डाल सकता; परिप्लुत ब्रह्मानन्द में पहुँचा हुआ, तू महान् अपने ओज के कारण निर्द्वन्द्व विचरता है।

वह इन्द्र बलशाली अतएव शत्रुओं से अहिंसित, अविचल और जीवन-संघर्ष के लिए सर्वदा प्रस्तुत हुआ यदि साधक की पुकार को सुन ले अर्थात अनुकूल हो तो साधक से पृथक् नहीं होता, उसे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्राप्त हो जाता है ॥१५॥

इति तृतीयः खण्डः

१२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
पवमाना असृक्षत सोमाः शुक्रास इन्दवः ।
३ १ २र ३ १ २
अभि विश्वानि काव्या ॥
१२ ३२उ ३ १ २
पवमानो दिवस्पर्यन्तरिक्षादसृक्षत ।
३ २उ ३ १ २
पृथिव्या अधि सानवि ॥
१२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २
पवमानास आशवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः ।
२ ३ २ ३ २ ३ १ २
घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः ॥१६॥

सब रचनाओं के लिए वीर्यवान, आह्लादक परमानन्दरसों की साधना करना उचित है।

अन्नमय कोश (पृथिवी) की उच्च अवस्था में प्राणमय कोश की अवस्था में और प्रकाशमय लोक की स्थिति में परमानन्द की साधना ही उचित है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सब को आविष्ट करने वाले, परिस्रुत सोम, सब द्वेष-भावनाओं को नष्ट करके आह्लादक बनते हैं ॥१६॥

३ १ २३१२ ३ २ ३ १ २
तोशा वृत्रहणा हुवे सजित्वानापराजिता ।
३ २ २३१ २
इन्द्राग्नी वाजसातमा ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः ।
१ २ ३ २३ १ २
इन्द्राग्नी इष आ वृणे ॥
१ २ ३ १ २र ३ १ २
इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम् ।
३ १ २र३ १२
साकमेकेन कर्मणा ॥१७॥

आन्तरिक शत्रुभावनाओं के नाशक, आवरक अज्ञानादि विघ्नों के अपवारक, जयशील, अपराजित अतएव ज्ञान-बल पिलाने वाले इन्द्र और अग्नि को बुलाता हूँ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

साम के गायक, ब्रह्ममार्ग को जानने वाले स्तोता भक्त साधक, हे इन्द्र और अग्नि ! तुम्हारा पूजन करते हैं : मैं भी प्रेरणा के लिए तुम्हें स्वीकार करता हूँ ।

हे इन्द्र और अग्नि ! तुमने साथ मिलकर एक ही (समाधि-सिद्धिरूप) कर्म से हिंसक भावनाओं को पालने वाली ९० पुरियों को झटक कर परे कर दिया । (९० से अभिप्राय जन्मान्तर के विविध देहों से है) ॥१७॥

१२ ३ १२ ३ १२
उप त्वा रण्वसंदृशं प्रयस्वन्तः सहस्कृत ।
१ २ ३ २३ १२
अग्ने ससृज्महे गिरः ॥
१२ ३ १ २ ३ २ ३१२ ३ १२ ३२
उप च्छायामिव घृणेरगन्म शर्म ते वयम् ।
२ ३ १२
अग्ने हिरण्यसंदृशः ॥
२ ३१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
य उग्र इव शर्यहा तिग्मशृङ्गो न वंसगः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १२ ३ १ २
अग्ने पुरो रुरोजिथ ॥१८॥

हे बल से साध्य अग्ने ! तुझ रमणीय और दर्शन करने योग्य के समीप पहुँचने का प्रयत्न करते हुए हम वाणियों (स्तुतियों) का उच्चारण करते हैं।

हे अग्ने ! सूर्य के समान तेजस्वी तेरे सुखदायी शरण में हम पहुँचे; जैसे कि किसी तेजस्वी के आश्रम में कोई पहुँच कर सुख उठाता है।

हे अग्ने ! जो तू उग्र बलवान् की भांति बलों का नाशक और तेज सींग--अर्थात् बल--वाली शक्तियों वाला बैल-सा बलवान् है वह तू सामने आई सब विघ्न-बाधाओं को तोड़-फोड़ डालता है ॥१८॥

३ १ २ ३२३१ २ १ २३ १ २
ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम् ।
१ २ ३१ २
अजस्रं घर्ममीमहे ॥
२ ३१ २ ३ २ ३ २ ३क २र ३२
य इदं प्रतिपप्रथे यज्ञस्य स्वरुत्तिरन् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र ३ २
ऋतूनुत्सृजते वशी ॥

३ २ ३२३ १२३ १ २ ३२ ३ १ २
अग्निः प्रियेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य ।

३२उ ३ १२
सम्राडेको विराजति ॥१६॥

परमसत्य तक पहुँचाने वाले, समस्त पदार्थों में पहुँचे हुए, सत्यस्वरूप ज्योति तक पहुँचाने के अधिष्ठातृरूप, निरन्तर तेज से प्रदीप्त—कभी धीमा न पड़ने वाले अग्नि को हम चाहते हैं।

जो अग्नि यज्ञसाधना के लक्ष्यभूत परमसुख को प्राप्त करा कर, अपना सब ताना-बाना फैलाता है और नियामक बनकर क्रम और नियम (ऋतुओं) की रचना करता है;

वह अग्नि भूतकाल में हुए और भविष्यत् काल में होने वाले सब जगत् का संकल्परूप मूल, सब श्रेष्ठ लोकों में अकेला सार्वभौम अधिष्ठाता होकर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विराजमान है ॥१६॥

इति चतुर्थः खण्ड:

॥ इत्यष्टादशो ऽध्याय: ॥

अथैकोनविंशोऽध्याय:

ऋषि:—१ विरूप: । २, १८ अवत्सार: । ३ विश्वामित्र: । ४ देवातिथि: । ५, ८, ६, १६ गोतम: । ६ वामदेव: । ७ प्रस्कण्व: । १० वसुश्रुत: । ११ सत्यश्रवा: । १२ अवस्यु: । १३ बुधगविष्ठिरौ । १४ कुत्स: । १५ अत्रि: । १७ दीर्घतमा: ॥ देवता:—१, १०, १३ अग्नि: । २, १८ पवमान: सोम: । ३-५ इन्द्र: । ६, ८, ११, १४, १६ उषा: । ७, ६, १२, १५, १७ अश्विनौ ॥ छन्द:—१, २, ६, ७, १८ गायत्री । ३ प्रागाथम् (विषमा बृहती, समासतो बृहती) । ८, ६ उष्णिक् । १०—१२ पङ्क्ति: । १३—१५ त्रिष्टुप् । १६, १७ जगती ॥ स्वर:—१, २, ६,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

७, १८ षड्जः । ३, ५ मध्यमः । ८, १० ऋषभः । १७-१२ पञ्चमः । १३-१५ धैवतः । १६, १७ निषादः ॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३
अग्निः प्रत्नेन जन्मना शुम्भानस्तन्वां३ स्वाम् ।
३ १ २र
कविर्विप्रेण वावृधे ॥
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
ऊर्जो नपातमा हुवेऽग्निं पावकशोचिषम् ।
३ २ ३ १ २ ३ २
अस्मिन् यज्ञे स्वध्वरे ॥
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
स नो मित्रमहस्त्वमग्ने शुक्रेण शोचिषा ।
३ १ २र ३ १ २
देवैरा सत्सि बर्हिषि ॥१॥

विकसित बुद्धि वाले साधक, सनातन स्वरूप से अपने स्वाभाविक शरीर को शोभायमान करते हुए संकल्परूपाग्नि को क्रान्तद्रष्टारूप में बढ़ाते हैं।

मैं साधक, बल को स्थायी रखने वाले, पवित्र

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करने वाली कांति से युक्त अग्नि को इस शोभन उन्नति-गति-यज्ञ में (सहायतार्थं) बुलाता हूँ।

वह तू अग्ने ! जो कि मित्रता के दिव्यगुण के कारण पूजनीय है, अपने शुद्ध तेज के साथ और दिव्यभावनाओं सहित मेरे हृदयासन पर विराजमान हो ॥१॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
उत्ते शुष्मासो अस्थू रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
नुदस्व याः परिस्पृधः ॥
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ २
अया निजघ्निरोजसा रथसङ्गे धने हिते ।
२ ३ १ २ ३ २
स्तवा अबिभ्युषा हृदा ॥
१ २ ३ २ ३ २र ३ १ २ ३क २र
अस्य व्रतानि नाधृषे पवमानस्य दूढ्या ।
३ १ २र ३ १ २
रुज यस्त्वा पृतन्यति ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २३ १२ ३१ २ ३ १ २
तं हिन्वन्ति मदच्युतं हरिं नदीषु वाजिनम् ।
२ ३ १ २ ३ २
इन्दुमिन्द्राय मत्सरम् ॥२॥

हे ब्रह्मानन्द ! अदम्य ! तेरे बल हिंसक-भावनाओं को नष्ट करते सर्वोपरि विराजमान हैं; तू स्पर्धा की भावनाओं को भी नष्ट कर दे।

हे सोम ! तू इस जीवन-यज्ञमें ऐश्वर्य की प्राप्ति के अवसर पर अपने वीर्य से स्वभावजन्मा दुर्भावनाओं को नष्ट करता है; मैं निर्भय हो तेरी स्तुति करता हूं।

दुर्बुद्धि मनुष्य इस पवमान सोम की व्यवस्थाओं को बिगाड़ नहीं सकते; जो दुर्बुद्धि तुझसे द्वेष करता है, उसको तू नष्ट कर।

उस आनन्दरस बहाने वाले, आकर्षक, नस-नाड़ियों में बल का संचार करने वाले, इन्द्र (प्रज्ञा शक्ति) के आनन्द के स्रोतभूत परमानन्दरस को साधक चाहते हैं ॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ १२ ३ २ ३१२ २
आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः । मा
३ १ ३ १ २३२३ ३ २३ ३ १२३ १
त्वा के चिन्नि येमुरिन्न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ
२
इहि ॥

३ १ २ ३२ ३२ ३२ ३२३२ २३
वृत्रखादो वलं रुजः पुरां दर्मो अपामजः । स्थाता
१२ ३ १२ ३१ २र ३१ २ ३२
रथस्य हर्योरभिस्वर इन्द्रो दृढा चिदा रुजः ॥

३ १ २३ २३ १२ ३ १ २ १
गम्भीराँ उदधीँरिव क्रतुं पुष्यसि गा इव । प्र
२ ३३ २र ३१२ ३२ ३ १ २
सुगोपा यवसं धेनवो यथा हृदं कुल्या इवाशत ॥३॥

हे दिव्यमन ! हर्षप्रद ज्ञान-तन्तुओं से चित्र-विचित्र वर्ण (प्रकार) वाली अपनी वृत्तियों द्वारा वहन किया हुआ आ; तुझे कोई बन्धन में न बांधे; धनुर्धारी की भांति उन पर विजय प्राप्त कर।

अज्ञानरूप विघ्न का विनाशक, तामस आवरणों

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

को तोड़ने वाला, पंचकोशरूप पुरियों का विदारक, कर्मों का प्रेरक, रथरूप देह का अधिष्ठाता ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियों का साक्षात् प्रेरक इन्द्र, कठोर से कठोर बाधाओं को नष्ट कर देता है।

गहरे समुद्रों को जैसे जलधारायें पुष्ट करती हैं; उत्तम गोपालक जैसे गौओं को पालता है, वैसे ही इन्द्र! तू संकल्प को पुष्ट करता है। गौएं जैसे अपने चारे के समीप और नहरें जलाशय में पहुँचती हैं वैसे संकल्पकी धारायें तुझ ही में समा जाती हैं ॥३॥

१ २ ३ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २र ३ १
यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम्। आपित्वे
२ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
मन्दन्तु त्वा मघवन्निन्द्रेन्दवो राधोदेयाय सुन्वते।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३
आमुष्या सोममपिबश्चमू सुतं ज्येष्ठं तद्दधिषे
१ २
सहः ॥४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जैसे तृष्णा से सताया हुआ गौर मृग पानी से भरे तालाब पर पहुँच जाता है, उसी प्रकार दिव्य मन ! तू हम इन्द्रियों से शीघ्र ही बन्धुत्व स्थापित कर और ज्ञान सरोवर से हम सबके साथ मिल कर पान कर।

ब्रह्मानन्द को सिद्ध करने वाले साधक को सिद्धि प्राप्त कराने के लिए, हे ऐश्वर्यशालिन् इन्द्र ! तुझे ब्रह्मानन्दरस हर्षित करें। उस साधक की ज्ञान कर्मेन्द्रियों में परिस्रुत सोम का तू पान कर और इस प्रकार बड़े से बड़े बल को अपने भीतर धारण कर ॥४॥

२ ३ १   २ र   ३ २   १ ३ १ २   २ ३ ३
त्वमङ्ग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम् । न त्व-
१ २   ३ २ ३ १ २   ३ १ २
दन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २   ३ १ २ र
मा ते राधांसि मा त ऊतयो वसोऽस्मान् कदा
३ १ २   १ २   ३ १ २ ३
चना दभन् । विश्वा च न उपमिमीहि मानुष

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ २ ३ २
वसूनि चर्षणिभ्य आ ॥५॥

हे बलशाली देव ! तू मरणधर्मा देह को सचेतन करता है; हे ऐश्वर्यवन् ! तुझसे भिन्न दूसरा कोई सुखदाता नहीं है; मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।

हे सबको बसाने वाले ! तेरे ऐश्वर्य और तेरी उन्नति-गतियां हमें कभी हानि न पहुँचावें। हे मननशील ! तू समस्त आवास-साधनों का स्वयं निर्माण कर और हम कर्मशील साधकों को प्रदान कर ॥५॥

इति प्रथमः खण्डः

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
प्रति ष्या सूनरी जनी व्युच्छन्ती परि स्वसुः।
३ १ २ ३ २
दिवो अदर्शि दुहिता ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २र३ १ २
अश्वेव चित्रारुषी माता गवामृतावरी।
१ २ ३ १ २ ३३
सखा भूदश्विनोरुषाः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २र ३ १ २ ३२ ३ १ २र
उत सखास्यश्विनोरुत माता गवामसि ।
३ २ ३ १ २
उतोषो वस्व ईशिषे ॥६॥

वह कर्मों के प्रति नेतृत्व करने वाली, स्त्री-स्वरूपा अपनी भगिनी सदृश रात्रि के पश्चात् तम को दूर करती हुई सूर्य की पुत्री उषा प्रकट हो गई।

अज्ञानांकुरों का दहन करने वाली साधक को विशोका प्रज्ञारूप उषा, व्यापनशील चमक की भांति विचित्र संज्ञानवती, तेजस्विनी, ज्ञान-किरणों की निर्मात्री, सत्यज्ञान की प्रापिका उषा, अश्वियों के साथ रहने वाली है।

हे उषा ! (प्रज्ञे) तू अश्वियों की मित्र और ज्ञान-किरणों की केन्द्रभूता जननी है; हे उषे ! तू प्राणशक्ति की अधिष्ठात्री है ॥६॥

३२ ३ १ २र ३क २र ३ २ ३२
एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः ।
३ १ २ ३२
स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ २
या दस्रा सिन्धुमातरा मनोतरा रयीणाम् ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २
धिया देवा वसुविदा ॥
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि ।
२ ३ २ ३ २ ३ १२
यद् वां रथो विभिष्पतात् ॥७॥

यह देखो ! वह अपूर्व प्रकाशमयी प्रज्ञा प्रकाश-लोक से उदित हो रही है। मैं तुम दोनों गतिशीलों (ज्ञान एवं संकल्पशक्तिरूप अश्वियों) की बहुत स्तुति करता हूँ।

जो अश्वी क्रोधादि मलों के नाशक, ज्ञान-वाहिनियों को ठीक रीति से चलाने वाले, सब बलों के प्रेरक, दिव्य और ध्यानवृत्ति से ऐश्वर्य दिलाने वाले हैं।

उन तुम अश्वियों का रथरूप यह देह जब प्राण-शक्तियों द्वारा उन्नति-पथ पर ले चलता है और अति प्रशंसनीय मोक्ष अवस्था में पहुँचता है तब तुम्हारा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

महत्व ज्ञात होता है ॥७॥

२ ३ २ ३ १ २र३ १ २
उपस्ताश्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति ।
१ २ ३ ३ १ २ ३ १ २
येन तोकं च तनयं च धामहे ॥
१ २ ३ १ २र ३ १ २
उषो अद्येह गोमत्यश्वावति विभावरि ।
३ २ ३ १ २
रेवदस्मे व्युच्छ सूनृतावति ॥
३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २
युक्ष्वा हि वाजिनीवत्यश्वाँ अद्यारुणाँ उषः ।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अथा नो विश्वा सौभगान्या वह ॥८॥

ज्ञानमयी वाणीसे युक्त हे उषा ! हमें वह प्राप्तव्य ज्ञान प्राप्त करा कि जिससे हम अपने पुत्र-पौत्रों का ठीक से भरण करते रहें।

हे उषा ! आज यहां तू हमारे लिए ज्ञान का प्रकाश करने वाली, कर्म की प्रेरिका, प्रकाश फैलाने वाली, प्रिय सत्य का प्रकाश करने वाली है : ऐसी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तू हमारे प्रभात को ऐश्वर्यशाली बना।

हे ज्ञान-धन लाने वाली उषे ! तू आज अपने दीप्तिमान् वाहकों को अपने रथ में जोड़, और हमें समस्त सौभाग्यों को प्राप्त करा ॥८॥

१ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
अश्विना वर्तिरस्मदा गोमद्दस्रा हिरण्यवत्।

३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २
अर्वाग् रथं समनसा नि यच्छतम् ॥

२र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
एह देवा मयोभुवा दस्रा हिरण्यवर्तनी।

३ १ २ ३ १ २
उषर्बुधो वहन्तु सोमपीतये ॥

२ ३ २ ३ ३ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २
यावित्था श्लोकमा दिवो ज्योतिर्जनाय चक्रथुः।

२ ३ १ २ ३ २
आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम् ॥६॥

हे ज्ञान-संकल्पशक्तिरूप, क्रोधादि मलों के शोधक, अश्वियो ! तुम हमारे इस परिवर्ती, ज्ञान और कर्मेन्द्रियरूप (वाहनों) से युक्त रथरूप देह को,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

स्वयं एक मन होकर—सर्वथा आपसी सहमति से—नियन्त्रित करो।

प्रातःकाल जागने वाले साधक, इन दिव्य, सुखदायी, दुर्भावनारूप मलापहारी, तेजस्वियों के पथ से चलने वाले, ज्ञान एवं संकल्परूप अश्वियों को ब्रह्मानन्द का पान करावें।

इस प्रकार जो तुम एक प्रशंसनीय ज्योति को साधक जन के लिए प्रकाशलोक से लाकर देते हो, वे तुम, हमें बल धारण कराओ ॥६॥ इति द्वितीयःखण्डः

३ १ २र ३ २उ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः।
२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अस्तमर्वन्त आशवाऽस्तं नित्यासो वाजिन इषं
३ २ ३ १ २
स्तोतृभ्य आ भर ॥

३ २उ ३ १ २ ३ २ २र ३ १ २
अग्निर्हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः।
३ २र ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अग्नी राये स्वाभुवं स प्रीतो याति वार्यम् इषं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ १ २
स्तोतृभ्य आ भर ॥

२ ३ १ २र३ २उ ३ १ २ ३१२
सो अग्निर्यो वसुर्गृणे सं यमायन्ति धेनवः ।
१ २र ३२३१ २ ३१२ ३ २ ३ १२
समर्वन्तो रघुद्रुवः सं सुजातासः सूरय इषं
३ २ ३ १ २
स्तोतृभ्य आ भर ॥१०॥

अग्नि मैं उसको मानता हूँ जो बसाने वाला है, और जिसका आश्रय ज्ञानी नित्य ऐसे ही लेते हैं जैसे गौएं और द्रुतगामी घोड़े अपने थान अथवा अस्तबल का। हे अग्ने ! साधकों को अपने ऐश्वर्य तथा प्रेरणा से भरपूर कर दे।

संसार का प्रकाश करने वाला अग्नि व्यापकैता के लिए वेग प्रदान करता है और वही अग्नि ऐश्वर्य के लिए स्वतः उत्पद्यमान गुण बन जाता है : वह अग्नि प्रसन्न साधक के अनुकूल बन कर उस को ऐश्वर्य एवं ज्ञान-प्रेरणा से भरपूर कर दे।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जो बसाने वाला है वही अग्नि कहा जाता है; धेनुएं और फुर्तीली गति वाले घोड़े जैसे अपने थान को आश्रय मानते हैं वैसे ही ज्ञानी और कर्मिष्ठ (फुर्तीले) सुसंस्कृत विद्वान् उस अग्नि की शरण में आते हैं: वही अग्नि साधकों को ऐश्वर्य एवं ज्ञान-प्रेरणा से भरपूर करे ॥१०॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २
महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती। यथा
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ३
चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते
१ २
अश्वसूनृते ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
या सुनीथे शौचद्रथे व्यौच्छो दुहितर्दिवः। सा
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ३
व्युच्छ सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते
१ २
अश्वसूनृते ॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ क २ ३
सा नो अद्याभरद्वसुर्व्युच्छा दुहितर्दिवः।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ र ३
यो व्यौच्छः सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते
१ २
अश्वसूनृते ॥११॥

अज्ञानावरण को हटाने वाली प्रज्ञे ! तू प्रकाश-वती होकर हम को बड़े ऐश्वर्य—आत्मिक समृद्धि—के लिए उद्बोधित कर; और हे बड़ी मधुर और सत्य प्रेरणा वाली प्रज्ञारूप उषे ! तू सत्य अन्तः-प्रेरणा के लिए भी हमें उसी प्रकार उद्बोधित कर।

जिस प्रकाश-लोक को दोहने वाली—ज्ञानरूप प्रकाश लाने वाली—उषा ने न्याय और पवित्रता का प्रकाश किया वही ज्ञान का विस्तार करने वाली, शुभ-संस्कारों सहित उत्पन्न, बड़ी मधुर एवं सत्य प्रेरणा वाली ज्ञान की उषा बलवती और सत्य अन्तःप्रेरणा का प्रकाश करे।

ज्ञान-प्रकाश लोक को दुहकर ज्ञान लाने वाली, वह उषा आज हमें ऐश्वर्य से भरपूर करे जिस ज्ञान का विस्तार करने वाली, शुभ संस्कारवती और बड़ी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मधुर प्रेरणा वाली ने बलवती सत्य अन्तःप्रेरणा दी थी ॥११॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम् । स्तोता
२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
वामश्विनावृषि स्तोमेभिर्भूषति प्रति माध्वी मम
३ १ २
श्रुतं हवम् ॥
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र २ ३
अत्यायातमश्विना तिरो विश्वा अहं सना दस्रा
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
हिरण्यवर्त्तनी सुषुम्णा सिन्धुवाहसा माध्वी मम
३ १ २
श्रुतं हवम् ॥
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
आ नो रत्नानि बिभ्रतावश्विना गच्छतं युवम् ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३
रुद्रा हिरण्यवर्त्तनी जुषाणा वाजिनीवसू माध्वी
१ २ ३ १ २
मम श्रुतं हवम् ॥१२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

गति से व्यापक ज्ञान और कर्म की शक्तियो ! साधकों के ऐश्वर्यसाधक और सुखवर्षक अतएव अतिप्रिय देह-देह में, काल-दर्शी साधक तुम दोनों की स्तुति करता है। हे मधु दाताओ ! मेरी स्तुति को सुनो।

हे अश्वियो ! (ज्ञान एवं कर्म-शक्तियो !) तुम दोनों मुझे प्राप्त हो जिससे सदा सब बाधाओं को पार करता रहूँ। क्रोधादि मलशोधको, तेजोयुक्त मार्ग वाले, सुखपूर्वक ज्ञान नाड़ियों का संचार कराने वाले हे मधुरता के प्रापको ! तुम दोनों मेरी पुकार सुनो।

हमको समग्र रमणीय ऐश्वर्य से भरते तुम दोनों हमें प्राप्त होओ : ज्ञान और संकल्प की शक्ति से हमें सब समृद्धियां प्राप्त हों। हे दुष्ट भावनाओं को डराकर भगाने वाले, तेजो युक्त मार्ग वाले, अति-प्रिय ज्ञानमयी और बलमयी चिति में बसने वाले मधुरता के प्रापको ! मेरी पुकार सुनो ॥१२॥

इति तृतीयः खण्डः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवाय-
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
तीमुषासम् । यह्वा इव प्र वयामुज्जिहानाः प्र
३ १ २ ३ २ ३ १ २
भानवः सस्रते नाकमच्छ ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २
अबोध होता यजथाय देवान् ऊर्ध्वो अग्निः
३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
सुमनाः प्रातरस्थात् । समिद्धस्य रुशददर्शि पाजो
२ ३ १ २र३ १२
महान् देवस्तमसो निरमोचि ॥
१२ ३१ २ ३ १ २र३ १ २ ३ १ २
यदीं गणस्य रशनामजीगः शुचिरङ्क्ते शुचि-
३ १ २ ३ २ १ २र ३ १
भिर्गोभिरग्निः । आद् दक्षिणा युज्यते वाजय-
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
न्त्युत्तानामूर्ध्वो अधयज्जुहूभिः ॥१३॥

आनन्द-दूध देने वाली उषा के प्रति अर्पित अर्थात् दिवा-ज्ञानोदय के समय दी गई आहुति से

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यह संकल्परूप अग्नि प्रदीप्त हुआ है। व्यापक सुख-नीति (वयाम्) के प्रति जिस प्रकार महान् धार्मिक जन (यह्वाः) उत्सुक होते हैं, वैसे ही, ज्ञान की किरणें सुख-सदन (महान् ज्योति) की ओर उत्क्रमण करती हैं।

दिव्य गुणों का यजन (समायोजन) करने के लिए प्रदीप्त किया गया होता, मन-भावना अग्नि खूब प्रदीप्त हो उठा; वह सब से प्रकृष्ट रूप में उपस्थित है; प्रदीप्त हुए इस अग्नि का प्रकाशमान एवं महान् बल दीखता है : और यह महान् देव अग्नि संसार को अज्ञानान्धकार से छुड़ाए।

जब यह अग्नि सब ज्ञान-शक्तियों की नियामक शक्ति को स्वयं समेटे रहता है तो स्वयं प्रकाशित यह अग्नि प्रकाशवती ज्ञान-शक्तियों (किरणों) सहित यथार्थ दर्शन का कारण बनता है। फिर उसको बलवान् बनाने वाली विवेचन-शक्ति का उसमें योग होता है जिसका भोग (पान) वह अपनी ज्वालाओंसे करता है ॥१२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३२उ ३ १ २ ३ २ ३१ २ ३१ २३१
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागाच्चित्रः प्रकेतो
२ ३ २ २३१२ ३२ ३२३२उ
अजनिष्ट विभ्वा । यथा प्रसूता सवितुः सवायैवा
३२३ १२
रात्र्युषसे योनिमारैक् ॥
१२ ३ १२ ३ २ ३१२ ३ १ २र
रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्यागादारैगु कृष्णा सद-
३ १२ ३१२ ३२उ ३
नान्यस्याः । समानबन्धू अमृते अनूची द्यावा
१२ ३१
वर्णं चरत आमिनाने ॥
३ २उ ३ १२ ३२उ ३ १ २
समानो अध्वा स्वस्त्रोरनन्तस्तमन्यान्या चरतो
३१ २ १ २ ३ १ २ ३२३ २ ३
देवशिष्टे । न मेथते न तस्थतुः सुमेके नक्तो-
२ ३ १२ ३ १२
षासा समनसा विरूपे ॥१४॥

जैसे उत्पन्न हुई उषा सूर्य के प्रकट होने का

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पूवरूप है और रात्रि उषा के लिए स्थान छोड़ती है वैसे ही यह देखो ! यह सर्वोत्तम, ज्योतियों की ज्योति आई ! और एक अद्भुत महान् प्रज्ञान उत्पन्न हो गया ! अर्थात् ऋतंभरा प्रज्ञा सर्वप्रेरक ब्रह्म के ज्ञान प्रादुर्भाव का पूर्व रूप है।

देदीप्यमान (सूर्य रूप) वत्स वाली, स्वयं देदीप्यमान, शुक्लवर्णा उषा उदित हुई—कृष्णवर्णा रात्रि ने इनके लिए स्थान खाली किया है; ये दोनों जो समान रूप से (नियम से) बन्धुसदृश हैं, अमर हैं, अनिर्वचनीय हैं और वर्णों का निर्माण करतीं द्युलोक में विचरती हैं।

रात्रि और उषा रूप बहिनों का मार्ग एक ही है, जो अनन्त है; उस प्रकाशमय सूर्य द्वारा अंकित मार्ग पर दोनों एक-एक करके चलती रहती हैं; विभिन्न रूप वाली परन्तु परस्पर एकचित्त हुई शुभ लक्षणवती रात्रि और उषा न तो कभी आपस में टकराती हैं, ना ही ठहरती हैं ॥१४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ ३ २ ३ १२ ३ १२र ३१
आ भात्यग्निरुषसामनीकम् उद् विप्राणां देवया
२र ३१ २ ३१ २ ३१ २ ३
वाचो अस्थुः । अर्वाञ्चा नूनं रथ्येह यातं पीपि-
१ २ ३१ २र
वांसमश्विना घर्ममच्छ ॥

१ २ ३१ २र ३ २ ३ १ २ ३२३ १
न संस्कृतं प्र मिमीतो गविष्ठान्ति नूनमश्विनो-
२र ३२ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ ३ २र
पस्तुतेह । दिवाभिपित्वे ऽवसागमिष्ठा प्रत्यवर्तिं
३ १२ १ २
दाशुषे शम्भविष्ठा ॥

३ १ २ ३१ ३१ २र ३ १ २३ १२३
उता यातं संगवे प्रातरह्नो मध्यन्दिन उदिता
१२ २ ३ ३१२ ३ १ २३ १ २र
सूर्यस्य । दिवा नक्तमवसा शन्तमेन नेदानीं
३ २ ३ २ २र
पीतिरश्विना ततान ॥१५॥

संकल्पशक्ति दिव्यप्रकाश की ज्ञापिका प्रतीत होती है; संकल्प की सिद्धि के साथ-साथ विकसित विचार

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शक्तियों की दिव्यताधायक की प्रेरणाएं (वाणियां) उठने लगती हैं, यात्रा के लिए प्रशंसित सारथिभूत ज्ञान एवं कर्मशक्ति रूप अश्वियो! निश्चय ही तुम प्रत्यक्ष हो जाओ और निरन्तर बढ़ रहे तेज को धारण कराओ।

इस अध्यात्म-यज्ञ में उपस्तुत इन्द्रियों में समीप ही स्थित रहने वाली ज्ञान एवं संकल्प शक्तियो! (अश्वियो!) तुम निश्चय ही संस्कृत ब्रह्मानन्द-रस को नष्ट नहीं करते। ज्ञान-प्रकाश के प्राप्त होते ही बलसहित, प्रत्यक्ष हो जाते हो, और पथ-प्रदर्शन (मार्ग के प्रति) कर आत्म-समर्पक साधक का कल्याण करते हो।

हे अश्वियो! तुम दिन के प्राप्त होने पर (प्रातःकाल) और उसके जाने पर (सायंकाल) तथा मध्य दिन में आओ, दिन-रात अपने अतिकल्याणकारी बल के साथ प्राप्त रहो; तुम दोनों जिस कल्याण पान का फैलाव फैलाते हो, उसे इस समय नष्ट मत करो॥१५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ ३ २ ३१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो
३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३
भानुमञ्जते । निष्कृण्वाना आयुधानीव धृष्णवः
२ ३ १ २र ३ १ २
प्रति गावोऽरुषीर्यन्ति मातरः ॥
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १
उदपप्तन्नरुणा भानवो वृथा स्वायुजो अरुषीर्गा
२ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अयुक्षत । अक्रन्नुषासो वयुनानि पूर्वथा रुशन्तं
३ १ २र
भानुमरुषीरशिश्रयुः ॥
१ २ ३ १ २३२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टिभिः समानेन योज-
३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
नेना परावतः । इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे
२उ ३ १ २ ३ १
विश्वेदह यजमानाय सुन्वते ॥१६॥

ये वे प्रसिद्ध उषाएं (ज्ञान-प्रकाश की किरणें) हैं जिन्होंने प्रज्ञान की सृष्टि की है और अन्तरिक्ष के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पूर्वार्ध में सूर्य को जैसे उषा प्रकट करती है, वैसे अज्ञानान्धकार में से ज्ञान-भानु को प्रकट किया है। ये दीप्तिमती, यथार्थ ज्ञान की साधिका ज्ञान-किरणें, साधनभूत इन्द्रियों के समीप उन्हें स्वच्छ करने के लिए ऐसे पहुँचती हैं जैसे विजिगीषू योद्धा अपने शस्त्रों को तेज करने की इच्छा से उन्हें उठाने जाते हैं।

लाल-लाल उषा की दीप्तियां (ज्ञान-दीप्तियां) स्वभावतः उदित हुई और वे स्वतः से जुतने वाली ज्ञान-प्रदीप्त ज्ञानेन्द्रियों से संयुक्त हो गईं; इस प्रकार पूर्वतः (संस्कार रूप में) विद्यमान स्मृति-ज्ञानों को जाग्रत कर दिया; अर्थात् देदीप्यमान प्रज्ञायें देदीप्यमान सर्वप्रेरक सूर्य में ही आश्रय लिये रहती हैं।

प्रज्ञाएं, धीरे-धीरे प्रवेश करने वाले जलों की भांति, प्रवेश करने की अपनी शक्तियों से समान रूप समाधि योग से आत्मसमर्पक, कुशल, साधना करने वाले साधक को समस्त ज्ञान और बल प्राप्त कराती हुईं, दूर देशों तक विद्यमान पदार्थों का भी ज्ञान

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करा देती हैं ॥१६॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ २क २ ३ १ ३क२र
अबोध्यग्निर्ज्म उदेति सूर्यो व्युरुषाश्चन्द्रा मह्यावो
३ १२ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अर्चिषा । आयुक्षातामश्विना यातवे रथं प्रासा-
३१ २ ३ २उ ३ १२
वीद् देवः सविता जगत् पृथक् ॥
२ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
यद् युञ्जाथे वृषणमश्विना रथं घृतेन नो मधुना
३ १ २ ३ १ २ १ २ १ २ ३ २उ
क्षत्रमुक्षतम् । अस्माकं ब्रह्म पृतनासु जिन्वतं वयं
३ १२
धना शूरसाता भजेमहि ॥
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो जीराश्वो अश्वि-
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
नोर्यातु सुष्टुतः । त्रिबन्धुरो मघवा विश्वसौभगः
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
शं न आ वक्षद् द्विपदे चतुष्पदे ॥१७॥

जिस प्रकार पृथिवी पर अग्नि (अग्निहोत्र आदि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

के समय) प्रज्वलित किया जाता है, सूर्य रूप में उदय होता है, और आह्लादकारिणी उषा विशालरूप में अपनी ज्योतियों से अन्धकारको हटाकर सब कुछ प्रकट करदेती हैं. उसीप्रकार आध्यत्मिक यज्ञमें भी ज्ञानाग्नि विभिन्नरूपों में प्रज्वलित होता है : हे अश्वियो ! ज्ञान एवं संकल्प रूप शक्तियो ! तुम दोनों आध्यात्मिक यात्रा के लिए इस साधन रूप वाहन में युक्त होओ : जिससे सर्वप्रेरक दिव्य शक्ति समस्त जगत का पृथक्-पृथक् ज्ञान करावे ।

जब अश्वी इस सुखप्रद वाहन में युक्त होते हैं तो अपने प्रदीप्त मधुर (आनन्द) से इस रक्षक बल को सींच देते हैं : इस प्रकार वे हमारे संघर्षों में हमें महान् बल से संयुक्त करते हैं और हम बल से प्राप्तव्य अनेक ऐश्वर्यों को प्राप्त करते हैं ।

यह जाग्रत स्वप्न और सुषुप्ति रूप त्रिविध गति वाला, मधुरतासे लेजाने वाला अमर वाहकों (इन्द्रिय शक्तियो) वाला, अश्वियों (ज्ञान-कर्म शक्तियों) का रथ रूप, उत्तम रूप से साधित हुआ अनुकूल

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दिशा में चले। इस प्रकार तिगुना सुशोभित, ऐश्वर्य-
वान्, सब का सौभाग्य रूप यह दुपाये, चौपाये—
सब जीव जाति—का कल्याण साधन करे ॥१७॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
प्र ते धारा असश्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः ।
२ ३ १ २ ३ १ २
अच्छा वाजं सहस्रिणम् ॥
३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति ।
१ २ ३ १ २र
हरिस्तुञ्जान आयुधा ॥
१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
स मर्मृजान आयुभिरिभो राजेव सुव्रतः ।
२ १ २र
श्येनो न वंसु षीदति ॥
२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र
स नो विश्वा दिवो वसूतो पृथिव्या अधि ।
३ १ २ ३ १ २
पुनान इन्दवा भर ॥१८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे परमानन्द ! प्रकाश लोक से आती हुई तेरी अनवरुद्ध धाराएं सहस्रों ज्ञानों से युक्त ज्ञान बल की प्राप्ति कराने के लिए ऐसे बह रही हैं जैसे हजारों प्रकारके अन्न प्राप्त कराती वर्षाएं आती हैं।

सब प्रिय रचनाओं को देखता हुआ आकर्षक सोम ज्ञानायुध से बन्धन काटता विचरता है।

साधक जनों से सिद्ध एवं मार्जित किया गया, सुवर्चा, नियम पालक राजा की भांति निर्भयता प्रदान करने वाला और श्येन पक्षी की भांति निर्द्वन्द्व इच्छानुकूल लोकों में विचरण करता है।

हे आह्लादक परमानन्द रस ! वह तू प्रकाश लोक और इस पृथिवी लोक के सब ऐश्वर्यों को सिद्ध कराता हमें पूर्ण कर ॥१८॥

इति पञ्चमः खण्डः

इत्यष्टमः प्रपाठकः। इत्येकोनविंशोऽध्यायः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ विंशोऽध्यायः

ऋषिः—१ नृमेधः। २ साम [नृमेधो वामदेवो वा]। ३। प्रियमेधः। ४ दीर्घतमा औचथ्यः। ५ वामदेवः। ६ प्रस्कण्वः ७ बृहदुक्थः। ८ बिन्दुः पूतदक्षो वा। ९, १७ जमदग्निः। १० सुकक्षः। ११—१३ वसिष्ठः। १४ सुदाः। १५ मेधातिथिः प्रियमेधश्च। १६ नीपातिथिः। १८ परुच्छेपः। देवताः—१, १७ पवमानः सोमः। २ ३, ७, १०—१६ इन्द्रः। ४, ५, १८ अग्निः। ६ अग्निः-रश्विनावुषाः। ८ मरुतः। ९ सूर्यः॥ छन्दः—१ ८, १०, १५, गायत्री। १ [द्विपदा गायत्री] ३ प्रगाथः (१) अनुष्टुप्, (२, ३) गायत्री। ४ पंक्तिः (१) विराट्, (२) भुरिक् (३) निचृत्। ५ पदपंक्तिः। ६, ९—१२ प्रागाथं बार्हतप् [विषमा बृहती समा सतो बृहती]। ७ त्रिष्टुप् १४ शक्वरी। १६ अनुष्टुप्। १८ अत्यष्टिः। [२ साम] स्वरः—१, २, ८, १०, १५, १७ षड्जः। ३

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(१) गान्धारः (२, ३) षड्जः। ४, ५ पंचमः। ११, १३, १६, १८ गान्धारः। ६, ९, १२ मध्यमः। ७, १४ धैवतः॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
प्रास्य धारा अक्षरन् वृष्णः सुतस्यौजसः।
३ १ २र ३ १ २
देवाँ अनु प्रभूषतः॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
सप्तिं मृजन्ति वेधसो गृणन्तः कारवो गिरा।
१ २ ३ २ ३क २र
ज्योतिर्जज्ञानमुक्थ्यम्॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३
सुषहा सोम तानि ते पुनानाय प्रभूवसो।
१ २ ३ १ २
वर्धा समुद्रमुक्थ्य॥१॥

यह देखो! इस सुखवर्षक और दिव्य, इन्द्रियों को अपने अनुकूल अलंकृत करते, बल रूप और अभिस्तुत ब्रह्मानन्द की धारायें प्रवाहित हो रही हैं।

बुद्धिमान् कर्मिष्ठ साधक वाणी से वर्णन करके,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रशंसनीय ज्योति अर्थात् ज्ञान को अतिशय उत्पन्न करने वाले सरपट गतिमान् सोम को साधते हैं।

अपने प्रभाव से बसाने वाले सोम अभिषुत तू उन सब प्रसिद्ध बाधक चित्तवृत्तियों को भली भांति नष्ट कर देता है; हे प्रशंसनीय! तू आनन्द के स्रोत को बढ़ा ॥१॥

३२ ३२उ ३ २३ २ ३ १ २ ३ २ ३
एष ब्रह्मा य ऋत्विय इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे ॥
१ २र ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
त्वामिच्छवसस्पते यन्ति गिरो न संयतः ॥
२ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
वि स्रुतयो यथा पथा इन्द्र त्वद् यन्तु रातयः ॥२॥

नियम पालन द्वारा प्रकट होने वाली यह महती शक्ति ही इन्द्र नाम से प्रसिद्ध है; इनकी मैं स्तुति करता हूँ।

हे सर्वशक्तिमान्! संयमी की-सी वाणियां, ये वेदवाणियां, तुझ को ही प्राप्त होती हैं।

जिस प्रकार मार्ग पाकर जल धाराएं निकल भागती हैं, वैसे ही, हे इन्द्र! तुझ में से दानशीलता

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बहती चले ।।२।।

२ ३ २३ २३१२ ३ १ २
आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्त्तयामसि ।
३ १ २ ३२३ १ २ ३ १ २
तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्रं शविष्ठ सत्पतिम् ।।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवो विश्वया मते ।
१ २ ३ २
आ पप्राथ महित्वना ।।
१ २ ३ २ ३१ २र ३ १ २ ३१ २
यस्य ते महिना महः परि ज्मायन्तमीयतुः ।
२ ३ १२ ३ १ २
हस्ता वज्रं हिरण्ययम् ।।३।।

हे बलवन् ! हम लोग जीवन में प्रगति के हेतु, ज्ञानरूप धन के साधनभूत, विविधकर्मा, वासनाओं के विजेता, सत्यरक्षक तुझ 'इन्द्र' से ऐसे ही व्यवहार रखें जैसे कि यात्री रथ से रखता है ।

हे अनन्त शक्तिशालिन् ! विविधकर्मा ! शक्ति के स्वामिन् ! मति-प्रज्ञा-रूप इन्द्र ! तू अपनी सब पर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

छायी महिमा से सर्वत्र व्यापक है।

जिस तेरी महिमा के कारण तेरे ज्ञानकर्म-रूप ये दोनों साधन (हस्त) पृथिवी (लोक) मात्र का चक्कर लगा आने वाले—सर्वत्र-व्यापक—प्रशस्त वज्र को पकड़ते हैं—वह तू इन्द्र है ॥३॥

२र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २र
आ यः पुरं नार्मिणीमदीदेदत्यः कविर्नभन्यो३

१ २ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
नार्वा । सूरो न रुरुक्वां छतात्मा ॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
अभि द्विजन्मा त्री रोचनानि विश्वा रजांसि शुशु-

३ १ २ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३
चानो अस्थात् । होता यजिष्ठो अपां सधस्थे ॥

३२उ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २र
अयं स होता यो द्विजन्मा विश्वा दधे वार्याणि

३ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
श्रवस्या । मर्तो यो अस्मै सुतुको ददाश ॥४॥

इस बलशालिनी पुरी रूप देह को जो सर्वथा चेतन रखता है, वह वेगवान्, क्रान्तदर्शी, व्यापक

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आकाश की भांति व्यापक, गतिशील, अश्व की भांति वेगवान्, प्रेरक सूर्यके समान आभावान्, अनेकों का आत्मारूप विराजमान है।

यह द्विजन्मा, ज्ञान और कर्म दोनों से जन्म लेने वाला, अग्नि तीन—जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति—रूप रोचक स्थितियों को प्रकाशित करके समस्त लोकों में विराजमान होता है। वही सर्वोत्कृष्ट यज्ञ सम्पादन करने वाले होता के रूप में कर्मों के एक साथ सम्पादन करने के स्थान अन्तःकरण में विराजमान रहता है।

यह जो होता अग्नि ज्ञान और कर्म दोनों से प्रादुर्भूत होने वाला है वह सब वरणीय प्रेरणाओं को धारण किये रहता है, जो मरणधर्मा पुरुष इसके लिए अपने आपको समर्पण कर देता है, उसका शुभ विस्तार होता है ॥४॥

२ ३ २३ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३१ २ ३
अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदि-
१ २ ३ १ २ ३ १ २
स्पृशम्। ऋध्यामा त ओहैः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३क २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य दक्षस्य साधोः ।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
रथीर्ऋतस्य बृहतो बभूथ ॥
३ १ २ ३ १ २र ३ २ १ क १ २र
एभिर्नो अर्कैर्भवा नो अर्वाङ्स्वा३र्ण ज्योतिः ।
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अग्ने विश्वेभिः सुमना अनीकैः ॥५॥

हे अग्ने ! अश्व के समान वाहक (लक्ष्य पर सुगमता एवं शीघ्रता से पहुँचाने वाले) और कल्याणकारी हार्दिक संकल्प रूप तुझ अग्नि को आह्वान करने योग्य सूक्तियों द्वारा पुकारते हैं।

और हे अग्ने ! तू कल्याणकारी, विवेकयुक्त, साधक संकल्प का और विशाल सत्यज्ञान का वाहक है।

हे परमसुख के प्रापक ज्योतिःस्वरूप अग्ने ! समस्त सुखरूप दिव्य गुणों सहित उत्तम चित्त होकर इन हमारी स्तुतियों से हमारे सन्मुख--प्रत्यक्ष--हो उठ ॥५॥

इति प्रथमः खण्डः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १२ ३१२ ३१ २र २
अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्य । आ
३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २३१ २
दाशुषे जातवेदो वहा त्वम् अद्या देवाँ उषर्बुधः ॥
२ ३ २ ३१ २र ३ २ ३१ २ ३१२ ३
जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनोऽग्ने रथीरध्व-
१ २ ३२३ १ २३१२ ३१२ ३ १
राणाम् । सजूरश्विभ्यामुषसा सुवीर्यम् अस्मे
२ ३ १ २ ३२
धेहि श्रवो बृहत् ॥६॥

हे अमर ज्ञान स्वरूप ! ज्ञानोदय के चित्र-विचित्र दान (ज्ञानैश्वर्य) को खोलकर, समर्पण करने वाले भक्त के समीप, ज्ञानोदय के साथ आविर्भूत दिव्य शक्तियों को पहुँचा ।

हे अग्ने ! तू समर्पण भावनाओं का वाहक प्रिय दूत और अतएव आध्यात्मिक यज्ञों का नेता है; ज्ञान-कर्म शक्तियों और ज्ञानोदय के साथ मिलकर हमें विशाल एवं बलशाली अन्तर्ज्ञान धारण करा ॥६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २र ३ २ २र २ ३ १
विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३
जगार । देवस्य पश्य काव्यं महित्वाऽद्या ममार
१ २र
स ह्यः समान ॥
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २र
शाक्मना शाको अरुणः सुपर्ण आ यो महः शूरः
३ १ २र २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २
सनादनीडः । यच्चिकेत सत्यमित् तन्न मोघं वसु
३२ ३२उ ३ १ २र
स्पार्हमुत जेतोत दाता ॥
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
येभिर्ददे वृष्ण्या पौंस्यानि येभिरौक्षद् वृत्रहत्याय
३ २ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३२
वज्री । ये कर्मणः क्रियमाणस्य मह्न ऋतेकर्म-
३ १ २ ३२
मुदजायन्त देवाः ॥७॥

(जीवन) संघर्ष में अनेकों को मार-काट डालने वाले नवयुवक भी विघ्न-राक्षस को यह पुराण

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(वृद्ध) पुरुष इन्द्र निगल गया। इस देव की लीला तो देखो कि इसके सामर्थ्य से यह (विघ्न) जो आज मरा पड़ा है वह कल तक जीवित था।

अपनी सामर्थ्य से शक्तिमान्, दीप्तिमान्, सुपालक, जो महान्, सर्वप्रेरक, सनातन ही स्वाश्रयी है; वह जो कुछ भी जानता और जनाता है वह कभी व्यर्थ नहीं होता; वह स्पृहणीय ऐश्वर्य को जीत कर लाता और प्रदान करता है।

वह इन्द्र उन्हीं दिव्य गुणों द्वारा सुखवर्षक एवं फल प्रदायक बलों को देता है जिनसे कि वह साधन-सम्पन्न (वज्री) होकर विघ्न राक्षसों के विनाश के लिए सुखों की वर्षा करता है : ये दिव्य गुण किये हुए कर्म के अतिरिक्त क्रियमाण कर्म के महत्त्व से आविर्भूत होते हैं ॥७॥

२ ३ १ २ ३१ ३१ २र ३१२
अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः ।
३२ ३१२ ३१२
उत स्वराजो अश्विना ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ १ २३ २ २र ३२ ३ १ २
पिबन्ति मित्रो अर्यमा तना पूतस्य वरुणः ।
३ २ ३ १ २
त्रिषधस्थस्य जावतः ॥
३१ २ ३ २३१ २र ३२ ३ १ २
उतो न्वस्य जोषमा इन्द्रः सुतस्य गोमतः ।
३ १२र
प्रातर्होतेव मत्सति ॥८॥

यह दिव्यानन्द सिद्ध किया रखा है; विचार शक्तियां और प्रकाशमय ज्ञान एवं संकल्प इसका मान करते हैं।

जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति रूप तीन स्थानों में विराजमान, ज्ञानोत्पादक, विस्तृतचिति से पवित्र किये दिव्यानन्द रस का पान मित्र, अर्यमा और वरुण करते हैं।

प्रातःकाल जैसे होता (हवि समर्पण रूप कर्म करके) प्रसन्न होता है वैसे ही इन्द्र इस ज्ञानयुक्त उत्पादित ब्रह्मानन्द रस के सेवन के पश्चात् मग्न हो जाता है ॥८॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वण् महाँ असि सूर्य बडादित्य महाँ असि ।
३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३१
महस्ते सतो महिमा पनिष्टम मह्ना देव महाँ
२
असि ॥

१ २३ १२ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २
बट् सूर्य श्रवसा महां असि सत्रा देव महां असि ।
३२ ३ १ २ ३क२र ३ १ २ ३२३ ३१
मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिर-
२
दाभ्यम् ॥६॥

हे प्रेरक ! आप सचमुच महान् हैं, हे अखण्ड-नीय ! आप सत्य ही महान् हैं। सद्रूप आपकी महिमा महान् है; हे सर्वोत्तम स्तुतियोग्य ! आप अपनी महिमा से स्वयं महान हैं।

हे प्रेरक ! आप अपनी अन्तःप्रेरणा से सचमुच महान् हैं—हे प्रकाश स्वरूप ! आप निश्चय से महान् हैं। आप अपनी महिमा से दिव्य गुणों के बलवान

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पुरोहित हैं; और स्वतःव्यापक, अदम्य ज्योतिः-स्वरूप हैं ॥९॥

इति द्वितीयः खण्डः

१२ ३ १ २ ३२ ३ १ २
उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते ।
१२ ३ १ २ ३२
उप नो हरिभिः सुतम् ॥
३ १ २र३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
द्विता यो वृत्रहन्तमो विद इन्द्रः शतक्रतुः ।
१२ ३ १ २ ३ १
उप नो हरिभिः सुतम् ॥
१ २र ३ १ २र ३ १ २
त्वं हि वृत्रहन्नेषां पाता सोमानामसि ।
१२ ३ १ २ ३२
उप नो हरिभिः सुतम् ॥१०॥

दिव्य आनन्दों के स्वामिन् ! आत्मन ! इन्द्रियों से उत्पादित ज्ञान का उपयोग कर ।

जो समस्त विघ्नों का सर्वोत्तम नाशक और विविधकर्मा इन्द्र है वह दो प्रकार का—ज्ञान-एवं

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कर्म शक्ति वाला प्रसिद्ध है : वही इन्द्रियों से उत्पादित आनन्द रस का पान करे ।

हे विघ्नाविनाशक इन्द्र ! तू ही इन आनन्द-रसों का पान करने वाला है । तू ही इन्द्रियों से उत्पादित इस आनन्द रस का पान कर ॥१०॥

१ २ ३१ २३१२ ३ १२ ३ १ २३ २
प्र वो महे महेवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणु-
१ २ ३ १ २र ३ २
ध्वम् । विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः ।
३ १२ ३ १२ ३ १ २र३ १२ ३
उरुव्यचसे महिने सुवृक्तिम् इन्द्राय ब्रह्म जनयन्त
१ २ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
विप्राः । तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः ॥
२ ३ २ ३ १ २ ३ २ १ २ २र ३
इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव सत्रा राजानं दधिरे
१ २ १ २ ३ २ ३ २
सहध्यै । हर्यश्वाय बर्हया समापीन् ॥११॥

हे मनुष्यो ! अधिकाधिक बढ़-चढ़ कर उन्नति करने का दायित्व सम्भालो । और उत्कृष्ट चेतना की

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ओर मन को लगाओ। ज्ञान से परिपूर्ण करने वाला इन्द्र अपनी अभिमुख (अपनी साधना में प्रवृत्त) प्रजाओं का ही सेवक होता है।

विद्वान् साधकों ने बहुत विस्तार से वर्णन करने योग्य महान् इन्द्र का सुन्दर वचनों से वर्णन किया; ध्यानवान् पुरुष उसके नियमों का उल्लंघन नहीं करते।

उस अद्वितीय मननशक्ति सम्पन्न, सदाविराजमान, इन्द्र को वाणियां सहनशक्ति के लिए धारण करती हैं; वाणी से इन्द्र का बखान करने पर जो प्रज्ञा विकसित होती है वह सहनशक्ति प्रदान करती है। हे इन्द्र ! तू ज्ञान एवं कर्मशक्ति के लिए अपनी बन्धुभूत चितिशक्तियों को बढ़ा ॥११॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय। स्तोतारमिद्

३ १ २ ३ १ २
दधिषे रदावसो न पापत्वाय रंसिषम् ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३
शिक्षेयमिन्महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २   २र   ३ १ २ ३   २ ३   २ ३
विद्रे । न हि त्वदन्यन् मघवन्न आप्यं वस्यो
१   २   ३ २   ३ २
अस्ति पिता च न ॥१२॥

हे इन्द्र ! जितने ऐश्वर्य का अधिष्ठाता तू है, यदि मैं भी इतने का स्वामी हो जाऊं तो हे दाता ! मैं साधक को ही दे डालूं, पापकर्मा को कभी न दूं ।

हे ऐश्वर्यशालिन् ! "तुझ से भिन्न कोई प्राप्तव्य; आवास देने वाला, अथवा पालक नहीं है"—इस प्रकार स्तुति करने वाले को, वह कहीं भी हो, पहुंचाने के लिये प्रतिदिन ऐश्वर्य को प्रदान करूं ॥१२॥

३ १   २र   ३२उ   ३ २ ३   २ ३ १ २
श्रुधी हवं विपिपानस्याद्रेर्बोधा विप्रस्यार्चतो
३ २   ३ २र   ३ १ २ ३   २ ३ २
मनीषाम् । कृष्वा दुवांस्यन्तमा सचेमा ॥
२ ३   २ ३   १ २   ३२ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र
न ते गिरो अपि मृष्ये तुरस्य न सुष्टुतिमसुर्यस्य
३ २   १ २   ३ १ २
विद्वान् । सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २ ३ १२३ १२ ३ १२ ३१ २ ३
भूरि हि ते सवना मानुषेषु भूरि मनीषी हवते
२ २उ ३ १ २ ३ १ २
त्वामित् । मारे अस्मन् मघवं ज्योक् कः ॥१३॥

हे इन्द्र ! आनन्द रस का पान करने वाले, पर्वत के समान दृढ़ साधक की पुकार को सुन; स्तुति करते मेधावी की मन की गति से तू परिचित ही है। इन सेवाओं का समीप से प्राप्त कर।

हे इन्द्र ! विद्वान मैं शीघ्रता में उच्चारण की गई तेरी वाणियों पर कुछ विचार नहीं करता, मूर्ख की स्तुति को भी कुछ नहीं गिनता। तेरे नाम और अपने यश को सदा विवेक से देखता हूँ।

हे इन्द्र ! मनुष्यों में तेरे बहुत प्रकार के उपासना विधान हैं; मननशील विद्वान् तेरी बहुत स्तुति करता है; तू अपने आपको हम से दूर कभी मत कर ॥१३॥

१ २ २१ ३२ ३१२
प्रो ष्वस्मै पुरोरथमिन्द्राय शूषमर्चत ।
३ १ २ ३ २ ३ २ ३१ २ ३ २
अभीके चिदु लोककृत् सङ्गे समत्सु वृत्रहा ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३ १ २र ३१२ ३ २उ
अस्माकं बोधि चोदिता नभन्तामन्यकेषां ज्याका

३ १ २
अधि धन्वसु ॥

२उ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
त्वं सिंधूँरवासृजोऽधराचो अहन्नहिम् ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे विश्वं पुष्यसि वार्यम् ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ
तं त्वा परि ष्वजामहे नभन्तामन्यकेषां ज्याका

३ १ २
अधि धन्वसु ॥

२र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वि षु विश्वा अरातयोऽर्यो नशन्त नो धियः ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
अस्तासि शत्रवे वधं यो न इन्द्र जिघांसति ।

१ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २उ
या ते रातिर्ददिर्वसु नभन्तामन्यकेषां ज्याका

३ १ २
अधि धन्वसु ॥१४॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

इस इन्द्र के लिए इसके, वाहन सामर्थ्य को पूर्ण करने वाले बल का वर्णन करो। यह अत्यन्त समीप-चित्त में ही-प्रकाश करता है—और साथ रहकर संघर्षों में तामस अवरोधकों को नष्ट करता है; हमें प्रेरणा प्रदान करता है। काम क्रोध आदि—शत्रुओं के कमानों पर चढ़े हुए चिल्ले - इस इन्द्र को देखकर-टूट फूट जावें।

हे इन्द्र ! तू ने परमानन्द के अवरोधक को नष्ट कर इसकी अवरुद्ध धाराओं को नीचे बहाया : इस प्रकार तू साधक का मित्र बनकर वरणीय गुणों को पुष्ट करता है : हम उस मित्र का आलिंगन करते हैं। शत्रुओं के कमानों पर चढ़े हुए चिल्ले इस इन्द्र को देखकर टूट-फूट जावें। प्रज्ञा के सम्मुख काम, क्रोध आदि दुर्भावनायें उत्साह छोड़ बैठती हैं।

हे इन्द्र ! हमारी आगे बढ़ती अदानशील भावनाएं भली-भांति नष्ट हों; जो भी हमारी उदात्त भावनाओं को नष्ट करना चाहता है उस शत्रु के लिए तू वधसाधन - अस्त्र—फैंक : तेरी दानशीलता हमें

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ऐश्वर्य पहुँचाता रहे : हमारे कामादि शत्रु तेरे सम्मुख निरस्त्र हो जावें ॥१४॥

३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
रेवाँ इद् रेवत स्तोता स्यात् त्वावतो मघोनः ।
१ २ ३ १ २
प्रेदु हरिवः सुतस्य ॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
उक्थं च न शस्यमान नागो रयिरा चिकेत ।
१ २ ३ २ ३ १ २
न गायत्रं गीयमानम् ॥

१ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
मा न इन्द्र पीयत्नवे मा शर्धते परा दाः ।
१ २ ३ १ २
शिक्षा शचीवः शचीभिः ॥१५॥

हे ऐश्वर्यवन ! तझको पहुँचते हुए, इन्द्रियों से सम्पन्न एवं निष्पादित दिव्यानन्दरूप ऐश्वर्य का वही अधिपति हो जाता है जो तेरा स्तोता हो।

अज्ञानी मूक द्वारा गाये गये स्तुति-गान को तथा गाये गये साम को भी क्या सर्वगत नहीं पह-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चानता ? पहचानता ही है।

अपनी ज्ञानशक्तियों से शक्तिमान हे इन्द्र ! तू हमें इस प्रकार शिक्षित कर कि हम अपनी हिंसक एवं बल से दबाती दुर्भावनाओं के अधीन न हो जायं ॥१५॥

१ २ ३ १२ ३२३ १ २ ३ २
एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम् ।
३ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥
२ ३ २ ३ १२ ३२ ३ १ २ ३ १२
अत्रा वि नेमिरेषामुरां न धूनुते वृकः ।
३ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २ ३१ २
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥
२ ३ २ ३ १२ ३ २ ३ १ २र
आ त्वा ग्रावा वदन्निह सोमी घोषेण वक्षतु ।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३१ २
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥१६॥

हे इन्द्र ! साधक की हार्दिक स्तुति को तू अपने प्रापक साधनों—इन्द्रियों—समेत सुन । प्रकाशपूर्ण

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अवस्था के वासी हे इन्द्र ! तू उस प्रकाशावस्था के अधिष्ठाता की दिव्य अवस्था को प्राप्त कर।

जिस प्रकार भेड़िया भेड़ को धुन देता है वैसे ही यह केन्द्रभूत इन्द्रशक्ति इन्द्रियों को धुनती रहती है : अपने वश में रखती है। प्रकाशपूर्ण अवस्था के वासी तू उस प्रकाशावस्था का अधिष्ठाता बन।

हे इन्द्र ! प्रेरणा करता हुआ परमानन्द घोषणा-पूर्वक तुझे प्राप्त हो। (शेष यथापूर्व)।

१२ ३ २ ३ १ २ ३ १२
पवस्व सोम मन्दय न्निन्द्राय मधुमत्तमः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
ते सुतासो विपश्चितः शुक्रा वायुमसृक्षत ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
असृग्रं देववीतये वाजयन्तो रथा इव ॥१७॥

हे मधुरतम सोम ! परमानन्द ! तू हर्ष देता हुआ इन्द्र के लिए प्रवाहित हो।

अभिषुत, मेधा को विकसित करने वाले, तेजस्वी परमानन्दरस ने प्राणशक्ति को उत्पन्न किया।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वाहक रथों के समान वाहक और बल एवं ज्ञान प्रदान करते परमानन्दरस दिव्यगुणों का आधान करने के लिए परिस्रुत हो रहे हैं ॥१७॥

इति चतुर्थः खण्डः

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम् । य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा । घृतस्य विभ्राष्टिमनु शुक्रशोचिष आजुह्वानस्य सर्पिषः ॥

यजिष्ठं त्वा यजमाना हुवेम ज्येष्ठमङ्गिरसां विप्र मन्मभिर्विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः । परिज्मानमिव द्यां होतारं चर्षणीनाम् । शोचिष्केशं वृषणं यमिमा विशः प्रावन्तु जूतये विशः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२३ ३२ ३ १२ ३१ २३ १२३
स हि पुरू चिदोजसा विरुक्मता दीद्यानो
१२ ३१ २३१ २र ३२ ३२
भवति द्रुहन्तरः परशुर्न द्रुहन्तरः। वीडु
३ २ ३ १२३ २३ १२३ २ ३२
चिद्यस्य समृतौ श्रुवद् वनेव यत् स्थिरम्।
३ १२ ३ १२ ३२३ १२
निष्षहमाणो यमते नायते धन्वासहा नायते ॥१८॥

मैं अग्नि को होता, धन का दाता, अति बलशाली, ज्ञानी व कर्मकाण्डी विद्वान् की भांति प्रत्येक उत्पन्न पदार्थ को जानने व प्राप्त करने वाला समझ कर उसका ध्यान करता हूँ। वह दिव्य और दिव्यताधायक अपनी उन्नति की ओर ले जाने की सामर्थ्य के कारण उत्तम पथ-प्रदर्शक है। वह अत्यन्त दीप्तिमान् अग्नि, समर्पित की जा रही समर्पणशील विचारधाराओं के प्रदीप्त होने पर प्रज्वलित हो उठता है।

हे बुद्धि-विकासक, ज्योतिःस्वरूप अग्ने ! हम यजमान सर्वोपरि पूजनीय, ज्ञानियों में सबसे बड़े

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तुझ अग्नि की विचारों और सुविकसित विचारों के द्वारा स्तुति करते हैं। तू द्युलोक की भांति सब को आवृत्त किए हुए है और मनुष्यों पर कृपालु है। तुझ कान्तिमय और वर्षणशील का सेवन, प्रजाएं प्रेरणा के लिए करती हैं।

वह अपने विशेषरूप से चमकते ओज से खूब प्रकाशित होना, वृक्षों को काटने के फरसे जैसा, शत्रु-मनोवृत्तियों को काटने वाला है। इसके टकराने पर दृढ़ से दृढ़ और स्थिर भी (दुष्ट मनोवृत्ति) वृक्ष की तरह भग्न हो जाती है। वह सब दुर्वृत्तियों) का अभिभव कर व्यवस्था स्थापित करता है—पीछे नहीं हटता; धनुर्धारी विजयी की भांति पीछे नहीं हटता ॥१८॥ इति पञ्चमः खण्डः

॥ इति विंशोऽध्यायः ॥

टिप्पणी—पाठ भेद से कई प्रतियों में बीसवें अध्याय की यहां समाप्ति नहीं होती। उनके मत से सामवेद में २१ ही अध्याय हैं। परन्तु इससे मन्त्र संख्या में अन्तर नहीं पड़ता।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथैकविंशोऽध्यायः

ऋषिः—१ अग्निः पावकः। २ सोभरिः। ४ अग्निः प्रजापतिर्वा। ५, ६ अवत्सारः, अन्ये च ऋषयो दृष्टलिङ्गाः। ७ मृगः। ८ वत्सप्रीः। ९ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ। १० त्रिशिराः सिन्धुद्वीपोवा। ११ उलः। १२ सुपर्णः। १३ वेनः। [३, ४, ७, १२ इति साम]॥ देवता—१, २, ३, ८ अग्निः। ५, ६, ७ विश्वे देवाः। ४, ९ इन्द्रः। १० आपः। ११ वायुः। १६ वेनः॥ छन्दः—१ (१, २) विष्टारपंक्तिः। (३, ५) सतो बृहती] (६) उपरिष्टाज्ज्योतिः। (४) त्रिष्टुप्। २ प्रागाथं काकुभम् [विषमा ककुप् समा सतो बृहती]। ३ जगती। ५, ६, १२, १३ त्रिष्टुप्। ४, ७—११ गायत्री। ३, ४, ७, १२ इति साम॥ स्वरः—१ (१, पञ्चमः प्रथमस्य, मध्यमः धैवतः (३, ५)। २ मध्यमः। ३, निषादः। ५, ६, १६, १३ धैवतः। ४, ७, ८—११ षड्जः॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ २३ २३ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्ने तव श्रवो वयो महि भ्राजन्ते अर्चयो
१२ ३ १२ ३ १२३ ३
विभावसो । बृहद्भानो शवसा वाजमुक्थ्यां३
१ २ ३ १२
दधासि दाशुषे कवे ॥
३ १२ ३१२ ३ १२ ३ १ २
पावकवर्चाः शुक्रवर्चा अनूनवर्चा उदियर्षि
३ १ २ ३ २ ३ १२ ३ २३ १ २ ३ २ ३
भानुना । पुत्रो मातरा विचरन्नुपावसि पृणक्षि
१२ ३ २
रोदसी उभे ॥
१ २ ३ २ ३१ २
ऊर्जो नपाज् जातवेदः सुशस्तिभिर्मन्दस्व
३ १ २ ३ २ २३ ३ १ २३१ २ ३ १
धीतिभिर्हितः । त्वे इषः सं दधुर्भूरिवर्पसश्चित्रो-
२ ३१ २
तयो वामजाताः ॥
३ १२ ३ १ २३ १ २र
इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व जन्तुभिरस्मे रायो अमर्त्य ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २३ २ ३ १२३ १ २ ३१२ ३१
स दर्शतस्य वपुषो वि राजसि पृणक्षि दर्शतं
२र
क्रतुम् ॥

३ १२ ३२ ३ १२३ १२ ३ १२ ३२
इष्कर्तारमध्वरस्य प्रचेतसं क्षयन्तं राधसो महः।
३ २ ३ १२ ३१२ ३२र १२ ३२
रातिं वामस्य सुभगां महीमिषं दधासि सानसिं
३२
रयिम् ॥

३ १ २ ३२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
ऋतावानं महिषं विश्वदर्शतम् अग्निं सुम्नाय
३ १ २र १ २ ३१२
दधिरे पुरो जनाः। श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं त्वा
३ १ २ ३ २
गिरा दैव्यं मानुषा युगा ॥१॥

हे ज्ञानस्वरूप ! प्रकाशक ! अपनी ज्योति से सब में बसने वाले ! तेरी महती प्रेरिका ज्ञानशक्ति तथा दूसरी शक्तियां ज्वालारूप में प्रकाशित हो रही

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

है। हे अतिशय दीप्तिमन् ! तू समर्पक क्रान्तद्रष्टा को प्रशंसनीय ज्ञान प्रदान करता है।

पवित्र, प्रदीप्त और पर्याप्त तेजस्वी अग्ने ! तू अपनी कान्ति के सहित उदय होता है तो, जैसे तेजस्वी पुत्र मां-बाप की रक्षा करता है—वैसे तू दोनों लोकों का पालन करता है।

बल को कभी न गिराने वाले, सर्वव्यापक अग्ने ! तू उत्तम स्तुतियों और विचारणाओं से स्थापित हुआ प्रसन्न हो; नाना रूप, बहुविध-उन्नतिकारक सुसंस्कृत प्रेरणायें साधक तुझ में ही रखते हैं - तुझ से साधक अनेक प्रकार के ज्ञान व प्रेरणाएं प्राप्त करते हैं।

हे अमर अग्ने ! अपने प्रभावरूप से बढ़ता हुआ तू हमारे लिए ऐश्वर्य का विस्तार कर : अपने दर्शनीय आकार-प्रकार के कारण तू विराजमान है। हमें भी उस दर्शनीय संकल्प से संयुक्त कर।

आध्यात्मिक यज्ञ के प्रेरक, प्रज्ञानवान, महान् ऐश्वर्य के स्वामी तुझ अग्नि की हम स्तुति करते हैं;

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तू सुन्दर पदार्थों की, दानशील सौभाग्यवती, ऐश्वर्य-प्रेरणा को बांटकर विभक्त की जाने वाली ज्ञान-प्रेरणा को धारण करता है : साधक को प्रदान करता है।

साधकजन, सत्यज्ञान से युक्त, बड़े सामर्थ्यवान् विश्व को दर्शाने वाले अग्नि को सुखप्राप्ति के लिये अपने सम्मुख (आदर्शरूप में) रखते हैं। और मनस्वीजन तुझ प्रार्थना सुन लेने वाले, सुप्रसिद्ध दिव्यगुणाधायक अग्नि को अपनी स्तुति से संयुक्त करते हैं : तेरी स्तुति करते हैं ॥१॥

इति प्रथमः खण्डः

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाज-
२ ३ २ ३ १ २र
कर्मभिः यस्य त्वं सख्यमाविथ ॥
१२ ३ १ २र ३ २ ३ २३ १ २
तव द्रप्सो नीलवान् वाश ऋत्विय इन्धानः
३ १ २ २ ३ २ २ ३१ २ ३२ ३१
सिष्णवा ददे । त्वं महीनामुषसामसि प्रियः क्षपो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वस्तुषु राजसि ॥२॥

हे ज्ञानकर्ममय अग्ने ! जिसकी मित्रता तू स्वीकार कर लेता है, वह तेरे वीरतापूर्ण साधनों (ऐश्वर्यसाधक कर्मों) की सहायता से तर जाता है। हे आनन्दरस के सेचक ! मैं आश्रय चाहता हुआ, नियम से तुझे प्रदीप्त करके तेरे द्रवणशील रसरूप बल को धारण करता हूँ। तू बड़ी उषारूप प्रज्ञाओं का प्रिय है—उनके उदय के साथ आता है; और पदार्थों में अज्ञान या दुःखनाशक बल को प्रकाशित करता है ॥२॥

तमोषधीर्दधिरे गर्भमृत्वियं तमापो अग्निं जनयन्त मातरः। तमित् समानं वनिनश्च वीरुधोऽन्तर्वतीश्च सुवते च विश्वहा ॥३॥

औषधियां उसको ऋत्वनुकूल गर्भरूप में धारण

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

करती हैं; मातृभूत जलों ने उसे प्रकट किया; और ऐसे ही उसको वृक्ष-वनस्पतियां सब दिन गर्भरूप में धारण करती और उत्पन्न करती हैं। (यहां जीवाग्नि का वर्णन है।) ॥३॥

३ १ २र ३ २ ३ १ २र
अग्निरिन्द्राय पवते दिवि शुक्रो वि राजति ।
१ २ ३ १ २
महिषीव वि जायते ॥४॥

संकल्परूप संवित् इन्द्र की ओर जाती है और देदीप्यमाना वह दिव्यता में विराजमान होती है; फिर महतीशक्ति के रूप में प्रकट होती है ॥४॥

२ ३ २ ३ १ २र २ ३ २ ३ २ ३
यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु
१ २ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३
सामानि यन्ति । यो जागार तमयं सोम आह
२ ३ १ २ ३ १ २
तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः ॥५॥

जो निद्रारूप अज्ञान से उठ जाता है, स्तुति-मंत्र इसको ही बोध देते हैं, इसी प्रकार जागने वाले को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ही साम का ज्ञान होता है और जागने वाले को ही परमानन्दरूप रस 'मैं तेरा मित्र हूँ' इन शब्दों में स्वागत करता है ॥५॥

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २३
अग्निर्जागार तमृचः कामयन्तेऽग्निर्जागार तमु
१ २ ३ १ २ ३ २३१ २र ३
सामानि यन्ति । अग्निर्जागार तमयं सोम आह
२ ३१२ ३ १ २
तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः ॥६॥

संकल्परूप अग्नि मनुष्य में सदा जाग्रत रहती है; ऐसे अग्निवान् को ही स्तुतिमन्त्र बोध देते हैं; साम का ज्ञान भी अग्निवान् को ही होता है और परमानन्दरूप रस भी अग्निवान् को ही अपना मित्र कहकर पुकारते हैं ॥६॥

१२ ३ १ २ ३ २ ३ १२ ३ १ २
नमः सखिभ्यः पूर्वसद्भ्यो नमः साकंनिषेभ्यः ।
३ १ २र ३ १२
युञ्जे वाचं शतपदीम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २र१ ३१२ ३ १ २ ३१२
युञ्जे वाचं शतपदीं गाये सहस्रवर्तनि ।
३ १ २र३ १२
गायत्रं त्रैष्टुभं जगत् ॥
३ १ २र३ २३ १र२ ३ २ ३ १ २
गायत्रं त्रैष्टुभं जगद् विश्वा रूपाणि सम्भृता ।
३१ २र ३ २
देवा ओकांसि चक्रिरे ॥७॥

(सभा में) पहले से आकर बैठे मित्रों को नमस्कार; साथ-साथ आकर बैठने वाले मित्रों को नमस्कार, इस प्रकार मैं असंख्य पदों की प्रशस्त वाणी का प्रयोजन करता हूँ ।

असंख्य पदों की प्रशस्त वाणी का प्रयोग करने के पश्चात् मैं अनेक प्रकार के रागों में गायत्री, त्रिष्टुप् और जगती छन्द के सामों का गायन करता हूं ।

गायत्री, त्रिष्टुप् और जगती छन्दों के साम विविध रूपों में विद्यमान् हैं; उन्हीं में दिव्य गुणों का आवास है : वे दिव्यभावनाओं के प्रेरक हैं ॥७॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २उ ३ १ २३ २उ १ ३ २ ३
अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निरिन्द्रो ज्योतिर्ज्योति-
१ २ २३ २ ३ २ ३ १ २
रिन्द्रः । सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः ॥
१२३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
पुनरूर्जा नि वर्तस्व पुनरग्न इषायुषा ।
१ २ ३ १ २
पुनर्नः पाह्यंहसः ॥
३ २ ३ १ २र३ २ ३ १ २ ३ १ २
सह रय्या नि वर्तस्वाग्ने पिन्वस्व धारया
३ १ २ ३ २३ १ २
विश्वप्स्न्या विश्वतस्परि ॥८॥

यह प्रसिद्ध अग्नि ज्योतिःस्वरूप है; ज्योतिस्वरूप होने से वह अग्नि है । इन्द्र भी ज्योतिःस्वरूप है; अतएव ज्योतिःस्वरूप को इन्द्र कहते हैं । सूर्य भी ज्योतिः है; अतएव ज्योतिःस्वरूप को सूर्य कहते हैं ।

हे अग्ने ! तू अपने बल, प्रेरणा और प्राणबल रूप में पुनः-पुनः प्रकट हो; और हमें पाप-कर्मों से बार-बार बचा ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे अग्ने ! अपने ऐश्वर्यमय रूप से पुनः प्रकट हो और सर्वव्यापिनी आनन्द धाराओं से हमें चारों ओर से तृप्त कर ॥८॥

इति द्वितीयः खण्डः

१२ ३१उ ३ २र ३ २ ३ २३ २
यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत् ।
३ २ ३ १२
स्तोता मे गोसखा स्यात् ॥
१२ ३ १ २३ १ २ ३ १ २
शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे ।
२ ३ १ २र ३ २
यदहं गोपतिः स्याम् ॥
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते ।
१ २र ३ १ २
गामश्वं पिप्युषी दुहे ॥९॥

हे इन्द्र ! यदि इन्द्रियों का साथी यह मेरा मन स्तुति करने वाला हो तो मैं भी तेरे समान अकेला ही वस्तुओं--ज्ञान एवं कर्मशक्तियों--का अधिष्ठाता

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बन जाऊं ।

यदि मैं इन्द्रियों का (वस्तुतः स्वामी हो जाऊं तो हे शक्तिमन् ! जितेन्द्रिय को शिक्षा दूं और उसे ही ज्ञान-दान देना चाहूँ ।

हे इन्द्र ! तेरी दूध देने वाली धेनुरूप, सत्यवाक् साधक यजमान को उसकी ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियों को तृप्त करती हुई दूध दे । परमात्मा की सत्यवाक् साधक को सर्वोत्तम फल देती है ॥९॥

२ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३१ २
आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन ।
३१ २र ३ १ २
महे रणाय चक्षसे ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २
यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ।
३ १ २ ३ १२
उशतीरिव मातरः ॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।
१ २ ३१२
आपो जनयथा च नः ॥१०॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ज्ञान की जलधारायें, सामान्य जलधाराओं के समान हमारा कल्याण करें, वे हमें (ज्ञान) बल दें और हमें महान् रमणीय रूप प्राप्त हो।

ज्ञान की जलधाराओ! तुम्हारा जो अति कल्याणकारी आनन्दरस है उसे इस लोक में हमें प्राप्त कराओ: जैसे लालसामयी माताएं पुत्रों को पोषण प्रदान करती हैं वैसे ही तुम हमारा पोषण करो।

हे जल-धाराओ! उस आनन्दरस को पर्याप्त रूप में प्राप्त करने के लिए हम तुम्हारे प्रति गमन करें जिसके ऐश्वर्य के लिये तुम हमें प्रेरित करती हो; और हमें समर्थ बनाती हो ॥१०॥

२ ३ १ २ ३२ ३ १ २३ १ २ ३२
वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे।
२ ३ १ २
प्र न आयूंषि तारिषत् ॥
३१ २ ३ १ २ ३२उ ३ २ ३ १ २
उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २
स नो जीवातवे कृधि ॥

२ ३ १ ३ २ २ ३ १ २ ३ १ २
यददो वात ते गृहे३ऽ तं निहितं गुहा ।

१ २ ३ १ २
तस्य नो धेहि जीवसे ॥११॥

गति से सर्वव्यापक परमात्मा हमारे लिए ऐसे उपाय रचे कि व्याधियों और आधियों का शमन होकर हमें प्रसन्नता प्राप्त हो तथा हम सुख से जीवन के पार लग जांय।

हे सर्वव्यापक परमात्मा, तू ही हमारा पालक पिता, भरणकर्ता भाई और साथ देने वाला मित्र है। हमें जीवन के लिये समर्थ बना।

हे सर्वव्यापक ! जो वह प्रसिद्ध अमरत्व तुझ में छिपा पड़ा है, जीवन के लिये उसका हमें पान करा॥११॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३
अभि वाजी विश्वरूपो जनित्रं हिरण्ययं बिभ्र-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ३ १ २
दत्कं सुपर्णः । सूर्यस्य भानुमृतुथा वसानः परि
३ १ २ ३ ३ १ २
स्वयं मेधमृज्रो जजान ॥

३ १ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३
अप्सु रेतः शिश्रिये विश्वरूपं तेजः पृथिव्यामधि
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३
यत् संबभूव । अन्तरिक्षे स्वं महिमानं मिमानः
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
कनिक्रन्ति वृष्णो अश्वस्य रेतः ॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ३ १ २ ३ २
अयं सहस्रा परि युक्ता वसानः सूर्यस्य भानुं
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
यज्ञो दाधार । सहस्रदाः शतदा भूरिदावा धर्ता
३ १ २ ३ ३ १ २
दिवो भुवनस्य विश्पतिः ॥१२॥

वह बलवान् नाना रूपधारी, उत्तम प्रज्ञाशक्ति से सम्पन्न, अपने श्रेष्ठ तेजःसम्पन्न मूलस्थान को न भूलता हुआ, नियमपूर्वक प्रेरक सूर्य की कान्ति को

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

धारण करता हुआ अग्नि अपने आप उस पवित्र पुरुष को प्राप्त कर लेता है।

वह अग्नि जलों में बीजरूप में आश्रित है और पृथिवी में से विश्वरूप तेज के नाम से उत्पन्न होता है : अन्तरिक्ष में भी अपनी महिमा को फैलाता हुआ सब के पिता सर्वव्यापक वीर्यसेक्ता परमात्मा के सामर्थ्य का बखान करता है।

वह यज्ञरूप अग्नि प्रकाशलोक का धारक, लोक की सब प्रजाओं का अधिष्ठाता, सहस्रों, सैंकड़ों, बहुत-सी वस्तुओं का दाता हजारों रूपों को धारण करता हुआ सूर्य की कान्ति को भी धारण करता है ॥१२॥

१२ ३२उ ३ १ २र ३ १ २र ३ १
नाके सुपर्णमुप यत् पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्य-
२ १२ ३ १२ ३२ ३२३
चक्षत त्वा। हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य
१ २ ३१ २३ ३
योनौ शकुनं भुरण्युम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ १ २ ३२र ३ १ २ ३ २ ३ १
ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थात् प्रत्यङ् चित्रा
२र३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ २ ३२
बिभ्रदस्यायुधानि । वसानो अत्कं सुरभिं दृशे
१ २र ३ १ २
कं स्वा३र्ण नाम जनत प्रियाणि ॥
३ १ २ ३२३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३
द्रप्सः समुद्रमभि यज् जिगाति पश्यन् गृध्रस्य
१२ ३ १२ ३२ ३१२ ३ १२ ३
चक्षसा विधर्मन् । भानुः शुक्रेण शोचिषा चका-
२ ३ १२ ३ १२ ३ १ २
नस्तृतीये चक्रे रजसि प्रियाणि ॥१३॥

हार्दिक मित्रभाव रखते हुए हमने तुझ इन्द्र को एक ऐसे शक्तिशाली पक्षी के रूप में देखा जो दिव्य सुखधाम की ओर सुगमता से उड़ा जा रहा है; पांव उसके चमकीले (प्रकाशपूर्ण) हैं, तथा विघ्न-निवारक दिव्यशक्ति का सन्देशवाहक वह नियन्ता द्वारा अधिष्ठित स्थान में घूमता फिरता है।

वह इन्द्रियों का वशी इन्द्र, अपने विविध यम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

नियमादि साधनों को प्रत्यक्षतः धारण करता हुआ मोक्षमार्ग में स्थित होता है। वह व्यापक सुगन्ध से युक्त सुखमय अवस्था को देखने (प्राप्त करने) के लिए प्रिय सुखमय रूप को ही धारण करता है।

वह वेगवान् इन्द्र आनन्दरस के अगाध समुद्र की ओर जो गति करता है तो ऐसा प्रतीत होता है कि गृध्र-दृष्टि (याञ्चा भरी दृष्टि) से देखता अन्तरिक्ष में प्रदीप्त दीप्ति से चमकता सूर्य तृतीय लोक—अन्तरिक्ष में—अपने प्रिय मनोरथों को पूरा कर रहा है ॥१३॥

इति तृतीयः खण्डः

॥ इत्येकविंशोऽध्यायः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अथ द्वाविंशाऽध्यायः

ऋषिः—१—४, ५ (१, २) (३) ८ (२) अप्रतिरथा । ५ (३) ६ (३) ८ (१, ३) पायुः । ६ (१, २)। ७ (१, २) शासः । ६ (१) जयः । (२, ३) गोतमः ॥ देवता—१, ३, ४ इन्द्रः । २ (१) बृहस्पतिः (२, ३) ३ इन्द्रः । ५ (१) अप्वा (२) इन्द्रो मरुतो वा (३) इषवः । ६, ८ लिंगोक्ता संग्रामाशिषः । ६ (१) इन्द्रः (२, ३) विश्वेदेवाः ३ ॥ छन्दः—१—४ त्रिष्टुप् । ५, ८ (१) त्रिष्टुप् (२—३) अनुष्टुप् । ६, ७ (३) पंक्तिः (१, २) अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१—४, ६ धैवतः । ३, ८ (१) धैवतः (२—३) गान्धारः । ६—७ (३) पञ्चमः (१—२) गान्धारः ॥

३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २र
आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभ-

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
णश्चर्षणीनाम् । संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३१ २र ३१ २र
शतं सेना अजयत् साकमिन्द्रः ॥

३१ २ ३१२ ३ १२ ३१२
संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्य-

३१२ ३ १२ १ २र ३ १ २ ३
वनेन धृष्णुना । तदिन्द्रेण जयत तत् सहध्वं

१२ ३ १ ३ १ २
युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा ॥

१ २र ३ १ २३ १ २३ १ २र ३ २र ३
स इषुहस्तैः स निषं गिभिर्वशी सं स्रष्टा स युध

१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ ३
इन्द्रो गणेन । सं सृष्टजित् सोमपा बाहुशर्ध्यू३-

१२ ३ १२ ३१ २
ग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता ॥१॥

यह इन्द्र (प्रज्ञाशक्ति) जो व्यापक है, तीक्ष्णता से पदार्थों के भीतर प्रवेश कर उनके भेद को जानने वाला है, शक्तिशाली वृषभ की भांति भयंकर, आनन्द मेघ की भांति ज्ञान की वर्षा करने वाला, इन्द्रियों को भली-भांति गति देने वाला, प्रेरक,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आलस्यरहित, एकमात्र सामर्थ्यवान् एक साथ सैंकड़ों वृत्तियों को वश में कर लेता है।

प्रेरक, निरालस, जयशील, विघ्नों से युद्ध करने वाले, साधना से अविचल, धैर्यवान्, ज्ञान को हाथों में लिए, सुखवर्षक इन्द्र की सहायता से इस जीवन-संघर्ष में विजय प्राप्त करो।

वह इन्द्र ज्ञान-साधना से सम्पन्न, नित्य साथ रहने वाले अपने साथी विचार-प्रवाहों द्वारा वश में करने वाला अपने गण का संगठन कर उसकी सहायता से योद्धा शत्रुभावनाओं को जीत लेता है। यह इन्द्र परमानन्दरस का पान कर, बाहुबली उग्रधन्वा धनुर्धारी की भांति अपनी फैंकी हुई (दूर तक मार करने वाली) शक्तियों से शत्रुभावनाओं को मार गिराता है ॥१॥

१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहामित्राँ अपबाध-
३ १ २र ३ २ ३ १ २र३ १
मानः प्रभञ्जन् त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्मा-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

२ ३ १ २र
कमेध्यविता रथानाम् ॥

३ १ २र३ १२३ १२ ३ १
बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी
२र ३२ ३ १ २ ३ १२ ३ १
सहमान उग्रः । अभिवीरो अभिसत्वा सहोजा
२र ३ २३ १ २ ३ २
जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित् ॥
३ १ २ ३२३ १२ ३ १२ ३१ २ ३ २ ३
गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्त-
१ २ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २
मोजसा । इमं सजाता अनु वीरयध्वमिन्द्रं
३ २ ३ १ २
सखायो अनु सं रभध्वम् ॥२॥

हे बृहस्पते इन्द्र ! तू विघ्नापहारक दुर्भावनाओं को दूर से ही परे करता हुआ अपने रथरूप देह सहित परिभ्रमण कर; दुर्भावनाओं की सेनाओं को तोड़ता फोड़ता, हिंसक वृत्तियों को जीतता हुआ, हमारे इन देहों का रक्षक हो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अपने बलाबल का जानने वाला इन्द्र, अनुभवी, शक्तियों से स्वयं शक्तिमान्, सात्विक बल, ओज और ज्ञान से युक्त इन्द्रियों के सामर्थ्य का लाभ उठाने वाला, मोक्ष को विजय करने के साधनभूत रथ पर बैठता है ।

हे सहोत्पन्न मित्रभूत इन्द्रियो ! तुम उस देह-बन्धन को काटने वाले, ज्ञानरूप तलवार हाथ में लिए हुए अपने सामर्थ्य से कामक्रोधादि शत्रुओं का मर्दन करने वाले, लक्ष्य मोक्ष को विजय करने हारे इन्द्र के पीछे चलकर स्वयं सामर्थ्यवान बनो और उसके शासन में ही रहो ॥८॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३२ ३१
अभिगोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो वीरः शत-
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २ ३
मन्युरिन्द्रः । दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्योऽस्माकं
१ २ ३ २ ३ २
सेना अवतु प्र युत्सु ॥
१ २ ३ २ ३ ३ ३ १ २ ३२ ३२ ३२
इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३ १ २ ३ १ २ र
सोमः। देवसेनानामभि भञ्जतीनां जयन्तीनां
३ १ २ ३ १ २
मरुतो यन्त्वग्रम् ॥

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतां
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ १ २
शर्ध उग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां घोषो
३ २ ३ १ २ ३ १ २
देवानां जयतामुदस्थात् ॥३॥

यह इन्द्र, देहों के भीतर अपने सामर्थ्य से विचरता हुआ शरीर के सुख की चिन्ता न करने वाला, सैंकड़ों मननशक्तियों से युक्त, अचल, दुर्वृत्तियों की सेनाओं को दबाता हुआ, अद्वितीय होकर आत्मिक-संघर्षों में हमारी सात्विक सेनाओं की रक्षा करे।

सामने मार-काट करतीं, विजय प्राप्त करतीं इन देवसेनाओं का नेता इन्द्र है, बृहस्पति दक्षिण ओर और यज्ञ बाईं ओर तथा सोम सामने चले। इस प्रकार जब ये सेनाएं तोड़-फोड़ करतीं, जीतती बढ़ें

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तो मरुत् आगे-आगे चलें।

सुखवर्षक इन्द्र का, सब के स्वामी वरुण का, आदित्यों और मरुतों का बल तेजस्वी हो। विशाल चित्त, भुवन-विजेता, असुरभावनाओं के विजयी देवभावों का नाद ऊपर उठ रहा है ॥३॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १
उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत् सत्वनां मामकानां
२ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १
मनांसि। उद् वृत्रहन् वाजिनां वाजिना न्युद्
२र ३ १ २ ३ १ २
रथानां जयतां यन्तु घोषाः ॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २र ३
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषव-
१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १
स्ता जयन्तु। अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माँ
२ ३ १ २
उ देवा अवता हवेषु ॥
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
असौ या सेना मरुतः परेषामभ्येति न ओजसा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ १ २ ३ ३ १ २ ३ २३१२ ३ २
स्पर्धमाना । तां गूहत तमसापव्रतेन यथैतेषामन्यो
३ २३ ३ २
अन्यं न जानात् ॥४॥

हे ज्ञानवन् ! दुर्वृत्तियों से युद्ध करने के साधनों को उन्नत कर और मेरी सात्विक मनोवृत्तियों को प्रसन्नता से युक्त कर । हे अज्ञानावरण-नाशक ! वाणीरूप इन्द्रियों की ज्ञानशक्ति को बढ़ा, विजयशीलों के शब्द ऊंचे उठें ।

देव और आसुरी वृत्तियों के प्रज्ञापक चिन्हों के आपस में टकराने पर इन्द्र हमारा हो—वह विजयी हो । हमारी—दिव्य-भावनाएं—विजयशील हों । हमारे योद्धा उत्कृष्ट रहें; प्रार्थना के समय इन्द्रियां दिव्यभावनाओं को ही पुकारें ।

हे प्राणशक्तियो ! वह जो सेना दुर्भावनाओं की, बल से प्रति स्पर्द्धा करती आ रही है उसको (दुर्भावनाओं को) मूर्छित कर देने वाली क्रिया-शक्तसे इस प्रकार ढक दो कि इनमें से एक दूसरे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

को पहचान भी न सके।४॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे
१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २१ ३ २ ३
परेहि। अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेना-
२ ३ १ २
मित्रास्तमसा सचन्ताम् ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ २र
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३
अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते। गच्छा-
२ ३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
मित्रान् प्र पद्यस्व मामीषां कं च नोच्छिषः ॥५॥

हे पापवृत्ते! तू इन दुर्भावनारूप हमारे शत्रुओं के चित्त को लुभा कर उनको भली-भांति जकड़ ले, उन तक पहुँच और उनके हृदयों में प्रविष्ट हो शोकों से उन्हें जला डाल; वे शत्रु (दुर्भावनाएं) गाढ़

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अन्धकारमय मोह से युक्त हो जांय।

हे मनुष्यों ! आगे बढ़ो; विजयी होओ; इन्द्र तुमको सुख और शांति दे। तुम्हारी बाहुएं असह्य हों; जिससे तुम अजेय हो जाओ।

हे अज्ञान को नष्ट करने वाली, वेदज्ञान से पैनी की गई आत्मशक्ति ! मुक्त होकर तू उन तक पहुँच और उन बाधक शत्रुभूत भावनाओं तक पहुँच कर उनमें से किसी को भी शेष न रहने दे ॥५॥

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
कङ्का सुपर्णा अनु यन्त्वेनान् गृध्राणामन्नमसावस्तु
१ २ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३
सेना। मैषां मोच्यघहारश्च नेन्द्र वयांस्येनाननु-
१ २ ३ १ २
संयन्तु सर्वान् ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३
अमित्रसेनां मघवन्नस्मां छत्रूयतीमभि।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
उभौ तामिन्द्र वृत्रहन्नग्निश्च दहतं प्रति ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यत्र बाणाः संपतन्ति कुमारा विशिखा इव ।
तत्र नो ब्रह्मणस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा
शर्म यच्छतु ॥६॥

जैसे अच्छी उड़ान वाले गीध हार कर गिरते शत्रुओं पर टूट पड़ते हैं और वह सेना उनकी भक्ष्य बन जाती है, वैसे ही सुखाभिलाषी पुरुष उत्तम साधनों सहित ही अन्तः शत्रुओं के पीछे पड़ जावें और उनमें से किसी को भी न छोड़ें । इनमें से एक भी न छूटे; हे इन्द्र ! पाप का साथी भी कोई न बचे; हमारे गतिशील शुभ विचार उड्डनशील पक्षियों की भांति इनका पीछा करें।

हे ऐश्वर्यशालिन् इन्द्र ! हमारे प्रति शत्रुभावना से आती हुई दुर्भावनाओं की सेना को, हे वृत्रहन् ! तू और अग्नि--दोनों--मिलकर जला डालो ।

जहां शिखा-रहित (मुंडित) बालकों के समान

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बाण भी शिखा--नोक--से रहित होकर पड़ रहे हों अर्थात् कुंठित हो जाते हों--जहा जीवन-संघर्ष में सब साधन कुंठित हो जाते हैं वहां अखण्डित सब बड़े-बड़ों का भी अधिष्ठाता परमात्मा हमें शान्ति और सुख प्रदान करे, वह सदा हमारा कल्याण करे ॥६॥

२उ ३ १ २र ३ २ ३२ ३ १२
वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज ।
२ ३ १ २ ३१ २ ३ १२
वि मन्युमिन्द्र वृत्रहन्नमित्रस्याभिदासतः ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२
वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः ।
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२
यो अस्माँ अभिदासत्यधरं गमया तमः ॥

१ २ ३ १ २र३ १२ ३ १ २ ३
इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ युवानावनाधृष्यौ सुप्रती-
१ २ ३ २ १ २ ३२उ ३ १ २३
काशसह्यौ । तौ युञ्जीत प्रथमौ योग आगते

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१ २ ३१ २र ३ १ २ ३२
याभ्यां जितमसुराणां सहो महत् ॥७॥

हे इन्द्र ! हिंसक और लोभ वृत्तियों को नष्ट कर; विघ्न की ठोड़ी को फाड़ डाल; और हमें अपना दास बनाने वाली शत्रुभूत दुर्भावना के क्रोध को नष्ट कर दे।

हे इन्द्र ! हमारी लोभवृत्तियों को नष्ट कर, मोर्चा लगा कर हम पर चढ़ाई करने वाले दुर्भावों को नीचे डाल दे। जो दुर्भावनाएं हमें अपना दास बनाना चाहती हैं—उनको भी नीचा दिखा।

इन्द्र की ज्ञान एवं कर्मशक्तियां, बलवती, पक्की अपराजित, उत्तम रीति से शत्रु का सामना करने वाली और असह्य हैं। समाधि के अवसर पहले पहल उन्हीं से काम लें; इससे प्राणशक्तियों का भारी बल जीता जाता है ॥७॥

१२ ३ १ ३ ३ १ २ ३ २ ३
मर्माणि ते वर्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजा-
२ ३ १ २ ३ १ २र३ १ २ ३
मृतेनानु वस्ताम्। उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२ ३ १ २ ३ १ २
जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु ॥

३ १ २ ३ १ २
अन्धा अमित्रा भवताशीर्षाणोऽहय इव ।

१२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२
तेषां वो अग्निनुन्नानामिन्द्रो हन्तु वरंवरम् ॥

२ ३ १ २ ३ २३ २ ३ १ २
यो नः स्वोऽरणो यश्च निष्ट्यो जिघांसति ।

३ १ २र ३ २३ २३ १ २र३ २३ २३
देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरं शर्म वर्म

१ ३र
ममान्तरम् ॥८॥

तेरे कोमल भागों को रक्षक-कवच से ढकता हूँ। दीप्तिमान् सोम अपनी अमरता से तेरे साथ-साथ रहे; तुझे अमर करे। वरुण तुझे सर्वोत्तम सुख दे; मोक्ष को विजय करते तुझे देख दिव्यशक्तियां हर्षित हो उठें।

हे शत्रुभूत दुर्भावनाओ ! तुम बिना सिर के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

सांपों की भांति अन्धे हो जाओ; अग्नि से फुंके हुए तुम्हारे शिर को इन्द्र नष्ट करे।

जो अपने में से ही, अप्रिया-चरण करने वाला, समीप रहता या दूर रहकर हमें मारना चाहता है; दिव्यगुण सब मिलकर उसका विनाश करें। वेद-ज्ञान मेरा कवच हो; सुखकारी कवच मेरा रक्षक हो ॥८॥

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १
मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठः परावत आ
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
जगन्था परस्याः। सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं
२ र ३ १ २ र
वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व ॥

३ १ २ र ३ १ २ ३ १
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्ष-
२ ३ १ २ र ३ १ २ ३ २ ३क २ र
भिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशे-
३ १ २ ३ १ २ र
महि देवहितं यदायुः ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi
CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः
३ २ ३ २ ३ १ २
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥
३ २ ३ २ ३ १ २
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥६॥

हे इन्द्र ! तू पर्वतों में रहने वाले पृथिवी-चारी, भयंकर सिंह की भांति, दूर से दूर स्थान से भी आकर प्रकट होता है : प्रज्ञाशक्ति दुर्गम विषयों में विचरती हुई भी साधक के सम्मुख प्रकट हो जाती है। हे इन्द्र ! प्रसरणशील तीक्ष्ण (तेजोमय) ज्ञान-वज्र को अति तीक्ष्ण करके अन्तःशत्रुओं को विनष्ट कर और अपहर्ता तामसभावों को दूर भगा।

हे दिव्य-यज्ञिय-शक्तियो ! तुम्हारी कृपा से हम कानों से अच्छे वचन सुनें, आंखों से अच्छे दृश्य देखें। स्तुतिशील रहते हुए दृढ़ अंगों और दृढ़

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शरीरों से जितनी दिव्यगुणों द्वारा स्थापित आयु—दीर्घ आयु—है उसे प्राप्त करें।

बढ़ी-चढ़ी अन्तःप्रेरणा को प्रदान करने वाला इन्द्र हमारे लिए कल्याणकारी हो; इसी प्रकार विश्व-विदित पूषा, अहिंसित नियम-गति सर्वशक्तिमान और बृहस्पति हमें कल्याण प्रदान करे ॥६॥

वेद-ज्ञान के अधिष्ठाता परमप्रभु हमारा कल्याण करें ॥

इति नवमः प्रपाठकः, द्वाविंशोऽध्यायः
उत्तरार्चिकश्च समाप्तः ।

॥ इति सामवेद-संहिता समाप्ता ॥

पञ्चचन्द्रखपक्षेऽब्दे श्रावण्यां बुधवासरे ।
राष्ट्रवाचानुवादोऽयं साम्नःपूर्तिमुपागमत् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विद्यालङ्कारोपाधि - विभूषितेन, गुरुकुल-प्रवर्त्तक
श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ पूज्यपाद
श्री स्वामिश्रद्धानन्द-सरस्वती-प्रशिष्येण, श्री
विष्णुमित्र-शर्म-शिष्येण च पञ्चाम्बु-
प्रदेशान्तर्गत-रोहतकक्षेत्रस्थ - फरमाना
ग्राम-जन्मना, श्रीच्छारामात्मजेन श्री
हरिश्चन्द्रेण विरचितं सामवेद-
संहितायाः भाषा-भाष्यमिदं
पूर्तिमगात् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हमारा आगामी प्रकाशन

मनुस्मृति

(सम्पूर्ण मूल संस्कृत और हिन्दी अनुवाद)

अनुवादक—

श्री पं० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार

इसमें सम्पूर्ण श्लोक दिये हैं। प्रक्षिप्त श्लोकों पर टिप्पणियां दी गई हैं। बढ़िया कागज पर छपेगी। मूल्य प्रचारार्थ केवल १।।) रुपया होगा।

अभी से आर्डर भेजें।

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागँज, देहली-७

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शीघ्र ही दूसरा प्रकाशन

ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका

महर्षि का अमर ग्रन्थ उत्तम कागज पर छपेगा। बिल्कुल लागत मात्र मूल्य पर देंगे।

१० हजार छापने पर हमें १।-) एक रुपया पाँच आने में पड़ेगा। आपको २५ प्रतियां लेने पर केवल १।=) एक रुपया छः आने में देंगे।

आज ही आर्डर भेज दें।

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज,
दिल्ली—७

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Delhi

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रचार योग्य सस्ती पुस्तकें

सत्यार्थ प्रकाश	।।।≡)	आर्यसमाज क्या है	।)
बढ़िया कागज सजिल्द	१।।=)	उपदेश मंजरी	।।)
संस्कार विधि	।।।−)	ऋषि दृष्टांत प्रकाश	=)
महर्षि दयानन्दजीवन	।।=	किसकी सेनामें भरती होगे	
व्यवहार भानु	=)	कंस की या कृष्णकी	।)
आर्याभिविनय	।)	दैनिक यज्ञ प्रकाश	५) सैं०
गोकरुणानिधि ४)सैं०	−)	स्वमन्तव्यामन्तव्य	१) ,,
आर्य सभ्यता	।−)।	,, अंग्रेजी	२) ,,
विदुर प्रजागर	१)	खान-पान	१) ,,
नारद नीति	।)	ऋषि की सुनो	१) ,,
कणिक नीति	≡)	सिनेमायासर्वनाश	१०) ,,
ईसाइयों के देशमें मानव-		माता-पिता आचार्य	१।) ,,
चांडाल से भी बदतर	=)	स्वामी श्रद्धानन्द	५) ,,
बौद्धमत और वैदिक धर्म	१।।	महर्षि दयानन्द	५) ,,
गोहत्या और सरकार	२ सैं०	प्रजा पालन	३।।) ,,
उपनिषद् सुधासार	२।)	आर्योद्देश्यरत्नमाला	२) ,,

प्राप्ति स्थान—

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागँज, दिल्ली-७

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.